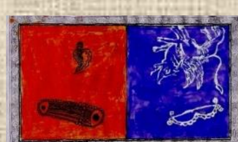
ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓖𑓘 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓐𑓑 𑒧𑒄 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓘𑓕 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓘)

[𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢𑓁 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏: 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। *(किछु दिन लेल लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ- प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)* ।

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c) २०००-२०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ ओ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-

reviewed·journal, ·which·means·that·articles·and·papers·are·reviewed·by·experts·in·the·field·before·they·are·accepted·for·publication.

Font/·Keyboard·Source: ·https://fonts.google.com/·, ·https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts·, ·https://keyman.com/·

Videha·e-Journal: ·Issue·No.·369·at·www.videha.co.in··

समानान्त१·प१म्प१ाक·विद्यापति-

·*यित्र·विदेह·सम्मानसँ·सम्मानित·श्री·पनकथा ·मामडथ·द्वाना*

मैथिठी·माषा·ळगळ्ळननी·सीतायाः·माषा·श्रासीत्·हनुमन्तः·उक्तवान-·मानुषीमिह·संस्क्रिताम्।

श्रक्ष्य१·ष्य४मा·(श्राष्य१·ष्याम्ह)

तिहुश्रन·ष्येत्ताहि·कात्रि·तसु·कित्तिवठिठ·पसरे ।·श्रक्ष्य१·ष्य४मा१४म·ळउ·मञ्यो·वन यि·न·देइ॥·(*कीर्तिठता·प्रथमः·पठठवः·पहिठ·दोहा।*)

माने·श्राष्य१·१ूपी·ष्याम्ह·निर्माम·कड·श्रोइप१·(*गद्य-पद्य·१ूपी*) ·मंय·ळँ·नै·वान्हठ·ळाय·तँ·ऐ·त्रिभुव १ूपी·क्षेत्रमे·श्रोक१·कीर्ति१ूपी·ठत्ती·केना·पसातत।

Do·not·judge·each·day·by·the·harvest·you·reap·but·by·the·seeds·that·you·plant. ·-Robert·Louis·Stevenson

. . .

Vi deha: ·Mai t hi l i ·Li t er at ur e·Movement

श्रों·द्यौ: ·शान्तिरन्तरिक्ष·ग्वं·शान्ति:

ॐ·द्यौ:·शान्तिरन्तरिक्ष·W·शान्ति:

अनुक्रम

ऐ·अंकमे·अछि: -

२.३.श्रशोक-·હમ·શ્રા·હમ૧·પ૧િચય઼

२.४.કલ્પના·દ્વા-·ડાઁહિ-પડાહિઁ·વા વ/ભિખ્વ·સહળ·નહિ

२.५.શ્રામા·દ્વા-ડૈડીગામ-·મધ્ય઼માર્ગક·શ્રન્વ઼ેષાાક·કથા

२.६.દિલીપ·કુમા૧·દ્વા-
·મૈથિલ·શ્રાઁપ્પિક·વ઼ૈશ્વિ઼ક·કથાકા૧·છથિ·કથાકા૧·શ્રશોક·[' માતવ૧' ·કથા·સંગ્રહક·પુનર્પાઠ']

२.७.શ્રળિત·કુમા૧·દ્વા-·ડૈડીગામ:·એક· પ્રતિમ·કથા·સંગ્રહ

२.८.કુમા૧·૧ાહુલ-
·મૈથિલ·શ્રાપ્પિ·સં·ડૈડીગામ·દેખ્વાક·સેહંતા·(કથાકા૧·શ્રશોકક·કથા·પ૧·એકટા·પાઠકીય઼·હસ્તક્ષેપ)

२.९.લાલ·દેવ઼·કામત-·કથાકા૧·શ્રશોક·માદે

२.१०.હિતનાથ·દ્વા-
·કથાકા૧·શ્રશોકક·વ઼્યંગ્ય઼·સંગ્રહ:·નીક·દિનક·વાય઼સ્કોપ

𑓓.𑓘.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨·𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠·𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪-

𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞·𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱·𑒬𑒯𑒲𑒠·𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪·𑒧𑓀 𑒪:·𑒖𑒲𑒫𑓃𑒢·𑒔𑒩𑒱𑒞/·𑒏𑒧𑒲𑒢𑒰· 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑓃𑒰𑒢

𑓓.𑓙.𑒛𑒰.·𑒏𑒱𑒬𑒢·𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩-

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲·𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑓃𑒏·𑒋𑒪𑒲𑒙·𑒥𑒼𑒢𑒫𑒱𑒪 𑒛𑓃·𑒬𑓂𑒩𑒰·𑒮𑒩𑓂𑒫𑓃𑒢𑒰𑒬𑒲·𑒠𑒪𑒰𑒪

𑓓.𑓑𑓐.𑒪𑒰𑒪·𑒠𑒹𑒫𑓃·𑒏𑒰𑒧𑒞-·𑒮𑒳𑒢𑒻𑒢𑒰·𑒥𑒹𑒙𑒲-

·𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲·𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏·𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑓃𑒰𑒮·(𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰)

𑓓.𑓑𑓑.𑒏𑒳𑒢𑓂𑒠𑒢·𑒏𑒩𑓂𑒝-·𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲·𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱·𑒏𑒟𑒰-·𑒢𑓂𑒨𑓃𑒴𑒙𑒢𑓂𑒮·𑒪𑒰

𑓔.𑒣𑒠𑓂𑒨𑓃·𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓔.𑓑.𑒩𑒰𑒖·𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩·𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒧𑒼𑒩𑒯𑒩𑒫𑒰

𑓔.𑓒.𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑓃𑒩·𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲-·𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢·𑒩𑒰𑒧𑒮𑒿



श्रों·द्यौ: ·श्नान्ति१न्तारिक्ष·ɾवृंग·श्नान्तिः·प्रिथ्वी·श्नान्ति१ापः ·श्नान्ति१ोषध
यः ·श्नान्ति·वनस्पतयः ·श्नान्तिर्वि ◌्वे·देवाः ·श्नान्तिर्व् ह्म

ॐ·দ্যৌ:·শান্তিৰন্তৰিক্ষ·Ẇ·শান্তি◌ঃ·পৃথ্বী·শান্তিৰাপ:·শান্তিৰোষধয:·শা
ন্তি·ৰনষ্পতয:·শান্তির্বিশ্বে·দেৰা:·শান্তির্ব্ৰহ্ম

व्रह्माॾसँ·प्रार्थना·ળે·द्युઠोकमे, ·श्रंतारिक्षमे, ·प्रिथ्वीपर, ·ળઠमे, ·श्रौष
धमे, ·वनस्पतिमे, ·विश्वमे, ·सब· ◌ेवताગॾमे·श्रा·व्रह्ममे·श्नांति·हुश्रय
।

श्रों-व्रह्माॾ, ·द्यौ-सूर्य-तरेगॾ, ·श्रंतारिक्ष-
·प्रिथ्वी·श्रा·द्यूઠोकक·वीय, ·श्रापः -ળઠ, ·विश्वेदेवा-
·सब·देवता, ·व्रह्म-·सर्ळक।

ব্ৰহ্মণসঁ·প্ৰাৰ্থনা·জে·দ্যুলোকমে,·অঁতৰিক্ষমে,·পৃথ্বীপৰ,·জলমে,·ঔষধ
মে,·ৰনষ্পতিমে,·ৰিশ্বমে,·সভ·দেৰতাগণমে·আ·ব্ৰহ্মমে·শাঁতি·হওয
ॐ-ব্ৰহ্মণ,·দ্যৌ-সূৰ্য-তৰেগণ,·অঁতৰিক্ষ-

·পৃথ্বী·আ·দ্যুলোকক·রীঠ,·আপ:-জল,·রিশ্বেদেরা-·সভ·দেরতা,·ব্রঁহ্ম-·সর্জক

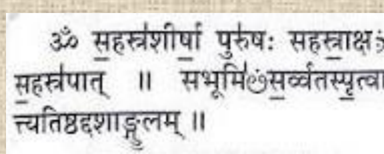
ঔাঁ, ·স↓হস্র↑শীর্ষা↓·পুরু↑ষঃ৷·স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ·স↓হস্র↑ াত্৷

ওঁ,·সা↓হস্রা↑শীর্ষা↓·পুরু↑ষঃ·সা↓হা↓স্রা↓ক্ষঃ·সা↓হস্রা↑পাৎ

স·ভূমিং↑·১র্বং·রি↓স্বতো↑·রি↓ত্বা৷·শ্রত্য↑তিষ্ঠদ্·দশাঙ্গু↓লম্৷

সা·ভূমিঁ↑ W·রি↓শ্বতো↑·বৃ↓ত্বা·অত্যা↑তিষ্ঠদ্·দশাঙ্গু↓লমা৷

হজা১·নাথ, ·হজা১·শ্রাঁপ্পি, ·হজা১·পএ১·সংগ·রিস্বকঁ·শ্রাচ্ছাদিত·কেনৈ·শ্রছি, ·দস·শ্রাঁগু১ক·গনতীক·রক্ষমে·নৈ·শ্রছি·শ্রো৷



ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑·শূ↓দ্রো·শ্র↑জায়ত৷৷

প↓ড্ভ্যাগ্ঁ↑·শূ↓দ্রো·অ↑জায়ত

পএ১সঁ·শূদ্র১ক·উৎপত্তি·মৈভ৷৷

প↓দ্ভ্যাং·ভূমি↓র্দিশঃ↓·শ্রো ্রা↑↑ত্৷

প↓ড্ভ্যাং·ভূমি↓র্দিশঃ↓·শ্রোত্রা↑↑ৎ

मुद्रा·पएरेसँ·मूमिय़ोक·उत्पत्ति।

❀·(White·Florette-·innocence·and·purity)

☸·(Wheel·of·Dharma)

卐(Swastik)

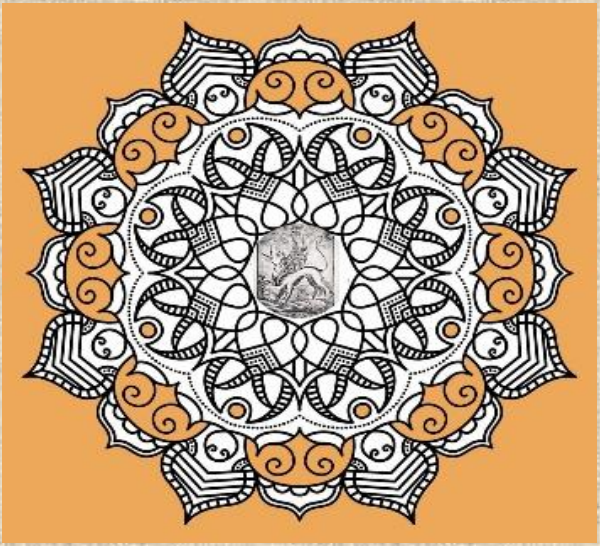
৩·(সিদ্‌যি১স্তু, ·সিদ্‌ধম·সিদ্ধিবস্তু, ·সিদ্ধম·Devanagari·Anji
)

Ẇ·(Gwang·১ৡ্গ-

·two·small·circles·connected·by·u·and·a·dot·
placed·over·it,·used·in·reference·of·Vedic·
texts)

·(Tirhuta·Anji,·Ankush·of·Ganeshji,·placed·

at·the·beginning·of·something)



𑓑𑓑.𑒥𑒰𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

𑓑𑓒.𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓘 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

𑒏𑒫𑒱 𑒁𑒬𑒼𑒏, 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒂 𑒏𑒟𑒹𑒞𑒩 𑒑𑒠𑓂𑒨𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒁𑒬𑒼𑒏

𑒍𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒥 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱 (𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑓂𑒫𑒮𑒳𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩𑒪𑒏 𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒢𑒰𑒧 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱) 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 '𑒔𑒏𑓂𑒩𑒫𑓂𑒨𑒴𑒯' 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑓑𑓙𑓘𑓘 𑒏𑒹𑒩 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲 𑒧𑒰𑒮𑒧𑒹। 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒁𑒬𑒼𑒏, 𑒬𑒱𑒫𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮 𑒂 𑒬𑒻𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 '𑒞𑒩𑒏𑒲𑒥' 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪, 𑒢𑒫𑒧𑓂𑒥𑒩 𑒧𑒰𑒮𑒧𑒹, 𑒖𑒃𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑓕-𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒂𑒩𑒼 𑒏𑒧। 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒧𑒹 𑒏𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒤𑒻𑒬𑒢 𑒕𑒻। 𑒖𑒐𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠 𑒞𑒲𑒢 𑒮𑒋 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒍 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱- '𑒧𑒹𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒏𑒯𑒰𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿' 𑒮𑒢𑓂 𑓑𑓙𑓓𑓓 𑒧𑒹। 𑒌 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠 𑒄 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒢𑒻 𑒔𑒰𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒮𑒦 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒻 𑒦𑓄 𑒣𑒥𑒻 𑒕𑒻। 𑒂 𑒄𑒯𑒼 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒋𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒮𑒦 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒋 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒼 𑒕𑒯 𑒙𑒰 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒻 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒮𑒏𑒞। 𑒮𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒠𑒥𑒰𑒥 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒌 𑒞𑒲𑒢 𑒮𑒋𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒟𑒰 𑒔𑒳𑒢𑒱 𑒏𑓄 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒞𑒲𑒢 𑒮𑒋 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒪𑒱𑒁𑒋 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒒𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒍𑒢𑒰 𑒍𑒞𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠 𑒄𑒯𑒼 𑒏𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒅𑒛𑓃𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒒𑒼𑒛𑓃𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻 𑒮𑒹 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒟𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒬𑒲 𑒕𑒻। 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒌 𑒑𑒣𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒩𑒐𑒻 𑒕𑒲 𑒂 𑒤𑒱𑒩𑒰𑒏 𑒑𑒼𑒩𑒐𑒣𑒳𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒟𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒯𑒧𑒞 𑒕𑒲। 𑒤𑒱𑒩𑒰𑒏 𑒑𑒼𑒩𑒐𑒣𑒳𑒩𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃𑒏 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 '𑒩𑒴𑒣' 𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 '𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒪𑒼𑒏 𑒑𑒲𑒞' 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲𑒨 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒻 𑒕𑒻, 𑒂 𑒮𑒹 𑒑𑒰𑒪𑒱𑒥, 𑒃𑒏𑒥𑒰𑒪 𑒂 𑒔𑒏𑒥𑒮𑓂𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒻 𑒠𑓄 𑒮𑒏𑒪। 𑒍 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒠𑒻 𑒕𑒟𑒱-

"𑒥𑒰𑒥𑒳𑒪 𑒧𑒼𑒩𑒰 𑒢𑒻𑒯𑒩 𑒕𑒴𑒙𑒪 𑒖𑒰𑒨,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भेली, आङन भेलो विदिशा।"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा बुझबामे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी आलोचनात्मक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह (ई पत्रिका विदेह ggajendra@videha.com - send from whatsapp no +919560960721 so that it can be added to the videha whatsapp broadcast list)

अपन मन्तव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६८ पर टिप्पणी

निर्मल कर्ण

आदरणीय संजू दास जी के चित्र पर हमर प्रतिक्रिया- आदरणीय संजू दास जी बहुत नीक चित्रकार छथि। हुनक श्रेष्ठ कलाकार होमय मे कोनो संदेह नहि। विदेह पत्रिकाक अंक ३६८ मे हुनक लिखल आलेख पढ़ल। ओ कला मे नग्नता पर बहुत सारगर्भित आलेख लिखलथि। हुनक आलेख सँ अत्यंत प्रभावित भेलहुँ। आदरणीय संजू दास जीक विचारधारा सँ हम शत-प्रतिशत सहमत छी। कोनो चित्र मे नग्नता देखब सब पूर्व ओकर भावना देखबाक चाही।मुदा एहि अंक मे हुनक किछु बोल्ड चित्र देखलहुँ। ओहि चित्र मे मात्र तीन चित्र पर हमरा किछु आपत्ति अछि। ओहि तीनू चित्र पर हम आदरणीय संजू दास जी सँ किछु जानकारी चाहैत छी। एक स्त्री संपूर्ण नग्न ठाढ़ छथि एवं हुनका किछु कामुक पुरुष ललचाएल दृष्टि सँ देखि रहल छथि। निकट बैसल शेर पर्यंत जे संभवत: हुनक अपन कर्मचारी थिक। वैह स्त्री संपूर्णा नग्न रूप मे शेर पर बैसल आराम कऽ रहल छथि। मादा पशु के स्त्री रूप मे चित्रण।ओ मादा नग्न रूप मे बैसल दर्पण मे अपन सौंदर्य देखि रहल छथि एवं एक गोट कामुक पुरुष रूपी हिंस्र जीव जे संभवत वृद्ध अछि ओहि स्त्री के आलिंगन मे कएने अछि।

हम कला मर्मज्ञ जानकार चित्रकार नहि छी। हुनक कला के प्रशंसा करैत हम मात्र एक बात आदरणीय संजू दास जी सँ पूछब चाहैत छी। तीनू चित्र मे महिला पात्र के संपूर्ण नग्न रूप मे चित्रण करबाक औचित्य की थिक? कोन भावना के वशीभूत स्त्री के नग्न देखाओल गेल ?

प्रणव झा

इंटरनेट के जाल पर विचारक करैत जखन कखनो विदेहक पेज पर पहुँचय छी श्री गजेन्द्र ठाकुर के आलेख वा लेखि से कहि न कहि इन्फोर्मेटिव योग मैथिली भाषा के माध्यम से भेंट जाय अछि। एहि क्रम मे नीतीश नवल दिनेश कुमार मिश्र आलेख सोशल के अंतर्गत ए अंक मे महानंदा से फुटल दिनेश मिश्र के सूचनात्मक लेख के सार मैथिली मे पढ़ लेल भेटल जे सुखद अनुभूति। विदेह ए अंक मे संजू दास के कलाकृति के ल क कै टा आलेख छापलक अछि जे हालिया हुनक कोनो पेंटिंग विवाद के केंद्र मे घुमइत अछि। फेसबुक पर प्रमुख रूप से कुमार पद्मनाभ द्वारा उठाओल ए मुद्दा के रंग गर्दि अनेको लोक आपन राय आ दृष्टिकोण रखल या पद्मनाभ जी द्वारा आपन बात बहुत दृढ़ता से आ तर्क के साथ राखल गेल आ ओतबे दृढ़ता आ तर्क से संजू दास अपन आलेख द्वारा ओकर खंडन करैत नजरि आबय छथि। किएकि हम चित्रकला के पारखी नै छी तै अपन कोनो अंतिम पक्ष नै राखि सकय छी मुदा ए तरहक मामिला मे तार्किक रूप से वाद प्रतिवाद के डोक्युमेंटेड केला से ए तरहक विषय मे समाज के भविष्य मे अपन विचार बनेबाक लेल तार्किक सामाग्री भेंट सके अछि।

प्रोफेसर उषा चौधरी

कला, कला होइछ आ असली नहि भ सकैछ। हमरा लोकनिक नजरिया थिक, जे हम ओकरा की देखि रहल छी।अपन दृष्टिकोण मे परिवर्तन कैने अनेक अर्थ निकलैत अछि।

कल्पना झा, पटना

बहुत नीक विदेहक नवका अंक। पठनीय आ संग्रहणीया। अत्यधिक व्यस्तता रहैए, तथापि पढ़ब शुरू केलहुँ, तँ बहुत किछु पढ़ि गेलहुँ, ततेक इंटरेस्टिंग टॉपिक सभ अछि। डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक' जीक आलेख "गामक नामकरण:एक परिशीलन" बहुत नीक लागल।दरभंगा-मधुबनी सँ नेपालक

धनुषा, जनकपुर आ समस्तीपुर, सीतामढ़ी धरि बहुतो गामक नामकरणक चर्चा बहुत रोचक ढंग सँ केलनि अछि।मिथिलाक गामक नामकरणक पाछाँक इतिहास सँ लोककेँ अवगत करओलनि अछि लेखक, जाहि आ राजनीतिक इतिहास हो वा सांस्कृतिक इतिहासाध्येता लेल आवश्यक अछि लेखककेँ साधुवाद !अपनेक लिखल "अर्चना झा चौधरी-एकटा परिचय" पढ़ि आह्लादित भेलहुँ।एहि तरहक लोकक कृत्यकेँ चर्चा हेवाक चाही।कतेक लोक अर्चना झा चौधरीक नाम सँ अनजान छल हेता।अपनेक लिखल "कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला-एकटा परिचय" सेहो पढ़लहुँ। एहेन एहेन व्यक्तित्व व्यक्तित्व आ कृतित्वक चर्चा हेवाक चाही पत्र-पत्रिका सभमे।रवीन्द्र कुमार दास जीक-"परिवारक सहयोग सबसँ जरूरी" एकटा नीक संदेश दैत अछि।

आचार्य रामानंद मंडल, सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार, सीतामढ़ी

कलाकृति बनाम अश्लीलता कला साहित्य मे संजु दास के कलाकृति आर काल विवाद मे हया।कुछ लोग के दृष्टि मे कला मे अश्लीलता हया।असल मे अश्लीलता आ श्लीलता दृष्टि के हेर छैय। संत तुलसीदास के अनुसार जाके रहि भावना जैसी हरि मूरत देखि तिन तैसी। पौराणिक साहित्य के देखियौ त अश्लीलता से भरल हया। परंतु धार्मिक दृष्टि से वो अश्लील दृष्टिगोचर न होइ हया। जेना भगवान शंकर के लिंगाकार रूप जेकर पूजा कैल जाइ हया। नागा साधु आ दिगम्बर जैन मुनि जेइ के दर्शन मे अश्लीलता दृष्टिगोचर न होइ छैय। मां काली के नग्न मूरति मे अश्लीलता दृष्टिगोचर न होइ हया। सती अनुसूया के कथा एगो धार्मिक कथा हया। अनुसूया के सतीत्व परीक्षा के लेल ब्रह्मा विष्णु महेश कहलथिन कि अहां नग्न होके हमरा सब के भोजन करायव त हम सब अहां इहा भोजन करवा।सती अनुसूया हुनका सब के तप बल के आधार पर बच्चा बना देलथिन आ नग्न होके गोद मे रख के भोजन करैलथिन। कारण कि बच्चा निर्दोस होइ छैय।वो श्लीलता आ अश्लीलता

से अंजान होइ छय। बौद्ध कालीन मूर्ति अजंता -
एलोरा आ भगवान जगन्नाथ आ दक्षिण भारत के मंदिर पर उत्कीर्ण मै
थुन मूर्ति मे अश्लीलता नजर न अबैय छय। भगवान रजनीश संभोग से स
माधि मे एगो घटना के उल्लेख करैय छथिन्ह। एक युवा प्रेमी -
प्रेमिका के प्रेमिका मे माता -
पिता मैथुन मूर्ति के देखैयत खजुराहो मे टकरा गेलन। घटना २ बतावैत छय
कि सापेक्ष रूप मे अश्लील छय परंतु निरपेक्ष रूप मे अश्लील न छय। संजु
दास के कला सापेक्ष रूप मे लोग के अश्लील भले लगैय परंतु निरपेक्ष रूप
से अश्लील न छय।कलादृष्टि निरपेक्ष होय के चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रचनाकार अशोक विशेषांक

२१प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

२२अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय

२३अशोक- हम आ हमर परिचय

२४कल्पना झा- डाँड़-पड़ाड़ँ बाजल्पिक सहज नहि

२५आभा झा-उड़ीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणात्मक कथा

२६दिलीप कुमार झा- मैथिलि आँचलिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['मातवर' कथा संग्रहक पुनर्पाठ']

२.७ अजित कुमार झा- उड़ीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह

२.८ कुमार राहुल- मैथिल आँखि सँ उड़ीगाम देखबाक सेहन्ता (कथाकार अशोकक कथा पर एकटा पाठकीय हस्तक्षेप)

२.९ लाल देव कामत- कथाकार अशोक मादे

२.१० हरिनाथ झा- कथाकार अशोकक व्यंग्य संग्रह: नीक दिनक बायस्कोप

२.११ शिवशंकर श्रीनिवास- अशोकक कथा

२.१२ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' - अशोकजीक कथामे कथापर विमर्श

२.१३ नारायणजी- मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य

२.१४ शिव कुमार मिश्र- अशोक ओ मैथिली साहित्य संस्थान

२.१५ शैलेन्द्र आनन्द- अशोक: एकटा जीवन्त कथाकार

२.१६ गजेन्द्र ठाकुर- कवि अशोक

२.१७ गजेन्द्र ठाकुर- कथाकार अशोक

२१८गजेन्द्र ठाकुर- कथेतर गद्यक लप्पक अशोक

२१९प्रदीप बिहारी-मातबर कथाकार

२२०आशीष अनचिन्हार- मैथिल दृष्टिदोष

२२१मुन्ना जी- त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक

२२२श्रीधरम- गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: कछु टपौत

२१प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

विदेह द्वारा लप्पकपर विशेषांक ' जीवैत मुद्दा उपेक्षित' शृंखला रूपमे कएल गेल छल २०१५ सँ जकर आब २०२३ मे एहि विशेषांक संग विदेहक जीवित " मैथिलिकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- "निर्देशकपर विशेषांक शृंखला-रंगमंच नामसँ जानल जाएत। दिसम्बर २०२२ मे विदेह प्रकाशित करबाक "अशोक विशेषांक" एहि सूचनाकेँ एहि सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। -छी सकैत देख्यौ लिंकपर<u>घोषणा</u>। मैथिलिकर्मीसँ हमर सबहक आशय जनिकर काज मिथिला संगठनकर्ता आ मैथिली लेल कोनो माध्यमसँ भेल हो।-मैथिली-छथि सकै भऽ सेहो, आन भाषाक लप्पक सेहो। तहिना संगीतकर्मी मने गीत-संगीतसँ जुड़ल लोक।

एहन शृंखलामे, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह ८ टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज

𑒕𑒻। 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒐 𑒋𑒏𑒙𑓂𑒚𑒰 𑒏𑒩𑒋𑒧𑒹। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒄𑒯𑒼 𑒯𑒧 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒏𑒙𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒑 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒿, 𑒄 𑒧𑒰𑒢𑒋𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒱𑒏𑓂𑒏𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒪𑒐 𑒏𑒹𑒩 𑒅𑒧𑓂𑒧𑒹𑒠 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒯𑒧 𑒞𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒻 𑒂𑒥𑒻𑒋, 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑒕𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒁𑓀𑒞𑒁𑓀𑒞 𑒡𑒩𑒱 𑒂𑒥𑒱 -𑒕𑒻 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒼 𑒋𑒏𑒩 𑒂 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣 𑒦𑓄, 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒄 𑒪𑒰𑒑𑒻 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒂𑒢𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒮𑒹 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒱 𑒢𑒹 𑒪𑒲𑒐𑒰 𑒪𑒱𑒥, 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒪𑒑 𑒣𑒼𑒟𑒱𑒋 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒢𑒱, 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒱 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒏𑒪𑓂𑒣 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒣𑒲𑒛𑒲𑒋𑒤 𑒤𑒰𑒃𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒲 𑒕𑒟𑒱 𑒠𑒳𑒢𑓂𑒢𑒼 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒫𑒹𑒬𑒲 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒞𑒿 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒮𑒿 𑒠𑒱𑒏𑓂𑒏𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒞𑒿𑒋 𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒻𑒞। 𑒋𑒏𑒩𑒼 𑒯𑒧 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒱𑒨𑒻 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒪𑓀𑒥𑒰𑒪𑓀𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒐 𑒫𑒰 𑒏𑒧𑒹𑓀𑒙 𑒙𑒰𑒃𑒣 𑒏𑓄 𑒠𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒣𑒚𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒙𑒰𑒃𑒣 𑒏𑓄 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒙𑒰𑒃𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒅𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒏𑒙𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿𑒋 𑒂𑒃 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒢𑒫𑒧 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒡𑒩𑒱 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒯𑒧। 𑓒𑓐𑓑𑓕 𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑓒𑓐𑓒𑓒 𑒡𑒩𑒱 𑓘 𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒧𑒢𑒹 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰। 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒯𑒧𑒩𑒰। 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒱 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒄 𑒂𑒚𑒼 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒪𑒰𑒫𑒹 𑒂𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒩 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒄𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭𑒠𑒰𑒨𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒯𑒩𑒹𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒢𑓀𑒠𑒢𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒦𑒱𑒢𑓀𑒠𑒢𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒁𑒦𑒱𑒢𑓀𑒠𑒢𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟 𑒁𑒯𑒴 𑒠𑒳𑒂𑒩𑒹 𑒢𑒻 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒍𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒫𑒰 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑒱 𑒞𑒢𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒳𑓀𑒖𑒰𑒃𑒬 𑒐𑒞𑒧 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑒞𑒿𑒋 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏𑒧𑒹 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒬𑒰 𑒮𑒦 𑒦𑒹𑒙𑒞।-

𑒋𑒯𑒢 𑒢𑒻 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒢𑒻 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒮𑒦 𑒋𑒏𑒙𑓂𑒚𑒰 𑒢𑒻 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒪 𑒕𑒻 𑒞𑒿𑒋 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒯𑒹𑒛𑓃𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻। 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒠𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒄 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒕𑒢𑒱। 𑒄 𑒁𑒪𑒑 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒤𑒪 𑒫𑒰 𑒁𑒮𑒤𑒪 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒮𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒏𑒯𑒞𑒰। 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒏𑒹𑒩 𑒬𑒳𑒩𑒴𑒂𑒞 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒂𑒢 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒑𑒹𑒮𑓀𑒑 𑒄 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒅𑒧𑓂𑒩𑒏 𑒫𑒩𑒱𑒭𑓂𑒚𑒞𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒰𑒪𑒢 -

हँ कहैए आ जे रचनाक गुणवत्ताक, एतेक ध्यान जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होएत आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्त्तनी आ मानकताक अभाव खटतनि। वर्त्तनीक गलती जे थिक से सोहे- सोह हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई ध्यान राखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हमेशा वर्त्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँए मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्त्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे कहियो एहन परम्परा अछि जकर वर्त्तनी एकरंगाक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन आरो सभ कोनो विशेषांक निकालैत छथि तखन वर्त्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बासि रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे ७२-८० पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री समान रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर कहियो रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे कहियो नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्त्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक- संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्त्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधाराक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्त्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा ओकर पाइ लागि जेतै) तँए ओकर वर्त्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रीए बासि रहत तँ सही वर्त्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँए हमरा लोकनि वर्त्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि किएलनि, कयलनि आ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे "स्वतंत्रचेता" अशोक जीपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा विशेषांक श्रृंखलामे प्रकाशित भेल विशेषांक सबहक सूची एना अछि, ऐठाम जे सूची देल गेल अछि ताहि सबपर क्लिक करैत अँ ओ अंक सभ खुजि जायत।

1. अरविन्द ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१५ अंक १८९ (विशेषांक २०२० मे पोथी रूपमे सेहो आयल अछि)
2. जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक १९१
3. रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९
4. राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३
5. रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८
6. केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२
7. प्रेमलता मिश्र ' प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७
8. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२२.अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय

एहिठाम प्रस्तुत अछि अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय। सोशल मीडियापर हुनका कथाकार अशोक केर नामसँ बेसी जानल जाइत छनि। एहि परिचय केर अधिकांश तथ्य पहिनेसँ सार्वजनिक छै। किछु तथ्य छुटाएल गेल अछि आ छोटो सन स्वयं अशोकजीक सौजन्यसँ भेटल अछि।



ળામશ્રશોક-

ળ્ન્મ તિથિ :૧૮ ળળવ઼ની, ૧૯૫૩

માતા ળન્દા દેવ઼ સ્વ઼ ઃ

પિતા ૩માપતિ હિ઼ સ્વ઼ :

સ્થાળ ઊહ્ના :, મધુવની (વહિા૧)

શિક્ષા સી-એસ઼વી :, ડી(માસ્કો) એમ઼ સી઼

વ઼ૃત્તિ- વહિા૧ સહ્કા૧િા સેવ઼ાક સેવ઼ાળવિૃત્ત પદાર્થકિા૧ી

શ્રશોક ળી કે૧ પ૧િવ઼િા૧ક શ્રળ્ય઼ સદસ્ય઼ :

પત્ની પૂ૧્ાાકળ઼ સ્વ઼ :

પુત્૧ : ૧(હ્નિક પત્ની પઊઊવ઼ી) પ્૧વ઼ીાા (, ૨ હ્નિક) પ્૧ભાત (પત્ની શિઊપા(

પ્૧કાશિત કૃતિ મૌઊકિ: (એપ્પળ વ઼ર્ષ શ્રશોકળીક ળોક મૌઊકિ પોથી પ્૧કાશિત ભેઊળ તાહ્મિસઁ શ્રધિકાંશ વ઼દિહ પોથી ડાઉનઊોડપ૧ ૧ાપ્પઊ ગેઊ શ્રછિ શ્રા એહિ઼ામ ળે પોથીક ઊસ્િટ દેઊ ગેઊ શ્રછિ તાહ્મિ પોથીક ળામપ૧ ક્ઊકિ ક૧વૈ તઁ શ્રો પોથી ખુળિ ળાએત(-

१) <u>યક્ષવ્યૂહ) (કવિતા સંગ્રહ)१९८८(</u>

२) <u>ત્રિકોણ) (કથા સંગ્રહ)१९८८(</u>

३) <u>શ્રોહ નાતિક જોર) (કથા સંગ્રહ)१९९१(</u>

४) <u>માતવર) (કથા સંગ્રહ)२००१(</u>

५) મૈથિલ શ્રાઁખ્ય (२००७)

६) <u>સંવાદ) (સાક્ષાત્કાર સંગ્રહ)२००७(</u>

७) કથાક ઉપન્યાસ:ઉપન્યાસક કથા (२०१२)

८) <u>શ્રાઁખિમે વસલ) (યાત્રા કથા)२०१३(</u>

९) <u>વાત२०१५) (શ્રાલોચના) વિચાર-(</u>

१०) <u>ઉડીગામ) (કથા સંગ્રહ)२०१७(</u>

११) <u>નીક દનિક વાસ્સ્કોપ) (વ્યંગ્ય સંગ્રહ)२०१८(</u>

१२) નાળમોહન દ્દા વનિવિન્ય), २०१९(

१३) કથાપાડ- (२०२२)

વિદેહ એવં શ્રાન પત્રિકામે પ્રકાશિત રચના સભ ળે ક એખ્યન પોથી રૂપમે નહિ શ્રછિ-

१) <u>શ્રસોક(વિવિધ) સેલેક્શન્સ-</u>

२) <u>શ્રસોકનવ કવિતા-</u>

૩) મુન્ના ળી દ્વાના સાક્ષાત્કાન પૃ)૩૮૨-૩૮૫(

૪) વૈભ્ન ક્મ વગિઉૈન વેસી પૃ)૨૦૨૩-૨૦૩૧(

૫) સમ્પાદક નાળનન્દન ભાભ દાસ શ્રા કન્ાાામ ૃત પૃ)૧૧૯-૧૨૨(

૬) નામભોયન ઠાકુનક કવ઼િતા પઢૈત પૃ)૩૨૭-૩૪૧(

૭) કેદાન નાથ યૌયનીક ૩પન્યાસ પૃ)૧૦૧-૧૦૬(

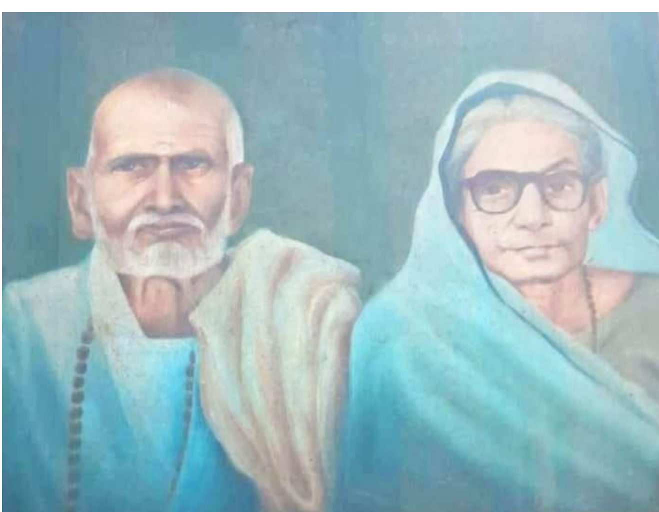
૮) શનદનિ્દુળી પૃ)૭૦-૭૩(

પ્નકાશતિ ક ૃતિ સમ્પાદન:

૧) પ્નતમિાન (વ઼યિાન ગોષ્ઠીક શ્રાભ્પ શ્રો વ઼મિન્શક સંગ્નહ)

૨) સન્યાન શ્રંક) ૧- ૨- ૩- ૪, શ્રનયિ઼તકાભીન પત્નકિા(

૩) મૈથલિી શ્રાભોયના) (સમ્પાદન)૨૦૧૭)



𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒗𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰, 𑒮𑓂𑒫. 𑒅𑒧𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒗𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒮𑓂𑒫. 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲



𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒗𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑓂𑒫. 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒏𑒪𑒰 𑒗𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑



𑒁𑒬𑒼𑒏𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒾𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒨𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒹



𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲, 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲, 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒫𑒡𑒳 𑒏 𑒮𑓀𑒑(𑒣𑒕𑓂𑒕𑒫𑒲)



𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩, 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒂 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒫𑒡𑒳 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣𑒰

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

२३अशोक- हम आ हमर परिचय



अशोक

हम आ हमर परिचय

हमर जन्म १८ जनवरी १९५३ कें लोहना (मधुबनी) मे भेल। हमर पिता रहथि स्व. उमापति झा एवं माता रहथि स्व. नन्दा देवी। हमर जन्मक बहुत पूर्वेसँ हमर पिता काशीमे रहैत छलाह। महारानी लक्ष्मीवती द्वारा निर्मित राम मंदिरक व्यवस्थापक रहथि ओ। लक्ष्मीवती अपन जीवनकालमे कटिहार जूट मिलसँ बजा कऽ हुनका मंदिरक व्यवस्थापक बनौने रहथिन। हम सपरिवार ओतहि रहलहुँ। हमर जेठ भाइ स्व. प्रो. सुशील झा ओतहि पढ़लनि-लिखलनि। बीएचयूसँ एम.ए केलनि जखन ओ एम.ए केलनि तँ हम छह वर्षक रही। भाइ एम.ए पास कऽ १९५९ ईस्वीमे सरिसब गाममे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालयमे प्राध्यापक भऽ गेलाह। हुनकासँ छोट हमर बहिन स्व. गीता देवीक विवाह हमर जन्मसँ एक मास पूर्व दिसम्बर १९५२ मे भऽ गेल रहनि। भाइ हमरासँ पंद्रह वर्ष आ बहिन बारह वर्षक जेठ रहथि। स्वाभाविक रूपसँ हमर स्थिति परिवारमे एक ललबुआ सन रहए। सब अल्लो-मल्लोमे

𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒣𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒹𑒢𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒡𑒰 𑒠𑒳𑒐𑒱𑒞 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃। 𑒮𑒹 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒞𑒏 𑒔𑒪𑒪। 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒄 𑒋𑒏 𑒣𑒻𑒒 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒪।

𑒦𑒰𑒃 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒔𑒪 𑒁𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒰𑒋 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒋𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒣𑒻𑒙𑒒𑒰𑒙 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒚𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒧𑒰𑒋 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑓑𑓙𑓖𑓐 𑒧𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒤𑒹𑒩 𑒂𑒑𑒴 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒰𑒬𑒲 𑒣𑒚𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒲 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒱𑒏 𑒣𑒰𑒚𑒬𑒰𑒪𑒰, 𑒯𑒾𑒖𑒏𑒙𑒼𑒩𑒰, 𑒫𑒰𑒩𑒰𑒝𑒮𑒲𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪। 𑒍𑒞𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒔𑒧𑒰 𑒏𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒅𑒞𑒲𑒩𑓂𑒝 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒤𑒹𑒩 𑒕𑒚𑒧𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒩𑒱𑒬𑓂𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩 𑒃𑓀𑒙𑒩 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒋𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑓑𑓙𑓖𑓙 𑒃𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒃𑓀𑒙𑒩𑒧𑒹 𑒛𑒲𑒋𑒫𑒲 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒞𑒲𑒩𑓂𑒝 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒛𑒩𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒨𑒻𑒏। 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒮𑒩𑒱𑒮𑒥 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖𑒮𑒿 𑒂𑒃𑒋𑒮𑒮𑒲 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒑𑒼𑒨𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖, 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒲𑒋𑒮𑒮𑒲 (𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰) 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒥𑒲𑒋𑒮𑒮𑒲𑒏 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑓑𑓙𑓗𑓕𑒏 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒖𑒴𑒢𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒛𑒰. 𑒖𑒨𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒯𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒏𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒹𑒪। 𑒍𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒱𑒞𑒰 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒖𑒢𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒩 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒢𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑓑𑓙𑓗𑓗 𑒧𑒹 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒲𑒣𑒲𑒋𑒮𑒮𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒯𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒢𑒱𑒥𑓀𑒡𑒏, 𑒮𑒮 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒠𑒣𑒩 𑒃𑒙𑒰𑒜𑓃𑒲 (𑒥𑒏𑓂𑒮𑒩) 𑒧𑒹 𑓑𑓙𑓗𑓘 𑒧𑒹 𑒨𑒼𑒑𑒠𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒠𑒣𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓒𑓐𑓑𑓓 𑒧𑒹 𑓓𑓑 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒋𑒯𑒱 𑒁𑒫𑒡𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒯𑒰𑒫𑒮𑒰𑒢 𑓑𑓙𑓘𑓗 𑒃𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹, 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑓑𑓙𑓘𑓘 𑒃𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹, 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒏 𑓑𑓙𑓘𑓙 𑒃𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒂 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑓑𑓙𑓙𑓐 𑒃𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒹𑒚 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒰 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒹𑒚 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒦𑒾𑒖𑒲 𑒫𑒲𑒝𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒧𑒩 𑒦𑒰𑒞𑒱𑒖 𑒩𑒰𑒖𑒲𑒫 𑒮𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒮𑒩𑒱𑒮𑒥 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒏𑒹 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒩𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒦𑒾𑒖𑒲 𑒂 𑒩𑒰𑒖𑒲𑒫 𑒏𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒂 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒁𑒢𑒫𑒩𑒞 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒗𑒳𑒏𑒰𑒫 𑒏𑒰𑒬𑒲𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒒𑒏 𑒑𑒞𑒱𑒫𑒱𑒡𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰-𑒮𑒳𑒢𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒒 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒄 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒢𑒰𑒑𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩𑒣𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞। 𑒯𑒧 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒹𑒮𑒿 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒠𑒹𑒐𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒢𑒰𑒙𑒏, 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒰𑒚, 𑒦𑒰𑒭𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒱𑒞𑒰, 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒲, 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒦𑒰𑒑 𑒪𑒱𑒁 𑒪𑒑𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰-𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹 𑒮𑒳𑒢𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒥𑒙𑒳𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 १९६८ 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒕𑒣𑒪 "𑒬𑒬𑒱 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒢"। 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒗𑒰𑒏 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲। 𑒍𑒢𑒰 १९६९ 𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰-𑒧𑒱𑒯𑒱𑒩𑒧𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒕𑒣𑒪। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒏𑒟𑒰 "𑒫𑒱𑒩𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹" १९७१ 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰-𑒧𑒱𑒯𑒱𑒩𑒧𑒹 𑒕𑒣𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒩𑒧𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑓀𑒑 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒢𑒱𑒫𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪।

𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒥𑒏𑓂𑒮𑒩 𑒂 𑒏𑒙𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒣𑒠𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒁𑒫𑒡𑒱 𑒣𑒙𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒠𑒣𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒪𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒲𑒝 𑒍 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒞 𑒣𑒙𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒢𑒱-𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒲𑒝 𑒠𑒹𑒯𑒩𑒰𑒠𑒴𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒲𑒙𑒹𑒏 𑒏𑓄 𑒮𑓂𑒙𑒲𑒪 𑒁𑒟𑒰𑒩𑒱𑒙𑒲 𑒂𑒤 𑒃𑓀𑒛𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒩𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒫𑒩𑓂𑒭 २००८ 𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒣𑒪𑓂𑒪𑒫𑒲𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒢𑒱 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒨𑒰 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒹𑒩 𑒕𑒚𑒧𑒰 𑒏𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒮𑒦 𑒥𑒼𑒪𑒰𑒢𑒲 (𑒅𑒛𑓃𑒲𑒮𑒰)𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒏𑒲𑒩𑒲𑒥𑒳𑒩𑒴 (𑒗𑒰𑒛𑓃𑒐𑓀𑒛)𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒞 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒋𑒧.𑒋, 𑒣𑒲.𑒋𑒔.𑒛𑒲 𑒏𑓄 𑒋𑒐𑒢 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒫𑒲𑒧𑒹𑓀𑒮 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒫𑒩𑓂𑒭 २०१६ 𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒐𑒴𑒥 𑒁𑒦𑒱𑒩𑒳𑒔𑒱 𑒕𑒢𑒱। 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒱𑒐𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒱𑒐 𑒮𑒦। 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒰𑒩𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒕𑒢𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒏𑒪𑒰 𑒗𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒯𑒰𑒫𑒮𑒰𑒢 २०१९ 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒫𑒩𑓂𑒭 २००२-०३ 𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒥𑒱𑒧𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒏 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒩𑒰𑒧 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒁𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒧𑒰𑒮 𑒩𑒯𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑒱। 𑒂𑒣𑒩𑒹𑒬𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒏𑒻𑒮 𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒂𑒃.𑒮𑒲.𑒨𑒴.𑒧𑒹 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒮𑒿 𑒪𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒠𑒹𑒯𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒩𑓂𑒟𑓂𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒢𑒱। २००४ 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒧𑒲𑒧𑒹 𑒡𑒩𑒱 𑒍

𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒂𑒣𑒩𑒹𑒬𑒢𑒏 𑒁𑒣𑒰𑒩 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒦𑒼𑒑𑒪𑒢𑒱। 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒥𑒹𑒩 𑒪𑒰𑒑𑒋 𑒖𑒹 𑒍 𑒂𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒔𑒞𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒞𑒩𑒯 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒡𑒩𑒱 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒋 𑒖𑒲𑒥𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒲𑒯 𑒖𑒏𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒰𑒭𑒰 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧𑒼 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒍 𑒧𑒩𑒋 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒖𑒰𑒥𑒞 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒮𑓂𑒟 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒞𑒰𑒥𑒞 𑒡𑒩𑒱 𑒒𑒩-𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩, 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒞𑒹𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒜𑓃𑒾𑒪𑒢𑒱-𑒪𑒱𑒐𑒾𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒰𑒖, 𑒮𑒹𑒫𑒰-𑒮𑓀𑒒𑒏 𑒏𑒰𑒖, 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏-𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒯𑒩𑒠𑒧 𑒫𑓂𑒨𑒮𑓂𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒩𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒲। 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒒𑒴𑒧𑒱 𑒏𑓄 𑒞𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒪𑒑𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒃𑓀𑒙𑒩𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒏𑒰𑒬𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒚𑒪𑒲𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒰𑒪𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒲 "𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒰𑒏𑒰𑓀𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒰 𑒧𑒼𑒞𑒲 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒳𑒩𑒞𑒰 𑒏𑒲 𑒮𑒲𑒣𑒲 𑒧𑒹𑓀 𑒩𑒯𑒞𑒰 𑒯𑒻" 𑒏𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒞𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒍𑒏𑒩 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒪𑒰𑒑𑒥 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२४.कल्पना झा- डाँहि-पड़ाहिँ बाजल्पियव सहज नहि



कल्पना झा

डाँड़ि-पड़ाहिँ बाजल्पियव सहज नहि

विदेह मैथिलि पोथीक आर्काइव पर जखन आदरणीय अशोक सर रचित पोथी सभक लिस्ट देखलहुँ, त' कथा संग्रह, कविता संग्रह, साक्षात्कार संग्रह, यात्रा कथा, आलोचना, विविध आ नव कविताक पोथी सभक संग एक गोट व्यंग्य संग्रह पर नजरि पड़ल "नीक दैनिक वास्स्कोप" शीर्षक व्यंग्य संग्रह पर नजरि पड़ितहि हम बिनु एकहु क्षण गमओने एहि पोथी कें डाउनलोड केलहुँ।मोन मे आएल "अशोक सर आ व्यंग्य संग्रह?" कनि अविश्विसनीय सन लागल, मैं जिज्ञासा अत्यधिक प्रबल छल, जे देखी, आखिर केहन अछि पोथी।जतवा हम अशोक सर कें देखलियनि/सुनलियनि, स्वभाव सँ ओ बड्ड बेसी सौम्य, मृदुभाषी लोक

बुझेलथि हमरा। तैँ अविश्वसनीय सन बात लागल, जे एहन लोक व्यंग्य कोना लिखि सकैत छथि। ककरो पर कटाक्ष करब, डाँह-पडाहीं बाजब्लिखब सहज नहि। आ जखन ओ स्वभावक विपरीत हुअए, तखन तँ आरो नहि। डाँह-पडाहीं बात अधिक काल कटुए होइत छै, आ कटु बाजब सभक बुत्ताक बात नहि।

पोथी पढ़ब सुरुह केलहुँ, तँ लेखक द्वारा दू शब्द कहबाक क्रम मे "कहबाक अछि"मे सभटा खिस्सा लिखल देखलहुँपढ़लहुँ, जे कोना संजोग बनलनि दैनिक हिन्दुस्तानक एकटा स्तम्भ "डाँह-पडाहीं" लेल व्यंग्य लिखबाक। आ कतेक अबूह लागैत छलनि लेखक कैँ व्यंग्य लिखब, तकर चर्चा सेहो केलनि अछि। लेखक स्वयं ई बात स्वीकार करने छथि, जे "डाँह-पडाहीं लिखब महाग मुश्किल।" आगाँ लेखक इहो बात स्वीकार करैत छथि जे एहि स्तम्भ लेल लिखैत "किछु सामयिक घटना-समाचार पर सोचबा-विचारबाक अवसर भेटल।संगहि इहो महत्वपूर्ण रहल जे अपन स्वभावक विपरीत कने-मने डाँह-पडाहीं कहबाक-बजबाक अवगाति भेल। हिम्मति भेल।"अवगातिए टा नहि भेल सर ! खूब सुतरल व्यंग्य लिखब। आगाँ आरो एहन व्यंग्य संग्रह पढ़बाले भेटए, से अपेक्षा।

सभ सँ पहिने गप्प करब जीवनक लेल सभ सँ महत्वपूर्ण प्राणवायुक स्रोत गाछ-वृक्ष सँ संबंधित विषय पर लिखल गेल "हाइवे पर हरियाली"क। लेखक कतेक नीक संदेश देलनि अछि से देखल जाउ-"हाइवेक निर्माण मे जेना वृक्ष-संहार होइत अछि, से जीवन लेल मारुक भ' रहल अछि। मुदा सरकारे पर सभटा दोष मढ़ि दिब, अपन जिम्मेदारी सँ भागब भेल। तैँ सरकारक संग हमरो सभ कैँ योजनाक शत-प्रतिशत पालन लेल मोस्तैद रह' पड़त।जँ अपने चाँकि नहि रहत, त' आन कैँ कोन गरज छै।"

𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒧𑒼𑒢 𑒁𑒑𑒳𑒂 𑒂 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫𑒏 𑒑𑒚𑒥𑓀𑒡𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒑𑒰𑒩𑒛𑒹𑒢 𑒑𑒰𑒩𑒛𑒹𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒿 "𑒁𑒞𑒞𑓂𑒞𑒯" 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒧𑒼𑒢 𑒑𑒰𑒩𑒛𑒹𑒢 𑒑𑒰𑒩𑒛𑒹𑒢 𑒦' 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒴𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧 ऑ𑒥𑓂𑒖𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬𑒢 ! 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒞' 𑒁𑒞𑒞𑓂𑒞𑒯, 𑒬𑒞𑓂𑒩𑒳𑒞𑒰 𑒞' 𑒁𑒞𑒞𑓂𑒞𑒯। 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒹, 𑒣𑓂𑒩𑒏ृ𑒞𑒱 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫 𑒧𑒹 𑒂𑒃 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒁𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒛𑓀𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒁𑒞𑒞𑓂𑒞𑒯 𑒦' 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒏 𑒂𑒥 𑒧𑒼𑒖𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒮𑒯𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒣𑒰𑒩। 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏'। 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡 𑒞𑒿 𑒁𑒏𑒰𑒮 𑒚𑒹𑒏𑒪।

𑒍𑒢𑒰 "𑒁𑒞𑒞𑓂𑒞𑒯" 𑒮𑒢 𑒂𑒩𑒼 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒙ॉ𑒣𑒱𑒏 𑒮𑒦 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞। "𑒦𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒏𑒳𑒯𑒹𑒮", "𑒧𑒳𑒐𑒾𑒙𑒰", "𑒮𑒣𑒢𑒰𑒏 𑒩𑒹𑒪", 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒖𑒼𑒛𑓃 𑒙ॉ𑒣𑒱𑒏।

"𑒫𑒱𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒑𑒰𑒧"𑒧𑒹 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 -"𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒱 𑒑𑒰𑒨𑒥 𑒦' 𑒑𑒹𑒪।𑒢𑒙𑒱𑓂𑒛𑒰𑒯𑒹 𑒑𑒰𑒨𑒥 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 𑒏𑒱 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒍 𑒥𑒔𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒕𑒯𑒩 𑒂 𑒥𑒰𑒿𑒡 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪।𑒛𑒻𑒧 𑒍𑒏𑒩 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒪𑒼𑒣 𑒏' 𑒠𑒹𑒪𑒏।" 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒥𑒛𑓃𑒏 𑒑𑒰𑒕, 𑒒𑒢𑒑𑒩 𑒣𑒲𑒣𑒛𑓃𑒏 𑒑𑒰𑒕, 𑒯𑒼𑒙𑒯𑒰 𑒣𑒰𑒏𑒛𑓃𑒱𑒏 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰, 𑒥𑒛𑓃𑒠-𑒑𑒰𑒋-𑒧𑒯𑒲𑒮𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰, 𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒩, 𑒐𑒧𑓂𑒯𑒰𑒅𑒩, 𑒍𑒪, 𑒣𑒼𑒩𑒼𑒏 𑒮𑒰𑒑𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒫𑒱𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒏𑒯𑒥 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒬𑒯𑒩 𑒮𑒦𑒏 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏𑒲𑒏𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒯𑒰𑒪 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒻𑒿 𑒌𑒢𑒰 𑒥𑒮𑒰 𑒠𑒱𑒁𑒋, 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒖-𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩𑒼 𑒦𑒹𑒙𑒋 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖-𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒮𑒏𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒞 𑒏𑒹?

"𑒑𑒳𑒝𑒏 𑒏𑒩𑒳 𑒧𑒰𑒢"𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒪𑒱𑒞 𑒤𑒏𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒦 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏, 𑒮𑒙𑒲𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒋, 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒤𑒏𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒦𑒰𑒖𑒹 𑒂𑒥 𑒥𑒼𑒪𑒔𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒣𑒻𑒒 𑒪𑒼𑒏 𑒂 𑒧ॉ𑒛𑓂𑒩𑒢 𑒬𑒼 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒧𑒹 𑒍𑒗𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂𑒥 𑒄 𑒑𑒧𑒻𑒂, 𑒠𑒹𑒯𑒰𑒞𑒲 𑒤𑒏𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒞। 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒹𑒐𑒏, 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒑𑒩𑒞𑒰 𑒕𑒻-"𑒄 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒞-𑒁𑒯𑒱𑒞𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒣𑒻𑒒-𑒕𑒼𑒙𑒏 𑒤𑒹𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 ?𑒌𑒢𑒰 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮𑒰𑒯, 𑒋𑒏 𑒦𑒑𑒰𑒯 𑒏𑒯𑒱𑒏 𑒦' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒯𑒧𑒮𑒦 ?"

"પોખ્નિ સિંગ કે કહિયા ઉડ઼ાહવ" વહુત મહત્વપૂર્ણ વિષય ઉઠાઉ મર્માસ્પર્શ કેઉ હુકુર-હુકુર કરૈત પોખ્નિ સિંગ ઉઉ ઉપ્પકક યતિ ઉચ્ચિત છવ્તિ ઉપ્પક કહૈત છથિ, " અપના સગાક રહાકા નદી- પોખ્નિકિ માયઉ મે વનીક નહણ મુદા આવ તહિ ગરીવ આ વડિન્ન કેઉ ઝા નહઉ અછિ"એકટા ચૌકા દેમય વઉ આઁકડ઼ાક ઉઉઉપ્પ સેહો કેઉવ અછિ ઉપ્પક દેશક આઝાદીક સમય અપના મથિલિ મે ઝાહિઠિમ ચૌવીસ ઉપ્પ પોખ્નિ છિઉઇ તાહિઠિમ આવ માત્ર સાઢ઼ે પાઁચ ઉપ્પ વાઁચઉ અછિ વડિમ્વના ઈ ઝે (ઉપ્પકક શવ્દ મે)-

" ગામ-ગામ મે પૂઝા-પાઠ વઢ઼િ નહઉ અછિ ઝત' કહિયો વાસંતી દુર્ગા પૂઝા નહિ હોઇત છઉ, આેતહુ ઉપ્પ-ઉપ્પ પ્રય ક' ધૂમધામ સઁ પૂઝા કં' નહઉ અછિ ઝર્ન-ઝર્નિ નાતિ ઝડિયો યઉત અછિનાય-ગાન હોઇત અછિ મુદા કૂપોત્સવ, તરાગોત્સવ નહિ હોઇત અછિ ઇનાર આ પોખ્નિ ખુના ક' ઉત્સવ નહિ મનાઓઉ ઝાઇત અછિ એહન ઉત્સવ નહિ હોઇત અછિ ઝાહિ સઁ ઉકક ઉપકાર હુઅએ"સમાઝ કેઁ યેતવતિ ઉપ્પક કહૈત છથિ-" પાનિ વિના કો ઝીવન પોખ્નિ વિના કો ગામ ઘર આઉ, ઝીવન વચાઓઉ ઝાએ પોખ્નિ ખુનાઓઉ ઝાએ"

સગટા વિષય-વસ્તુ વહુત મહત્વપૂર્ણ આ સાર્થક ચુનઉ ગેઉ અછિ ઉપ્પક દ્વારા સમસામયિક વિષય સગ, ઝાહિ મે રાઝનીતિ આ રાઝ નેતા સગ પર વ્યંગ્ય સેહો સમ્મિલિત અછિ "ચુનાવક સ્રગુઆ", " ઈ કકર વઝાર છથિ હો ઝાઇ", "ટમાટર આ પિયાઝક સત્તા સુખ" એહિ શ્રેણી મે આએત મૌસમક મહિમા સઁ સંવંધિત સેહો કિછુ વિષય અછિ, ઝેના-"ગામી કેઉ પટનાક ગર્મી" , "આવ' હે અખાઢ઼!"સમાઝોપયોગી કાઝ દિસ ઉકક ધ્યાન દિઆવૈત વિષય સગ સેહો અછિ સમાઝક પ્રતિ સેહો હમર સગક કિછુ ઝિમ્મેદારી અછિ, સે આવક ઉકકેઁ વિસ્મૃત કં' ગેઉ છવ્તિ સગ અપનેઉઉ વેહાઉ નહૈએ

एक आत्ममंथन कारणमनुष्य-जन्मक सार्थकता मात्र अपनाएब जीवन मे नहि छै, से एक बूझब।

कथेतर साहित्यिक श्रेणी मे आबए बला पोथी "नीक दिनक बाइस्कोप" समाजक लेल उपयोगी तँ अछिए, संग्रहणीयक सेहो लगतनि पाठक कें।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.आशा झा-उजीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषात्मक कथा



आशा झा

ડેડીગામ- મધ્યમાર્ગાક અન્વેષાત્મક કથા

સંસ્કૃત મે એકટા વાક્યાંશ છૈક - ' ગદ્યં કવીનાં નિકષં વદન્તિ' અર્થાત્ કવિત્વક કસૌટી ગદ્ય હોઇછ।છન્દ, લય ગતિ યતિ વન્ધનસઁ મુક્ત હેવાક કારણ ગદ્યમે ભાષાગત અથવા વિષયગત છૂટ ભેટવાક કોનો ગુંજાઇશ નહિ હોઇત છૈક।એત' એકટા ગપ ધ્યાતવ્ય અછિ જે સંસ્કૃતમે ગદ્ય, પદ્ય, નાટક, ચમ્પૂ સભ કાવ્યક શ્રેણીમે અબૈત અછિ।

કથાકાર અશોક મૈથિલી કથાક સુસ્થાપિત નામ છથિ। યદ્યપિ ઓ પાઠકવર્ગકેઁ કવિતા- સંગ્રહ એવં આલોચના આદિ વિધામે સેહો સશક્ત રચનાક ઉપહાર દેને છથિ, તથાપિ સ્પેશલાઇજેશન કથાક્ષેત્રમે।

આઇ કહિ ગપ હુનક કથાસંગ્રહ ' ડેડીગામ' કાપરામર્શ કરૈત છી શીર્ષકથાસઁ। પ્રવાસ મનુષ્ય લેલ વિવશતા અછિ આ મહત્ત્વાકાંક્ષા સેહો। મુદા જેના- જેના વયસ વીતૈત છૈક, કાર્યાલયીય દાયિત્વ ક' મ હોઇત છૈક, ધિયા- પુતાક જિમ્મેવારી ખતમ જકાઁ હોઇત બુઢાઇત છૈક, ધાની સમયક અભાગતિ હોઇ છૈક, અપન જડિ તીવ્રતાક(શિદ્દત) સંગ મોન પડૈત છૈક। કહિ એહને સન અનુભવ હોઇત છનિ કથાનાયક રઘુવંશ બાબૂકેઁ જીવનક સાન્ધ્યવેળામે આ ઓ વિકલ હોમએ લગૈત છથિ ગામ ઘુરવા લેલ। મુદા એત' સકારાત્મક પક્ષ ઈ જે પત્ની આ ધિયા- પુતા સેહો રઘુવંશ બાબૂક ઇચ્છાક સમર્થક। યદ્યપિ દેખલ ગેલ અછિ જે બાહર રહનિહાર બાલબચ્ચા સભ એતેક મૈટ્રોપોલિટનિ ભ' જાઇત છૈક જે માયબાપક ભાવના સેહો હાનિ- લાભક વટખરા પર જોખૈત અછિ। મુદા સાહિત્યકારક કાજ માત્ર યથાર્થ દેખાયબ નહિ, ઓહિ ધરાતલ પર આદર્શ સ્થિતિક સૃજન સેહો હોઇત અછિ।સે કથાકાર એત' પરોક્ષતઃ કહ' ચાહૈત છથિ હેતાહ- એહનો ભ' સકૈછ, પ્રયાસ ત' કરહ।

𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩- 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒏𑒩𑒞, 𑒍𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒏𑒱𑒨𑒪 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒧𑒼𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒛𑓃𑒞, 𑒞𑒻 𑒩𑒰𑒧𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩- 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒋 𑒩𑒒𑒳𑒫𑓀𑒬 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒮𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒋𑒪𑒰𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒫𑒨𑒳𑒫𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹𑓀 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒮𑓀𑒦𑒫𑒞𑓁 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢𑒼𑒦𑒰𑒫 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒡𑒢𑒏𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲𑒏𑒹ँ 𑒏𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒰𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱-

' 𑒏𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒱𑒏' 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾 𑒧𑒰𑒝𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒴, 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒩𑒰𑒮 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒹 𑒔𑒰𑒩𑒴𑒏𑒰𑒞। 𑒞𑒻 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒩 𑒋𑒏 𑒢𑒫 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒥𑒢𑒱 𑒏' 𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒨𑒞? 𑒖𑒼𑒯𑒼 𑒞' 𑒋𑒏 𑒙𑒰 ' 𑒪𑒰𑒃𑒥𑓂𑒩𑒹𑒩𑒲𑒨𑒹' 𑒥' 𑒖𑒰𑒨𑒞। 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒥𑒩𑒳 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒥𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿 । 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒠𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿। 𑒏ॅ𑒼𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿 । 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒮ँ 𑒋𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩- 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒩 𑒦' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒝- 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒝𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿 । 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹 𑒏𑒞𑓂𑒞𑒹 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒻।'

𑒋𑒞' 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒫𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒖𑒰𑒑𑒩𑒴𑒏𑒞𑒰 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞' 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒡𑒢𑒰𑒜𑓂𑒨 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒰𑒧𑓀𑒞𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒫ृ𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒣𑒩 𑒔𑒼𑒙 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।' 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒋𑒞𑒥𑒯𑒱 𑒙𑒰 𑒁𑒏𑒰𑒬' 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒼𑒔𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒏 𑒐𑒑𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

६ 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒬𑒰𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒦 𑒥𑒳𑒜𑓃𑒳𑒏 𑒥𑒳𑒜𑓃𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒏𑒟𑒰𑒢𑒰𑒨𑒏, 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒠𑓂𑒫𑒨, 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒮𑒦𑒰𑒂 𑒮𑒦 𑒧𑒱𑒪𑒱 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑒳𑒐𑒧𑒨 𑒩𑒰𑒑 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

' 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒏 𑒯𑒰𑒃𑒫𑒹' 𑒦𑒾𑒞𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑓂𑒨𑒣𑒢, 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒕𑒪𑒞𑒰 𑒂 𑒢𑒻𑒮𑒩𑓂𑒑𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒁𑓀𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒦𑒰𑒫𑒳𑒏 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒁𑓀𑒞𑒩𑓂𑒫𑒹𑒠𑒢𑒰𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒑𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱।

' 𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢' 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒰𑒧𑒘𑓂𑒖𑒮𑓂𑒨- 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒐𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒨𑒳𑒫𑒏- 𑒨𑒳𑒫𑒞𑒲 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢𑒏

𑒫𑒱𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒼 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒋𑒫𑓀 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒳𑒝𑓂𑒝 𑒁𑒢𑒳𑒩𑒰𑒑 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑒯𑒱 𑒦𑒰𑒫 𑒣𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒦 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱 '𑒮𑓂𑒫𑒰𑒡𑒲𑒢'।𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒍𑒞' 𑒫𑒻𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒖𑒼𑒩 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢𑒱𑒢𑒲 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒯𑒳 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒍 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒩𑒐𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱, 𑒖𑒹 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒢𑓂𑒫𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒧𑒋। 𑒯𑒿, 𑒍 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒢𑒱𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯 𑒪𑒼𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒻 𑒞𑒪𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒃 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒖𑒹 '𑒯𑒧 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒐𑒞𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒩' 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲'।𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒫𑒻𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒫𑒯𑒹𑒪𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒁𑒮𑓂𑒧𑒱𑒞𑒰- 𑒠𑒪𑒢 𑒏𑒳𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒍𑒯𑒱 𑒔𑒼𑒙𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒖𑒪 𑒙𑒲𑒮𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒴𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒏𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒪 𑒢𑒹 𑒍 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒩𑒯𑒻𑒕 𑒂 𑒢𑒹 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲, 𑒍 𑒩𑒯𑒻𑒕 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒍 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲𑒏𑒩𑒝 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒳𑒦𑒴𑒞𑒱 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒔𑒹𑒢𑓂𑒯 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।𑒮𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒙𑒲𑒮 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒨𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒼𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒫𑒹𑒠𑒢𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 -

𑒖𑒹𑒪 𑒧𑒹 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒂 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒫𑒱𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒹𑒩- 𑒥𑒹𑒩 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒼𑒢 𑒧𑒹 𑒒𑒴𑒧𑒱- 𑒤𑒲𑒩𑒱 𑒏𑓀' 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱- ' 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒢𑒱 𑒞' 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒋 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱? 𑒯𑒧 𑒞' 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒯𑒡𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒕𑒪𑒱𑒨𑒢𑒱। 𑒮𑒯𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒏𑒩𑒋 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒢𑒱? 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒠𑒮𑒐𑒞 𑒏𑒩𑒋 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒏' 𑒠𑒹𑒟𑒱𑒢 ? 𑒋𑒯𑒢 𑒥𑒹𑒃𑒧𑒰𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒋? **𑒏𑒲 𑒥𑒹𑒃𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒃𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱? 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒼 𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒃𑒧𑒰𑒢 𑒂 𑒒𑒩𑒼 𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒃𑒧𑒰𑒢। '**

'𑒅𑒧𑒏𑒲' 𑒆𑒣𑒩𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏𑒟𑒰 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱, 𑒣𑒩𑒘𑓂𑒔 '𑒁𑒞𑒱 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒖𑒨𑒹𑒞𑓂' 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒍𑒏𑒩 𑒁𑓀𑒞 𑒂𑒞𑓀𑒏𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।𑒏𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒩𑒴𑒣 𑒦' 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏?𑒏𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒼𑒙𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 - 𑒋𑒞𑒥𑒰 𑒖𑒴𑒩𑒞𑒱, 𑒋𑒞𑒥𑒰 𑒂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱, 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒳𑒐, 𑒠𑒳𑓁𑒐𑒏 𑒁𑒮𑒩𑒱 𑒢𑒯𑒱?

निस्संदेह नहि, तैँ नाम थिक उमको।

मनुष्य कतबो व्यस्त रहओ, कतबो दायित्वमे किएक नहि ओझराएल रहओ, ओकरा अपन रुचि- प्रवृत्ति पर अवश्य ध्यान देबाक चाही।लोक की कहत? हमर समाज की अछि? आदि- आदि निबन्धक सोचमे अपन खुशीक आहुति देब बुद्धिमानी नहि, परञ्च ओहि एक क्षणक खुशीक अनुभव करब जिनगीमे नव ऊर्जा भरैछ, ई सार अछि 'लाथ' कथाक।

'छल' कथा जबरदस्त नाटकीय कथा अछि। कोनो व्यक्ति (भोलिहा) किछु क्षणक लेल कोनो पात्र बनैत अछि त' जेना ओ ओएह भ' जाइत अछि।अभिनयक जीवन्तताक उत्कृष्ट निदर्शन अछि एहि कथामे।

'मनसूबा' मे कैरियरमे बुलंदी पयबाक उन्मादमे युवावर्ग द्वारा घ' र- गृहस्थीक जिम्मेवारीसँ पलायनक बढ़ैत प्रवृत्ति पर चोट। व्यक्त करैत छथि लेखक त' 'खुशीक नाम जीवन' मे अन्तर्जातीय विवाह पर स्वीकृतिक मोहर लगबैत छथि।एत' लेखकक मध्यमार्गीय दृष्टिकोण, सामाजिक स्वीकृति आदि बदलैत समयक संग कदमताल करैत अछि जे आवश्यको।

आशावादी दृष्टिकोण देखबैत अछि कथा 'अभयक बेटाकेँ दूटा दाँत भेलनि अछि' त' मानसिक बीमारी दिसि इंगित करैत अछि 'एना भ' क' किए' ।एकर अतिरिक्त 'ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि', 'राग', 'लेमन आइसक्रीम' आदि कथा नीक बनल अछि।

संक्षेपमे जँ कही त' डैडीगाम एकटा संवेदनशील कथाकारक पन्द्रह गोट रमणगर कथाक संग्रह अछि।कथाक प्रस्तुतिक छटा सुंदर आ मोहक अछि।मात्र चोट व्यक्त करब, साहित्यकारक उद्देश्य नहि, अपितु अपन पात्रक माध्यमसँ ओकर निवारणक उपाय देखायब, मुदा एना सन जेना हम कहाँ किछु कहलहुँ, हम त' खिस्सा कहैत छलहुँ।

𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒞𑓂𑒨𑓀𑒞 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢!

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑒛𑓃𑒠𑓃𑒠𑒱𑒪𑒲𑒣 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰- 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒱 𑒂𑒿𑒔𑒪𑒱𑒏 𑒫𑒻𑒬𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 [' 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒏' 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒏 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒣𑒰𑒚']



𑒠𑒱𑒪𑒲𑒣 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒱 𑒂𑒿𑒔𑒪𑒱𑒏 𑒫𑒻𑒬𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 [' 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒏' 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒏 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒣𑒰𑒚']

𑒮𑒧𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒫𑒹𑒕𑒣 𑒢𑒰𑒧 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒞𑒰𑒏𑒱 - 𑒞𑒏𑒱 𑒏𑒹𑓀 𑒣𑒜𑓃𑒻 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱।𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲 𑒏𑒩𑒥 𑒮𑒯𑒖 𑒢𑒻 𑒕𑒻𑒏। 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒂 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒏𑒲𑒨 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏𑒼𑒝 𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒫𑒱𑒬𑒠 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒪𑒹𑒭𑒝𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒿𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒮𑒦 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒁𑒫𑒑𑒞𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒯𑒧 𑒄 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒦𑒰𑒫, 𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒂 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒯𑒠 𑒡𑒩𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒩𑒱𑒣𑓂𑒩𑒹𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 ' 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒏' 𑒖𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒪 𑒕𑒪 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒲𑒔 𑒋𑒏𑒩 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒋𑒪𑒯𑒳𑒿।𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒱𑒨𑒏 𑒢𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒲𑒨 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞𑒏𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒣𑒩 𑒄 𑒠𑒴𑒙𑒣𑓂𑒣𑒲।

𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒄 𑒦𑒰𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒜𑓀𑒑 𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞

छथि।ओ लकीर के फकीर नहि छथि। कथा कहैत नहि छथि, रचैत छथि से सम्पूर्ण तथ्यक संग।भूत, वर्तमानक तालमेल बैसबैत भविष्योन्मुख कथाक सृजनशिल्पी छथि कथाकार अशोक। एकैसम शताब्दीक आरंभ मे (२००९)ई कथा संग्रह अबैत अछि।एकैसम शताब्दीक आरंभिक वर्षमे दुनियांमे अनेक परिवर्तन भेल। दुनियाँक कम्प्युटरीकरण, मुक्त व्यापार समझौता, इंटरनेटक आविर्भावक प्रभाव वैश्विक पड़य लागल।भारत सेहो प्रभावित भेल सहजहि मिथिला सेहो।एहि सभ बातक प्रभाव एहि कथा संग्रहमे संग्रहित कथा सभपर देखल जा सकैछ।

पाठ आ पुनर्पाठ क पश्चात हम जे कहि बुझि सकलहुँ तकर ई आत्मिक अनुभूति मात्र थिक। हम सबसँ पहिने एहि संग्रहक ' गाँड़' कथापर चर्चा करय चाहब।विधवाक जीवनपर मैथिली मे घनेरो कथा लिखल गेल अछि मुदा गाँड़ कथा ओहि कथा सभसँ बहुत फराक अछि, एना कहि जे क्रान्तिकारी अछि तँ बेजाय नहि।ई एकटा विद्यार्थी मनीषक कथा सँ आरंभ होइछ जे वास्तवमे बदलैत परिवेशमे स्त्री- पुरुषक साम्यताक कथा कहैछ।विधवा जीवनमे आयल बदलावक कथा कहैछ।मनीष अपना मामी सँ आत्मिक स्नेह करैत छथि जखन हुनका मामीक वैधव्य हेबाक खबरि भेटैत छनि तँ ओ व्यग्र भ' जाइत छथि जे ओक सुन्नरि मामी कोना क' उजरा साड़ी पहिरि क' रहती? केहन लगती ? आदि आदि चरित्रक मनोदशा बनैत छनि।एहि क्रम हुनका मोन पड़ैत छथिन अपन विधवा पितामही , अपन पिसियौत बाल विधवा बहिन। मामाक मृत्यु सँ मनीषक मोन व्यथित होइत छनि आ ओ मामीक लेल मुँगा रंगक साल ल' जेबाक आ हुनका ओ साल ओढ़ा देबाक विचार करैत छथि।जखन मनीष मामी सँ भेंट करबाक लेल काशी जाइत छथि तँ हुनका मोनमे अतिरिक्त संतोष होइत छनि से मामीक परिधान देखि क' ।मामी आसमानी रंगक नुआ ब्लाउज पहिरने छथि।हाथमे सोनाक चूड़ी आ घड़ी ।ई हमरा समाजमे एकटा पैघ बदलाव भेल अछि।विधवाक जे अभिशप्त जीवन छल तहिमे बहुत सुधार भेल अछि।आब तँ रहरहां विधवा विवाह सेहो भ' रहल अछि।कथाक माध्यम सँ मिथिलाक विधवा स्त्रीक काशीमे केहन दुर्दशा

छलन्हि तकरो उल्लेख भेल अछि जे लेखक नामी लोकक' नेपोटिज्म'क वृन्दावन आओर विश्वनाथ गलीमे भीख माँगवाली सभक स्थितिक चित्रण सँ बहुत सटीक तुलनात्मक अध्ययन कयलन्हि अछि। एतबहि नै एहि कथाक माध्यम सँ स्त्री काज क' के अपन पैरपर ठाढ़ हुए।अपन परिश्रमक पाइ सँ अपन धियापुताक भरण पोषण करय।सगहि अपन स' ख सिंगार पर अपन कमायल किछु टाका व्यय करय। एहिमे बेजाय की? मार्मिक प्रसंग मनीष कहै छथि अहाँ कें काजक इलम अबैये, त' अपन सेवा कें पाइ मे किये ने बदलब।सेवाक्षेत्र बहुत दिन धरि उपेक्षित रहलैक अछि।एहि कथाक माध्यम सँ कथाकार सेवाक्षेत्रक महत्वक जे रेखांकन कयल अछि से अति महत्वपूर्ण अछि।आर सं बीस वर्षक पछाति हम सेवा क्षेत्रक बढ़ैत डेग कें अकानि सकैत छी।

'मातबर' जे एहि संग्रहक शीर्षक कथा अछि। आर सभ किछु पूँजीपर टिकल अछि।बाप बेटाक सम्बन्ध तक टाकापर आबि क' सिमटि गेल अछि। कोनो धनानी सब मातबर बनय चाहैत अछि।आर डेग -डेग पर महाराज बैसल अछि।ओकर संग देबाक लेल, जी हजूरी करबाक लेल कतेको आ महबूब सनहक मुँहलगुआक कोनो कमी नहि छैक।मुदा एहि पीढ़ीक संघर्ष सेहो देखार अछि, एकटा बात सेख साहेब सन मुँहपर कहियो उचित बजनिहारक दिन- दिन अभाव भेल जा रहल अछि।

एकटा कथा अछि 'दसखत'।एहि कथामे आचार्यजी सन आर. ए. एस. आजुक युगमे भरल पड़ल छथि।भ्रष्टाचार आओर विलासिता आजुक नौकरशाहीक पर्याय भ' गेल अछि।विलासिताक पराकाष्ठा भ' गेल अछि जे आचार्यजी सनक लोक जीवन जे अपन हाथ पैर सास्ते हिलब' नहि चाहैत छथि।एतय धरि जे ड्राइवरपर दसखतो सांकेतिक करय लगैत छथि।परिणाम एहन- एहन लोकक स्थिति आचार्यजी जकाँ भ' जाइत छनि जे हुनक अंग सब शिथिल भ' जाइत छनि अनेक रोगक व्याधि घेरि लैत छनि।शक्तिहीन भ' टुकुर-टुकुर तकैत रहैत छथि।

' કોઠા' આળુક નાળનીતિક વ્યવસ્થાક સટીક ચિત્રણ અછિ। આર ઙેગ ઙેગ પર નાળનીતિક વ્યવસ્થામે નામભાઉ મંડલ સન નેતા જનલ પડ઼લ અછિ।મિળાઉ છૈ ળે કિયો કહલા અઉગ। સકયાઈ કાળ ળૈહ કછુ સાહિત્યકારે ક' સકૈયેઃસે કથાકાર વહુત શ્રનછિ। ક' , વેકછાક' મંત્રીક કમિદાની કેં ૩ઘાર કે અછિ।ઈ માત્ર મંત્રીક કમિદાની નહિ આળુક ઊકતાંત્રિક વેવસ્થાક સહળ પહચાન જ' ગેલ અછિ।કિકના કહ્વૈ? નાગનાથ કે હટાઉ સાંપનાથ કેં ઊાઉ , કી વાઘનાથ કે ઊાઉ , સવ એકે નંગાવદઊેલ- વદઊૈત ળનતાક મોન સેહો અગુતાય ઊાગલ અછિ।ળાતિ ચિત્રક સ્વત્રાત્ર તુઊાપર ઊૈલ ક' જનષ્ટાચાર, આતંકક સવટા સૌ શ્રસિદી ટંચ શ્રાત્મૂઊા સજાક અવત્જિાવ નેતા ઊકતનિ ક' ઊલનિ અછિ। દેખ્યિયૌ કથાકારક પૈની નળરિ કોના દૌડ઼ૈત છનિ, " પ્રયાદા, શ્રરળી, કશ્તિ , ઘોડ઼ાસહ આ માત ખેઊારત રહૈત છથિ।વિનાહ્માત્ર, દઊતિ, પછિડ઼ા, મુસઊમિ.ગોટી પર ગોટી।ત્રળની આ ઔઠાદમિાગ કે ખેઊાદમિાગ ળેળ આ વુદ્ધા પ્રરખ્ર જેઊ ળારત છનિ।ઈઙજારસ ઊૈત છથિ વિનાહ્માત્ર સૌંનાશ ઊૈત છથિ દઊતિ સૌંનોટી વેટી પછિડ઼ા સૌંસમ્માન ઊૈત છથિ મુસઊમિ સૌં।"

અંતમે નામઊાઉ મંડલક પોસઉ સાંપ વેસમ્હાર જ' ળારછ આ સૌસે સાંપ સનસનારત સનસનારત રહૈત અછિ।જનષ્ટાચારક સાંપ, સામાળિક વૈમનસ્યક સાંપ।મુદા ળે હૈક મંત્રી , સંત્રીક કોઠા પર કોઠા ન વનયિ રહલ છૈક।

એકટા કથા અછિ સહળ- અસહળ' ઈ દૂ મિત્રક કથા અછિ, ળે નેનપને સૌં મિત્રતાક વન્હનમે વન્હલ છથિ ।કામેશ્વર ચૌધરી આ રાધેશ્યામ વાવૂ દુનૂ નેનપનેક સંગી છથિ સે સંગયિાંમે પ્રૌઢ઼ાવસ્થા ધરિ નમિહિ રહલ છનિ।કામેશ્વર ગામે પર નહિ ગેલાહ , ઓતહિ ખેતીવારી કરૈત છથિ આ નચૈન સૌં ળીવન ગુદસ્ત કરૈત છથિ।ખ્રુઊ કિ' મેહનતિ કરૈ છથિ આ ળમિ કિ' જોળન કરૈ છથિ।સુખ્ર સૌં જનિ નાતિ સુતૈ છથિ મુદા રાધેશ્યામ પૈઘ પદાધિકારી છથિ, પટના સન નગરમે સજાટા સુખ્ર સુવિધાક અછૈત રાતિ' નનિ્ન પર

𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑒰।𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒑𑒼𑒙𑒲 𑒐𑒨𑒢𑒹 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒢𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱। 𑒩𑒰𑒡𑒹𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒪𑒲𑒬𑒰𑒢 𑒒𑒩 𑒥𑒢𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒥' 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।𑒍 𑒋𑒏 𑒞𑒩𑒯𑒹𑓀 𑒖𑒥𑒩𑒠𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒪𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱।𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒒𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏' 𑒐𑒴𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱।𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒐𑒴𑒥 𑒂𑒠𑒩 𑒮𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒢𑒑𑒩 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒮𑒢 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒠𑒪𑒰𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒪𑒐𑒻 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒣𑒩𑒾𑒚𑒰 𑒂 𑒦𑒩𑒱 𑒥𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒞𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱।𑒋𑒨𑒩𑒏𑓀𑒛𑒲𑒬𑒢 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲 𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒮𑒱 𑒐𑒳𑒖𑒪 𑒕𑒞𑒣𑒩 𑒁𑒏𑒰𑒮𑒏 𑒢𑒲𑒔𑒰𑓀 𑒁𑒐𑒩𑒰 𑒣𑒙𑒱𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒐𑒴𑒥 𑒔𑒻𑒢 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒐 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒹𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒩𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱।𑒄 𑒏𑒟𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒫𑒱𑒏𑒮𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒫 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒯𑒱' 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒐 𑒢𑒻 𑒏𑒲𑒢𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒕।𑒮𑒳𑒐 𑒦𑒼𑒑𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒔𑒻𑒢, 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒕 𑒨𑒟𑒰𑒪𑒰𑒦 𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒮𑒿 ।𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒂𑒥 𑒖𑒱𑒢𑒱𑒮𑒱' 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 𑒂𑒕𑒱।𑒣𑒰𑒃𑒏 𑒯𑒫𑒮 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒞𑒨 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒏? 𑒮𑒹 𑒖𑒱𑒢𑒱𑒮𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒕।𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒖𑒿 𑒑𑒪𑒞 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒠𑒪𑒠𑒪𑒧𑒹 𑒡𑒿𑒮𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒮𑒥 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒳𑒣𑒰 𑒂 𑒮𑒞𑒲𑒬𑒏 𑒠𑒰𑒧𑓂𑒣𑒞𑓂𑒨 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒳𑒑𑓂𑒝 𑒦' 𑒖𑒰𑒃𑒕।𑒋𑒯𑒱 𑒩𑒳𑒑𑓂𑒝𑒞𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒂 𑒢𑒱𑒖𑒲 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱।𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒱𑒣𑓂𑒮𑒰।𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒧𑒹 𑒐𑒴𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒥। 𑒩𑒳𑒣𑒰 𑒄 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒞𑒼 𑒖𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒏𑒩𑒻𑒨𑒹 𑒮𑒹 𑒮𑒳𑒐𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒨𑒹 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒍 𑒮𑒞𑒲𑒬 𑒣𑒩 𑒁𑒢𑒩𑓂𑒑𑒪 𑒠𑒥𑒰𑒫 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒮𑒞𑒲𑒬 𑒕𑒟𑒱 ।𑒂𑒃 𑒪𑒼𑒏 𑒄𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒑𑒳𑒖𑒩 𑒏𑒩𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒁𑒮𑒼𑒏𑒩𑓂𑒨 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒅𑒣𑒦𑒼𑒏𑓂𑒞𑒰𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒠𑒾𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒥 𑒏𑒚𑒱𑒢?

𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒔𑒲𑒖𑒏 '𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒏' 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒩𑒰𑒣 𑒢𑒲𑒏𑒼 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒏 𑒏𑒐𑒢𑒼 -𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 ।𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒹𑒖𑒰𑒨 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒰𑒞?𑒦𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥, 𑒁𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒔𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒥 𑒂𑒥 𑒪𑒖𑒏 𑒑𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪।𑒖𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒥 𑒂𑒥 𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰 𑒯𑒢𑒢 𑒏𑒹 𑒑𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪।𑒂𑒥 𑒪𑒼𑒏 𑒦𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙 𑒂𑒔𑒩𑒝𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕 𑒂 𑒖𑒐𑒢 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒞 𑒣𑒩 𑒕𑒳𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒣𑒩 𑒔𑒜𑓃𑒱 𑒏' 𑒖𑒳𑒪𑒴𑒮𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒢𑒑𑒩 𑒦𑓂𑒩𑒧𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒕। 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥

ઊળક પ૧િાષા વડ઼ ીક સઁ દે઼ છથિ, "ઊળક એહિ કોન પ્૧શ્ન છૈક ? હ્મ સ઼ા ળાહિ ૩દ્યોગમે(ન્૧ષ્ટાયા૧ક ૩દ્યોગ) ઊગઊ છી ાહિમિ ઊળક કોનો મહત્વ઼ ઼હિ છૈક।ઊળ ઁ પહિનિહિ સંગ છોડ઼િ દૈ઼ અછિ।અથવ઼ા ઊક ઊળેકે છોડ઼િ દૈ઼ છૈક।ઊળ યાપ્ય ' ોા સ઼ાક ઊઊ અછિ"

એહિ ટાકાક ૩દ્યોગમે કછુ સંાવ઼ છૈક।ળેઊમે ૧હિો ળાવ઼્નો સુવ઼િયાક ૩પોગ ક' સકૈ઼ છી।૧ા વ઼િાિશ ળ ઊ સં ઼કિસ કિ' ઘુમયિો સકૈ઼ છી।

'ોળ' કથાક માય્યમ સઁ વ્૧હ્માા સમાળક ળે અ઼્ન્વ઼િોય અછિ સે સ્૧છિ સઁ ૩ળાગ૧ કય઼ઊનિ અછિ।એપ્યનો સમાળમે છોટકા- વડ઼કા ઊકક અવ઼શેષ વાઁચઊ અછિ।ાત્૧ ક્૧મકાંડે યનિ વ્૧ાહ્માા ૧હ્વ ઁ કી ોટ? ોળ શી્ષક કથા અનેક ૧હ્ક સામાળકિ પ્૧શ્ન ઠાઢ઼ કૈયે઼।

એકટા કથા અછિ 'પ્ુશીક પ્૧શ્ન' કથા મે વાઊ મનોવ઼ળિ્ઞાન પ્૧ય઼ોગ કય઼ઊ ગેઊ અછિ મુદા અછિ વ઼શિષ્ટ્ય નુપ સઁ એકટા શહ્ની મય્યમ વ઼્ગીય઼ પિવ઼ા૧ક કથા। શહ્ની મય્યમ વ્ગ કોના અપના દૈનકિ ળીવ઼નમે ાવ઼ આ કુંઠા સઁ ળીવ઼ન ળવ઼િ અછિ ળાહિમિ ોના ઊકનકિ કોમઊ મોનક કોન ૧હૈઁ ૩પેક્ષા હોઇ અછિ।કોના એકટા કવ઼િ અપના પુત્૧ કૈઁ કવ઼િ વિનવા સઁ ોકૈ઼ અછિ।એહિ સવેદના કે કી કહ્વૈ? ગ સહિ હોથિ મુદા હ્મના ઘ૧મે ઼હિ સે કોના યઊ? આળુક સમાળક ઈ યનિત્૧ આમ ોઊ ળા ૧હ્ઊ અછિ।

ઊક એોક ાવ઼મે ૧હૈ઼ અછિ।ઈ્ષા આ દ્વ઼ેષ સઁ ોક ે વ્ય઼થિ ૧હૈ઼ અછિ ળે અપન દૈનકિ ળીવ઼નક પ્યૌઢ઼ આ ામસ કોમઊ માનસવઊ ોના સઃાપ૧ ૩ાૈ઼ અછિ।ઈ કથા એપ્ુક મય્ય઼મવ઼્ગક સહી પ્૧ાિયિત્વ઼ કૈ઼ અછિ।

'ાપૂ૧ા' કથામે કોના ઊક અપન અપૂ્ા મહત્વ઼ાકાંક્ષા કે અપન વેટા-વેટી પ૧ ઊદિ ૧હ્ઊ અછિ સે ીક સં દેપ્યા૧ ોઊ અછિ। વ઼ીોદ વાવૂ અપને સંગીત

सम्भव चाहओनि हिनका अपन पति सँ सहयोगो भेटओनि मुदा अपन अयोग्यता वा परास्त्रिम नहि क' सकबाक कारण ओ संगीत नहि सीखि सकलाह मुदा जखन हुनक पुत्र गौतमक अभिरुचि संगीत दिस जगओनि तँ ओकरा उत्साह करय सँ बढ़बैत रहथि उनटे ओकरा हतोत्साहित करयओलनि। ओक एखनो बच्चा समाज भविष्य अपना हिसाबे तय करैत अछि। ओहि हिसाबे बच्चाक व्यक्तित्वक निर्माण करय चाहैत अछि जाहिमे ओकरा बेस टाका भेटै, ओकर प्रयास आ गौरवाव होइबच्चाक अभिरुचिक कोनो महत्व नहि। एहि नाटकक कुंठित शिक्षासँ समाज के उबरबाक बेगरता छैक। गौतम के संगीतक प्रति ओतेक उत्साह रहितो एकटा तानपूरा ओ नहि कीनि सकलाह। एकटा सामंतवादी सोच अछि। एहि संग्रहमे एकटा महत्वपूर्ण कथा अछि 'हरिसिंहदेवी'। सामन्तवादी समाजमे एहन- एहन वर्गीकरण करल गेल जे समाज बँटल रहय आ शोषणक कारबार चलैत रहय। समाज अनेक जातिमे तँ बँटल छल ओहू अनेक उपजाति बनाओल गेल तहिमे ब्राह्मण आ कायस्थ वर्गक लोक जे पंजी व्यवस्था बनाओल गेल ताहि व्यवस्थापर एहि कथाक माध्यम सँ बेस चतगर प्रहार करल गेल अछि। एहि व्यवस्थाक सबटा अवगुणमे रहल। अन्तत: एहि वर्गीकरण सँ समाजकि एकता कमजोर भ' गेल आओर व्यवस्था लागू करयबला राजा हरिसिंहदेव के स्वयं दुर्गुणक आक्रमणक सामना नहि क' भेटलनि आ हारि क' भागल दिस परा गेलाह। समाज एकताबद्ध रहितय तँ हुनका एहन स्थितिक सामना नहि करय पड़तनि। पंजी व्यवस्था मे जाति-उपजातिमे विभाजन सँ समाजकमे टूटक देखाबटी, एक दोसराक उपहास करब, हीन बूझब एहि सबसँ सामाजिक ताना बाना बहुत तनुक होइत गेल। अन्तत: एकैसम शताब्दीयो मे मिथिलामे जातिक श्रेष्ठताक दंभ एखनो बहुत किछु बाँचल अछि। बुड़ि कहाइयो क' सोति बनल रहब कोन श्रेष्ठता भेल? एहि कथाक माध्यम सँ कथाकार जाति व्यवस्थामे श्रेष्ठताक टूटक दंभ पाल' बला लोक समाजकें नीक सँ देखार करबामे बहुत सफल भेलाह अछि।

एहि संग्रहमे एकटा कथा अछि ' जीवन लालक हतियारिनक' जीवन लाल जीवि जातकि अछि। मैट्रिकि पास अछि। बैंक मे आदेशपाल अछि। एतय तक बड़ बढ़ियाँ मुदा जखने ओ प्रोन्नत भ' क', रोकड़पाल (कैसियर) भ' जाइतहोव' लगैत छैक ओकर उत्साही से गामक बाबू भैया सँ आस्थसिक बाबू आ आस्थसिर सभ अपना -अपना तरीका सं जीवनकें उपेक्षा आ तिरस्कार करैये। जीवन ईमानदारी सँ कैसियरक काज करैत रहैत अछि ताहिपर ककरो अपियाण नहि जाइत छैक। बैंकक स्थिति आस्थसिर द्वारा जे ऋण लेबा मे किसानक सभक शोषण करय जाइत अछि तकर जीवन विरोध करैत अछि। जीवन चेयरमैन रामदहनि मशि्रक बड़ आदर करैत अछि। तिनका कहल पर ओ शराब पिअब छोड़ि दैत अछि। जीवन नीक लोक भ' जाइत अछि मुदा ओ अपन स्वाभाविकि क्रिया- कलाप बसिरा जाइए से एहि बात कँ ओकर पत्नी तक अकानि लैत छैक। जीवनक पत्नी कहैत छै, ' हँसियो करै छथि तँ मुसकिया दै छैथ। कियै भ' गेलए युनियाक बाप के? आब बजबो कम करै छै। ठहक्का त' एकदम बसिरा गेलै। येन एहिसँ त' पहिनि नीक रहै।' भाय रामलखन त' ओकरापर सोहे सोह आरोप लगा दैत छैक जे ओ आब बड़का लोक नाहति गप करैये। जीवन के एकाएक अपन स्थितिक भान होइत छैक। ओ ओहि सँ अपन पुरना सहजता मे आपस आबय चाहैये। निश्चय करैये जे ओ पहिनि जकाँ हँसत , बाजत , गप करत। जीवनमे आगू बढ़ब बेजाय नहि मुदा ओहि संग अहाँक बदलैत सहजता अहाँके जीवन राग सँ बहुत दूर करैत सकैये।

' महतो' बदलैत कुदृष्टि कथा थिक। अपना राजनक कार्यालयी संस्कृति कें जीवन्त वर्णन करयवला कथा अछि। सरकारी कार्यालय कोना नहिलापनक अड्डा अछि कियो बनि प्रेशराइट के काज करबाक लल तैयार नहि अछि। ईमानदार आ सोह लोक कें बुरबक, बेहूदा बुझल जाइछ। जेना एहि कथाक महतो कँ बुझल जाइत छैक। अपने कार्यालयमे पी एस सँ अग्रामिक लल कोन दशा होइत छैक महतोक। कोना कार्यालय मे काजक अतिरिक्त सबटा मसल्लापत होइत रहैत छैक। हद तँ तखन भ' जाइत जखन कार्यालयक

' આવેસ' આર ચયિાપૂતાક કૈ૧યિ૧ક પ્૧તિ ભીક વેસ સાકાંક્ષ મ' ગેલ અછિ, સે ભીક વાત મુદા કૈ૧યિ૧ક અતિકિ્ત ળીવ઼નમે આ૧ વહુત કછિુ છૈક, ળે સપ્પિવાક અનુભવ઼ ક૧વાક દ૧કા૧ ૧પ્પૈત અછિાભીક વુહૈ અછિ વચ્ચા પઢ઼િ ભિપ્પિ ભિત ભીક ભીક૧ી- ચાક૧ી મ' ળેતૈ વસ આ૧ કી ?મુદા વાત આતહિ ચિ૧ સીમતિ નહિ ૧હિ ગેલ છૈક।ઉચિત સંસ્કા૧ પ્૧ાપ્ત ક૧વ, ળીવ઼ન સંઘ૧્ષમે આગાં ઉત્પન્ન હેરવભ સમસ્યા સભ સઁ કોના ભડ઼ભ ળાય઼? ઈ સભ મેટૈત છૈક પા૧િવ઼ા૧િક આ સામાળિક ળીવ઼નક અનુભવ઼ સઁ।મુદા આળુક ળે સંસ્ક઼ૃતિ વ઼િકિસતિ મ' ૧હલ અછિ તાહિમે વચ્ચાક ગભતી કમ આ અભિભાવ઼ક વેસી વુહના ળારછ।આવેસ આ દુભા૧આેતવય઼ ળતેક આવ઼શ્યકા।ળતય઼ હટન- ઙટન ળ૧ુ૧ી આેતય઼ આેહ઼ે હુ૧।અળ્ગાકા૧તિ।, નમ્૧તા મનુક્ખક ળીવ઼નક આભૂષામ અછિ।દિનેશ વાવૂ આઓ૧ અનતિ। અપન વેટા કેઁ ઘ' ૧ ભ' ળેવાક ભેલ ગેલ છથિ। કએક ઘંટા સં ટીશનપ૧ પ્૧તીક્ષામે વૈસલ છથિ। આઓ૧ વ઼િુ વેટાક ભેનહિ ટશિનપ૧ સઁ ઘ૧ આપસિ આવિ ળાર છથિ ।હુનક પુત્૧ મહેશ અપન સંગી પ્૧શાન્તક સંગે વતિઆરત ૧હિ ળારહ્યે। માય઼ વાપક કોનો પ૧વાહિ ભૈ કમૈત દેખારહ્યે।આેક૧ ચાભિ- ચભનમિ માય઼- વાપક પ્૧તિ કતહુઁ અનુ૧ાગ નહિ હુભકૈત છૈક।ઈ વહુત ચિતાક વ઼િષય઼ છૈક આળુક પીઢ઼ીક ભેલ।સવ ચાહૈત અછિ હિમ૧ વેટા દૂ૧ , વહુત દૂ૧ દેશ ચભ ળાય઼, ખૂવ ટાકા કમાય઼।સમાળમે એહિ નુપમે હમ૧ ચ૧્ચા હોરત ૧હય઼ ળે શ્હભાં વાવૂક વેટા ૫ુ૧ોપ, અમે૧િકામે એોક અમે૧િકિન ઙાભ૧ કમારત છનિ ।શ્હભાં વાવૂ ખુશી સઁ શુરટ ળકાઁ શ્હટૈત ૧હૈત છથિ।અવ઼સ્થા ખસભાપ૧ આેએહ વેટા ઘુમયિો ક' ળખન નહિ દેખૈત છનિ સ્તિ૧ આહિ અવૈત છનિ।આવેસ એતવય઼ ળતે ળ૧ુ૧ી। ' વૂઢ઼ા ળવિત ૧હભહ' એકટા વ઼િભક્ષામ કથા અછિ।એહિ કથામે ભીક વૂઢ઼ા કેઁ વેવકૂશ્હ વુહૈત અછિ મુદા હમ૧ા ળભેત વૂઢ઼ા સભકેઁ વેવકૂશ્હ વુહૈત છથિ।સમાળ ક૧ેક સંવ઼ેદહીનઅછિ? હુનક પ૧ાિવ઼ા૧મે એોક ગોટા મ૧ તિ ળારહ્યે ભૈયો વૂઢ઼ા ળવિત છથિ।ઈ વૂઢ઼ાક ળળીવ઼ષિા છનિ। સે વુહ્વાક ળ્ગાન એખનો હમ૧ા સમાળમે વ઼િકિસતિ નહિ મેભેક અછિ વ઼ા ભેપ મ' ગેભેક અછિ ।સે ળે કહી।વૂઢ઼ા એહુ અવ઼સ્થામે ભીકક સ્વ઼ાગત- સત્કા૧ કમૈત છથિ।ઉપકા૧ કમૈત છથિ।મુદા વૂઢ઼ા

समाजक चालि चरित्र कें नांगट सेहो करै छथि। ओ अठारह वर्षक युवती सँ विवाह करबाक घोषणा करैत छथि जे अठारह सँ कम आ ने बेसी। कियो जँ उनैस वर्षक युवती सँ विवाह करतथि तँ जुलुम भ' जेतै? वास्तवमे बूढ़ा कें विवाह नै करबाक छनि। ओ समाजक चरित्र कें देखार करय चाहलनि अछि। ताहिमे ओ सशक्त भेलाह अछि। कथाकार सेहो सशक्ततापूर्वक कथा कें बुनावटि मे, ओहिमे नंगटीप देवै बहुत सशक्त रहलाह अछि। एकटा कथा अछि 'प्रतिबिम्ब' ई कथा एकदसि कथाकार श्रोत्रीय समाजक यथास्थितिवादिता पर चरगर प्रहार केलनि अछि तँ दोसर दसि समाजमे जे जातीय दुर्भावना चरमपर अछि तकर नमूना सेहो भेटैत अछि। अर्जुन के जीह कटबाक के प्रयास करैत छैक? ओकरे जातिक लोक। ओहि जातिक कहबैका सभ अर्जुन सनक निःसहाय लोकक लेल किछु जीविकाक ओरियान कियो ने करैत छथि? कियैक नहि अर्जुनक कें पढ़बाक लिखबाक ओरियान समाज करैये? तखन पेट पालैक लेल जत' करौ कहियो चाकरी करैये तकर मजाक उड़बैबला, ओकरा प्रताड़ित करैबला ई केहन समाज अछि? ई द्वैध बहुत भयंकर अछि। से सभ जातिमे बरोबरि अछि। श्रोत्रीय समाजक भोजक वर्णन अद्भुत अछि एहि कथामे। भोज खेबाक आ करबाक संस्कृति श्रोत्रीय ओ ब्राह्मण समाजमे कने बेसिये अछि। से व्यंग्यात्मक शैलीमे भोजकअद्भुत संगीतात्मक वर्णन केलनि अछि।

" भोज सुरु भेलैक त' प्रारंभमे वातावरणमे गम्भीरता छल। क्रमशः मुसकी, कनखुसकी, टोकाटोकी, हंसी, ठट्ठा, ठहक्का, पहिकारी, सात सुर बाज' लागल। आस्ते -आस्ते भोजमे एकटा आलाप आयल। आरोह वा अवरोह मे दही, अम्मट, श्रीखण्ड, लड्डू, रसगुल्ला आ पायसक स्वाद वातावरणमे पसरैत रहल। भोज एकदम संगीतमय भ' उठल।" कथाकार एहि व्यंग्यमे जे संगीतात्मकता उत्पन्न केलनि अछि तखन सहजहि प्रो हरिमोहन झा मोन पड़य लगैत छथि।

से सभ त' ठीक मुदा कथाक अंत प्रदीप लग आबि क' होइये।ओएह प्रदीप जे 'दास- दासनिक' दानक प्रतीक प्राबधानक विरोध करबाक।हलांकि हुनक विरोध यथास्थितिवादक छत्रतार तोपा गेलाभे तोपा गेल, विरोध त' भेल।

एहि संग्रहक अठारहो कथा पढ़बाक पश्चात बहुत आनंदक अनुभव क' रहल छी।हमरा गर्वानुभूति भ' रहल अछि जे हमरा बीच मैथिली भाषामे एहन उद्भट्ट कथाकार सभ छथि।कथाकार अशोकजीक जे छवि हमरा मोनमे अंकित अछि' जे ओ मैथिली कथा कें लोकल सँ ग्लोबल बना देलनि अछि।ई धारणा एहि पोथीक पुनर्पाठ सं कने बेसी मजगुत भेल अछि।हिनकमे हिनक प्रकाशित कथासंग्रह 'डेढ़ियाम' पढ़बाक पश्चात जे आर आस्वस्त भेटल छल से 'मातवर' कथा संग्रहक पुनर्पाठ सँ हमर धारणा आर बहुत बेसी मजगूत भेल अछि।बीस वर्ष पहिने प्रकाशित एहि पोथीक कथासभ एखनो टटका बुझा रहल अछि। प्रस्तुत पोथी दीर्घ अवधि धरि मैथिली कथाक प्रतिनिधित्व करैत रहत, तकर हमरा पूर्ण भरोस अछि।।जे पाठक वा कथाकार एहि पोथी कें नहि पढ़ने होथि कृपया अपने अवश्य पढ़ी से विनम्र आग्रह।

- संपर्क- ६२०७६२७५०८

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓒𑓗𑒁𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰- 𑒛𑒹𑒛𑒲𑒑𑒰𑒧𑓁 𑒋𑒏 𑒁𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯



𑒁𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰

𑒛𑒻𑒛𑒲𑒑𑒰𑒧: 𑒋𑒏 𑒁𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒮𑓂𑒮𑓀𑒠𑒹𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒢𑒲𑒨 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒱 𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒬𑒰𑒧𑒱𑒪 𑒦𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒧𑒼𑒢 𑒏𑒻𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒤𑒳𑒪𑓂𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒱 𑒥𑒹𑒩 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑓀𑒏𑒪𑓂𑒣 𑒥𑒠𑓂𑒡 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒁𑒮𑒧𑓀𑒖𑒮 𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒞' 𑒕𑒪𑒱𑒨𑒢𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒿। 𑒮𑒥 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒼 𑒂 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒥 𑒏𑒟𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒼 𑒮𑒹 𑒞' 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱। 𑒁𑒖𑒲𑒥 𑒠𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒲? 𑒋𑒯𑒢 𑒧𑒹 𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒖𑒲 𑒮𑒿 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒦𑒹𑒪 𑒂 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒫𑒑𑒞 𑒏𑒩𑒹𑒪𑒱𑒨𑒢𑒱 𑒂 𑒪𑒑𑒰𑒪 𑒍 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒏' 𑒠𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫 𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒏𑒻𑓀 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒵𑒞 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒂 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒏𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒂𑒮𑒰𑒢 𑒦' 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒖𑒹 𑒏𑒱 𑒁𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒕𑒪 𑒮𑒹 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒏𑒻𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒂 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒱: 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒹 𑒥𑒮𑒪 (𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒏𑒟𑒰), 𑒍𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒦𑒼𑒩, 𑒧𑒰𑒞𑒥𑒩 𑒂 𑒛𑒻𑒛𑒲𑒑𑒰𑒧। 𑒍𑒢𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒟𑒰 𑒞' 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒮𑒥 𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒮𑒥 𑒏𑒟𑒰 𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒞' 𑒧𑒖𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒑𑒳𑒝𑒱𑒞 𑒦' 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒏-𑒮𑒿-𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒋𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒥 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒥𑒲𑒔 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒂𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒧𑒹 𑒧𑒼𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒿 𑒄 𑒁𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒯𑒰𑒟 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒻𑓀। 𑒁𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒏𑒰𑒖 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒻𑓀 𑒮𑒰𑒡𑒳𑒫𑒰𑒠। 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦' 𑒖𑒰𑒃 𑒞𑒻𑓀 𑒒𑒳𑒩𑒱 𑒂𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲 𑒣𑒩।

𑒍𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒦𑒼𑒩 𑒮𑒢𑓂 १९८९ 𑒧𑒹, 𑒧𑒰𑒞𑒥𑒩 𑒮𑒢𑓂 २००१ 𑒧𑒹, 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒹 𑒥𑒮𑒪 (𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒏𑒟𑒰) 𑒮𑒢𑓂 २०१३ 𑒧𑒹 𑒂 𑒛𑒻𑒛𑒲𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒢𑓂 २०१७ 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪। 𑒂𑒃 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒮𑒥 𑒮𑒿 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑒥 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 ' 𑒛𑒻𑒛𑒲𑒑𑒰𑒧' 𑒣𑒩। 𑒢𑒫𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢, 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒢𑓂 २०१७ 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒩

𑒣𑒼𑒟𑒲 ' 𑒅𑒛𑒲𑒑𑒰𑒧 ' 𑒧𑒹 𑒏𑒳𑒪 𑓑𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒬𑒰𑒧𑒱𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒁𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒏𑒟𑒰 ' 𑒪𑒰𑒟' 𑒋𑒏 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒏𑒟𑒰 𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒐𑒩𑒲𑒠 𑒏' 𑒁𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒢𑒲𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 ' 𑒕𑒪'। 𑒏𑒼-𑒂𑒣𑒩𑒹𑒙𑒱𑒫 𑒮𑒼𑒮𑒰𑒃𑒙𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒂𑒧 𑒮𑒦𑒰 𑒧𑒹 𑒛𑒹𑒪𑒲𑒑𑒹𑒙 𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒧◌𑒵𑒞𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒳𑒣 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒲𑒤𑒏𑒹𑒮 𑒦𑒹𑒙𑒥𑒰𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒕𑒪 𑒖𑒻𑒿 𑒏𑒼-𑒂𑒣𑒩𑒹𑒙𑒱𑒫 𑒮𑒼𑒮𑒰𑒃𑒙𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒗𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒩𑒳𑒖𑒲 𑒛𑒹𑒪𑒲𑒑𑒹𑒙 𑒧𑒳𑒯𑒧𑓂𑒧𑒠 𑒁𑒮𑒪𑒧 𑒥𑒢𑒰 𑒏' 𑒪' 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒗𑒰 𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒰𑒠𑒳𑒩 𑒬𑒰𑒯 𑒖𑒤𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙 𑒐𑒹𑒪𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒟𑒱 𑒂 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒐𑒴𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒁𑒯𑒱𑒥𑒹𑒩 𑒛𑒹𑒪𑒲𑒑𑒹𑒙 𑒧𑒳𑒯𑒧𑓂𑒧𑒠 𑒁𑒮𑒪𑒧 𑒏𑒹𑒩 𑒏𑒱𑒩𑒠𑒰𑒩 𑒩𑒱𑒨𑒪 𑒪𑒰𑒃𑒤 𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒦𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒮𑒔 𑒣𑒳𑒕𑒳 𑒞' 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒱𑒩𑒠𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒖𑒥𑒩𑒠𑒮𑓂𑒞 𑒜𑒪𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫 𑒧𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒹 𑒞' 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 ' 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒡𑒲𑒢' 𑒖𑒹 𑒏𑒱 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒩𑒝 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒖𑒨-𑒖𑒨𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒖𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯 - " 𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒱 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒠' 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲।" 𑒁𑒖𑒨 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱- "𑒏𑒱𑒋 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒠' 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲?" 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒧𑒹 𑒖𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱- " 𑒣𑒞𑒱 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒨 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒦𑒩𑒱 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒄 𑒁𑒣𑒧𑒰𑒢 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲। " 𑒋𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒧𑒹 𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠𑒏 𑒁𑒠𑓂𑒦𑒳𑒞 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒯𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒧𑒹। 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 ' 𑒍 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪 𑒮𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱'। 𑒠𑓀𑒑𑒰 𑒂 𑒏𑒩𑓂𑒤𑓂𑒨𑒴 𑒮𑒿 𑒑𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞 𑒬𑒯𑒩 𑒧𑒹 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒦𑒰𑒛𑓃𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪 𑒪' 𑒏' 𑒔𑒪𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒮𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒹𑒖𑒰𑒨 𑒪𑒼𑒑 𑒞' 𑒮𑒥 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏।

𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒹 𑒏𑒩𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒥। 𑒕𑒚𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 ' 𑒩𑒰𑒑'। 𑒃𑒯𑒼 𑒏𑒟𑒰 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒪𑒱𑒧 𑒏𑒹𑒩 𑒡𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒋𑒏𑒞𑒰 𑒣𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒰𑒞𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 ' 𑒪𑒹𑒧𑒢 𑒂𑒃𑒮𑒏𑓂𑒩𑒲𑒧'। 𑒣𑒩𑒠𑒹𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒮𑒰𑒟𑒲

नहि छैक तकर गामक यात्रा आ वापस शहर आबि अपन पिता सँ गामक यात्रा केर नीक चित्रण भेल अछि। आठम कथा अछि 'उमकी'। दू बाल सखा प्रकाश एवं दिनेश कें बहुत साल क बाद भेंट आ बालपनक नास्टैलजिक स्मृति केर सजीव वर्णन भेल अछि। नवम कथा अछि 'मनसूबा'। आजुक प्रगतिशील युवा तरक्की केर होड़ एवं आधुनिकताक चकाचौंध मे न' त' अपना लेल परवाहि छन्हि आ न' त' माता-पिताक मनसूबा पूर करबाक लालसा। दसम कथा अछि 'अजयक बेटा कें दूटा दाँत भेलनि'। गामक यात्रा एवं स्मृति सँ जुड़ल कथा। अपन गाम मे गाम खोजैत लोकक कथा। वास्तव मे गाम मे आब गाम कहाँ बसैत अछि। गाम त' बसैत अछि रोजी रोटीक जोगाड़ मे प्रवासी बनल लोकक हृदय मे।

एगारहम कथा अछि 'खुशीक नाम जीवन'। पिता पुत्र केर खुशी मे अपन खुशी खोजय वाला माता पिताक कथा। आजुक बदलैत सामाजिक परिवेशक कथा। बारहम कथा अछि 'टीस'। नारी सशक्तिकरण केर पोल खोलय वाला कथा। बनिता अपन पति कें देखि सदैव गौरव बोध करैत रहलीह आ हुनकर पति लक्ष्मीनारायण हुनका बस माटिक मुरुत बुझैत रहलनि। भ्रष्टाचार मे लिप्त लक्ष्मीनारायण कें चलते मात्र कागज कलम पर बनल को-आपरेटिव सोसाइटी केर अध्यक्ष बनिता पुलिसक गिरफ्त मे पड़ि जाइत छथि। जेल मे गेलाक उपरांत बनिता कें बोध होइत छन्हि जे बेइमान त' सबठाम बेइमाने होइत अछि, चाहे घर हो कि बाहर। तेरहम कथा अछि 'छुट्टीक एक दिन'। अहि कथा कें पढ़ि कोलकाताक काॅफी हाउसक अड्डा मोन पड़ि गेल। मैथिली साहित्य पर चर्चा हेतु मैथिलीक एक साहित्यकार साहेब कें घर पर उपस्थित होइत छथि एक नव दम्पति अंकिता ओ अभिनव आ प्रांजलि परिचय पात कें बाद ओहि छुट्टीक दिन शुरू होइत अछि साहित्य पर चर्चा। साहित्यकार महोदय मैथिली मे किएक लिखैत छथि ताहि प्रश्नक जवाब मे कहैत छथि- " सोचै छी मैथिली मे, तँ लिखै छी मैथिली मे।" ओनाहुतो मैथिली

अपन मातृभाषा थीक। मगर अजित कहैत छथि- " एकटा सत, मैथिली अपन भाषा नहि कहाँ गेल छैक जखन मारयो अपन यहिना पूरा सँ मैथिली मे गप्प नहि करै छै त' ओ अपन भाषा कोना हैत?" अंकिता साहित्यकार महोदय सँ पुछैत छथि जे जौं कोनो प्रेम कथा मैथिली मे पढ़बाक हो त' कोन कृति पढ़ी? अचानक सँ कोनो कृतिक नाम हुनका मोन नहि पड़ैत छन्हि। वास्तविकता छैक जे अधिका साहित्यकार कें अपन रचना कें अलावे अन्य साहित्यकार सबहक रचना पढ़बाक कोनो प्रयोजन नहि बुझाइत छन्हि। वर्तमान साहित्यकारक रचना केर स्तर पर सवाल उठैत अछि तखने साहित्यकार महोदय केर पत्नी नीलम सेहो अहि चर्चा मे शामिल होइत छथि चाय आ भूजल मखान केर संग आ बाजि उठैत छथि- " मैथिलीक साहित्यकार के एक दोसराक अदगोर-बदगोर सँ फुर्सत होइत तखन ने पढ़बा जोगर रचना करताह।"

चौदहम कथा अछि ' गामक कातक हाइवे'। बर्बाद होइत पर्यावरण आ ओकर दुष्प्रभाव केर नीक चित्रण भेल अछि। प्रकृति संतुलन बिगड़ि रहल अछि आ आधुनिकताक होड़ मे साँस लेब दूभर भेल जा रहल अछि मुदा हमरा सब एल यतन सत। वास्तविकता त' इएह अछि जे गामक नामो निशान मेटा रहल अछि। अगिला कथा अछि ' एना ने' क' करियौ'। बड़का हाकिम चौधरी जी कें अधीनस्थ कर्मचारी सब हुनकर कमजोरी कें गमा दैत छथि आ सब मिलि हुनकर परिहास मे जुटल रहैत छथि। चौधरी जी कें पचपनक उमरि मे बचपन बाला हरकत देखि संजय कें गलानि होइत छन्हि मुदा चौधरी जी कृष्ण आ गोपी केर रास मे कृष्ण बनि जागल मे स्वप्न देखैत रहैत छथि। एक दिन जखन संजय कें बर्दाश्त नहि होइत छन्हि त' अपन बड़का हाकिम चौधरी जी कैंआँखि खोलबाक अजित काज करैत छथि आ चौधरी जी हुनका गला सँ लगा लैत छथि।

कथाक विषय मे अपन बात कहैत काल कर्म भंग करबाक कोन प्रयोजन छल से सोचि रहल होयब। पंचम कथा केर शीर्षक अछि ' डेडीगाम' आ हिनकर कथा संग्रह केर सेहो एहए नाम अछि। कथाकार अशोक जी केर रचना संसार मे एक-सँ-बढ़ि एक अनुपम कथा सभ अछि। पढ़ैत काल कोनो कथा कें बिनु खतम कयने पोथी छोड़नाइ मुश्किल अछि। सभ कथा वर्तमान सामाजिक परिस्थिति पर लिखल बुझायत। हिनकर कथा सभ मे यथार्थ केर दर्शन होयत, कल्पना लोक मे ई विचरण नहि करैत छथि। पंचम कथा केर विशेषता हमरा ई लागल जे यथार्थ केर संगहि अहि मे आदर्श सेहो देखैत अछि। गामे गाम ढेउआ ढ़ाकी मन्दिर बनि रहल छैक आ वास्तविकता त' एहए छैक जे ओहि मे पूजा अर्चना करय बाला तक केओ नहि रहैत छथि। दोसर गप्प जे आजुक समय मे लोग सेवानिवृत्ति केर उपरान्त घुरि क' अपन गाम नहि आबय चाहैत छथि आ एहन मे डाक्टर रघुवंश लन्दन सँ वापस गाम लौटैत छथि आ सेहो सपरिवार। हँ जे अपन माता-पिताक मृत्युक उपरान्त गाम नहि अबैत छथि तनिका अपन मातृभूमि मे जीवनक अन्तिम क्षण बितबय केर इच्छा जागृत होइत छन्हि। अपन गाम पर सीतारामक एकटा मन्दिर बनबाबय कें विचार ल' क' गाम पहुँचल छलाह। एक तरहे डाक्टर साहेब केर बड़का पुत्र सुव्रत मन्दिर निर्माण केर ओरियान मे लागल रहैत छथि, त' दोसर तरहे छोट पुत्र माणिक टोले टोल घूमि लोग सभ सँ भेंट कय मिथिलाक संस्कृति ओ साहित्यिक चर्चा मे। गाम आबय सँ पूर्व माणिक अपन पिता सँ पुछैत छथि जे - "मिथिला मे अनेक गरीवो किएक छैक? जवाब मे डाक्टर साहेब कहैत छथिन्हि- " अपना ओहि ठाम गरीवो के ग्रामरक्षण करबाक परम्परा रहल आछि।" मन्दिर निर्माण कें लल गामक लोग सँ एक बेर विचार करब जरूरी बूझि पड़ैत छन्हि तैं अहि माटे विचार विमर्श हेतु गामक संस्कृत पाठशाला केर प्रांगण मे एकटा सभाक आयोजन होइत अछि। गामक लोग मन्दिर बनबाक खबर सुनि क' प्रफुल्लित छलथि मुदा माणिक

केर किछु नवका नवतुरिया साथी सब सभा मे प्रश्न ठाढ़ करैत छथि जे मन्दिर बनला सँ गामक कोन उपकार होयत? अहि कें स्थान पर स्कूल, कॉलेज अथवा अस्पताल किएक नहि बनाओल जाय जाहि सँ गामक उपकार होयत? पूरा सभा मे किछु गोटे मन्दिर त' किछु गोटे अस्पताल के पक्ष मे बँटि जाइत छथि। अपन बात सभ्भा लोकन कें बियार अस्पतालक पक्ष मे सुनि डाक्टर साहेब अपन दुविधा कें खत्म करैत गामक बेगारता आ अपन अनुभव कें ध्यान मे राखि स्वेच्छा सँ अपन गाम मे अस्पताल बनवावय केर निर्णय लैत छथि। सभा समाप्त होइत अछि आ सुन्दर अस्पताल निर्माण केर औपचारिकता मे जुटि जाइत छथि। गामे मे नहि मुदा आसपास केर गामक लोग सेहो ई खबर सुनि प्रसन्न होइत छथि। डाक्टर रघुवंश अपन गाम आ माटि पानि मे अन्तिम साँस ल' सकथि से सोचि गाम अयबाक निर्णय लेने छलथि मुदा जखन सँ अस्पताल बनयबाक निर्णय लेलनि अछि जीवय केर सहिन्ता बढ़ि गेलनि अछि आ अपन पत्नी सँ कहैत छथि - "गाम मरबाक लेल नहि, जीबाक लेल होइत छैक।"

- संपर्क- ८४७२८३४८२६

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२८कुमार राहुल- मैथिलि आंखि सं डेडीगाम देखबाक सेहंता (कथाकार

અશોકક કથા પર એકટા પાઠકીય હસ્તક્ષેપ)



કુમાર રાહુલ

મૈથિલિ આંખિ સં ઉડીગામ દેખબાક સેહંતા (કથાકાર અશોકક કથા પર એકટા પાઠકીય હસ્તક્ષેપ(

મથિલિ મે પ્રસિદ્ધિ કહબાક પ્રાચીન સંસ્કૃતિ રહલૈએ આ પ્રસિદ્ધિ કહબાક - જે લુતુક આ કલ છૈક તકર પ્રભાવ મૈથિલીક આધુનિક કથા સાહિત્યક વૈચારિક સ્તર પર ભારતીય સાહિત્ય સં કદમતાલ કરૈત. પરંપરા વની ગેલ રહલાક વાદો મૈથિલી કથા સાહિત્ય 'કહન' મે અલગ રહલ :સંભવત. અહિ 'દેખન' કે કાંચીનાથ ઝા કિરણ, અશોક આ વિભૂતિ આનંદ પ્રભૃતિ મૈથિલી સાહિત્યકાર 'મૈથિલિ આંખિ' કહૈત છથિ સંદર્ભ મે જં વિશેષ. દેખા જુલૈત દુઆરિ નવ એક કથાકાર અશોકક કથા કે દેખી ત દૃષ્ટિકે કથાકાર અશોકક કથા પઢલાક વાદો સુનવાક સેહંતા જગવૈત છૈ. પડત

કથાક રૂપક પરિમાર્જન આ ઓકર સામર્થ્યક વિસ્તાર મૈથિલી કથા સાહિત્ય મે હોરત રહૈકથાકારક. અશોકક કથા એ સં સ્વારક નૈ રહલ. એ-સશક્તતા યા અસશક્તતાક નિર્ણય કરવ ત કઠિન, મુદા ૨ ત માનલ જા સકૈછ જે અપન પરંપરા સં પ્રભાવ ગ્રહણ કરૈત અશોકક કથા અલગ ઊક વનવૈ હિનક પ્રારંભિક કથા હમરા હિસાબે હડવડી મે લખાયલ વુઝાઇ છૈ આ કતૌ-કતૌ સ્વાર્મૂલવદ્ય સેહો, મુદા ૨ કથાકારક પ્રારંભિક અભ્યાસ રહલ

હોસ્નની ળે 'હેયનપનિ' સં 'વૌકા યુપ શ્રછિ' હોસ્ન 'ઉેડી ગામ' નક પહુંચથ
ળં એ ની્ન કથા કે એક સંગ પઢી નં શ્રઊ્ગ નહિો નસ ર્નાસપન્ના ઍિક વુદ્દા પડ્ન
વાના-સામાળકિ નાના-નીન કથા મથિઊક પાનવિાનકિકે દેપ્યવૈન એળં
ઘન મહીન વદઊવ સં શ્રહાં પનયિનિ છી-મથિઊક ગામ, નં ૨ કથા સજ્ઞ સમયક
ર્નાવળ કે ળર્નાવાક ઊઊ થનમામીટનક કાળ કનનૈહ વાન મૈથઊિ કથા કે
૨ નીન કથા નીન યુનુવ પન ડાઢ મૈથઊિ શ્રાંપ્પા સિં દેપ્યવાક ઊઊ પ્નેનનિ કૈન છે
નીન નીન કથ્યક સંગ શ્રાગૂ વઢૈછ એ, મુદા ૨ વુદ્દા ળાયન ળે ૨ શ્રશોકક કથા
થકિ, ળે પઢ્વા સં વેસી સુર્નાવાક સ્યછા ળગવૈન છૈહેયનપનિ મે કોમઊ ભાવના
શ્રપન યનમ પન એ નં વૌકા યુપ શ્રછિ મે શોષાક એકટા શ્રઊગ નનીકા દસિ
સમાળ કે સ્ગનિ કૈછ શ્રા ઉેડી ગામ વદઊન સમયક દસ્નાવેળી કથા થકિ
નીન કથા શ્રશોકક કથાકાન મન કે માપક ઊઊ વૈનોમીટનક કાળ સેહો
ક' સકૈછહેયનપનિ પઢઊ સં પહનિ ઊગન ળે કથાકાન કે વહુની ગપ કહ્વાક
હુનકા ઊગ વહુન નાસ પ્યસ્સિા છર્નાછિર્ના, મુદા શ્રો કહનૈ નહઊ શ્રછકિછિ
નહિા વૌકા યુપ શ્રછિ મે એક સંગ વહુન નાસ કથ્ય પંક્નાસિં કાળ યઊ ઊઊર્ના
છૈ, ળેકના વસ્નિાન પયવાક છઊ, મુદા કથાકાન કોનો હડવડી મે છથશ્રો
એકન કાનાઋ ૨ ભ પૂના વાન પ્યોસ્યા છોડા કે નૈ કહઊર્ના' સકૈછ ળે ળપ્પન ૨
કથા ઊપ્પિઊ ગેઊ શ્રોહ સિમય મે પૈહ પનપિાટી નહઊ હોસ ળે સવ કછિુ નૈ કહઊ
ળાસએ વાન કે વઊ શ્રહૂ સં ભેટ સિકૈએ ળે ળં કહઊ ળાસ નં કછિુએ પંક્નામિે
શ્રશોકક પહઊ કથા સંગ્નહ સં વેસી દોસન કથા સંગ્નહકકથા મે હુનક
કથાકાન મન વસ્નિાન પાશ્રોઊક શ્રછનિયો કનની નેસન સંગ્નહ મે શ્રાનો વેસી
નૈ કનની હુનક ઊગભગ સજ્ઞ કથા મે એકટા હડવડી શ્રથવા શ્રધૂનાપન વુદ્દા પડૈ
શ્રોના પૈહ શ્રધૂનાપન શ્રશોકક કથા સાહનિ્ય કે પઢવાક ઊઊ ઉકસવનિ છૈક છૈ
એકન દોસન પક્ષ સેહો છૈ, ળે શ્રશોકક કથા કે શ્રઊગ પહ્યાન દૈછશ્રો થકિ
કમ શવ્દ મે વવિક પ્નયોગ કૈન શ્રપન કથા મે કવિનિ સન સૂક્નવદ્ય પંક્ના
સપિ્ટીપનિ ૨ વાન શ્રશોકક કથા સાહનિ્ય કે પઢૈન ળાનઊ ળા સકૈછ વાન કહવ
કથા મે કવિનિા ભાવક કમ પ્નયોગ છૈ, વૌકા યુપ શ્રછિ મે શ્રોસ સં વેસી શ્રા
ઉેડી ગામ મે નહૂ સં વેસી

ધ્યાન દેવાક ગપ રહો છૈક ળે અશોક ળં એક દિસ માર્ક્સવાદી વિચારધારા સં પ્રભાવિત છથિ તં દોસર દિસ સ્વારણક મનોવિજ્ઞાન સં સેહોહિનક કથાકાર. સોમદેવક સાહિત્ય સં પ્રેરણા ભેટૈત છન્હિ-કેં ચીજેન્દ્ર, તં રાળકમલ ચૌધરીક સાહિત્ય હિનક મોન કેં સેહો મથૈત છન્હિ વીચક રસ્તા અપનવૈત. છથિ આ અપન કથા ચાસ તૈયાર કરૈત છથિ

ઉડીગામ સંગ્રહક છહ કથા કેં હમ પઢવા સં વેસી સુનવાક ઇચ્છા રખૈત છી. ઇ હમર પાઠકક સીમા સેહો ભ' સકૈએ, મુદા રહો માનલ ળેવાક ચાહી ળે મૈથિલી કથાક ળે ખિસ્સકર પરંપરા છૈ, તેકર વાહક અશોકક કથા એ, અન્યથા ખિસ્સા કહવાક કલા અશોકક પરિપક્વ કથાકાર મન અન્ળાતિ ક' ચુકલ એ આ ચેહ અન્ળન મૈથિલી કથાક સંપન્ન થિક.

હેયરપનિ મે રાત છૈ, તકિયા છૈ, નીન છૈસભટા એકટા વવિ સન ઉભૈ છૈ કથા. ઓહિના વૌકા ચુપ અછિ મે રાત છૈ મધ્ય, નીન છૈ, તકિયા છૈમુદા હેયરપનિ. વૌકા કેં વીમારી છૈ સં આગૂક વાત ઇ કથા અપન વવિક માધ્યમ સં કહૈએ, સેહો હ્રદય રોગળં કથાકાર ચાહતિથ તં સ્પષ્ટ કહિ સકૈત. આ હ્રદય વલ ભેક એ. છલાહ ળે સ્વલ રોગ, મુદા નૈઓકરા કોનો આન અસાધ્ય રોગ નૈ છૈ , હ્રદયક રોગ છૈએતય હેયરપનિ. પૂરા કથા હ્રદય સં સુરૂ હોઇ છૈ આ હ્રદય સં સમાપ્ત સં આગૂ વઢિ કથાકાર એકરા સામાળિક વિદ્રૂપતા આ શોષણ દિસ લ' ળાઇ છથિ, સેહો નહુંએ સંસમાળક આ સાંપ ળે. અળોધ સાંપ વૌકા કેં સાંપ ડસલકૈ ળં કથાકાર ચાહતિથ તં એકરા વીમારી સં સેહો. એખન ચર સ્વેન કાઢને અછિ માનિ સકૈત છલાહ, મુદા તખન કથાક ટોન વદલિ ળાઇતૈ આ અન્થ વિસ્તાર ઓતેક વ્યાપક નૈ ભ' સકતિકળં એ કથા કેં નહુંએ સં કોમલ ઢંગ વિસ્તાર નૈ દેલ ગેલ રહિતૈ તં સંભવ ળે ઇ કથા ' અંતિમ સહ' શીર્ષક કથા સન લગિતૈ. ઇ કથા નક્સલવાડી આંદોલન સં ઉપળલ સાહિત્યિક પ્રવૃતિયો સ્વર :સંભવત હમરા વ્યક્તિગત રૂપે ઇ કથા પસન્નિ એ એકદમ રકલાવી કથા કથા થિક, મુદા ળં ખિસ્સા રૂપે અહાં એકરા પઢવૈ, તં ઇ ઓતેક પ્રભાવી નૈ લાગતવૌકા ચુપ. અછિ કથા સેહો શોષણક વાત કહૈ છૈ, મુદા સીધે નૈ, વવિક માધ્યમેસમાળક.

अजोय केना निम्नवर्गीय वर्ग के डसि रहल छै, तकरा विविध आयाम मे कथाकार कहैत छथि।

हम एकरा जं दोसर शब्द मे कहि त' कहि सकैत छी जे अशोकक कथाक तानी-भरनी सबसं पहिने मिथिलाक जीवनक यथार्थक भूमि के सांकेतिक रूप मे निर्वाह करैएहुनका पाछू अपन कथा कहबाक विराट परंपरा त' छन्हिए, दोसर दिस दोफरल वर्तमान सेहो नेहरूकालीन स्वप्न पूरा नै भेलाक बाद मोहभंग आ तकर बाद विद्रोह, स्तर ओहि विद्रोह अवनति आ तकर बीच मे कथा कहबाक हिस्सकहिम्मत- अशोकक कथा के एक अलग मूड मे ल' जाइएमोनक टूटन -एक दिस सामाजिक आलोड़न आ दोसर दिस देह अलग धाराक विशेषता के सायव एकटा -परस्पर विपरीत बुझा पड़ैत दू अलग साहसिक काज छल जे समन्वित रूप सं अशोकक कथा संसार मे देखा पड़ैछ तैं हुनक किछु कथा स्थूल आ कतिको ओहिना :संभावनायुक्त बुझा सकैए, मुदा कथाकार अशोक मैथिल समाजक मांसल भूमि के कतौकतौ छोड़ि वाक्य संकेत -सं एकरा पूरा करैत छथि, जै सं कथ्य रस्ता नै भटकैए आ यैह कारण छै जे हुनक कथाकार रूप आलोचकीय रूप के छोड़ि अलग रस्ता धरैएकिछु कथा मे बात अपन ओ रफ्तार कलात्मक प्रभाव पर दृष्टि अभावि मे नै कहि के एक संकेतक रूप मे कहैत छथि तै हुनक लेखन ओहिनायुक्त प्रतीत होइछ :संभावित यथार्थक प्रामाणिकताक संग सांकेतिक प्रभावान्वितिक समन्वयकक सभ प्रयत्न सहज भेल हो से हमर कहब नै ए, मुदा कतेक कथा एहन ए, जै मे ए विशेषताक निर्वाह सहजतापूर्वक भेल अछिओहि रातुक भोर, बीका धूप अछि सन किछु कथाक वातायन सजीव आ सक्रिय चरित्रक रूप मे ट्रेजेडीक निर्माण करैए

एना भ' क' कियो, गामक कातक हाइवे बदलैत समाजक गह के पकड़ैत ए, त' अभयक बेटा के टूटा दांत भेलनि, खुशीक नाम जीवन, टीस सन कथा मोन आ परिवारक गहीर इनारक भरथन देखबैत ऐश्वर्थात मोन, परिवार आ अंततसमाजक समाजक नवज के अशोकक कथा नीक जकां पकड़ैए :

𑒫𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒞𑒾𑒏𑒞𑒾 𑒢𑒱𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 -𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏-𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒞𑒾 𑒧𑒰𑒢𑒫. 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒋' 𑒂𑒩 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝𑒏 𑒦𑒨𑒰𑒫𑒯𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒹𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒻𑒋, 𑒖𑒹 𑒂𑒩 𑒫𑒱𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒠𑒻𑒞 𑒌. 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒚𑒰𑒧 𑒋𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒋𑒏 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒫𑒰𑒪 𑒞𑒿 𑒯𑒧 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹. 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒞𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒩𑒔𑒥𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲. 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒋𑒏𑒰𑓀𑒑𑒲 𑒢𑒻 𑒌 .𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒋

- 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏-𑓘𑓘𑓒𑓕𑓒𑓘𑓘𑓗𑓔𑓘

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒.𑓙 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞- 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹



𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞

𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒰𑒏𑒰𑒬𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒰𑒧 𑒅𑒦𑒻𑒩 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏। 𑒢𑒰𑒧𑒹𑒑𑒳𑒝𑒧 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒨 , 𑒖𑒞𑒨 𑒢𑒻 𑒏𑒼𑒢𑒴 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒩𑒯𑒻𑒕 𑒬𑒼𑒏। 𑒮𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒴𑒖𑒴𑒩𑓂𑒑 𑒁𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫𑒏 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒕𑒲, 𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒂 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒪𑒱𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒪𑒼𑒯𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑓑𑓘 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲 𑓑𑓙𑓕𑓓 𑒄𑓐 𑒧𑒹𑒿 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑓕𑓐 𑒮𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒩𑒿𑒔 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞𑒱 𑒯𑒱𑒢𑒱𑒏𑒹𑒙𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒧𑒹𑒿 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒪 - 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢𑒪 𑒂 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒍 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒑𑒜𑒪𑒢𑒱; 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒠𑒱𑒮𑒢 𑒅𑒢𑓂𑒧𑒳𑒐 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒧𑒨 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦𑒱𑒏 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒼𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒧𑒹 𑒁𑒥𑒻𑒕। 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒡𑒢𑓂𑒨

विद्वानक जुटान बनारस मे होइत रहैक। ओतय मैट्रिकमे पढ़ैत कहियोकाल अशोक जी स्वतः रूपेँ कविता सुनल करथि। से मनोरम हिनको कहियो-कहियो उचारैत रहय आ ई ताहि शब्द आ वाक्य रूपेँ अपना रस्ते कागतमे उतारथि। श्रेय करैत चोटीक विद्वान लोकमे अपन रचना देखाकय संशोधन करावथि। आरम्भे मे हुनक रचल साहित्यिक पत्रा के अपनेह हाथे आर्य देवाक आदेश सेहो होइत, जे कष्टप्रद लागैत। तैयो विद्वतजन के बीच अपन मौलिक कविता ल' के पाठ करवाक अवसर भेटतनि मुदा नव लोक छलाह, से कविताक काज छोड़ि खिस्सा लिखय दिस बेसी मोन सँ लघुकथा - कथा लिखिकय देखेवाक अनुभव प्राप्त कयलनि। सन् १९६० सँ ६८ धरि १०-१५ कविता गोष्ठीमे सुना चुकल छलाह, जे यत्र-तत्र पत्रिका आ मिथिला मिहिर मे करीब दर्जनभरि कथा धीरेन्द्र जीके देखलाक बाद १९७१ दिसम्बर अंकमे छपलनि। १९८० मे हिनक कविता संग्रह चक्रव्यूह आयल। अशोक जीक कविताक वनशक्ति कथाके लोक बेशी पसीन करैत। गाम-घरमे लोक अपना नानी - मैयाँ, नाना - बाबा मुँहेँ बालपन सँ मनलग्गू खिस्सा रातिमे सूते सँ पहिले सुनल करय। ई हिस्सक रहने पत्र - पत्रिका मे कथा पढ़ैत पाठक उमा जाथि। ओना कथा लेखन कारय यूरोप सँ आयल अछि, जे वर्तमान समस्या कें केन्द्रमे राखि लिखल जाइक। कुरीति उन्मूलन - पतन संदर्भमे कथा लिखवाक प्रचलन बढ़ल। क्रमशः कथा सँ हरिमोहन झा व्यंग्य कथा दिस आगू बढ़ि नव ढंगक कथा परसवाक परिपाटी पाठक लग आरम्भ कयलनि। से देखा-देखी आधुनिक कथा लेखन क्रम चलैत गेल। तकरबाद छठम दशक सँ समकालीन दौड़ चलल अछि। कथाकार अशोक' क मत छन्हि- "४० ६० सँ पूर्व करीब भावक रचना होय, १९४० - ५० केर बीच खूब हमटगार कथा लिखवाक मैथिली भाषा मेँ परिपाटी भेलैक।" देश स्वतंत्र भेलासन्ता आमूलचूल परिवर्तन' क नव - नव विषय पर कथाकार लोकनिक डेग उठलनि। बहिरा सहकारिता सेवा (१९७८) मेँ पदाधिकारी रूप सँ काज करैत, आब सेवानिवृत्त भेल छथि अशोकजी। हिनक कथा लेखन क्रम अनवरत चलैत रहलैन, आगुओ चलैत रहत

। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒬𑒳𑒧𑒰𑒩 "𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪" 𑒕𑒻𑒏। 𑒍𑒢𑒰 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒞𑒰
𑒥𑒜𑓃𑒾𑒪𑒢𑒱' 𑒥𑒾𑒏𑒰 𑒔𑒳𑒣 𑒕𑒪' 𑒩𑒔𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒧𑒻𑒿 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒴
𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒞𑒿 𑒍𑒯𑒱𑒏𑒱 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒞𑒏𑒩 𑒩𑒮𑒰𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞
𑒞𑒯𑒞𑒏 𑒏𑒹𑒩 𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒣𑒩 𑒮𑓂𑒫𑓀𑒨 𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒯𑓀𑒮𑒢𑒰𑒃 - 𑒏𑒢𑒢𑒰𑒃 𑒫𑒰 𑒖𑒼𑒩-𑒖𑒼𑒩 𑒮𑒿
𑒯𑒿𑒮𑒫, 𑒩𑒼𑒠𑒢 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒫 ; 𑒄 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑓂𑒞𑓁𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒮𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹
𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒑𑒩𑒯𑒻𑒢 𑒖𑒾𑒿 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒑 𑒣𑒩𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒞𑒿 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢- 𑒧𑒢𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪
𑒍𑒯𑒱𑒏𑒱 𑒂𑒦𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒅𑒠𑓂𑒫𑒹𑒪𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒅𑒣𑒩 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒣𑒙𑒪
𑒏𑒿 𑒑𑒳𑒠𑒑𑒳𑒠𑒲 𑒪𑒑𑒻𑒕 𑒮𑒹 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒲 𑒠𑒹𑒥𑒰 𑒪 𑒩𑒯𑒱-𑒩𑒯𑒱𑒏𑒱 𑒖𑒼𑒩 𑒧𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒟𑒰
𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒅𑒢𑓂𑒧𑒳𑒐 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲𑒏 𑒬𑒳𑒩𑒳𑒂𑒞𑒱 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒟𑒰 𑒧𑒰𑒙𑒹 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒲𑒞
𑒩𑒯𑒪 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒫𑒰 𑒏𑒯𑒴 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒖𑒾𑒿 𑒧𑒢𑒼𑒨𑒼𑒑 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏
𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒏𑒨 𑒍𑒯𑒱𑒏𑒱 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫𑒱𑒏𑒱 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒥, 𑒨𑒰𑒯𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏
𑒮𑒧𑒫𑒨𑒮𑒏 𑒯𑒼𑒟𑒱 𑒫𑒰 𑒖𑒹𑒭𑓂𑒙-𑒏𑒢𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒯𑒼𑒟𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒏𑒴 𑒪𑒪 𑒮𑒧 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।
𑒣𑒜𑓃𑒰𑒏𑒴 𑒫𑒰 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒬𑒲𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒿 𑓒𑓑𑒧𑓂 𑒬𑒞𑒰𑒥𑓂𑒠𑒲𑒧𑒹 𑒂𑒢 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏
𑒞𑒳𑒪𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒐𑒴𑒥 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒄 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒏𑒟𑒰 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒐𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕
𑒂𑒩𑒼 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒬𑒹𑒭 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒖𑒲 𑒁𑒦𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒢𑒫𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒁𑒖𑒲𑒞
𑒂𑒖𑒰𑒠 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒏𑒩𑒰𑒫𑒻𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢 - 𑒄 𑒪𑒰𑒪
𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒳𑒬𑓂𑒧𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒃𑒯𑒼
𑒥𑒩𑒼𑒪𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒧𑒞𑒖𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒖𑒑𑒞𑒏𑒹 𑒢𑒫 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒣𑒩 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒹𑒞𑒰 𑒕𑒟𑒱। 𑒍𑒢𑒰
𑒫𑒩𑒹𑒝𑓂𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒖𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒧 𑒥𑒹𑒩𑒧𑒰 𑒧𑒻𑒿 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞
𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒨 ' 𑒏𑒟𑒰 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲𑒏 ' 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒚𑒰𑒧
𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲 𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙𑒒𑒰𑓀𑒙 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒫𑒏𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒕𑒲 -: 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒞𑒩
𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲 " 𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒨" 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢
𑒯𑒼𑒃𑒕, 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒢𑒫 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।" 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒨𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒏𑒿
𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒼𑒯𑒰 𑒮𑒼𑒯𑒲𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒫 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞
𑒏𑒨 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒞𑓂𑒩𑒳𑒙𑒱 𑒣𑒩 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒠𑒱𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒠𑒲𑒫𑒰 𑒂 𑒮𑓀𑒡𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒰𑒪 𑒍𑒯𑒱
𑒞𑒱𑒟𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒂𑒢 - 𑒂𑒢 𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒯𑒢𑒰

શ્નપ્રિમનિકાઊન સંચાન પત્નકિ માધ્યમ શ્ના સંનક્ષક હૈસપ્રિત સઁ ' ઉપમાન ' ત્નમાસિકિ સાહિત્યિકિ પત્નકિ સઁ શ્નઊપ્ય ળઞેવામે શ્નશોક ળી મૈથિઊ ભાષા શ્નભાપ્રિનીક વીચ શ્નગુણઊાહ શ્નછિ નૈ વહુશ્નાચામી વ્યક્તિવ કે ચનીક શ્નશોક ળીક પ્યાનામે હિન્દી ક' સમીક્ષાત્મક શ્નાઊપ્યક પ્નસંશાક સઁગ હિનિકા પશસ્વી નચનાકાન, કથાકાન, કવિ, સમ્પાદક, નવિચકાન, વ્યંગ્યકાન શ્ના શ્નાઊચક નુપેં ળગળપ્રિાન ભ' ઊકક વીચ ચિન્હાચ છથિ હિનિક ચનચિ પોથી -: મૈથિઊ શ્નાઁપ્યિ (નવિચ સંગ્નહ) દામ ૬૮ ટાકા, કથાક ઉપન્યાસ - ઉપન્યાસક કથા (નોવેઊ) દામ ૭૫ ટાકા , ઉઁઊ ગામ (કથા સંગ્નહ) દામ ૨૦૦ ટાકા, વાન વચિાન (નવિચ સંગ્નહ) દામ ૧૫૦ ટાકા , નીક દનિક વાઇસ્કોપ (ઊઘુ કથા) વ્યંગ્ય સંગ્નહ કમિત ૫૦ ટાકા શ્ના શ્નાઁપ્યમિ વસઊ (ચાત્ના કથા) દામ ૧૫૦ ટાકા ' ક મૈથિઊ મેં છન્હિ મૈથિઊ વીચ દૃષ્ટસિમ્પન્ન નચનાકાન શ્નશોક ળીક શ્નોહિ નાતકિ ભોન, માતવન કવિતા સંગ્નહ શ્ના ચક્નવ્યૂહ નકિઊઊ છન્હિ

શ્નશોક ળીક તાનપુના કથાક વાનગી ઐ તનહક હોઇ છૈક, ચથા -: પ્યન્યા શ્ના શ્નામદની ' ક ઊપ્યા ળોપ્યા સંચાનામ ઊઊ સનકાની કાન્યાઊચક શ્નૌઙટિ કનચ સઁ વિનોદ વાવૂ છોહકૈત નહૈત છથિ હુનકા વસ- ટ્નેન મેં સઙક સઁ ચાત્ના કનૈત શ્ના શ્નાનો ળગાહ તથા ઘનોમે શ્નાનામ સનપ્રિા કેં નહીં હોઇ છૈ ઘનક હૃદ્દટિ તઁ શ્નાનો ળાનમાના વુહાન્છાશ્નાસ્થસિ સઁ શ્નાઙટિ કાળ કચ ઉનામે શ્નચઊાપન પૈન્ટ સન્ટક વટન શ્નોઊૈત કાઊ શ્નવ્યવસ્થતિ હોઇ છૈ ઊગી વદૈઊૈત ઘની ટુટઊ વટન દેપ્યિ પત્ની નમહૌહૈન ઙાઢ ક' દઇ છૈક પતિ-પત્ની ક' વીચ વાક્યુદ્ધ સઁ થાહ ચઊૈત છૈ ળે દામ્પત્ય ળીવન નોકહોક સઁ ભનઊ છૈ પત્નકિ ઊહછવ વાભી ળેના વનછી ભોકઊ ળાશ્ન હોઉ વટનો તઁ શ્નાપ્યનિ પત્ની માચા કેં ટાંકિ ટેંચ કનચ પઙૈત છૈ ઐહનસન વિકટ સ્થતિ સઁ વઢઊ ઉઊહન શ્નેન સઁ મઊિનમે પનાભિત હોઇ છૈ એકવેન પુનાભપ્રિા સઁ શ્નાઙટિન મહોદય ઘન શ્નવૈત છૈ, તઁ નેઙપ્રિો પન પ્નસાનતિ ગીત વનકે ચકોઙીવળૈત સુનૈત ચા ૬ ગીત સુનિ ૧૫ સાઊ પુનાન

𑒮𑒧𑒨𑒏𑒹 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒻। 𑒋𑒨𑒯 𑒑𑒲𑒞 𑒢 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒥𑒰𑒥𑒳 𑒧𑒰𑒨𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒐𑒹𑒣 𑒑𑒰𑒥𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒂 𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒩𑒮 𑒧𑒳𑒩𑒲 𑒑𑒲𑒞𑒏𑒱 𑒧𑒰𑒟 𑒜𑒴𑒏𑒻𑒞 𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒑𑓀𑒖𑒲𑒩 𑒦' 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢। 𑓑𑓕 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒲𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒂𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒲𑒐𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒥𑒰𑒪𑒣𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒖𑒴𑒙𑒧𑒱𑒪 𑒥𑒰𑒪 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒂𑒞𑒨 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒣𑒜𑓃𑒨 𑒑𑒳𑒧𑓂𑒯𑒻 𑒔𑒰𑒯𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲 𑒂𑒍𑒩 𑒑𑒝𑒱𑒞𑒏' 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒩𑒯𑒢𑒹 , 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒣𑒩 𑒂𑒨𑒪 𑒑𑒰𑒢𑒥𑒖𑒰𑒢 𑒧𑓀𑒛𑒪𑒏𑒱 𑒑𑒫𑒻𑒨𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒼𑒢𑒧𑒹 𑒂𑒨𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒧𑒴𑒪𑒑𑒰𑒃𑒢 𑒥𑒢𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒞𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪 𑒖𑒹 𑒬𑒫𑒱 𑒢𑒨𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒂𑒨𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱, 𑒮𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒑𑒥𑒻𑒞𑓂 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒞𑒾𑒩 𑒁𑓀𑒑𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒼𑒛 𑒏𑓀𑒛 𑒮𑒿 𑒣𑒞𑒱𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒔𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒨। 𑒣𑒞𑒱𑒖𑒲 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪𑒲 𑒙𑒼𑒪𑒏 𑒒𑒼𑒭𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒪𑒑 𑒖𑒰𑒏𑒨 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒐𑒢𑒏𑒹 𑒠𑒴𑒃 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑓒𑓐 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒩 𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒨𑒧𑒱𑒞 𑒮𑒱𑒐𑒱𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒞𑒳𑒏𑒲 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒞𑒥𑒻𑒕। 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏𑒱 𑒂𑒢- 𑒂𑒢 𑒐𑒩𑒔𑒧𑒹 𑒏𑒣𑒻𑒔 𑒥𑒲𑒮 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒏 𑒍𑒩𑒱𑒨𑒰𑒢 𑒞𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒏𑒛𑒱𑒢𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒦' 𑒮𑒏𑒻𑒏। 𑒂𑒥 𑒏𑒲 𑒯𑒼! 𑒢𑒫 𑒥𑒐𑒹𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒏𑓂𑒭 𑒛𑒰𑒜 𑒯𑒼𑒃𑒕, 𑒮𑒳𑒩𑒮𑒰𑒏 𑒧𑒳𑓀𑒯 𑒥𑒾𑒢𑒹। 𑒮𑒹 𑒒𑒩𑒹𑒪𑒴 𑒏𑒼𑒢 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒞𑒼𑒩𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑓒𑓐𑓐 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒏 𑒯𑒰𑒩𑒧𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒞𑒻𑒏। 𑒂𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞 ! 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒬𑓂𑒚𑒰𑒨𑒞𑒲 𑒖𑒳𑒑𑒞 𑒔𑒩𑒥𑒻𑒞 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒰 𑒧𑒳𑒮 𑒏𑒙𑒫𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒰 𑒧𑒻𑒿 𑒧𑒼𑒧 𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒩𑒏𑒲 𑒦𑒩𑒱 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒛𑒱𑒯𑒹 𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒪𑒻𑒏। 𑒛𑒹𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒂𑒥 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒮𑒩𑒑𑒧 𑒑𑒰𑒥𑒻𑒏 𑒪𑒪 𑒮𑒳𑒩 𑒮𑒿 𑒪𑒑𑒢𑓂𑒣𑒳𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒧𑒹𑒯𑒢𑒻𑒞𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒮𑒹 𑒕𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒣𑒞𑒱𑒖𑒲 𑒖𑒯𑒰𑒿𑒞𑒰 𑒂𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒴 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒑𑒾𑒞𑒧 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨𑒹 𑒩𑒱𑒨𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒰𑒍𑒞। 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒿𑒑 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒋𑒏 𑒣𑒵𑒟𑒏 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒴𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑒹 𑒂𑒃 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒔𑒪𑒴 𑒦𑒼𑒩𑒏𑒰 𑒅𑒐𑒩𑒰𑒯𑒰𑒏 𑒬𑒼 𑒧𑒻𑒿 𑒥𑓂𑒪𑒴 𑒤𑒱𑒪𑓂𑒧 𑒠𑒹𑒐 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒢𑒱𑒨𑒼𑒐 𑒦' 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒲𑒢 𑒯𑒧 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧𑒰 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒨 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒍𑒃 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒮𑒾𑒐𑒑𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒒𑒳𑒩𑒱- 𑒒𑒳𑒩𑒱 𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒻𑒏। 𑒞𑒿 𑒒𑒩𑒹𑒧𑒹 𑒫𑒲𑒮𑒲𑒣𑒲𑓐 𑒂𑒢𑒱 𑒤𑒱𑒪𑓂𑒧 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒦𑒰𑒮 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒧𑒻𑒿 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒳𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒋𑒯𑒢 𑒤𑒱𑒪𑓂𑒧 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒅𑒮𑒏𑒹 - 𑒁𑒢𑒮𑒼𑒯𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒕। 𑒁𑒑𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒰𑒮 𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒰𑒢𑒣𑒳𑒩𑒰 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒱𑒨 𑒧𑒪𑓂𑒪𑒱𑒏𑒖𑒲 𑒮𑒿 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨𑒹 𑒮𑒿𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒱𑒐𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒯𑒰𑒏𑒱𑒧 𑒥𑒢𑒻𑒧𑒹 𑒄 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 - 𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒲𑒐𑒢𑒰𑒃 𑒥𑒛 𑒥𑒰𑒡𑒏 𑒦' 𑒮𑒏𑒻𑒕। 𑒌 𑒥𑒰𑒞 𑒣𑒩 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒲𑒏𑒱 𑒥𑒲𑒔

વિશેષ રૂપેં સહજ સહમતિ વનિ જાઇત છૈ। સાળવાળ આ ગીતનાદક સ્ટેજમે પડ઼િ વેટા વંગાટ વનૈ સઁ થમ્હૈત ય઼। મૈથિલિ સાહિત્ય઼ આન્દોલન મેં એક સમય઼ એહનો આક્રોત જાહિમે કથાકાર અશોક કેર વાદક કથા આ અશોક સઁ પૂર્વક કથા વીચ અશોક યુગક કથા વધિ પર સમ્યક વિમિર્શ હોએત।

અપન મંતવ્ય઼ દતીનાઉિસતાઙ઼વિદેહા઼ગામાઉિયોમ **પર પઠાઉ।**

૨૧૦હરિનાથ ઝા- કથાકાર અશોકક વ્યંગ્ય઼ સંગ્રહ: નીક દનિક વાય઼સ્કોપ



હરિનાથ ઝા

કથાકાર અશોકક વ્યંગ્ય઼ સંગ્રહ: નીક દનિક વાય઼સ્કોપ

વ્યંગ્ય઼ લિખિવ અસાન ગપ નહીં છૈ। ઈ પર ડાહિ-પઢાહિ। મહાગ મુશ્કિલ। ૬ વાત શ્રી અશોકજી સ્વય઼ં કહૈત છથિ મુદા સેહો કાળ અપ્પવાર હિન્દુસ્તાન, હનિકાસઁ કરવાએ લેલકનિ।જેં ૬ અપનાકેં કથાકાર માનથુ

(𑒧𑒰𑒢𑒞𑒱 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒻 𑒍 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱) 𑒢𑒲𑒏𑒹 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒕𑒛𑓃𑒱𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒻 𑒧𑒹, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒥𑒏𑒱𑒕𑒰𑒨𑒥 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒦𑒨 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏𑓂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏𑒹𑒿, 𑒮𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒄 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒏𑒨 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱।

𑒄 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒢𑒯𑒱𑒿, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒃𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒬𑒲𑒪𑒞𑒰, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒥𑒖𑒥𑒰𑒏 𑒬𑒻𑒪𑒲, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒥◌ॉ𑒛𑒲 𑒪𑒻𑓀𑒑𑓂𑒫𑒹𑒖, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒮𑒼𑒔𑒏 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒪𑒰 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑒠𑒐𑒱𑒢 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒩 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒩𑒯𑒨 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒢𑒱। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒞𑒨 𑒖𑒯𑒢 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒏, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒨𑒪𑒏𑒢𑒱। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒧𑓀𑒔 𑒯𑒼, 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒂 𑒅𑒠𑓂𑒒𑒼𑒭𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒏, 𑒞𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃। 𑒏𑒟𑒰 𑒞𑒿 𑒮𑒯𑒖𑒯𑒱, 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒏, 𑒞𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒁𑒬𑒼𑒏। 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒹𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒋𑒏 𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒚𑒹𑒥𑒢𑒹 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒰𑒯, 𑒖𑒞𑒨 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒏, 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒔𑒪 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒻 𑒍 𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒕𑒢𑒱।

𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒑𑓂𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒣𑒩 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹, 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒯𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲, 𑒖𑒹 𑒍 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒛𑓃𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒼𑒣𑒩 𑒪𑒰𑒑𑒴 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪, 𑒞𑒿 𑒋𑒏 𑒣𑒰𑒚𑒏 (𑒢𑒰𑒧 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒁𑒕𑒱, 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒼 𑒞𑒿 𑒋𑒞𑒨 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒏𑒯𑒥) 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒩𑒴𑒮 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒼 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱, 𑒄 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒖𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒂𑒮𑒰𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒻𑒏, 𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒱𑒨𑒻, 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒱𑒨𑒻, 𑒑𑒳𑒢𑒪𑒱𑒨𑒻 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒏𑒼𑒢 𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒰𑒞 ! 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒋𑒏 𑒣𑒹𑒖𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒰 𑒮𑒏𑒪𑒰𑒯, 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱।

𑒮𑒞𑓂𑒞𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒳𑒩𑒴𑒯 𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒻𑒏, 𑒐𑒰𑒮 𑒏' 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨। 𑒍 𑒮𑒦 𑒥𑒴𑒞𑒹 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒦𑒨 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒍𑒢𑒰 𑒂𑒃 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒄 𑒪𑒰𑒑𑒴 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒁𑒕𑒱, 𑒍 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩, 𑒍

पत्र-पत्रिकामे आ ने सुन्दर, सुव्यवस्थित मोट गेटअप-सेटअपमे प्रकाशित करबाक।जेना मोन भेल छपि देलहुँ, तकरासँ मोन भेल प्रशंसा करबा लेलहुँ आ समयानुकूल जोगाड़मे लागि गेलहुँ। साहित्यकार भेनाइ बहुत बहिल आ कठिन काज छैक, तकरामे ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा रहैत छैक, निरन्तर साधनारत रहैत छथि, बेह साहित्यकारक रूपमे चिन्हल, जानल आ मानल जाइत रहलाह। बाँकी बरतमानमे जे छुटि लेथु, बरतमाने ठामे रहलाह। आगू कहू नामो लेनिहार नहिँ!

श्री अशोकजी ओहि बहिल साहित्यकारमे छथि, जनिक मैथिलीकेँ खगता छैक। कथासँ समीक्षा धरि लिखाइ, ई तँ अधिकांश लोक हुनका विषयमे बुझैत छथि, मुदा ई व्यंग्यो लिखलाह, ई बात हमरा जनैत कम लोक बुझैत हेताह। जेना ऊपरमे कहलहुँ, सेहो काज हुनकासँ २०१४सँ २०१६क बीचमे पटनाक दैनिक हिन्दुस्तान लिखबा लेलकथि। दू सालमे ३१टा लिखलथि आ ओ स्तम्भ बन्द भाय गेलैक तँ हुनको व्यंग्य लिखब बन्द भाय गेलथि, ई एहिसँ बुझा पड़ैत अछि जे ओकर दू सालक बाद पुस्तक प्रकाशित भेलथि, ओहिमे ओएह ३१टा। एको टा बेसी नहिँ। तँ जे लिखलथि से मजबूरीवश लिखने हेताह, मुदा लिखलथि तँ ओ सराहनीय प्रशंसित भेलथि, चर्चित भेलथि। हिन्दीक अखबारमे मैथिलीक स्तम्भ छपब, ओहो हिन्दुस्तान सन प्रसिद्ध अखबारमे, तकर एक अलग आ सजग पाठक रहैत छैक, निश्चित प्रत्येक मैथिली जननिहार पढ़ैत छल होयताह आ तँ श्री अशोकजी नीके केलथि, एकर पुस्तकाकार प्रकाशित कय, स्थायी महत्वक बना देलथि,। ओना कोनो अखबार पकड़ैत छथि, तखने हुनकर कलम एहि दिशा दिस ससरैत छथि। श्री अशोकजी स्वयं स्वीकारैत छथि-

अखबारक कारणे चर्चित भेलहुँ। जे सब हमर कोनो पोथी नहिँ पढ़ने रहथि सेहो एकरा पढलथि।कतेक लोक फोन क' कए प्रशंसो कयलथि क' करैथि।सेवा जीवनक त' कतेको सहकर्मी हमर लेखनसँ एही माध्यमे परिचित भेलाह।

आब एहि पुस्तकक विषयमे। एखन बाढ़िक समय अछि, मिथिलाक बहुत क्षेत्र बाढ़िमे डूबल अछि। हिनकर एक व्यंग्य छनि "नहि जाड़ तँ सोहाय मलार। कतेक सटीक व्यंग्य छनि - जखने कारी-कारी मेघ लागए तखने कोढ़ काँपय लागए। अंतमे कहैत छथि - एहन घर हो जाहिमे चुआठ नहिँ हो। नहि घर रहत तखन ने सोहायत मलार। स्मार्ट सिटीसँ लय नेपाल सरकार सँ वार्तापर तक नीक व्यंग्य छनि।

ँचूरत समागमँमे कहैत छथि। नाटक देखि चकबिदोर लागि गेल। चकबिदोर एहि दुआरे जे एक्केस्सम शताब्दीक गप चौदहमे देखाओल गेल छल। सात सौ वर्षहुमे लोकमे कोनो बदलाव नहिँ। बढ़ियाँ तुलनात्मक व्यंग्य करने छथि।

चुनावक ठगुआ पहिल व्यंग्य छनि। बढ़ियाँ जकाँ पार्टी सभकेँ क्लास लेलनि अछि।

२२ मई २०१४ क लिखल व्यंग्यँ नीक दैनिक बाइस्कोपँ जाहि नामपर कतिबोक नामकरण पड़ल अछि, पाँच साल बाद पढि रहल छी, नीक "बाइस्कोप" देखने छलहु।

एहिना एकसँ एक व्यंग्य छनि, कछि व्यंग्य तँ बहुत नीक सुतरलनि अछि, ओना सभ रचना अपन नाम(शीर्षक)क सार्थकता देखबैत अछि। पुरनो लिखल व्यंग्य एखन टटका लगैत अछि। आ आगुओ पढ़ब तँ लागत एखुनक तँ बात थिक। यैह एहि पुस्तकक सार्थकता अछि।

शेखर प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित ई पोथी मात्र ₹५०- मे उपलब्ध अछि।तैं हम आब हिनकर अन्य रचनापर नहिँ कहब। स्वयं पढ़ी आ अपने निर्णय करी। हमरा विश्वास अछि, हमरासँ अपने पूर्ण सहमत होयब।

हँ ! श्री अशोकजीक कोनो विधा साहित्यक अमूल्य निधि जाय मैथिली साहित्यमे सभ दिन पढ़ल जयताह आ से एक मानदंड सावतिक संग।

-𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏-𑓐𑓙𑓔𑓓𑓐𑓗𑓔𑓓𑓐𑓗𑓐

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒𑓑𑓑𑒩𑒫𑒱𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮- 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒟𑒰



𑒩𑒫𑒱𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮

𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒟𑒰

अशोकक कथा:

– शिवशंकर श्रीनिवास

अशोक एहि समयक श्रेष्ठ कथाकार छथि। हिनक पहिल कथा 'विरामसँ पहिने' 1971 मे (26 दिसम्बर 1971) मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल। बादमे हिनक दोसर संग्रह 'ओहि रातिक भोर' मे संग्रहीत भेल– 1991 ई० मे।

एहि कथामे परीक्षा छोड़ि देलाक बाद नायक पहिने स्वभाविक रूपसँ लैत छल, सैह स्वभाविकता ओकरा लेल अस्वभाविक भ' गेल रहै। एम्हर परीक्षा छोड़ि देला पर पिताक चुप्पीक ओकरा बेचैन क' देलकै। ओ अपन पितासँ क्रोधक स्वर सुनबाक इच्छा कयने छल वा बोल-भरोस, किन्तु ओकरा पिताक चुप्पी सहन नहि भ' रहल छैक ओ बीमार भ' गेल, ज्वर भ' गेलै। ज्वरावस्थामे पिताक तलता ओ स्नेह भेटलैक किन्तु परीक्षा छोड़बाक विषयमे कोनो शब्द नहि। किछु दिनक बाद आइ एकटा पत्रमे सेहो ओकरा लेल निराशाक शब्द– आ ओ (नायक) गामसँ आइ कोठलीमे लिखल उपदेशात्मक ओ नीतिपरक शब्दक वाक्यक मोन पाड़' लगलैए। जीवन सँ जोड़' ओ से करैत परेशान होइतो ओ करैत अछि। ओ ओकर विषय संग आगू बढ़ल।

उक्त कथा एकटा बात कहैए, अर्थात जीवनक संवेदना धारा वातावरण अनुसार चलैए, ओहिसँ फूट अपना अनुसार नहि। से अहाँक अपना मन लगबैने हैत आवन अहाँ ओहिसँ दूर भ' सकब। एहि कथाक नायक अपन पितासँ दूर, चलि अयलाक से संभव नहि छल। परीक्षा छोड़ि देला सँ पिता अंका ओ शोकर भेलाह से ओकरो शोचड़ क' देलकै आ वैह ओकरा विराम लेबासँ पहिने जीवन संघर्षक दिशा-प्रेरित क' देलक।

अशोक अपन पहिल कथासँ कथा-संसारमे कथ्य संग आगू बढ़लाह जे महत्वपूर्ण अछि।

हिनक चारिटा कथा-संग्रह प्रकाशित अछि— (1) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह) (1986), (2) ओहि रातिक भोर (1991), (3) मतवर (2008), आ (4) डेढ़ गाछ– (2017)

1971 ई० सँ आइ तक एहि भूमि पर कतेको रूपें सामाजिक ओ राजनीतिक स्थिति बदललैक अछि। कथाकार अशोक एहि सभ स्थितिकेँ गमलनि अछि आ तँए इनक कथाकार संवेदित भेलए आ तँ' अपन कथाक चेतना ल' क' ठाढ़ भेलाह।

हिनक एकटा कथा अछि 'हड्डी'। उक्त कथा 1 जनवरी 1984 केँ मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल जे बादमे 'त्रिकोण (1986)' मे आयल। एहि कथामे कथाकार कहैत छथि जे आइ ईमानदारीकेँ नायक पहिने अपन नोकरी बचबालेल, प्रतिष्ठा लेल अपनौने छल ओ भयानक भ्रष्टाचारिताक समय, ओ ओकर अपन आर्थिक संकटक समयमे देना कोनो हड्डी जकाँ स्वर कण्ठमे (जीवनमे) फँसल छै जकरा ने ओ निकालि सकैए आ ने गीड़ि सकैए। ओ कहैत छै जे मुदा स्वाद सेहो दैत छैक। तात्पर्य जे कोनो संघर्ष स्वर दियाक लेल हो त' ओ दर्द संग आनन्द सेहो दैत छै। उक्त कथा वस्तुत: ओही आनन्दके गीत करैत अछि।

मैथिली साहित्यक आलोचक लोकनिक कहब छनि जे अशोक शहरक कथा लिखैत छथि किन्तु हमरा जनैत से सर्वथा सत्य नहि थिक। कहबालेल तँ ओ बिदेशोसँ कथा (धरती गोल छै) लिखलनि अछि, आ ओहि गामक बातकेँ अपना हिसाबसँ कहलनि। हमरा जनैत अशोक गाममे कम रहितो गामक लोक छथि। मिथिला गामक ठाकि थिक। अशोकक हृदयमे (विचारमे) गामक सौरभ बसैत अछि। तेँ गाम रह' वा शहरक कथा, ई सकल मैथिली कथाकारक जकाँ कहैत छथि। एहि उपन कथा "धरती गोल है" मे रूस गेल भारतीय मैथिल कथा कहैत छथि। असलमे ई अपनाकेँ प्रोडि क' अपन राति-विधि सुनबैत छथि यैह कारण अछि जे तमनके कखनो कोनो छौड़ी 'रे तनेन ओलखी जीबू बेटी' पुकारैत देख तँ कखनो केओ गामक आदि आइन जकाँ तँ ओ पुछिया

(2)

माय जकाँ।' उक्त कथा कहैत अछि जे मनुष्य कोनो वस्तुकेँ अपनासँ फूट भ' क' नहि देखि सकैत अछि। अत' सँ अपनाकेँ देखैत। ओ कोनो वस्तुकेँ अपनासँ जोड़ि देखैत, कहैत अछि। जे बात अशोकक कथा कहैत अछि, वैह बात हम इनकर कथा विषयमे कहैत छी जे ओ ग्रामीण कथा कहैत छथि, शहरी कथा कहैत अछि असलमे ओ मानवीय संवेदनाक कथा कहैत छथि, मैथिलीमे कथा कहैत छथि। समय ओ परिस्थिति समझ रखैत अपन कल्पनाक संसार रचैत छथि आहि संसारमे प्रेम हो, सद्भाव हो। आ एहि क्रममे अनेक विसंगति ओ मानवीय-विद्रोही रूपके कहैत-कहैत आगू बढ़ैत छथि।

हिनक कथा अछि 'आहि रातिक भोर' (एहि नामसँ संग्रह सेहो अछि)। उक्त कथा वैदेही मइ 1989 ई० मे प्रकाशित भेल। अखन कि इरा देशमे जातीयताक उन्माद चरम पर छल। रनास क' मंडल कमीशन। जनवरी 1979 के गठन भेलै तहियेसँ बैकवार्ड- फारवार्डक बीचक दूरी बढ़' लागल जे सामाजिक सौहार्द के नष्ट कर' लागल। अपन उक्त कथामे अशोक इनक बीचमे एहि वैमनस्यताक यथार्थसँ परिचय करबैत सौमनस्य ओ सद्भावक स्थिति आनैत छथि जे हिनक कथाक ध्येय अछि, सुन्दर सहज मानवीय जीवनक समाजक संरचनाक स्थिति कायम करब।

कथाकार अशोककेँ अपन समाज ओ भूमिक जीवन संस्कृतिकेँ कुरू-भाक जे क्षमता छनि आहि बले जे एहि समाजमे जे विकृति अछि ओकरा देखार करैत ओ एकटा महत्वपूर्ण कथा लिखलनि। आहि कथा सभमे एकटा महत्वपूर्ण कथा अछि- 'बूढ़ा जीबैत रहलाह।' असलमे उक्त कथा जिजीविषाक कथा थिक। किन्तु कथामे मिथिला समाजक प्रवृति जे जीवनसँग छैक ओकरा देखार करैत कथा कहैत अछि जे जीवन ओ थिक, जे समाजक बीच चर्चामे रहय। चर्चा सेहो दू तरहक होइ छै। कहल गेल अछि जे कुकर्मे नाम कि सुकर्मे नाम। उक्त कथाक बूढ़ाकेँ चर्चामे बनल रहबाक इच्छा छनि ओ अपन करुणामे डूबल लोकक बीच अपन कुरूप चरित्रसँ खेलैन क' अपन करुणाक ताप पर पानि छीटि आनन्द लेब' चाहै छलाह। दुखक दिनमे हँस' चाहै छलाह।

मिथिलाक एहि समाजके भोजन विन्यासक ओ स्त्री-पुरुष विषयक गपक चर्चामे बड रस भेटै छै। एहि समाजके एहन गप अद्भुत आनन्दक स्वाद दैत छैक। उक्त कथाक बूढ़ा मिनक स्त्री जीन बेर, मरि गेल छनि पुतोहु अभियोग लगा भागि गेलि छनि। एहन लोकक जीवनमे कतेक करुणा हैत से सहजहि बूझल जा सकैछ। किन्तु बूढ़ा आहि करुणासँ बहरेबाक लेल लोकक बीच चर्चामे बनल रहबाक लेल भोजन विन्यासक सेहो आरिआओन करैत छथि आ अपने वियाह करताह से अठारह वर्ष कन्यासँ ने होट, मे पेपक तहर चर्चा चला अपन समाजमे चर्चाक केन्द्र-बिन्दु बनि गेल छथि अपना सम्पति छनि। एकलिक' रवन्ब क' रहलाह। लोककेँ खूआ रहलाह विवाहक चर्चा क' रहलाह आनन्द लऽ रहलाह। लोक हिनका पर हँसैत छथि, ओ लोक पर हँसैत छथि। कथाके आहि विस्तारपूर्वक भोजन ओ गपके विन्याससँग उपस्थित कएल गेलए ओ पाठककेँ लाजवाब क' दैत अछि। अन्तमे बूढ़ाकेँ अपन शिल्पक बेरहिन भावासँ करुणा पूरै छनि त' पाठको आहि करुणामे नहा जाइत अछि। असलमे बूढ़ा वियाह नहि कऽ चर्चामे रहि जीब' चाहै छलाह। कथा आहि सरलतासँ एहि भूमिक लोकक प्रवृति ओ जीवन जीबाक इच्छाके प्रदर्शित कयलक अछि ओ एहि कथाके मैथिलीक एक विशिष्ट कथाक आसन पर बैसा दैत अछि।

हिनक कथा 'सरिसब-साग' के बड़ो आलोचकक सँग मेघन प्रसाद सेहो कहैत छथि जे - 'शका भेल लपकैत लोक कोना विका रहल अछि ओ आखिर कथामे देखल सकैत छी। अशोकक 'सरिसबक साग' एकर इलाका पिरा 106 किलो उक्तमे प्रभाक बुद्धि कुशलता इनर पतिक पत्नीक प्रति सहज भाव थिक।

अशोकक कथा पर टिप्पणी करैत डा० देवकान्त झा कहैत छथि — "अशोकक आहि रातिक भोर (1991) ग्रामीण जीवन मध्य

(3)

सामाजिक जागरुकता पर आधारित पञ्चगोट कथाक स्वतंत्र शृंखला थिक जे समाजके सामंजस्य भावना पर बल दैत छैक। 'मिरजा साहेब' साम्प्रदायिक समस्या पर केन्द्रित एक मार्मिक कथा अछि। 'तेसर प्रश्न' नामक ओहन नासमझीक व्याख्या पर प्रहार करैत अछि जतय नायक गलत ढंगसँ अहल पया देल भारत छथि, उम्हुक मयब मानसिकता पर आधारित एक सुन्दर कथा थिक। सरिसबक साग उपभोक्तावादी संस्कृतिक प्रभाव पर एक प्रभावशाली कथा थिक।

अशोक कथा कहैत अछि जे मनुष्यके अपन मौलिकता नहि छोड़क चाही, से छोड़ब ओतबा कठिनो छैक कारण कोनो ने कोनो रूपमे ओकर मौलिकता अवश्य प्रकट भ' जाइत छैक। यदि कोनो कारणवश केओ बनावटी चालि चलैत अछि तँ ओकर क्षमता जे मूल रूपमे ओकर व्यक्तित्वक विशेषता छैक, ओ ओकरा दबने नहि रहि पबैत अछि। तेँ जाहि स्थितिमे जे केओ अछि ओकरा ओही स्थितिसँ जीवनक पथ पर विकास करक चाही। इएह स्थिति कहनो ककरो विकासक स्थिति पर नहि पहुँचा सकैत। हिनक कथा 'जीवन रजकक हित चिन्तक' एही स्थितिक कथा थिक। जीवन रजक बैंकमे चपरासीसँ कैशियर भ' जाइत अछि। ओकरा बैंक-सेवाक सहज प्रक्रिया तहत पदोन्नति होइत छैक, किन्तु ओकरा भ्रम होइत छैक जे ओकर पदोन्नति अपन ऊँच अधिकारीक कृपासँ भेलैक। ओ भ्रम ओकर सहजता पर प्रहार करैत ओकर मानसिकता एहन भ' जाइत छैक जे ओहि ऊँच अधिकारी सन अपन व्यक्तित्व बनब' चाहैए। एहि बातक कारणे ओ ऊँच अधिकारीक अभिजात्य गंभीरता ओढ़ि लैत अछि। फलतः ओकर जीवनक उन्मुक्तता सुसुप्त भ' जाइत छैक। जाहि कारणेँ ओ ओकर जीवनक सरलता, सहजता नष्ट भ' जाइत छैक किन्तु अन्तमे ओकरा अपन जीवनक मर्म सहजतामे छैक से बोध होइत छैक।

हिनक कथा 'प्रतिलोम' मे मिथिलाक ओहि वर्गक भोज-संस्कृति पर, कथाकार दलित चेतनाक व्यंग्यात्मक प्रहार करैत छथि। जे चेतना सामाजिक न्यायसँ आगू सामाजिक समरसतासँ उपजल सांस्कृतिक चेतनाक रूप थिक।

अशोकक प्रसिद्ध कथा अछि — 'दल'।

राज सत्ताक लोभमे एहि देशक विभिन्न राजनीतिक दल द्वारा जाहि प्रकारेँ धार्मिक उन्मादकेँ प्रज्वलित करबाक चेष्टा भ' रहल अछि ओ जनताक समक्ष अछि। हिन्दूकेँ उत्तेजित करब आ रहल ए, मुसलमानकेँ उत्तेजित करब आब रहल ए। एही अनुसार सन्तुष्ट करबाक प्रयास सेहो भ' रहल अछि। सभ राजनीतिक दल अपन-अपन वोट-बैंक बनेबामे लागल अछि। जाहिसँ एहि देशकेँ, एहि समाजकेँ भारी नोकसान भ' रहलैए।

एहि ठाम प्रश्न उठैत अछि जे राजनीतिक दल एहन षड़यंत्रक नाटक करैत दोसरकेँ अपना पक्षमे ठाढ़ करैत वा उग्र बनेबाक हेतु स्वयं किएक उग्र भ' जाइत छथि? एहि प्रश्नक उत्तर अछि जे लोक ओकर नाटकके नाटक नहि बुझय। यैह डर छै उक्त कथाक मुख्य पात्र भोली झाकेँ। लोक ई नहि बुझै जे ओ 'दल' क' क' मुसलमान बनल अछि, कारण ओकरा ओहि सभामे मुसलमान डेलिगेट बनबाक मजबूरी छलैक। ओ मुसलमानक पाट बड़ ओहि नाटकमे खेला रहल छल। ओकरा भीतरमे जे डर छैक ओ ई जे ओकर 'दल' देखार ने भ' जाइ, ओ ओकरा असहज बना देने छलैक तेँ मुसलमान पर टिप्पणी सुनैत-सुनैत ओ असहज भ' गेल। ओ मुसलमानक नाटक करैत-करैत जेना ठीके मुसलमान भ' जाइए आ ओ बेचैन भ' मुसलमान पक्षमे उग्र भ' जाइत अछि।

(4)

साम्प्रदायिक उग्रताक यथार्थकेँ कथाकार समक्ष अनैत समाजकेँ साकाक्ष करैत छथि, जे कथाकेँ महत्वपूर्ण बना दैत अछि।

हिनक कथा अछि 'लाथ'। लाथ वस्तुतः लाथ थिक। कथामे कथा-नायक एकटा 'कुरता' लैत छथि, वैह कुरता एकटा लाथ थिक असलमे कथा प्रेममे ओहि कुरता लाथे रस भरैत छथि। ओ (कथाकार) एहि कथाक माध्यमे बहुत सहजतासँ प्रेमकेँ अंगेजबाक लेल नव-नव उपक्रमकेँ आवश्यक मानैत छथि।

अशोकक कोनो कथा एतेक सहज रहैत अछि जे लागत जे ओ की कहि रहला है? किन्तु कथाक समाप्तिक बाद जेना अन्हार घरमे भक्क द' इजोत भ' जाय तहिना हिनक कथा जीवन सूक्ष्म व्याख्याक बोध द' जायत। असलमे कथाकारक जीवन आहि सादगी ओ मानव-मूल्यक रक्षा करैत रहल, ओ सादगी हिनक कथाक विशेषता बनि क' सेहो समक्ष अबैत अछि। जे हिनक कथाकेँ महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

प्रसिद्ध आलोचक प्रो० ललितेश मिश्र, हिनक कथाक महत्वकेँ लिखैत कहैत छथि— "इनक (अशोक) सभ कथाक स्वरूप ओहिना अछि जेना चेखब कथाकेँ परिभाषित करैत कहल अछि— 'ए स्लाइस ऑफ लाइफ' अर्थात जीवनक कोनहु क्षण विशेषक कथा। इनक कोनहु कथा रचना, यथा हड्डी, हेयरपिन, मातवर राग-विराग, तानपूरा, शंडू, हरिसिंह देवी, लाथ, स्वाधीन डेमोग्राम, 'ओ टूट साइकिल', 'सिबैत' आदि एना भ' क' 'कियो जीवन समग्रतामे नहि जीबैत अछि', जीवनक उत्थान-अवसानक वर्णन अभिष्ट नहि रहैछ, अपितु क्षण विशेषमे रहैत जीबैत चरित्र सभक मानसिक वैचित्र्य आ मनोवैज्ञानिक यथार्थसँ ओतप्रोत रहैछ राग-विराग, दुविधा-सुविधासँ परिचालित होइछ, उद्घाटित होइछ। एहन चित्रणमे रचना कौशलमे यथार्थ प्रगतिशील भावनाक यथेष्ट संचरण विदित होयत, जेना शंडू कथामे, तहिना प्रच्छन्न व्यंग्यक दर्शन होयत जेना मातवर हरिसिंह देवी कथामे।"

आइ उदारीकरण आ बाजारवादी हाथसँ प्रहार सबसँ बेसी मनुष्य संवेदना सकुचि रहलैक अछि। कुनैक आगू सभ किछु निरर्थक बुझाइ छै। कर्तव्य ओ सम्बन्धक सीमा छोट भ' रहलैए। जीवन-चर्या बदलि रहलैए। एकरे कथा कहैत अछि हिनक 'मनसुबा', किन्तु हिनक कथा कहैत अछि माय (स्त्री) एखनो एहि स्थितिकेँ ठीक क' सकैत अछि। उक्त कथामे रणजीतकेँ माय कहैत छथि — "घरके अहाँ देवाल बुझै छियै की?" एहन कतेको प्रश्न करैत छथि। मुदा उत्तर रणजीत जेना पिताकेँ दै छथिन तेना मायके नहि द' पबै छथि। कथाकार उक्त कथामे कहैत अछि जे मनुष्यक जीवन अछि बल पर घरसँ संसार बसौलक वैह नष्ट भ' रहलैए। एहि कथामे माय ओहि बल (शक्ति)केँ अंगबैत अछि। कहल जाइत छैक स्त्रीये पत्नीक रूपमे घर बसौलक वैह बात ई कथा अपन प्रसंगसँ कहैत अछि जे ओ एखनो घरके टूट' सँ बचा सकैए। कारण माय वा पत्नी कोनो रूपमे स्त्री बेटीक लेल आ बेटियोक लेल आ पतियोक लगीच होइत अछि।

ऐतिहासिक कालमे मनुष्य भोजन लेल जंगले-जंगले

(5)

बौआइल छल । आइ कोनो रूपमे भोजन वा अर्थक चमक लोकके शहरे-शहर, देश-विदेश बौआय रहलैए। माटिक निजताके लोक बिसरि रहलैए। घर-परिवार ओ समाज सभ छिटिया रहलैए, आ सभ मानवीय जुड़ाउके क्षति पहुँचा रहलैए। एहि पर सोचक छैक। ओहि सोचके एतीये बढ़ा सकैए। मानवीय संवेदनाके औड़ि सकैए। हमरा जनैत उक्त कथा ओहि बातके प्रेरित करैत अछि।

एहि पीढ़ीक कथाक विषय पर ध्यान देब तँ ओहिमे कोनो जमीन पर अधिकार लैल संघर्ष नहि भेटत वा कोनो श्रमिक आ मालिक बीच कोनो झमेला नहि भेटत से एहि कारणें नहि जे आइ समाजमे एहि तरहक बात नहि अछि, किन्तु समाज मे दोसर तरह संघर्ष बढ़ि गेल अछि जे मानवीय स्वरूप पर प्रहार क' रहल ए। आइ जातीय संघर्ष धार्मिक उत्पीड़न बढ़ल अछि, भूमंडलीकरण ओ बाजारवादक वातावरण मानवीय स्वभावके आत्मकेन्द्रित क' रहल अछि, एहि स्थितिके परिधि मैथिली कथा समाजके सचेत करैत लिखा रहल अछि।

अशोकक कथा 'स्वाधीन' मे स्त्री अपन अनिच्छाक विरुद्ध पतिक बलात्कारसँ अपन गर्भमे पलैत बच्चाक माय नहि बनऽ चाहैत छथि आ अन्तत: ओ नहिये बनैत छथि। उक्त कथामे नारी प्रबल स्वाधीनताक बोध आयल'ए जे परम्परासँ एकदम उलट अछि किन्तु ओहिमे स्त्रीक ~~स्वभाव~~ स्वाभिमानक प्रबल वैचारिकता अछि जे कथाके महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

हिनक प्रसिद्ध कथा 'डैडीगाम' कहैत अछि जे आमुक समयमे जेना कोनो श्रमिक संस्कृति पर प्रहार भ' रहलैए ओही वेगमे अपन परिचय, अपन संस्कृति बचेबाक भाव सेहो कोनो भू-खण्ड पर बढ़ि रहलैए। उक्त कथामे यैह बात आयल'छ जे जेना गाम सँ पलायन भ' रहलैए ओही हिसाब लोक अपन गामक उन्नति सेहो चाहि रहल अछि। गामक लोक आब गाममे कोनो मंदिर निर्माणसँ बेसी अस्पताल खोलब पर प्रफुल्लित भ' रहल'ए जे आवश्यको अछि, उक्त कथा एहि बातके बहुत गहींर तक ल' जा ~~गामक लोकके~~ गामक लोकके ओबर प्रगतिक सोच दैत अछि।

एहि रूपेँ हम देखैत छी जे अशोकक कथाक दृष्टि नव-निर्माणक अछि, जे एहि भूमि माटिसँ फूटि समस्त हाइत कथाक विकासके नव मोड़ दैत अछि।

□

२.१२.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' - अशोकजीक कथामे कथापर विमर्श



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

अशोकजीक कथामे कथापर विमर्श

अशोकजीक कथामे मैथिली कथापर विमर्श आकर्षित करैत अछि।

मैथिली कथाक अतीत, वर्तमान आ भविष्यपर विमर्श अशोकजीक 'छुट्टीक एक दिन' सँ पहिने कोनो कथामे हम नहि पढने छी। वर्तमान स्थिति ई अछि जे बहुत घरमे गप-सपमे मैथिलीक प्रयोग कम भ' गेल अछि। माइयो अपन धिया-पुतासँ मैथिलीमे गप नहि करै छथि, पढ़ाइ-लिखाइ, नोकरी-चाकरी, बजार-हाट, टीवी-सिनेमा सभ ठाम हिन्दी-अंग्रेजी पसरल अछि। जीवनमे मैथिलीक लेल स्थान बहुत कम भ' गेल अछि, जकर परिणाम अछि जे मैथिलीक प्रति अपनत्व आ ममत्व कमल जा रहल अछि।

𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱। 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒜𑒪 𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒢𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒟𑒰-𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒞𑒰 ? 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒏𑒞𑒻 ? 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑒰𑒨𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑒰𑒨𑒲 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒥𑒪 𑒣𑒴𑒖𑒲𑒣𑒞𑒱 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒋𑒞𑒰𑒯 ? 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒥𑒖𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒞𑒻 𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒱 𑒪𑒱𑒐𑒞𑒰𑒯 ?

𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒁𑒦𑒱𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞 𑒏' 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒹 𑒋𑒐𑒢 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒞 𑒕𑒣𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒞𑒲𑒞 𑒃 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒩𑒱𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒗𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒣𑒜𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒱𑒐𑒪𑒢𑒱। 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒩𑒱𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒐𑒴𑒥 𑒣𑒜𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒃𑒨𑒼 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒖𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 ? 𑒏𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒜𑒥𑒰 𑒖𑒼𑒑𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒔𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 ? 𑒏𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒋𑒏-𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 ?

𑒯𑒩𑒱𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒾𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒨 𑒕𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒮𑓀𑒑𑒱𑒏 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒢𑒱।

𑒏𑒲 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒾𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒁𑒕𑒱 ? 𑒏𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒏𑒪𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 ? 𑒏𑒲 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒩𑒼𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 ? 𑒏𑒲 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒰𑒍 𑒂 𑒪𑒑𑒰𑒍 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒏𑒧 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑒱 ? 𑒏𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂𑒑𑒴 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 ?

𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒮𑒼𑒔 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

હ્રમોહન વાવૂ શ્રપન કન્યાદાન ઉપન્યાસમે ઈ કામના વ્યક્ત કેને છથિ જે શારીરિક શ્રો માનસિક સ્તર પર સમાન સ્થિતિક યુવક-યુવતી યદિ સ્વેચ્છાપૂર્વક વિવાહ કરૈત છથિ ત ઐહ શ્રાદર્શ વિવાહ થિક, એહિસઁ સમાજ વદલત।

સે ત' ભેલ શ્રછિ। પ્રેમ-વિવાહ ત' ભેલ શ્રછિ, જાતિ શ્રા ધર્મક વન્ધન ટૂટિ રહલ શ્રછિ। સમાજ વદલિ રહલ શ્રછિ, નવ સમાજ વનિ રહલ શ્રછિ, મુદા સાહિત્યમે જેના શ્રભિવ્યક્ત હેવાક ચાહી સે નહિ ત' ભેલ શ્રછિ। પ્રશ્ન રહૈ ઉઠૈત શ્રછિ જે હમર સમાજ ધન શ્રથવા જાતિક હાનિ સહર્ષ સ્વીકાર ક' લેલ શ્રછિ શ્રથવા શ્રભિભાવકક શ્રસહમતિક કારણ યુવક-યુવતીકેં કોર્ટક શરણમે જાય પડૈત છનિ।

પ્રશ્ન શ્રછિ જે નવ સમાજક હલચલ મૈથિલી સાહિત્યમે કિએ નહિ દેખાર દ' રહલ શ્રછિ? પરિવર્તનક શ્રાકાંક્ષી યુવા પીઢ़ીક લેલ કી સાહિત્યક શ્રભાવ ત' ગેલ શ્રછિ? કી મૈથિલીમે પ્રેમ પ્રગટ કરવાક લેલ' શ્રાર લેવ પૂ' સન શવ્દક શ્રભાવ શ્રછિ? ઐહ સવ કિછુ પ્રશ્ન શ્રછિ જાહિપર વિમર્શ શ્રછિ એહિ કિથામે।

વિમર્શમે ચારિ ગોટે ભાગ લૈત છથિ શ્રભિનવ, શ્રંકિતા, નીલમ શ્રા સ્વયં કથાકાર।

શ્રભિનવ એમ વી એ ક' ક' નોકરિયા મોવાઇલ કમ્પનીમે કાજ કરૈત છથિ, શ્રંકિતા શ્રંગ્રેજી સાહિત્યસઁ એમ એ કય પીએચડી ક' રહલ છથિ, નીલમ ડીએવીમે વિજ્ઞાનક શિક્ષક છથિ।

શ્રભિનવ શ્રા શ્રંકિતા શ્રંતરજાતીય પ્રેમ વિવાહ કેને છથિ। શ્રંકિતાકેં સાહિત્યમે રૂચિ છનિ, કથા, કવિતા સભ પઢૈત છથિ, શ્રનુવાદક માધ્યમસઁ સભ ભાષાક કવિતા, કથા પઢૈત રહૈત છથિ, મૈથિલીસઁ લગાશ્રો છનિ, મૈથિલી સાહિત્ય વેસી

નહિ પઢને છથિ મુદા, પઢવાક ઇચ્છા રહૈત છનિ। વળારમે આઓઇ કનિવાક ઉઇ અજાનિવ઼ આ અંકતિાક વીચ મતાન્તરક વાત કથાકેં સરસ વનવૈત અછિ।

અજાનિવ઼ આ અંકતિાસઁ ઇહો પતા ચલૈત અછિ જે સમાજ એખન એહિ પરવિર્તનકે સહજ સ્વ઼ીકૃત િદેવામે સક્ષમ નહિ ભેલ અછિ, એકટા પક્ષ એકરા ચનક હાનિ વુઝૈત અછિ આ દોસર જાતકિ હાનિ।

હનિકા દુનૂ ગોટેકેં સેહો કોર્ટક શરણમે જાય પડ઼લનિ। સાહતિ્યમે એહિ તરહક સોચપર કમ રચના એવાક ઈહો એકટા કારણ ભ' સકૈત અછિ।

હનિકા લેકનકિ માધ્યમસઁ મૈથિલી સાહતિ્યક પ્રતિ શકિ્ષતિ યુવા વર્ગ, અન્ય પ્રૌઢ઼ શકિ્ષતિ વર્ગ આ મૈથિલી લેખકક દૃષ્ટકિોણ વુઝવાક આ સમસ્યાક સમાધાનક લેલ સાર્થક ચર્ચા ભેલ અછિ એહિ કથામે।

વસ્તુત: માતૃભાષાક અસ્તતિ્વપર જે સંકટ આએલ અછિ તાહપિર સેહો સંવાદ ચલૈત અછિ કથામે।

ઈ કહવ પૂર્ણત: સત્ય નહિ અછિ જે નવ સમાજક હલચલ વર્તમાન મૈથિલી સાહતિ્યમે નહિ આએલ અછિ અથવા મૈથિલીમે પ્રેમકથાક અભાવ અછિ, તથાપિ જતેક અછિ તેકસઁ સંતુષ્ટ હોયવ ઉચતિ નહિ અછિ।

પ્રાથમકિ કક્ષામે માતૃભાષાક માધ્યમસઁ પઢાઇ નહિ હેવાક વિષય પર ઈ કથા મૌન અછિ, તથાપિ મૈથિલીક સંકટક સમાધાનક દિશામે એકટા સ્વસ્થ ચર્ચાક લેલ પ્રેરતિ કરૈત અછિ અશોકજીક ચર્ચતિ કથાસંગ્રહ ' ઊલીગામ' ક કથા ' છુટ્ટીક એક દનિ' ।

- સંપર્ક- ૮૭૮૯૬૧૬૧૧૫

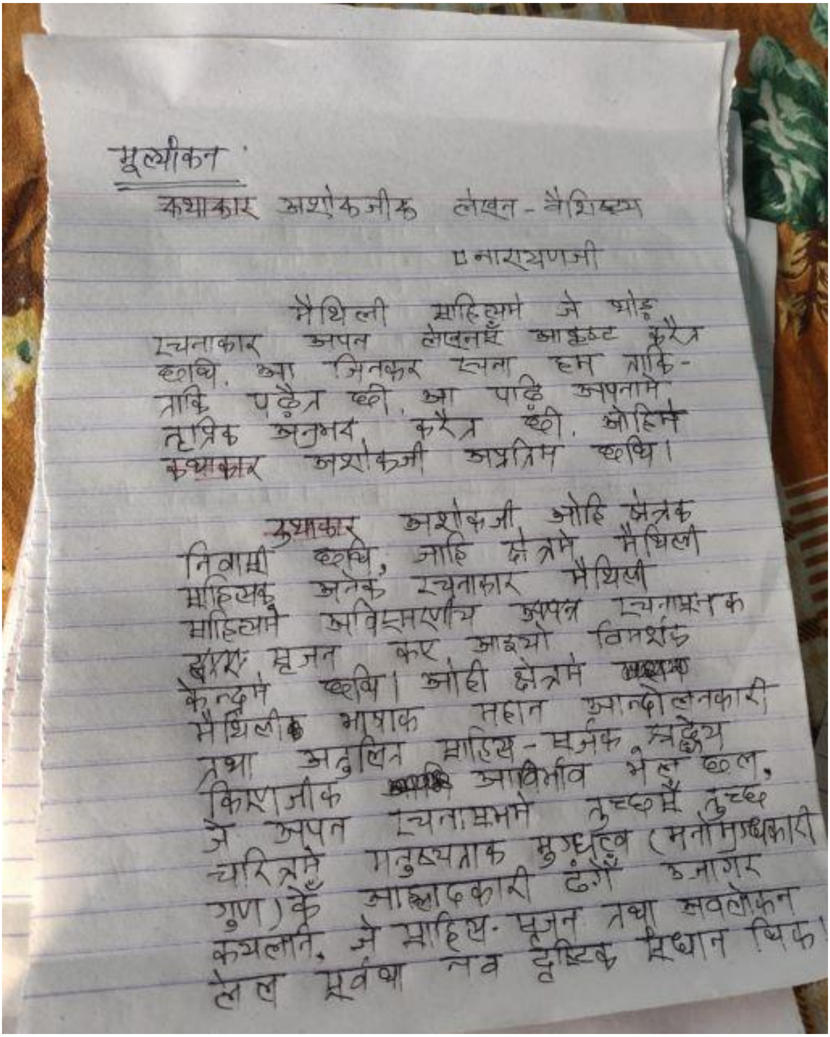
અપન મંતવ્ય દતિ ગ્રજિસલ઼ડ઼િડ઼્દિહઃગ્માજિ઼યોમ **પર પઠાઉ।**

२.१३.नारायणजी- मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य



नारायणजी

मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य



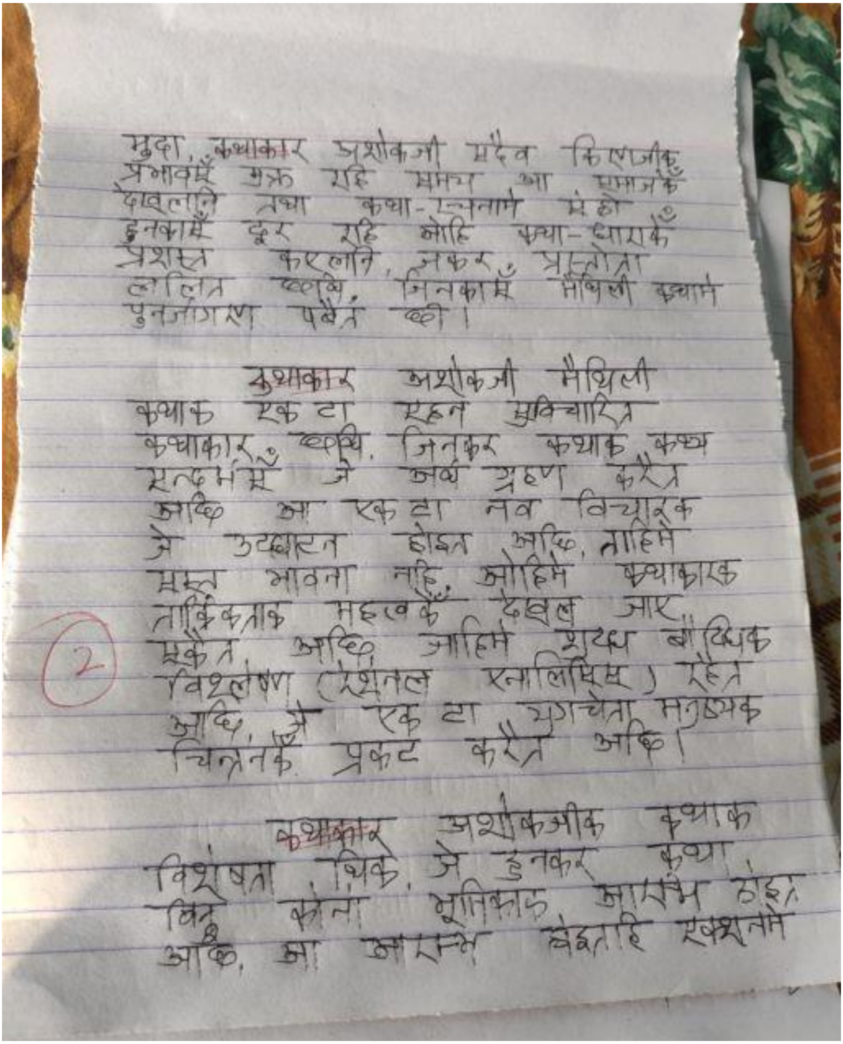
मूल्यांकन

कथाकार अशोकजीक लेखन-वैशिष्ट्य

- नारायणजी

मैथिली साहित्यमे जे थोड़ रचनाकार अपन लेखनसँ आकृष्ट करैत छथि आ जिनकर रचना हम ताकि-ताकि पढ़ैत छी आ पढ़ि अपनामे तृप्तिक अनुभव करैत छी, ओहिमे कथाकार अशोकजी अप्रतिम छथि।

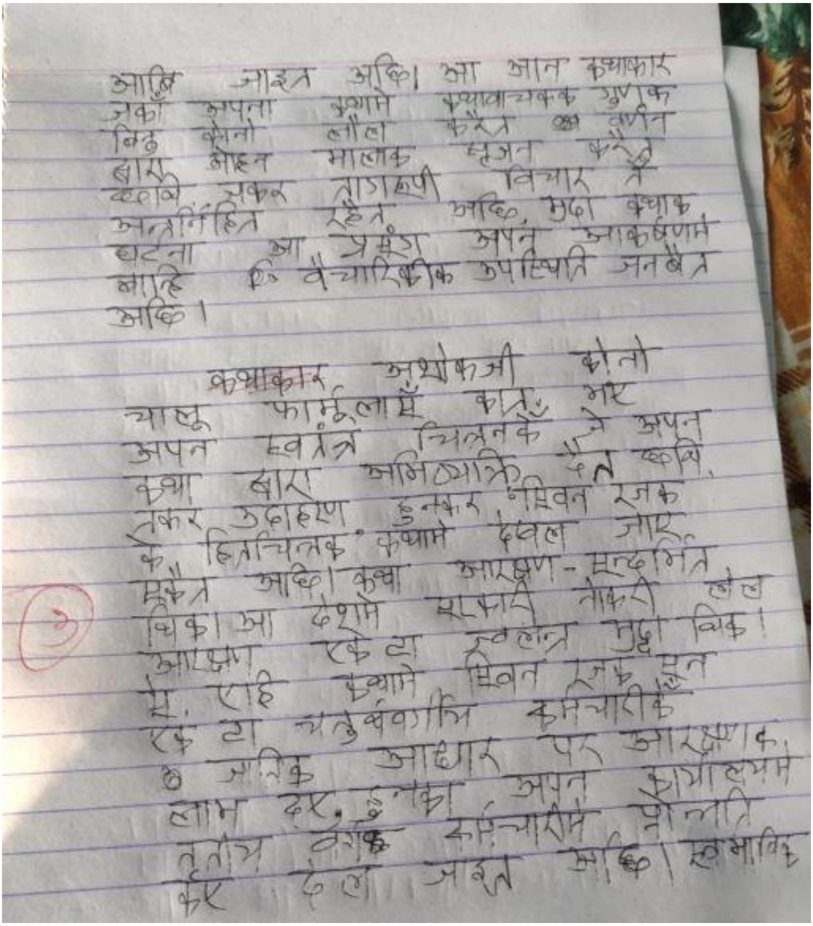
कथाकार अशोकजी ओहि क्षेत्रक निवासी छथि, जाहि क्षेत्रमे मैथिली साहित्यक अनेक रचनाकार मैथिली साहित्यमे अविस्मरणीय अपन रचनात्मक सृजन कए आइयो विमर्शक केन्द्रमे छथि। ओही क्षेत्रमे मैथिलीक भाषाक महान आन्दोलनकारी तथा अतुलित साहित्य-सर्जक, श्रद्धेय किरणजीक आविर्भाव भेल छल, जे अपन रचनासभमे तुच्छोसँ तुच्छ चरित्रमे मनुष्यताक मुग्धत्व (मनोमुग्धकारी गुण) कें आह्लादकारी ढंगेँ उजागर कयलनि, जे साहित्य-सृजन तथा अवलोकन लेल सर्वथा नव दृष्टिक सन्धान थिक।



मुदा, कथाकार अशोकजी सदैव किरणजीक प्रभावसँ मुक्त रहि समय आ समाजकेँ देखलनि तथा कथा-रचनामे सेहो इनकासँ दूर रहि ओहि कथा-धाराकेँ प्रशस्त कएलनि, जकर प्रणेता ललित छथि, जिनकासँ मैथिली कथामे पुनर्जागरण पबैत छी।

कथाकार अशोकजी मैथिली कथाक एकटा एहन सुविचारित कथाकार छथि, जिनकर कथाक कथ्य सन्दर्भसँ जे अर्थ ग्रहण करैत अछि आ एकटा नव विचारक जे उद्घाटन होइत अछि, ताहिमे सस्त भावना नहि, ओहिमे कथाकारक तार्किकताक महत्त्वकेँ देखल जाए सकैत अछि आहिमे शुद्ध बौद्धिक विश्लेषण (रेशनल एनालिसिस) रहैत अछि, जे एकटा युगचेता मनुष्यक चिन्तनकेँ प्रकट करैत अछि।

कथाकार अशोकजीक कथाक विशेषता छिक जे इनकर कथा, बिनु कोनो भूमिकाक आरम्भ होइत अछि, आ आरम्भ होइतहि रचनामे



आबि आइत अछि। आ आन कथाकार
जकाँ अपना कथामे कथावाचकक गुणक
किछु कोनो लील करैत वर्णन
द्वारा मोहन मालाक सृजन करैत
छथि सकल तागरूपी विचार तँ
अन्तर्निहित रहैत अछि, मुदा कथाक
घटना आ प्रसंग अपन आकर्षणमे
बान्हि कऽ वैचारिकीक उपस्थिति जनबैत
अछि।

कथाकार अशोकजी छोटो
चालू फार्मूलासँ कातें भऽ
अपन स्वतंत्र चिन्तनकेँ अपन
कथा द्वारा अभिव्यक्ति दैत छथि,
एकर उदाहरण हुनकर 'प्रिवन रजक'
के छिन्नचित्तक कथामे देखल जाए
सकैत अछि। कथा आरक्षण-सन्दर्भित
छैक। आ देशमे सरकारी नोकरी लेल
छिक। आरक्षण एकटा स्वतन्त्र मुद्दा छिक।
ऐ. एहि कथामे प्रिवन रजक सन
एकटा चतुर्थवर्गीय कर्मचारीकेँ
जातिक आधार पर आरक्षणक
लाभ दऽ, हुनका अपन कार्यालयमे प्रोन्नति
तृतीय वर्गक कर्मचारीमे
करए देल जाइत अछि। स्वभाविक

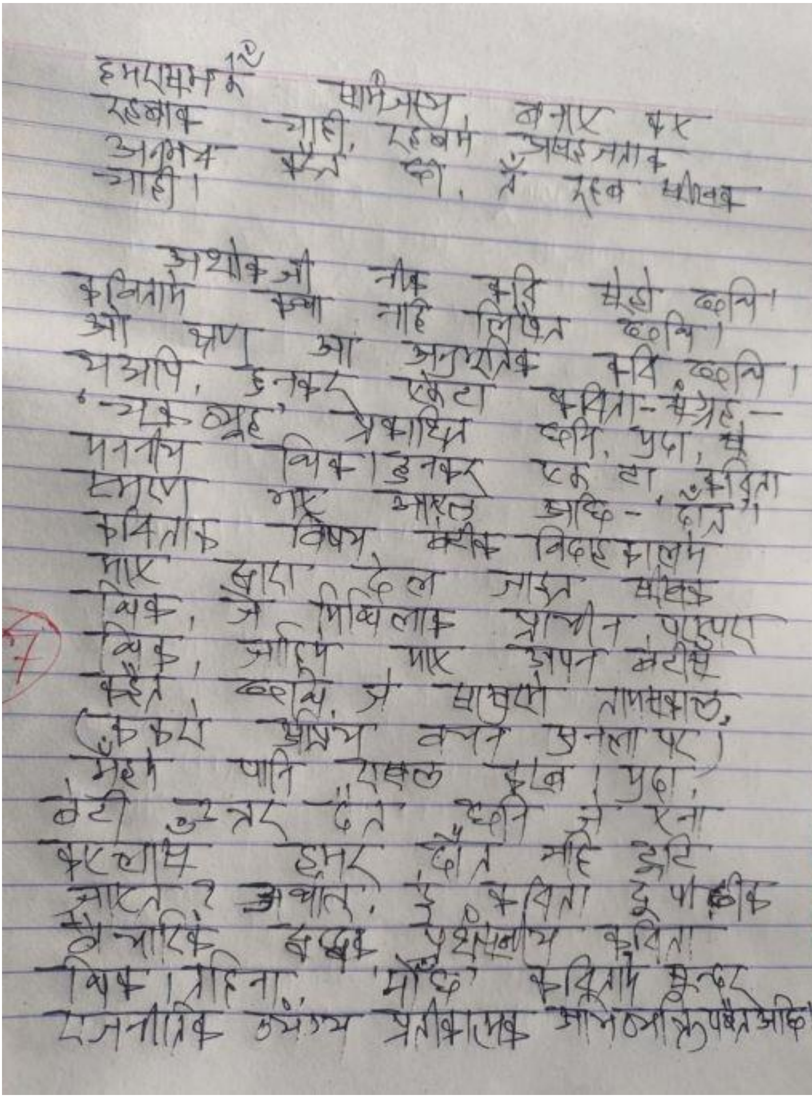
थिक. जे सिवन रजकक जीवन-स्तरमे
गुणात्मक वृद्धि एहि प्रोन्नतिसँ हेतै, तँ
कार्यालयक प्रमुख, कर्मचारीकेँ
एहि प्रयत्न होएबाक चाही।
आ जे अप्रसन्न छथि कदाचित
हुनका ऐहो अपन अप्रसन्नता
व्यक्त निहोरे नहि करक
चाहियनि। एहन अप्रसन्नता व्यक्त
करए केओ उकाजोल प्रगतिशील
डेग अथवा आरम्भ कएल
गेल सुधारक प्रयत्नमे ~~प्रयत्न~~
प्रयत्नमे के बाधक बनत? मुदा,
अशोकजीक कथावाचक, आरक्षण द्वारा
समूल परिवर्तन चाहैत छथि,
आ अपन सुविचारित ~~भावनाकेँ~~ चिन्तनकेँ
अधीन राखैत छथि, जे जँ
सिवन रजकक सम्पूर्ण परिवारक
स्तरोन्नयन नहि हैत, तँ की
मात्र सिवन रजकक आरक्षणक
लाभ देब, व्यक्ति सिवन रजकक
जीवनक स्तरोन्नयन, की करतइ
प्रमुख अदि, जे कार्यालयक
कार्य निष्पादन करैत, ओहि
परिवारमे आएल रहत, जे परम्परित
रूपमे निम्न स्तरक जीवनक भोगि रहल अछि?

आ कथाकार अशोकजीक ई सूक्ष्म वैचारिक सजगता हमरा दृष्टि प्रदान करैत अछि. अमेरिकी कवि रॉबर्ट फ्रॉस्टक 'द रोड नॉट टेकेन' कविताक विषय, जकाँ जाहिमे कवि कहैत छथि जे हम ओहि रस्ता पर नहि चलब, हम ओहि पर चलब. अर्थात आ रस्ता छैक जाहि पर भीड़ होइत चलल छथि, जाहि पर चालें नहि मात्र हम मिल, देखारक अपितु, अपन वैशिष्ट्य संग आनल रहा जाएब।

मैथिलीमे मुसलमानलोकनिक जीवन-चर्या पर कतेक कथासभ लिखल गेल अछि। मुदा, जखन हिंदू आ मुसलमानक बीचक वैवाहिक सम्बन्धकेँ कथाक विषय बनाओल जाइत अछि, आ समस्त समाज बनरबाक उद्घोषणा कएल जाइत अछि, तखन हमरा जिज्ञासा होइत अछि। एहनामे अशोकजी स्वतंत्र भारतमे मुसलमान आ हिंदूक सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धक ओहि तन्तुसभकेँ, जे व्यावहारिक जीवनमे अछि, अत्यंत कुशलतासँ उद्घाटित करैत छथि

अपन कथासभमे जे पारस्परिक सम्बन्धकेँ
स्थापी कयेने अछि। एहन विषय सन्दर्भित
हुनकर 'छल', 'रंग' आ 'ओ झूठ
साइकिल सिखैत छल' कथाक मोन पड़ैत
अछि। 'छल' कथामे देखाओल गेल
अछि जे असल्प लोकमे आकि
एकटा हिंदू जे मुसलमानक अभिनय
करैत छथि, से अभिनयक उपरान्त
किधारि जाइत छथि, जे ओ हिन्दू
छथि। आ से तखन मोन पड़ैत छनि,
जखन हुनका खतना दिआओल जाइत
छनि। कथाक सन्देश जाइत अछि जे
की आस्तिक कर्मठ मुसलमान आस्तिक लोकमे
आबि बनल मुसलमान नहि छथि?
~~की इस्लाम~~ 'रंग' कथा कहैत अछि
जे मुसलमान आ हिंदूमे खागरक
केवल प्रथा एक छैक, आ दुनू
सम्प्रदाय मांसभक्षी छथि, दुनू
एके सम्प्रदायक लोक छथि। तहिना,
'ओ झूठ साइकिल सिखैत छल'
कथा कहैत अछि जे सभठाम
मुसलमान खाले, हुनकामे लड़ाइ झगड़ा
होइते रहैत छैक, मुसलमानक डरेब
हुनके छल नहि जाएत? अर्थात सभठाम
मुसलमान छथि आ हुनकासभक बीच

6



हमरासभकेँ धार्मिकता बनाए धरै
रहबाक चाही, रहबामे ओखइजताक
अनुभव कैल को, ई रहब धीअवक
चाही।

अशोकजी नीक कवि सेहो छथि।
कवितादि कम नहि लिखैत छथि।
ओ अपन आ अनुभविक नवि छथि।
यद्यपि, इनकर एकटा कविता-संग्रह-
'चक्रव्यूह' प्रकाशित छनि। प्रदा, से
पठनीय थिक। इनकर एक टा कविता
स्मरण भए आएल अछि- 'दाँत'।
कविताक विषय कहीक विदेह कालमे
भार बहाए देल जाइत छैक
थिक, जे मिथिलाक प्राचीन परम्परा
थिक, आदिम भार अपन कहीँ
रहैत छलैक, जे घामसँ तापसकाल,
(कंकर्य अप्रिय कलन सुनला पर)
मेहो पानि रहल छल। प्रदा,
बेटी उत्तर दैत छथि जे एना
करलाक हमर दाँत नहि झरि
जाएत? अर्थात्, ई कविता दू पाँतिक
सैन्यारिकेँ इहवा प्रशंसनीय कविता
थिक। तहिना, 'मोछ' कविताक सुन्दर
राजनीतिक व्यंग्य प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति पर्यन्त अछि।

मैथिली साहित्यमे विवेचना आ
आलोचनाकेँ एकं देखल जाइत अछि।
भावनाक रूप रू पद्धति छैक कोनो
कृति आ रचनाक विश्लेषणक।
अशोकजी नीक काज करैत छथि
आलोचनामे। एहि लेल ओ हिनक
आलोचनात्मक आलेखमे पर्याप्त पारदर्शिता
रहैत अछि, आ विषय-सन्दर्भित
अनेक उदाहरण प्रस्तुत कए
अशोकजी अपन मन्तव्य पर
ओ रहैत छथि, ओ हिनक आलोचकीय
दायित्वकेँ सेहो जनैत अछि। एँगहि,
कोनो कृति अथवा रचनाक आलोचना
लेल अशोकजी कृतिकार अथवा
रचनाकारक व्यक्तित्वकेँ सम्मुख
राखि आलोचना लिखैत छथि
ओ हिनक आलोचकीय दृष्टिक
विशेषता छैक।

अशोकजी प्रचुर आँख्यात्मक
आलेख सेहो लिखने छथि. सकारात्मक
चरित्र संकलन प्रकाशित अछि।
हिनक लेखनमे सर्वजन बोधगम्यता अछि,
तेँ साहित्यिक मर्यादाक सेहो
नीक अनुपालन भेल अछि।
तकर पृष्ठभूमिमे हिनक
संयमित भाषाक अनुपम योगदान
अछि। हिनक यात्रा-वृत्तान्त, जे
पुस्तकरूपमे प्रकाशित अछि. ओहिमे
चित्रात्मक वर्णन (पिक्चरस्क डिस्क्रिप्शन)
अत्यन्त आकृष्ट करैत
अछि।

एहन विशिष्ट लेखनक
पृष्ठभूमिमे हिनक विशिष्ट व्यक्तित्व
छनि, जाहिमे जहाँ पारस जे
अशोकजी अपनामे छोट आ पैघकेँ
सेहो, दूर आ निकट व्यक्तिकेँ
समान आदरसँ देखैत छथि।
हिनकामे महत्वाकांक्षा, आत्मप्रशंसा आ
मिथ्या-भाषण कतहुँ नहि देखब।
आ हिनकर येह विशिष्ट व्यक्तित्व हिनकासँ
जे लेखन करबैत अछि, से विशिष्ट लेखन होइत
अछि आ साहित्यिक संस्कार संग सर्वग्राह्यतोकेँ
आकृष्ट करैत अछि। ¤

𑓒𑓑𑓔𑒬𑒱𑒫 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢



𑒬𑒱𑒫 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩

𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢

𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒪𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒰𑒗𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒠𑒰𑒨𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒢𑒲𑒨 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒂 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒪𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫𑒏 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢, 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏𑒪𑒰𑒣 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒂𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒣𑒩 𑓒𑓐𑓑𑓔 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒖𑒲, 𑒦𑒻𑒩𑒫 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒰𑒮 𑒂 𑒯𑒧 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒩𑒱𑒮𑒩𑓂𑒔 𑒮𑒼𑒮𑒰𑒨𑒙𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒏𑒨𑒪। 𑒋𑒯𑒱𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒦𑒹𑒪। 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒨𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹 𑒂𑒢 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒣𑒩𑓂𑒫 𑒧𑒢𑒰𑒏𑒨 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒠𑒱𑒫𑒮𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒨 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑓀𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑒰𑒍𑒞। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒠𑒱𑒫𑒮𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒟𑓂𑒨 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒁𑒭𑓂𑒙𑒧 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒴𑒔𑒲𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒏' 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒞𑒱𑒟𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒠𑒱𑒫𑒮𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒧𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒨। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒲𑒢𑒴

गोटे एहि विषय पर एकमत भय एकटा बैसारक आयोजन बिहार रिसर्च सोसायटीक सभागारमे कयल जाहिमे ओहि विद्वान सभकेँ आमन्त्रित कयल गेल जे मिलकऽ एकर स्थापना कालसँ संबद्ध छलाह।

आना मैथिली साहित्य संस्थानक स्थापनाक श्रेय स्वर्गीय राजेश्वर झाकेँ देल जाइत छनि जे १९६६ ईस्वीमे ताहि कालक मैथिल आ अमैथिल विद्वानसभक सहयोगसं पटनाक बिहार रिसर्च सोसायटीक कार्यालयमे कयलनि। दीनानाथ झाक अध्यक्षतामे एकर गठन भेल जकर सचिव स्वयं राजेश्वर झा भेलाह। संरक्षक बाबू लक्ष्मीपति सिंह छलाह श्री रमानाथ झा, जटा शंकर झा, गौरी नंदन सिंह, गोपी रमण चौधरी, प्रोफेसर जगदीश चंद्र झा (मुख्य संपादक, मिथिला भारती), सुधांशु शेखर चौधरी, आचार्य परमानंदन शास्त्री, कुलानंद नंदन, बलदेव मिश्र, सुरेन्द्र मिश्र, प्रोफेसर हेतुकर झा, लक्ष्मीनाथ मिश्र, रुद्र कान्त झा, सुशील कुमार झा, शैलेन्द्र मोहन झा, चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा, अभय कांत चौधरी, दया शंकर उपाध्याय, राधा कृष्ण चौधरी, उपेन्द्र ठाकुर, रामदेव झा, जगदीश्वर पांडेय, विनोदानंद झा, कमल नारायण झा कमलेश, हंसराज, अमरेश पाठक, बी पी मजुमदार, परमेश्वर झा, जय नारायण ठाकुर, बैद्यनाथ झा, विजय कुमार ठाकुर, राजेन्द्र राम, नरेन्द्र झा, रमाकांत झा, कृष्णानंद दास, सच्चिदानंद सहाय, जटाशंकर दास, भीमनाथ झा, मंत्रेश्वर झा, प्रबोध नारायण झा, बाल गोविंद झा, गंगेश गुंजन, नवीन चंद्र मिश्र, कपिलेश्वर झा, गोलक नाद मिश्र, रुद्र नाथ सिंह ठाकुर, गिरीन्द्र मोहन भट्ट, सीताराम राय, प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', प्रकाश चरण प्रसाद, उपेन्द्र दोषी, उदय चंद्र झा 'विनोद' प्रभृति कतोक विद्वानसभक सहयोग एहि संस्थानकेँ भेटैत रहल।

त्रैमासिक शोधपत्रिका मिथिला भारतीक प्रकाशन १९६६ सं प्रारंभ भेल छल। कुल पांच अंक प्रकाशित भेलपरांत १९७७मे एकर प्रकाशन बन्द भय

गेल। पंडित राजेश्वर झाक स्वर्गवास भेलाक पश्चात् एकर कार्यक्रम ठमकि गेल। एहिमे जे शोधालेख प्रकाशित भेल छल ताहि सभ पर कतोक शोध प्रबंध पश्चात् तैयार भेल मुदा एकर अभाव मिथिलाक अनुसंधान विधाकेँ बेस आघात पहुँचेलक। मिथिला भारतीक अतिरिक्त कतोक आओर शोधग्रंथ ओ साहित्यसभ प्रकाशित भेल छल।अवहट्ठ :उद्भव ओ विकास नामक पंडित राजेश्वर झाक पोथीकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छल।लोकगाथा विवेचन नामक शोधग्रंथ एकटा विशिष्ट उपलब्धि छल। पंडित राजेश्वर झाक पश्चात् एकर शोध ओ प्रकाशन कार्य बन्न भेलापरांत दोसर स्तरीय शोधपत्रिकाक प्रकाशन नहि भय सकल। ओना राँटी ड्योढ़ीसँ किछु अंक जिज्ञासाक अवश्य प्रकाशित भेल मुदा ओहो अल्पायु रहल। मैथिली साहित्य संस्थान द्वारा साल भरिमे मात्र विद्यापति स्मृति दिवसक एक गोट विधि पुराओल जाय लागल। बिहार रिसर्च सोसायटीक कार्यक्रम बन्न भेलापर १९८७सँ ओहो बन्न भय गेल।

बिहार रिसर्च सोसायटीके बचबाक लेल प्रायः बारह वर्ष धरि संघर्ष करय पड़ल। तीस गोटसँ बेसी मामिला लड़य पड़ल।२००९मे एकर सरकार द्वारा अधिग्रहण कय पटना संग्रहालयमे मिला देल गेल। तकर पश्चात् सेहो कतोक मामिलासभ चलैत रहल।२०१४मे किछु संघर्ष विराम भेल।

एतेक पैघ संघर्षक अवधिमे कतोक बुद्धिजीवी ओ विद्वानलोकनिक सहयोग भेटल। एही क्रममे २००८-९मे बिहार विधान परिषदक परियोजना पदाधिकारी भैरव लाल दासजीसँ संपर्क भेल। संघर्षक अवधिमे सदिखन ई अभिलाषा रहल जे जहिया संघर्षक अंत होएत आ बिहार रिसर्च सोसायटी अपन कार्यक्रम प्रारंभ करत तकर पश्चात् मैथिली साहित्य संस्थानक क्रियाकलाप सेहो स्तरसँ प्रारंभ कयल जायत। हमर चिरप्रतीक्षित अभिलाषाक कार्यान्वयनमे भैरव लाल दासजी ओ अशोक कुमार झाजी सहयोग भेटल।

𑒁𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒠𑒰𑒮𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒖𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒩𑒱𑒮𑒩𑓂𑒔 𑒮𑒼𑒮𑒰𑒨𑒙𑒲𑒏 𑒮𑒦𑒰𑒑𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪।𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒯𑒹𑒞𑒳𑒏𑒩 𑒗𑒰, 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒩𑒞𑓂𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩, 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒩𑒳𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒗𑒰, 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒧𑒯𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒩𑒰𑒧𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩 𑒐𑒰𑒢, 𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒗𑒰, 𑒦𑒻𑒩𑒫 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒵𑒞𑒱 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑒮𑒦 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒦𑒹𑒪।𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒢𑒫𑒰𑓀𑒏 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒬𑒼𑒡𑒰𑒪𑒹𑒐 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒦𑒹𑒪।𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒠𑒱𑒫𑒮 𑓘 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪।𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒰𑒪𑒨𑒏 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒋𑒏𑒩 𑒞𑒱𑒟𑒱 𑓗 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒠𑒱𑒫𑒮𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒮𑒰𑒞 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲 𑒏' 𑒯𑒼𑒧𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒋𑒏𑒩 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢𑒧𑒹 𑒂𑒠𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒯𑒹𑒞𑒳𑒏𑒩 𑒗𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬 𑒣𑒩 𑒯𑒧 𑒂 𑒦𑒻𑒩𑒫 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒰𑒮𑒖𑒲 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒠𑒰𑒨𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒨𑒪𑒯𑒳𑓀।𑒮𑓀𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒧𑒹 𑒫𑒩𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑𑒮𑒿 𑒋𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒢𑒾 𑒁𑓀𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒋𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒥𑒔𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒔𑒳𑒢𑒾𑒞𑒲 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒕। 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩-𑒗𑒰𑒩𑒐𑓀𑒛 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒄 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒼𑒡𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒁𑒢𑒳𑒠𑒰𑒢 𑒂𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒂𑒩𑓂𑒙 𑒋𑓀𑒛 𑒯𑓂𑒨𑒴𑒧𑒢𑒱𑒙𑒲 𑒬𑒰𑒐𑒰𑒏 𑒏𑒹𑒨𑒩𑒪𑒱𑒮𑓂𑒙𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒻𑒏।𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒏 𑒁𑒪𑒰𑒫𑒰 𑒁𑒧𑒹𑒩𑒱𑒏𑒰, 𑒖𑒰𑒣𑒰𑒢, 𑒏𑒢𑒰𑒛𑒰, 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒬𑒲 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪, 𑒁𑒮𑒧, 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒣𑓂𑒩𑒠𑒹𑒬, 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒹𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒵𑒞𑒱 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑒮𑒦𑒏 𑒬𑒼𑒡𑒰𑒪𑒹𑒐 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒋𑒫𑒧𑓂 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹𑒿 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒬𑒼𑒡𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒨 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱।

𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒂𑒠𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒨𑒼𑒑𑒠𑒰𑒢 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒩𑒯𑒞𑒰𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒂𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒲। 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒮𑓂𑒟 𑒍 𑒮𑒳𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲।

- 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏-९१२२६८६५८६

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 ggvideha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२.५.𑒬𑒻𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠- 𑒁𑒬𑒼𑒏: 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩



𑒬𑒻𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠

𑒁𑒬𑒼𑒏𑓁 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩

अशोक: एकटा जीवन्त कलाकार

॥ शैलेन्द्र आनंद

शायद सत्तरि ई०क घटना छल हेतै। हम बोर्ड परीक्षा पास कऽ गेल रही। मोन उल्लाससँ भरल रहय। एहि बीच पैटघाट पर 'नवयुवक नाट्यकला परिषद, लालगंज' द्वारा श्री जीवनाथ मिश्रक निर्देशनमे कोनो एकांकी (नाम विस्मृत भऽ गेल अछि) केर आयोजन भेल रहैक। लग-पासक गाममे जँ कोनो नाटक प्रदर्शित कएल जा रहल अछि आ हमरा लोकनि नाटक देखबाक लेल नहि जाय, ई सम्भवे नहि छल। नाटक देखबाक लेल पैदल तीन-चारि कोस जायबला एहि दलमे हमर अग्रज राज, सियाराम, हर्षपति, लक्ष्मण आदि रहथि। हमर सभक ई दल गामक रासलीला धरि देखब नहि छोड़ैत छल। रामलीलाक 'सुपारीलाल' आखनहुँ धरि विस्मृत नहि भेलाह अछि। से, नैनपनक ओ स्मृति कहियो-कहियो मोनक अकासमे उदित भऽ जाइए आ तखन विगत जीवनक कतेको पृष्ठ अनायास फड़फड़ाय लगैए।

अशोक, अर्थात कथाकार अशोक, ओहि समय बनारसमे रहैत रहथि। कहियो-कहियो गाम आबथि। हुनक घर भुइयाँथान अर्थात लोहना दछिनवारि टोलमे आ हमर पछबारि टोलमे। हुनक जेठ भाइ आदरणीय सुशील बाबू आ हमर जेठ भाइ आदरणीय धीरेन्द्र जी दुनू मित्र। तावत हुनका लोकनिक छोट भाइ अर्थात अशोक-शैलेन्द्रक मैत्री नहि भेल छल। शिवशंकर, अर्थात कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास सँ मात्र अन्तरंगता रहय। हटाउ एहि पृष्ठकेँ। जीवनमे अहिना दृश्य बदलैत रहैत छैक। दृश्य बदलल आ हम कोना दूसँ तीन भऽ गेलौं, एकरो संदर्भित करैत अछि- हमर नाट्य-प्रेम। से कहऽ जे लागल रही जे अशोककेँ पहिले-पहिल पैटघाटक ओहि एकांकीमे देखने रहियनि। ई बात आब हुनको स्मृतिमे नहि छनि। मुदा परिचित ओ ओही दिन भऽ गेल छलाह, मुदा मैत्री नहि भेल छल। ओना ओ कहियो-कहियो हमर बड़का भाइ (धीरेन्द्र जी)क लग कविता-कथा लऽ कऽ आएल करथि। ओहू समय हमर मैत्री नहि भेल। मुदा, कतौ ने कतौ मैत्रीक बीजारोपण अवश्य कऽ गेल। हम अशोककेँ चिन्हय लगलियनि। 1971 ई०मे 'गोविन्द दास नाट्यकला परिषद, लोहना'क स्थापना, परिसरक तीन-चारि गामक कलाकारक सहयोगसँ भेल। आदरणीय सुशील बाबू, सद बाबू आ जीबू बाबू एहि संस्थाक प्रधान रहथि। संस्था लोहना पाठशाला पर प्रत्येक वर्ष शारदीय नवरात्रिमे तीन राति नाटकक आयोजन करैत छल। एही क्रममे पूर्वाभ्यासक लेल हम आ शिवशंकर अशोकक घर पर गेल रही। अशोक गाम आएल रहथि।

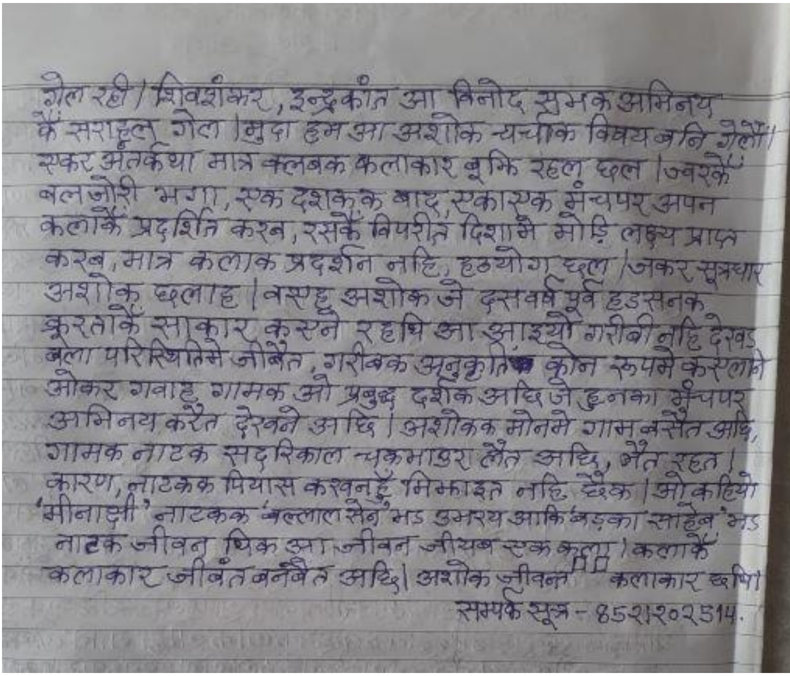
स्पर्श JUMBO

शिवशंकर कहलक – भाइ रे! ई नव विद्यार्थी ? हम अशोकक पूरा परिचय ओकरा देलियै आ ओही दिन अशोकक संग मैत्री आरम्भ भेल, से तते प्रगाढ़ भऽ गेल जे गामक लोक इहो बिसरि गेल जे अशोक बनारससँ लोहना आएल छथि। हमरा लोकनिक मैत्रीकेँ गामक लोक लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसब-पाहीसँ मानैत अछि। जखन कि 'महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय', सरिसब-पाहीक हम तीनू गोटे छात्र रहल छी। अशोक, विज्ञान संकायक आ हम आ शिवशंकर कला संकायक। आह, कखनहुँकेँ हमहूँ भसियाइ लगै छी कहबाक लेल चुलल छलौं- अभिनेता अशोकक माँदे आ मैत्रीमे भासि गेलहुँ।

अभिनेता अशोक, अपन किछु कीरदार सँ जनमानसमे अपन अभिनेता रूपकेँ सुरक्षित छथि। ओना 1964 ई.सँ मिथिला विकास क्लब, लोहनाक रंगमंचक हम कलाकार रहल छी। मुदा, 1971 सँ आरम्भ आ 1980 ई.मे अंत हमरा लोकनिक रंगयात्रा, कतिपय विशिष्ट पक्षकेँ उजागर करैत अछि।

मंचपर अशोक :— चतुर्भुजक नाटक 'बहादुर शाह'क अंग्रेज आफीसर 'हडसन'क भूमिकामे ओ क्रूर स्वभावक प्रदर्शन करैत, कहियो बिस्मृत नहि हेताह। थारमे सजाओल, बहादुर शाहक बेटाक नरमुण्डकेँ भेंट करैत, हडसन अशोक, जनताक दुरा गारिसँ तऽर भऽ गेलाह। ई छल खलनायकक सफलताक सोपान जे हुनक स्वभावक विपरीत भूमिका छल। अशोक भूमिकामे जीबैत छलाह। ओ कोनो भूमिका होअय, ओहि पर ओ चिंतन करैत छलाह, मनन करैत छलाह आ मंचपर ओकर सफलताक लेल, खूब परिश्रम करैत छलाह। एक बेर ओ जखन पटना कोपरेटिव बैंकक असिस्टेंट रजिस्ट्रार रहथि, अक्कूक नाटक 'आगि धधकि रहल छै' पटनासँ लेने अएलाह आ कहलनि – 'कल हमलोग इसे खेलेंगे।' काल्हि अर्थात् अष्टमीकेँ। षष्ठी दिन हमरा ज्वर छल जे खसबाक नाम नहि लैत छल। आ सप्तमीकेँ अशोकेँ आग्रह कऽ रहल छलाह। अशोक, माने हमर ओ मित्र, जकर विश्वासकेँ हम नहि तोड़ि सकैत छलहुँ। मुदा, लाचार छलहुँ। अशोक जिद्दिया गेल छलाह। तरह, हमर ज्वर दूर करबाक लेल, तुरत दबाइ मङबौलनि। बलजोरी दबाइ खुआओल गेल। ज्वर खसि पड़ल। मुदा कमजोरी बढ़ि गेल छल। अशोक, गरीब पागलक भूमिकामे आ हम बेरोजगारक पागलक भूमिकामे चयनित कएल गेलौं।

हमर कोनहुँ अनुनय बेकार छल। अशोकक अधिकारक स्वर
किछु सुनबाक लेल तैयार नहि छल। क्लबक अन्य कलाकार
बहुत उत्साहित रहथि, हमरा लोकनिकेँ मंचपर अभिनेताक
रूपमे देखबाक। डाइरेक्टरक रूपकेँ ओ सभ देखि चुकल
छलाह। मुदा दशकक बाद मंचपर हमरा लोकनिकेँ एकसंग
देखबाक सुयोग लगलनि, तकर विशेष उत्साह छल।
कुर्सी पर मूर्तिवत बैसल छी। अजय आ हरिशंकर हमर समीप
ठाढ़ उत्साहित करबामे सम्पूर्ण ऊर्जा लगा रहल छथि। अशोकक
मेकप जखन भऽ गेलनि, तखन हमर मेकप आरम्भ भेल।
आ मेकप समाप्त भेले छल कि नाटक आरम्भ हेबाक घोषणा कएल
गेल। पटओट संवादक लेल राजा भाइ अपन स्थान ग्रहण कऽ चुकल
छलाह। हमर कुर्सी विंग्सक बगलमे लगा देल गेल छल, जाहिसँ
मंच पर उपस्थित कलाकारक भाव-भंगिमाक निरीक्षण कएल
जा सकय। किछुए कालमे अशोक अभिनेताक रूपमे मंचपर
उपस्थित छलाह। अशोकक अभिनयक सूक्ष्मतम संवाद-प्रेषण
भाव-भंगिमाक संग, जखन तेज होइत गेल ओ सम्पूर्ण दर्शककेँ बान्हि
करुणाक रसधार बहा देलनि तऽ दर्शक चुप्प नहि रहि सकल।
थोपड़ीक गड़गड़ाहटि, हुनक नाट्यकलाक लोहा मानि लेलक।
हमर छाती धड़कि रहल छल। फूलबाबू (स्व॰ अरुण कुमार)
केँ हाथक इशारासँ जल पीबाक इच्छा देखौलियनि। ओह!
अद्भुत समर्पण रहनि, अपन डाइरेक्टरक प्रति। तुरत जल
हाजिर भऽ गेल। हम एक साँसमे पानि पीबि गेलौं। आब
हमरहि पारी छल। अशोक दर्शककेँ जीति चुकल छलाह।
एकहि रसक उपस्थापन, हमर स्थापनामे बाधक तत्व छल।
तत्क्षण निर्णय लेल आ आंगिक प्रदर्शन एवं विभिन्न हास्य-
कौशलसँ मंचपर प्रवेश लेलहुँ। कनेक दर्शक समुदाय लै
चल मुझे भुलावा देकर, नाविक धीरे-धीरेकेँ स्टाइलमे हँसय
लगलाह। आ तत्क्षण हमरा बोध भेल रहय जे गेंद
आब हमर हाथमे अछि, मात्र नेट तक ओकरा पहुँचा देबाक
छैक। हास्य, करुणामे बदलैत चल गेल। दर्शक थोपड़ी पर
थोपड़ी बजबैत चल गेलाह। भूमिकाक सफल निर्वाह कएल
आ ग्रीन रूममे जा चित्त भऽ गेलहुँ। कलाकार लोकनिक
तत्क्षण उपचार आ 'अशोकक थपकी, हमरा अखनहुँ मोन अछि
"जियो, मेरे मिट्टी के शेर, गजब ढा दिया तूने!" आ हमर ऊर्जा
एहि शब्दक अनुरागसँ ततेक मजबूत भऽ गेल जे लागबे नै करय
जे हम कमजोरीसँ खसि पड़ल रही। हम दुनू गोटय परीक्षा पास कऽ
(8)



गेल रही। शिवशंकर, इन्द्रकांत आ विनोद सुमक अभिनय
कें सराहल गेल। मुदा हम आ अशोक चर्चाक विषय बनि गेलौं।
एकर अंतर्कथा मात्र कलबक कलाकार बूझि रहल छल। जरकें
बलजोरी भगा, एक दशकक बाद, एकाएक मंचपर अपन
कलाकें प्रदर्शित करब, एसकें विपरीत दिशामे मोड़ि लक्ष्य प्राप्त
करब, मात्र कलाक प्रदर्शन नहि, हठयोग छल। जकर सूत्रधार
अशोक छलाह। वएह अशोक जे दसवर्ष पूर्व हडसनक
कृतीकें साकार करने रहथि आ आइयो गरीबी नहि देखइ
बला परिस्थितिमे जीबैत, गरीबक अनुकृति कोन रूपमे करैलाने
ओकर गवाह गामक ओ प्रबुद्ध दर्शक अछि जे हुनका मंचपर
अभिनय करैत देखने अछि। अशोकक मोनमे गाम बसैत अछि,
गामक नाटक सदरिकाल चकमाउरा लैत अछि, भैत रहत।
कारण, नाटकक पियास करबनहुं मिझाइत नहि छैक। ओ कहियो
'मीनाक्षी' नाटकक 'बल्लाल सेन' भऽ उमरय आकि 'बड़का साहेब' भऽ
नाटक जीवन थिक आ जीवन जीयब एक कला। कलाकें
कलाकार जीवंत बनबैत अछि। अशोक जीवन्त कलाकार छथि।
सम्पर्क सूत्र - 8521202514.

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

२१.गजेन्द्र ठाकुर- कवि अशोक



गजेन्द्र ठाकुर

कवि अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर स्कूल सर्टिफिकेटक वएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओहि वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'द्वारिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लिखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ए जाय तखन ओ जिन्दगी मे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दबाव पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक

रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरो विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेसी छै। प्रेमचन्दक ऐ गपसँ हम भिन्न विचार रखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन रुबाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबस्त सेहो हमरा नै दऽ सकल। ओ उदाहरण दइ छथि-

" बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयो, आँगन भयो विदेश"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से नाविन्य- प्राचिन्य- समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कवि अशोक

पहिल चरण अशोकक : ' चक्रव्यूह' (सामान्य पाठ)

महाभारत एकटा अद्भुत ग्रन्थ अछि। ई जय संहिता कथा लेखकक वर्कशॉप अछि, महाभारत कथा, मुदा ई कथा सभ पद्यमे अछि! गीत -महाभारतक अति लघु पद्यात्मक मैथिली रूप हमर त्वस्याहम्य

प्रबन्ध मे भेटल।

फेर तेरहम दिनक युद्ध भेल शुरू जखन,

संसप्तक आ त्रिगर्तकेँ पछुआबैत गेल अर्जुन।

तखनहि युधिष्ठिरकेँ पता चल चक्रव्यूहक,

अभिमन्यु देखि चिन्तित काकाकेँ कहल,

गर्भमे सुनल पिता माताकेँ व्याख्यान सुनबैत छल,

चक्रव्यूहक छह द्वारकेँ तोड़बाक समटा,

सप्तम युद्धक व्याख्यानक विधि बचल नहि कोनोटा।

मुदा सातम द्वारक युद्धक व्याख्यान सुनल नहि,

माता सुतलि तखने बचल एकटा द्वार सैह

कवि व्यासक पेटमे सीखि अएबाक बन्हि,

शब्दार्थ नहि वीरक अछि ई प्रतीक।

सोहाँ तखन बढ़ल अभिमन्यु ककरो नहि डराएल,

कतए अछि द्वार कतए प्रवेश जयद्रथ रक्षक जाए,

आउ भीम काक ई अछि प्रवेश द्वार पैसब एतहि।

अभिमन्यु कए प्रहार जयद्रथपर बाणसँ गेल भीतर,

भीम दोसर सेनानीकेँ रोकि जयद्रथ ठाढ़ ओतहि।

दोसर द्वारपर द्रोण ठाढ़ जखने वाण चलाबथि,

काटल धनुष द्रोणक व्यूह भेदि बढ़लाह आगू।

तेसर द्वारपर चकित कर्णपर कए वाण वर्षा,

बढ़ल चारिम द्वारपर अश्वत्थामा जाए छल,

युद्ध भेल घनघोर एतए मुदा रोकि सकल नहि,

अभिमन्युक रथ बढ़ल दुर्योधन भेल चिन्तित,

कर्ण आब करब की बाजू पराजय बुझाइछ निश्चित।

कर्ण बाजल सभ मिलि सातो महारथी हम सभ,

रोकि सकब एहि बालककेँ नहि क्यो सकत असगर।

सभ रथी आ पुत्र दुर्योधनक नाम लक्ष्मण जेकर,

पहुँचि गेल सातम द्वार पहुँचल अभिमन्यु तावत।

अभिमन्युक सारथी देखि ई दृश्य ओतए कहल,

ई सभ अधर्मी अछि जुटल, कहू तँ रथ घुराएब,

अर्जुन पुत्र हम नहि छोड़ब युद्ध हम एना देखू,

पार्थपुत्रक- शौर्य रथ घुमाऊ चक्राकार कए अहाँ

तखन लक्ष्मण आएल सोझाँ अभिमन्युक ओतए

વ઼ામસઁ કાટθ મસ્તક θક્ષ્મામક, દ્રોમ કહθ,

શ્રળેય઼ ઈ અછિ શ્રભેદ્ય઼ એકર કવ઼ચ કૂર પ્રહાર સહિસહિ શ્રા

તપ્પનહિ સારથિ શ્રભિમન્યુક પ્પસθ ટૂટ ગેθ રથ।

નીચાઁ શ્રાવિ તુશ્રાર ચક્ર ગદા θए શ્રોતए શ્રો ચθθ,

દુઃશાસનક પુત્રસઁ ગદા યુદ્ધ ભેθ દુનૂ શ્રોતહિ પ્પસθ।

પહિને ઉઠિ દુઃશાસનક પુત્ર પ્રહાર કएθક મસ્તકપર,

સપ્તરથીક વીચ પ્પસ પિડ઼θ સુભદ્રાપુત્ર પરાક્રમશાક્ષા

(ગળેન્દ્ર ઠાકુર, ત્વસ્યાહ્મયગીત પ્રાવન્ય -, २००९(

' ચક્રવ્યૂહ' કવિતા સંગ્રહક પહિθ કવિતા શ્રછિ ' ચક્રવ્યૂહ' ભરમે શ્રા૨ ને કૃષ્ણ છથિ ને યુધિષ્ઠિર શ્રા ને શ્રર્જુન, શ્રા૨ મહાભારત યુદ્ધક તેરહમ) ત઼ઁ રચθ શ્રછિ ચક્રવ્યૂહ। (દોને

' હમ કહિ પૂછવ મે' ચીરહરણક વર્ણન શ્રછિ-

પ્પસિચિ઼ાકેઁ દુર્યોધન દેθક ઈ શ્રાજ્ઞા પુનઃ ઈ

ચીરહરણ કૂર દુઃશાસન દ્રૌપદી દાસી છી-

દ્રૌપદી કएθન્હિ નિહોરા શ્રેષ્ઠ θોકનસિઁ

વ઼નિય઼ ઈ શ્રછિ ભીજ વચાઉ કૌન છી વ઼નિતી।

સમ ક્યો તુક્કા માથ અપન ઓહિ સિમામે,

ક઼ૃષ્ણા છોડ઼ઇ સમ આસ સમ દસિાસઁ,

મક્તિ વ઼્તસઇ અહાઁસઁ ટા અછિ ૬ આસા,

ક્રોહના નાપૂ હમર ૬ ઇાળ અછિ પ્રિયાસા।

આન્દ્રસ્વ઼રસઁ છઇિ નહિ પુકારા દ્રૌપદી-,

ગોહાડ઼િ પ્યિસઇિ સિમાવયિ-, મૂર્યુછાિ।

ઇાગઇ પ્યીયય દ્રૌપદીક વ઼સ્ત્ર દુઃશાસન,

સમાસદ દેખઇ યમત્કાર ૬ પ્રતિપિઇ,

યાવ઼ત નહઇ ખાંચૈત વ઼સ્ત્રકેઁ દુઃશાસન,

વઢ઼ૈત નહઇ વ઼સ્ત્ર દ્રૌપદીક તાવ઼ત તપના

(ગાળેન્દ્ર ડાકુર, ત્વ઼ચ્યાહ્મયગીત પ્રવન્ધ -, ૨૦૦૯(

ક઼ૃષ્ણક ભૂમિકાસઁ વ઼્યાસ પ્રસન્ન છથિ, મુદા અશોક અપ્રસન્ન। આ હુનકર અપ્રસન્નતાક કારણ અછિ, હુનકા ઇૌ છન્હિ જે ' એહિ યીરહરણ-મે આરઅછિ દિત ડેહુનયિાઁ દઙ દુષ્સાસનક આગૂ ભૂમિકા ક઼ૃષ્ણક્ ' । આ સે હુનકર સમ્વન્ધક દ્રૌપદી નાટક ભઙ ગેઇ છન્હિ, અપન ઇાશ અપન પીડ઼ર ઉઘૈત વૈતાઇ કહયિા હેતા, વ઼ક્રિમાદિત્ય઼ કહયિા હેતા, સે જિજ્ઞાસા છન્હિ। ' સોવ઼યિત ભૂસ સઁ ' કવ઼િતા અછિ એકટા નૈરેટિવ઼િક જે અશોકક પીઢ઼ીકેઁ પરસઇ ગેઇ નહૈ, જતઙ સોવ઼યિત સંઘક વડ઼ાર આ અમેરિકાક ખંધિાસ કએઇ જારત નહૈ, આ જે સે કરૈત નહથિ ઓ અપન વાઇવય્યાકેઁ પઢ઼ૈઇ અમેરિકા -

दइल परीक्षा कोनो संगी हमर एकटा जे पड़ैए मोन हमरा पठबैत रहथि आयल चर्णि कऽ घूमि एराचि यूनिवर्सिटी आ गेल दरभंगा, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै। ऐ कवितामे अशोक सेहो सएह केने छथि। सालमे चार बेर भोट दैत लोक आ भोट दऽ स्तोस्त कटैत लोक हुनका पसिन्न नै छन्हि, मुदा ऐ बेरबेर होइत भोटक लेल जे सामाजिक-ओइ समीकरणात्मक निर्माण होइत अछि से अशोक देखबासँ चूकि गेल। परिवर्तन सामाजिक जे परिणामस्वरूप समीकरणात्मकताक उत्प्रेरक तत्वक तरंग उठैए से अशोक चीन्हि नै सकल। 'गीत जे नै लिखल गेल' आ 'की सुनाउ अहाँकेँ?' कवि कर्मक वेदनापर आधारित अछि। 'लोक किछु नहि कहैए' मे मनुष्यक अकर्मण्यता आ 'तोरा गछने रही' मे मनुष्यक स्वार्थ विषय बनल अछि। 'संचिकास्त' कार्यालय शब्दावलीक आधारपर रचित अछि। 'शिलालेख' क बिम्ब सुन्दर अछि। कवि आततायीकेँ कहै छथि जे ओकर अत्याचारकेँ शिलालेखपर खचित कऽ सुरक्षित गरबा दी की? आ ओ तँ भगवान छथि, आ से ओ हुनका मृत्यु स्वीकार करबा लेल कहै छथि, मुदा व्यंग्य सेहो करै छथि जे हुनकर पुनर्जन्म अवश्य होइन्हि। तीनसँ बेसी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' ओहे अछि रहल ओही भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ- अछि आयल ओहीँ सेहो अवधारणा मृत्युक भगवानक ऐसँ कारण, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। इतिहासक अन्तक घोषणा कयनिहार फ्रांसिस फुकियामा जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर इ-समाप्ति शासनक कम्यूनिस्ट वादमे ऐसँ पलटि गेलाह। -घोषणा कयने छलाह जे कएलन्हि घोषित फुकियामा फ्रांसिस वाद खसबाक देबालक बर्लिनक आ समाप्ति ई इतिहासक सँ सृजित (द्वन्द्व) झगड़ा आपसी विचारधाराक विचारधारा हितक मानवक आब आ अछि मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन बाद ओ ऐ मतसँ आपस भऽ गेला आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयता सभक मध्य अखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे 'शिलालेख' महत्वपूर्ण अछि।' स्तर कोनो बढ़िनी चमकल' मे

કવિ હૃદય શ્રા પ્રકૃતિક વીચક સમ્વન્ય ઊઁ દેખ઼ ચાહી તઁ દેખિ સકૈ છી, ઊેના 'ગોવર સઁ નીપઠ શ્રંગના મે વરસઠ'। 'શ્રહાઁ કૈઁ કે ચાહી?' શવ્દ શ્રાકિ શ્રર્થ, શવ્દ માને જુસ્સા વા ખખડ઼ી શ્રા શ્રર્થ માને દાના, ઊે શ્રહાઁકૈઁ ચાહી કવિ દેતા। 'ચુપ્પી નહિ સોહાશ્યે' મે કવિ ઉઠલ્ન દર છથિનિ, પેટ ઊઠ ચુપ્પી શ્રઙેઊઠ મુદા તૈયો પેટ કહાઁ જાૈએ? ગામ ઊગક પૈટઘાટ મોન પડ઼ૈ છન્હિ, શ્રા ઊખન હાકમિ દવાડ઼ૈ છન્હિ તઁ શ્રગાઊિ કવિતા 'પાઁતી શ્રાર ઊનૂર ઊખિવે' મે ગામ શ્રેર મોન પડ઼ૈ છન્હિ, મોન હોર છન્હિ સજા છોડ઼છાડ઼ ગામ-ઘુર્મ ઊાથિ। 'શ્રસગાર' મે સમય કે દર્પણ મે નીર દેખવાક ચર્યા શ્રછિ, વછિડ઼ ગેઊાપર જેઠઠ એકાન્તીક હાક્રોશ શ્રછિ। 'રચના સઁ પહિનિ' મે કવિ કૈઁ સજટા પાઁતી શ્રનચનિહાર ઊગાર્હઠ છન્હિ, છગુન્તા હોર છન્હિ કેના એોક ઊીવન ઊીવિ ગેઊ। 'શૂન્ય' શ્રછિ તૈ મઊિવાક કવિતા, ઈ સમાનાન્તર ચઊવાક કવિતો તૈ શ્રછિ' મોનક ઘામ્ટી' મે મોનમે એઊાપર ચાનન સન શીતઠ હેવાક શ્રા મોનસઁ ગેઊાપર સહસહ કૈતા સાઁપક શ્રાગમન હેવાક ચર્યા શ્રછિ। ચાનન શ્રા સાઁપક વમ્વિ સંસ્કૃત સુજાષિતાનસિઁ મૈથિઊિમે શ્રનઠનિ શ્રછિ કવિ, મુદા કને જાનિન નૂપમે। ચાનન ગાછક ઊડ઼ પિરાઊીવી હોરત શ્રછિ, એકર ઊડ઼ પાનિ શ્રા ખનિઊ દોસર ગાછક ઊડ઼કૈઁ શ્રાડ઼િ કઽ શ્રોતઽ સઁ ગ્રહણ કૈત શ્રછિ। વર શ્રા પીપડ઼ક ગાછ પરાઊીવી તૈ હોરત શ્રછિ મુદા ઊખન શ્રો છોટ શ્રવસ્થાક રહૈત શ્રછિ શ્રોકરા દોસર ગાછક શ્રાવશ્યકતા પડ઼ૈ છૈ, સહારા ઊઽ ઠાઢ઼ હેવા ઊઠ, સોગાર સન। શનૈશનૈઃ વર શ્રા પીપડ઼ક ઊડ઼ સિહારા દેનહાર : શ્રા પાનિ વનિ સજા શ્રો ઊે શ્રછિ ઊૈત ગછાડ઼ સોગાર વનઠ ગાછ સજકૈઁ તેના કઽ શ્રહાઁ કી શ્રાવ શ્રા શ્રછિ। ઊારત જાઽ પચિડ઼ા સૂર્યપ્રકાશક 'શીતઠ ચાનન ગાછમે ઊપેટઠ રહવો ઉપરાન્ત સાઁપ વિષહીન તૈ હોરત શ્રછિ' કેર વમ્વિ દેઊાસઁ પહિનિ મોનકૈઁ શ્રોહ્રાયઠ પવૈ છી? મુદા કવિ સતર્ક છથિ, શ્રો ચાનન સન શીતઠ હેવા ચર્મ સીમાતિ રાખઠન્હિ શ્રપનાકૈઁ। હમ શ્રનેર ઊેક્સ ઙેરીઙાક વિખ઼ણ્ઙનાત્મક પદ્ચતિક પ્રચોગ સમીક્ષામે તઁ તૈ કઽ રહઠ છી? 'દવકઠ કુકૂર' દ્વારા હઊિશ્રોઠ ઊા રહઠ નાઙરકિ વમ્વિ સઙ સંસ્કૃતક સુજાષિતાનિ કાક ચેષ્ટા વકો ધ્યાનં], શ્વાન નિદ્રા તથૈવ ચ। શ્રઊપહારી ગૃહ ત્યાગી, વિદ્યાર્થી પંચ ઊક્ષણં ॥ઊશ્મે વિદ્યાર્થીક ઊક્ષણમે એકટા [

बच्चामे 'श्वान निद्रा' क चर्चा अछि, माने कनियो आहट भेलापर ओ उठि जाइत मुदा हमर गाम बला बनल खोलबेनपर मनुक्ख के हजारोक संख्यामे - एक्सीडेण्टमे मरैत अछि मुदा कुकुड़ ओतबे संख्यामे मरैत अछि सुनबे, सड़कपर सुतब, लोक कहै छै जे कुकुड़क नीन बड्ड मोट होइ छै ! तैं के श्वान निद्रा कतऽ? की ओकर स्थान हम सभ छीनि लेलहुँ, की गाड़ीक गति तते तेज छै जे ओकर आहटि कुकुड़क साकांक्ष हेबासँ बेसी तेज छै से ओ नै सुनि पबैए, आ की संस्कृतक सुभाषितानि मनुक्खक पर्यावरणमे हस्तक्षेपक कारण खेल भऽ गेलै? जेकर लेखाक संग पर्यावरण बन्धनमे हम अनेरे ओझरा गेलौं, एतऽ के कवि दिवकल कुकुरक नाटकी हिलबाक बिम्ब मात्र प्रयोग केने छथि। 'बनि स्नेहक तस्वीर' सेहो हुनकर असगर हेबाक चर्चा करैत अछि। 'हमर कोनो नाम दऽ दे' मे ओ ओकर बनिवाट रूपक आगाँ अपनाकेँ अस्तित्वहीन हेबाक अनुभव करै छथि। 'उदास भोरक एक गीत' अछि टीसक गीत, टीस हृदयसँ शरीर धरिक। 'कहिया धरि' मे कवि मेल ताकि रहल छथि हिनका लेल, आसाक माटि बगैर रहैत छथि रंगीन सपनाक बन्धनमे। मुदा से कहिया धरि? 'एक बिन्दुतीन बिम्ब :' मे एक बिम्ब अछि कोनो स्वच्छाक पूरति, दोसर अछि सोनालाएल आँखि आ तेसर बिम्ब अछि बिनु बयबाक प्रयास करैत ख़सैत जायब। 'प्रेमक तीन आखर' मे एक अछि जे ओकर आँखिक भाषा पढ़ि लिखिल शब्द -, कतेको हटकारी कऽ लिखै छथि मोतीये सन पाँति बहराइत छनहि, दोसर ओकर प्रतिबिम्ब देखै छथि - अपन मोनक अएनामे, आ से तेहेन प्रतिबिम्ब देखै छथि जे छोटि लेबाक, पीसि कऽ चिबि कऽ लहलहान हेबाक मोन करै छनहि। तेसरमे लग एलासँ डरो होइ छनहि। आ चएह छी प्रेमक ढाइ आखरसँ आगाँक तीन आखर। 'एक राति' मे रातिक शीतलता, नीकनीक अनुभूति-, मुदा दिनक नीद? दिन --- नहि नहि। 'साँझ' सभ दिन आबि जाइए निर्लज्ज बनि, कवि ओकरा भागि जाइल कहै छथि नै के बड़ा देता रजोता। 'नव सीत' अछि नववर्षक आगमनक गीत, बर्खनसँ हीनो बनबाक प्रयासमे नै भऽ जाथि एक्सट्रा, सेहो चएह शंका आ निराशा। 'सीप मध्य मोती' मे आदर्शक लुलुसमे गाँधीक सहिष्णुता आ असहयोग कऽ डरा हारलापर बात् नै जातिलापर। क चर्चा अछि (आन्दोलन)

વાદ તકર આ મોતી। સકત વર્ણ ટઘરઉ નોર ળગયિ કઽ !છી સકૈ હઁસી અછિ' પાઁયટા અનેરુઆ કવ઼તિ' ળરમે પહિલ અનેરુઆ કવ઼તિ અછિ કૃષ્ણક સજા સાઉ હેરત ળન્મપર (કૃષ્ણાષ્ટમી), મુદા એ વેર વાઁસુરી વસિર્ગ વ઼ાયઉનિ ઉઽ કઽ આયઉ છથિ કૃષ્ણ। માને કવ઼ વ઼ાયઉનિકેઁ વ઼દિશી વ઼ાદ્ય માનૈ છથિ, હિન્દુસ્તાની સંગીતક હિસાવે ઓ ૬ સહી છૈ મુદા કર્નાટક સંગીતમે ૬ વ઼દિશી વ઼ાયઉનિ આરસઁ દૂ સય઼ સાઉ પહિને સમ્મિલિત કઽ લેઉ ગેઉ છઉ। દોસર અનેરુઆ કવ઼તિ અછિ ડાંસ સુઉરક મુદા ઓત્તૌ પરર પછિડ઼ ગેઉન્હિ। તેસર અનેરુઆ કવ઼તિ અછિ નકિશાવઉક, મુદા ળપ્પન અગાલિ પહિયિ હુટકાસઁ ટેઢ઼ જેઉ તપ્પને ઓ સંસાર વુહિ પેઉક। યારમિ અનેરુઆ કવ઼તિ અછિ ળીવા લેઉ ળોડ઼ઉ ળનિગી જરકિ સમ્વન્ય, મુદાપાઁયમ અનેરુઆ કવ઼તિ અછિ વ઼નાિશક ! અછિ કવ઼તિ અગ્રામિ યક્રવ઼ૂહક કરયિ ળીહક। 'દૂ વૂન્દ નોર' તૂશ્રાન, વહિાડ઼ મુદા હૃદયક વહિાડ઼સિઁ પૈઘ નહિ સાઁવ઼રયિ નહિ મૃત્યુક પ્રતીક્ષા। આ હમ મર ળારત છીમાટકિ !, પતઉરક ટૂટઉ ઘર દહારત, માટકિ શરીરક સંગ।

દોસર યરણઅશોક યક્રવ઼ૂહક વાદ : (સામાન્ય઼ પાઠ)

'સ્રેર સઁ' મે છોટ વેટાક દુખ્પીત હેવાપર કારી મેઘક ઘટાટોપ આ કવ઼તિ ઉપ્પિવાક સૂર યઢ઼વ દેખ્પૈએ ળે કવ઼કિ કવ઼તિક વ઼ાતાવ઼રણ દુખ્પી જેઉપર વનૈ છન્હિ। 'દાઁત' મે સાસુરમે કનયિાઁકેઁ મુઁહ નૈ ખ્પોલવાક ળે સલાહ દેઉ ળાઇ છૈ તકર યર્યા અછિ। 'આવ઼' મે માટિ, કાઠ, વાઁસક પ્રયોગ કમ જેને આ સમિશ્રટ, વાલુ, ગટિટી, લોહા, સંગમરમરક પ્રયોગ વઢ઼ને લોકોક્તમિ અવૈત પરવિર્તન કવ઼ દેખ્પિ રહઉ છથિ। 'વ્રહ્મોત્તર' મે વ઼કાિસ લેઉ ગાછ, ઘર, ખ્પેત આદિક અયગ્રિહણક દંશ, પહિને ખ્પેતહિરસઁ ખ્પેત ઉઽ કઽ વ્રહ્મોત્તર વાઁટઉ ળાઇ છઉ, આર લોકસઁ ળમીન ઉઽ કઽ નવ઼વ્રાહ્મણકેઁ - દેઉક યુનૌતી નન્દીગ્રામ વ઼શિવ઼ગ્રામકેઁ મુદા વાઁટઉ ળા રહઉ અછિ। અછિ। 'મોછ' મે અસ્તરક મહત્વ઼ વુહ્વૈત ળ્યેષ્ઠ મોછકેઁ પૈઘત્વ઼મે વાયક તત્વ઼ યનિ્હિત કેને છથિ, વા તેના કઽ કાળ કરૂ, કમાઉ ળે મોછમે નૈ

𑒪𑒰𑒑𑒪, 𑒮𑒹 𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒋 𑒕𑒟𑒱। '𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒩𑒼𑒯' 𑒧𑒹 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒥𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒛𑓃𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞, 𑒋𑒏𑒮𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒼𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒍 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒬𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞, 𑒧𑒹𑒩𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒢। '𑒂𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒩𑒴 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨!' 𑒧𑒹 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒋𑒥 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒻 𑒁𑒩𑒒𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। '𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒮𑒹 𑒧𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞' 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒻 𑒮𑒼𑒯𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒂𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒣𑒩 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒟𑒱। '𑒋𑒯𑒱 𑒦𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒴' 𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒧𑒱𑒮𑒱𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒹𑒞𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। '𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦𑓁𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏' 𑒏 '𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫' 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒠𑓂𑒩𑒾𑒣𑒠𑒲 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 '𑒦𑒼𑒙' 𑒧𑒹 𑒦𑒼𑒙 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪-𑒣𑓂𑒩𑒣𑒘𑓂𑒔 𑒁𑒕𑒱। '𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒂𑒥 𑒧𑒯𑒏𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒋' 𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒩𑒴𑒣 𑒩𑒴𑒣 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। '𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒩𑒳𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒁𑒪𑒲' 𑒧𑒹 𑒢𑒏𑒪𑒲 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒂 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢 𑒑𑒜𑓃𑒪 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒁𑒕𑒱। '𑒥𑒳𑒔𑒱𑒨𑒰𑒩' 𑒧𑒹 𑒥𑒩 𑒂 𑒣𑒲𑒣𑒛𑓃 𑒮𑒢 𑒒𑒹𑒩𑒹-𑒒𑒩 𑒠𑒩𑒰𑒩𑒱 𑒞𑒏𑒻𑒞 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒟𑒱। '𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒔𑒩𑒼𑒯𑒱 𑒟𑒱𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰' 𑒧𑒹 𑒏𑒫𑒱 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹𑒅 𑒄 𑒏𑒲 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒟𑒱 '𑒬𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒪𑒏𑒏 𑒥𑒹𑒪𑒣𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒟𑒱𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰'। '𑒫𑒱𑒭' 𑒧𑒹 𑒏𑒫𑒱 𑒞𑒰𑒏𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒡𑒩। '𑒐𑒰𑒋𑒥 𑒂 𑒢𑒯𑒰𑒋𑒥' 𑒧𑒹 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒐𑒰𑒋𑒥 𑒂 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒰𑒋𑒥 𑒏𑒧𑓂𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥? '𑒖𑒢𑒢𑒱' 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒖𑒢𑒧𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒢𑒢𑒱 𑒥𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। '𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪' 𑒧𑒹 𑒧𑒳𑒩𑒳𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒁𑒕𑒱। '𑒂𑒚𑒧 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒴𑒔𑒲 𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲' 𑒧𑒹 𑒧𑒢𑒼𑒩𑒟 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒏𑒫𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝𑒫 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒟𑒱, 𑒣𑒔𑒲𑒮𑒼 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒟𑒱 𑒫𑒰 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒢𑒯𑒰 𑒂𑒥𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒮𑒳𑒩𑒰 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒂𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒰𑒿𑒏𑒲 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒫𑒰 𑒁𑒭𑓂𑒙𑒧 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒴𑒔𑒲𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬, 𑒄 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒏𑒙𑓂𑒙𑒩𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒬𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒰𑒩𑓂𑒛𑒥𑒰𑒅𑒝𑓂𑒛 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒃𑒥𑓂𑒩𑒹𑒩𑒲 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒐𑒩𑒲𑒠 𑒂 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧𑒱𑒏 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒮𑒹𑒧𑒲𑒢𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒻, 𑒯𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒌 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒣𑒙𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒢𑒙𑒹 𑒂𑒩 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒧𑒹𑒯𑒢𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। '𑒇𑒞𑒳 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱' 𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒨𑒳𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒏 𑒞𑒰𑒣 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒼 𑒮𑒿 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒇𑒞𑒳, 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒞𑒰𑒣 𑒂 𑒅𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒥𑒑𑒳𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒫𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒢𑒻 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। '𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬' 𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒼𑒧 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒧𑒯𑒰𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰, 𑒂 𑒏𑒫𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒛𑓃𑒏𑒰𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒋𑒢𑓂𑒯𑒱

मात्र होइत।

ऊपरमे अशोकक कविताक सामान्य पाठ छल

कवि
अशोकक समीक्षा: प्राच्य आ पाश्चात्य सिद्धांत सभक आलोकमे समीक्षा:
(सिद्धान्त लेल देखू हमर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्र, विदेह पोथी विदेहायोनि पर उपलब्ध)

मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवाद आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

कवि अशोकक चक्रव्यूह आ चक्रव्यूहक बादक कवितामे चक्रव्यूहक एक्कोटा कविता अहाँकेँ निराश नै करत, मुदा बादक कविता सभ अहाँकेँ हुहुआन लागत (अपवाद अछि ' जप्पन पियासे मरि जायत')।

संरचनावादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ लागत जे ' चक्रव्यूह' आ ' हम किछु पूछब मे' एकटा सार्वभौम महाभारत कथापर आधारित अछि, मात्र स्थान, काल आ पात्र बदलि गेल अछि।

चीरहरण प्रसंग व्यास भूमिकासँ कृष्णक हाथक वर्णन अछि-, मुदा अशोक अप्रसन्न। आ हुनकर अप्रसन्नताक कारण अछि, हुनका लगै छन्हि जे ' एहि चीर दुष्शासनक आगू भूमिका कृष्णक हाथमे आर-अछि दैत ठेहुनियाँ दऽ'। आ से हुनकर समन्वयक द्रौपदी नाटक भऽ गेल छन्हि, अपन लाश अपन पीठपर उघैत वैताल कहिया हेता, विक्रमादित्य कहिया हेता, से जिज्ञासा छन्हि।

आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकटा **ऐतिहासिक विश्लेषणपर** आउ। 'सोवियत रूस सँ' कविता अछि एकटा नैरेटिविक जइमे नुकायल छल एकटा सोवियत निरंकुशवाद, जे आइ ध्वस्त भऽ गेल अछि।

'गीत जे नै लिखल गेल' , 'की सुनाउ अहाँकेँ?', 'ठीक कहिछु नहि कहैए' आ 'तोरा गछबे नहि' क **मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ देखलापर** लागत जे कविक काजकेँ काव्यसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। एमे सकारात्मक भावक संग ओकरा सुसयिवाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। जँ ई अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह- वाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ जाइत (जकरा भरमार मैथिलीक सुप्पाएल मुख्यधाराक मैथिली ऐश्वर्य गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि।

'संचकास्त', 'अहाँ केँ के चाही?', 'चुप्पी नहि सोहाइए', 'पाँती आइ जरूर लिखबै' केँ आब कने **विखण्डनवादी दृष्टिकोणसँ देखी।** विखण्डनवादी कहैत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। कविक कथन स्वयं कविक ध्रुवीकरणात्मक स्थायी वा क्षणिक हेबापर प्रश्नचिह्न लगेबाक प्रमाण अछि। गामसँ वंचित वर्ग पलायन कऽ सामाजिक लांछनकेँ झेलि दैत अछि मुदा सबल वर्गकेँ गामक नतवा मोन पड़ै छै जे संचकास्तमे देखार पड़ैत अछि। 'पाँती आइ जरूर लिखबै' मे सेहो हाकिमक लाल- लाल आँखि देखि कऽ गाम घुरबाक मोन होइ छन्हि। 'अहाँ केँ के चाही?' मे आदर्श आ नैतिकताक अन्तक घोषणा अछि, शब्द जे चाही से भेटत, साँच आ झूठ- शब्द आ अर्थ ढेरी नास छै, मुदा आदर्श आ नैतिकता आउट ऑफ स्टॉक छै, एक दस्तखतमे सभ किछु बिकाउ छै मुदा तखनो आदर्श आ नैतिकता नै। से कविक ध्रुवीकरणात्मक स्थायी वा क्षणिक हेबापर ई सभ प्रश्नचिह्न लगबैत अछि।

'शिलालेख', शिलालेखमे मुदा उलटवासी अछि, लोक शिलालेखमे अपन कीर्ति लिखबै छथि मुदा कवि ओकरे शिलालेखमे ओकरे थूकक पपिासा लिखबऽ

चाहै छथि! आब फेर कने कविताक **ऐतिहासिकतापर** जाउ। **जादू-वास्तविकतावादी साहित्यमे भविष्यकालमे गेलापर** हम देखै छी जे ओइ स्थितिमे जादू- वास्तविकतावला साहित्यक पात्र लग ई कविता जायत तँ ओ ऐ कविताक तेसर अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओतऽ खतम भऽ जायत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू- वास्तविकतावला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलग अर्थ लेत, आ कविक कविताक भावक ताकमि रहत। कने आगाँ बढ़ब तँ लागत जे ई तँ भगवानक विषयमे अछि, कवि हुनका भाभट समेटबाले कहै छथि, पूछै छथि जे की ओ हुनकर मृत्युक घोषणा कऽ देथि? नीत्सेक कथन जे भगवानक मृत्यु भऽ गेल छन्हि तकर अर्थ सेहो स्पष्ट रहै, भगवान एकटा आइडिया, एकटा सोच अछि जे पश्चिममे एनलाइटेनमेण्ट (ज्ञानोदय) क बादक वैज्ञानिक सोचक बाद ओइ आइडियाकेँ खतम केलक। भारतमे तँ पूर्व मीमांसा आ सांख्य पहिनहियेसँ भगवानक आइडियाकेँ नै मानैत अछि (मुदा दुनू आस्तिक दर्शन अछि माने वेद केँ मानैत अछि, मुदा भगवानकेँ नै। से अशोक नै चाहियो कऽ मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्पराक मूलधारासँ बहुत ठाम भिन्न छथि आ मिथिलाक समानान्तर परम्परासँ लग। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल "गाथिन", "गातुविद्" आ "गाथपति" ऋग्वेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक कालसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल। विश्वामित्र गाथिन रहथि, गाथिनक पुत्र, गायत्रीक द्रष्टा। प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋग्वेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋग्वेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसिन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्ध करैत अछि? (गोपथ

ब्राह्मण २४)। जे आर्य छथि से भारतक पश्चिम भागसँ मिथिलामे एलाह, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वैदिक किछु अंश विद्यमान छल, तँ जे बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसञ्चित, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटल। तँ जे उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि। वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावरणम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ पशु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संयोजनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि केलाह आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि केलाह तँ सृष्टिक बाद तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विविकसँ होइए प्रलय। से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या। प्रकृति संयोजनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रकृतिक होएत जे कोनो उद्देश्यसँ होएत आ तकर कोनो प्रमाण ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ए सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि। अशोकक ' शिलालेख ' मे अशोक एक डेग आगाँ बढ़ल छथि, हुनका सेहो बूझल छन्हि जे भगवानक मृत्योपरान्त पुनर्जन्म होइन्हि। ' दू बून्द नोर' मे सेहो साँवरिया नहि अछि मृत्युक प्रतीक्षा, ' आऽ हम मरि जाइत छी!' जादू वास्तविकतावाद सेर अबैए, ओ

अपनाकेँ बहैत देखि रहल छथि।

'असगर' क लय अद्भुत अछि। 'अन्हार कोनो वस्तुनो चमकल' , 'मोनक घाम्टी' , 'हमर कोनो नाम दऽ दे' आ 'उदास मोनक एक गीत' क **चर्चा सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू। अशोक** अन्य आ प्रतीक दुनू सोहीँ अनै छथि। चर्चा सिद्धान्तक न्याय दर्शन विनोद कहलक। मुदा अशोक चर्चाकेँ जोगार संरचना सोहीँ अनै छथि। ई प्रतीक समाजसँ आएल कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि। **रूपवादी दृष्टिकोणसँ एकर पाठ करू।** भाषाक अनुप्रास पक्षक कविताक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विनोदी शब्द समाजक बाहुल्य आ संयोजनक अनुप्रास प्रकृति शब्दाडम्बरसँ युक्त भाषा कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। संयोजन ई कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि। **स्फोट सिद्धांतक आधारपर** पाठ करू। **शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण** भेल अछि।

'एक राति', 'साँझ', 'नव सोन', 'सीप महक मोती', 'पाँयटा अनेरुआ कविता', 'कहिया चलि', 'रचना सँ पहिने', , 'दबकल कुकूर', 'बनि श्रेमक तस्वीर', 'एक बिन्दुतीन बिम्ब :' आ 'प्रेमक तीन आपन' केँ **अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ** देखी त' अपन दशा भेल, असगर जीवा भेल, चलिता भेल अपने जमिमेदार छथि। **औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू,** वर्तमान कविक कविताक औचित्य अछि।

'शून्य' कविताक पाठ **विखण्डनवादी पद्धतिसँ करू। गामति ओकरा शून्य बनबै छै, मुदा थकनी जे भेल कौ उत्तर देत?** इतरा बाद अपने जाएमे फँसि जाइत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत।

दोसर चरणमअशोक चक्रवर्तीक बाद :

दोसर चरणक कविता सभ **समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ**

𑒣𑒰𑒚 𑒧𑓀𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। '𑒐𑒹𑒞 𑒮𑒿', '𑒂𑒥', '𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩', '𑒧𑒼𑒕', '𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒩𑒼𑒯', '𑒂𑒥 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒩𑒴 𑒂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒨!', '𑒋𑒯𑒱 𑒖𑒢𑒧 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒞', '𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦𑒨𑒳𑒑𑒰𑒥 𑒥𑒩𑓂𑒭𑒏𑓁', '𑒖𑒼𑒙', '𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒂𑒥 𑒧𑒯𑒏𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒋', '𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒢𑒴𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒁𑒪𑒲', '𑒥𑒳𑒡𑒱𑒨𑒰𑒩', '𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒥𑒩𑓂𑒩𑒼𑒯𑒱 𑒟𑒏𑒱 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰', '𑒫𑒱𑒭', '𑒖𑒢𑓂𑒢𑒱', '𑒏𑒲 𑒖𑒹𑒪', '𑒇𑒞𑒳 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱' 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒂𑒨𑒰𑒧𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱।

'𑒖𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒮𑒹 𑒧𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒞' 𑒔𑒏𑓂𑒩𑒫𑓂𑒨𑒴𑒯𑒏 '𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒼𑒯𑒰𑒃𑒨𑒹' 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑒹𑒏𑓂𑒫𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। '𑒇𑒞𑒳 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱' 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒫𑒩𑒝𑒏 𑒞𑒿 '𑒖𑒼𑒙' 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒲 𑒋 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳𑒣𑒩 𑒑𑒠𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒢𑒻 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒕𑒲? 𑒂 𑒞𑒿 𑒄 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒦 𑒞𑒿 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒢𑒻 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱?

'𑒂𑒃𑒧 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒴𑒨𑒲 𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲' 𑒬𑒻𑒪𑒏 𑒣𑒰𑒏𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒏 𑒯𑒰𑒏𑓂𑒩𑒼𑒬 '𑒄 𑒍 𑒖𑒼𑒩 𑒞𑒿 𑒢𑒻 𑒖𑒏𑒩 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪' 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒞𑒿 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒑𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒁𑒕𑒱।

'𑒐𑒹𑒞 𑒮𑒿', 𑒂 '𑒨𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬' 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒧𑒢𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒂𑒨𑒰𑒧𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱।

'𑒠𑒰𑒿𑒞' 𑒂 '𑒐𑒰𑒨𑒥 𑒂 𑒢𑒯𑒰𑒨𑒥' **𑒢𑒰𑒩𑒲𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏𑒼𑒝𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒚 𑒧𑓀𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒴।** 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒩𑒯 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑒢𑓂𑒞, 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒹 𑒍 𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨𑒹𑒏 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒯𑒳𑒁𑒋, 𑒖𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒧𑒲𑒔𑒲𑒢 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒂 𑒞𑒿 𑒖𑒿 𑒋 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒣𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒪𑓀𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏ऽ 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲। 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒁𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒅𑒣𑒧𑒰, 𑒩𑒴𑒣𑒏 𑒂 𑒮𑒰𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨-𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒫𑒲𑒩 𑒮𑒱𑒣𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। **𑒩𑒮 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒚 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫।** 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒰𑒫 𑒧𑒰𑒢𑒹

परिणाम वहन करै छथि कवि अशोक। से कवि ठाम-ठाम प्रयास कऽ 'चक्रव्यूहमे प्रयुक्त केने छथि। 'चक्रव्यूहक' बाद कवि अशोक एतौ निराश करै छथि।

जे अशोक भगवानक मृत्युक बाद पुनर्जन्म धरि कविताकेँ आगाँ बढ़ने रहथि से कवि अशोक चक्रव्यूहक बाद ठमकि गेल। मूल्यांकक छद्म समालोचना कवि अशोककेँ मानि नै देलक? मुदा कवि अशोकक पुनर्जन्म हएत, शीघ्र। आ चक्रव्यूहक 'चुप्पी नहि सोहाइये' केर सेकुलेल 'जप्पन पयिासे मनि जायत' आर पुनर्जन्मक बीज रोपण कऽ देने अछि।

अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

२१७.गजेन्द्र ठाकुर- कथाकार अशोक



गजेन्द्र ठाकुर

कथाकार अशोक

ओना त' अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि। हुनकर [illegible] [illegible] वएह नाम छन्हि। मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८८ केर जनवरी मासमे। ओहि वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५- ५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता त' आर कम। मूलधारक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लिखि लेलन्हि तखन जा क' ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो क' लेखकक सभ रचना नीक नै भ' पबै छै आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ै जाय तखन ओ जिन्दगी मे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दबाव पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि क' अपन प्रिय कथाक

रूपमे प्रस्तुत करैथि। हमरो विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखिय तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेसी छै। प्रेमचन्दक ऐ गपसँ हम भिन्न विचार राखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन रुबाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबस्त सेहो हमरा नै दऽ सकल। ओ उदाहरण दइ छथि-

" बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी परबत भयो, आङन भयो बिदेश"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध- प्रबन्ध- समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कथाकार अशोक

तरकीब (१९८६) (कथा संग्रह)

स्व. वर्मा किशोर ब्रज डॉ 'मणिपद्म' केँ समर्पित तरकीबमे अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक ५टा कथा छन्हि। ५-

𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒯𑒛𑓂𑒛𑒲 -, 𑒯𑒹𑒨𑒩𑒣𑒱𑒢, 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒳𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒂 𑒐𑒾𑒯।

𑒯𑒛𑓂𑒛𑒲: 𑒖𑒰𑒑𑒹𑒮𑒩, 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒲𑒧𑒰, 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒑𑒳𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒣𑒣𑓂𑒣𑒴। 𑒖𑒰𑒑𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 ऑ𑒤𑒱𑒮𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻, 𑒛𑒹𑒩𑒰 ऑ𑒤𑒱𑒮𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒻, 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒧𑒯𑒑 𑒦𑒹𑒙𑒻 𑒕𑒻। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒯𑒹𑒿 𑒥𑒑𑒪𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒪𑒪 𑒠𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒩𑒝𑒰, 𑒍𑒏𑒲𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳 𑒢𑒻 𑒮𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒲। 𑒋 𑒧𑒼𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒩 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒻। 𑒖𑒰𑒑𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒻 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒝𑓂𑒚𑒧𑒹 𑒯𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒤𑒿𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒯𑒹𑒿 𑒂 𑒞𑒹𑒿 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒯𑒛𑓂𑒛𑒲। 𑒢𑒰𑒧𑒏𑒩𑒝𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒙𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱।

𑒯𑒹𑒨𑒩𑒣𑒱𑒢: 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒂 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒠𑒴𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒅𑒚𑒥𑒻𑒋, 𑒧𑒾𑒑𑒲 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒤𑒼𑒙𑒼 𑒖𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒩𑓂𑒢𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒮𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒢𑒻 𑒣𑒛𑓃𑒻, 𑒂𑒃 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒂𑒏𑒵𑒭𑓂𑒙 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒠𑒴𑒡𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒂𑒥𑒻 𑒕𑒻, 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒍 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒠𑒴𑒡𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒃 𑒠𑒴𑒡𑒥𑒰𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒋, 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒏𑒱𑒋 𑒢𑒻 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒏, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒠𑒴𑒡𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒠𑒴𑒡 𑒩𑒰𑒐𑒻𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒏𑓄 𑒪𑒻 𑒕𑒻। 𑒠𑒴𑒡𑒥𑒰𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒛𑒩 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒠𑒴 𑒮𑒨 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒐𑒼𑒮𑒱 𑒠𑒻 𑒕𑒻, 𑒠𑒴𑒡𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒮𑒦 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒂 𑒒𑒩 𑒕𑒛𑓃𑒰 𑒖𑒹𑒞𑒻, 𑒮𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒋, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒻, 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒻 𑒋𑒞𑒻। 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒥𑒯𑒱𑒛𑓃𑒧𑒱 𑒅𑒡𑒨𑒰𑒨 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒥𑒩𑒐𑒰𑒧𑒹 𑒦𑒲𑒖𑓄 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒄 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒫𑒰𑒏𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒖𑒼𑒑 𑒪𑒪 - 𑒕𑒱𑒋 𑒞𑒰𑒞𑒪 𑒂𑒃 𑒖𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒯𑒻 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒤𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒹 𑒂𑒃 𑒏𑒰𑒖𑒣𑒩 𑒢𑒻 𑒖𑒰𑒨𑒞, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒖𑒰𑒅 𑒖𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒂𑒥 𑒅𑒪𑒙𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒠𑒱𑒮 𑒖𑒰𑒨𑒞। 𑒔𑒱𑒙𑓂𑒚𑒲 𑒮𑒦 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒋 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩, 𑒍𑒃𑒧𑒹 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒪 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒠𑒴 𑒧𑒰𑒮 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒰 𑒔𑒱𑒙𑓂𑒚𑒲 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒧𑒹 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒏? 𑒞𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒤𑒴𑒮𑒱। 𑒦𑒼𑒩𑒧𑒹 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑓀𑒑 𑒂𑒨𑒪𑒱। 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒅𑒚𑒻 𑒕𑒻, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧𑒰 𑒮𑓂𑒙𑒰𑒃𑒪𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒍 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒮𑒱𑒨𑒾𑒞 𑒕𑒱𑒋, 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒴 𑒧𑒰𑒮 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻, 𑒞𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒢𑒻 𑒂𑒨𑒪 𑒂 𑒞𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒿𑒙 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒪𑒻। 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒩𑒏 𑒬𑓀𑒏𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒋𑒪𑒻, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒯𑒹𑒨𑒩𑒣𑒱𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻, 𑒍 𑒯𑒹𑒨𑒩𑒣𑒱𑒢 𑒢𑒻 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿 𑒄

𑒏𑒏𑒩 𑒕𑒟𑒱? 𑒍 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒋। 𑒨𑒋𑒯 𑒯𑒹𑒨𑒩𑒣𑒱𑒢 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒯𑒹𑒨𑒩𑒣𑒱𑒢 𑒔𑒔𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒚𑒏𑒰𑒨𑒪 𑒮𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲। 𑒆 𑒮𑒨𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒠𑒴𑒨𑒫𑒰𑒝𑒲𑒏 𑒢𑒹𑒙 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒞𑒩𑒣𑒩 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒁𑒩𑒒𑒢𑒰𑒃 𑒧𑒼𑒮𑓂𑒏𑒝𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲-𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩𑒣𑒩, 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒖𑒰𑒃, 𑒯𑒱𑒣𑓂𑒣𑒼𑒏𑓂𑒩𑒹𑒮𑒲𑒣𑒩 𑒖𑒰𑒃, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒦𑓄 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒁𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒬𑒯: 𑒥𑒮𑒱𑒮𑒩, 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲, 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒮𑒩 𑒂 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒲। 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒮𑒩 𑒩𑒧𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑒅 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒮𑒰 𑒔𑒪𑒥𑒻 𑒕𑒻। 𑒣𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒯 𑒮𑒰𑒪 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒥𑒮𑒱𑒮𑒩 𑒚𑒴𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒮𑒿 𑒠𑒴 𑒮𑒨 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒔𑒢𑒧𑓀𑒞𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒪𑒹𑒪। 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒮𑒩 𑒕𑒼𑒙𑒹 𑒩𑒯𑒻 𑒞𑒐𑒢, 𑒮𑒳𑒏𑒩𑒰𑒞𑒲𑒧𑒹 𑒔𑒩𑒧𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒣𑒯𑒪𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒔𑒜𑓃𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻, 𑒑𑒱𑒩𑒯𑒟 𑒣𑒲𑒚 𑒚𑒼𑒏𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯, 𑒐𑒴𑒥 𑒮𑒩𑒰𑒯𑒼 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒃𑒋, 𑒧𑒯𑒲𑒮𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒂𑒥𑒱 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒮𑒩 𑒂 𑒕𑒹𑒏𑒪 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒻 𑒪𑒑𑒻।-𑒑𑒹𑒪𑒻, 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒮𑒰 𑒍 𑒂𑒥 𑒢𑒻 𑒔𑒪𑒥𑒻 𑒕𑒻, 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒮𑒰 𑒕𑒻, 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒴𑒢𑒰𑒨𑒱𑒢 𑒕𑒻। 𑒚𑒴𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒬𑒞𑒩𑓀𑒖 𑒐𑒹𑒪𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒴𑒠 𑒧𑒴𑒩𑒏 𑒠𑒴𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒦𑒼𑒙 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒴𑒠 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱𑒨𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒰𑒑𑒖 𑒫𑒰𑒣𑒮 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒞𑒰𑒯, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒩𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻, 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲 𑒏𑒟𑒰 '𑒮𑒫𑒰 𑒮𑒹𑒩 𑒑𑒹𑒯𑒴𑒿' 𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒂𑒑𑒰𑒿। 𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒬𑒞𑒩𑓀𑒖𑒼𑒧𑒹 𑒧𑒮𑒱𑒩𑒖𑒲 '𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒬𑒯' 𑒠𑓄 𑒏𑓄 𑒚𑒴𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒂𑒥 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒫𑒹𑒪𑒲𑒧𑒯𑒩 𑒢𑒻 𑒖𑒰𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒞𑒻।-

𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒳𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒂𑒿𑒐𑒱: 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒙𑓂𑒨𑒴𑒬𑒢 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱, 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒲𑒥𑒴 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲, 𑒮𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒏𑒩 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒞𑒏𑒩 𑒠𑒴𑒩 𑒑𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒁𑒮𑒯𑒖 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨𑒏 𑒥𑒪𑒹𑒿 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒞𑒼𑒣𑒱 𑒠𑒃 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯𑒮𑒿 𑒥𑒮𑒳𑒪𑒲 𑒞𑒰𑒏𑒥 𑒂 𑒯𑒰𑒩𑒱𑒣𑒼𑒕𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒖𑒰𑒨𑒥-, 𑒥𑒰𑒿𑒮𑒳𑒩𑒲𑒏 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒞𑒰𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒠𑒳𑓁𑒐𑒲𑒞𑒧𑒹 𑒠𑒩𑓂𑒠 𑒥𑒮𑒱𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙𑒏 𑒮𑒴𑒞𑒥। 𑒂 𑒂𑒢𑒼 𑒜𑒹𑒩 𑒩𑒰𑒮 𑒢𑒼𑒮𑓂𑒙𑒰𑒪𑒖𑒱𑒏 𑒑𑒣 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒐𑒼𑒯: 𑒒𑒴𑒩𑒡𑒳𑒂𑒿-, 𑒩𑒰𑒧𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒏 𑒁𑒚𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒹𑒏𑒱 𑒣𑒰𑒢𑒏 ऑ𑒩𑓂𑒛𑒩 𑒠𑒹𑒥,

નવ્શિપ્પનક વૈગ ઉન્ને ગામસઁ શ્રાયવ, વોન્ડ ઑસ્ટ્રેસિક કોનો કાળ છૈ। ઘનમે કનયિઁ સુચીનાસઁ કછિ જેઉ છૈ સે નામનાનાયામ નવ્શિપ્પન સઉ ઉના દસિ વદિ। ગઁ હોસ્ય, મુદા ઉગે છૈ ળેના પયનમે ઉક્પ્પડ઼ વાન્હ્ઉ હોશ। સ્ટેન ગામક નાટકક દુન્ગાગકિ યન્યા, વાસ્ઉ શ્રામદનીકેં પ્પનાપ વુહ્વાક યન્યા, દૂયક શ્રનાવ્મે નેવો યાહ। સ્ટેન કથાકાન કથાકેં સમ્હાનક યાહ્ઉની, એક્કેટા મશહ્ની છન્હિ, ચૌયનીળી સઁ ઉયાની ઉક શ્રનગ, મુદા સુચીના ળોગા કક પયાસ ટાકા નપ્પને છૈ, મશહ્ની ઉઉ દેગન્હિ શ્રા સુપ્પાન્ગ, શ્રા ગપ્પને વળિઉયો શ્રાવિ ગેઉ, નવ્શિપ્પનક કોડઉક પંપ્પાક શ્રવાળ શ્રવૈ છન્હિ, શ્રાવ વનિ મશહ્નીયો કક શ્રોકના મયૂછડ઼ નૈ ઉગાગે।

કાઁય કથાક એ સંગ્નહમે '**એકટા મુસ્કુનાસ્ગ શ્રાંપ્પિ**' જાવ્ષિયક પ્નગિ કને શ્રાશ્વસ્ગ કનૈગ વુહાસ્ગ શ્રછિ।

શ્રોહિ નાગકિ જોન (૧૯૮૧) (કથા સંગ્નહ)

સ્વ્ સુશીઉ હ્ા કેં સમન્પગિ *શ્રોહિ નાગકિ જોન*મે શ્રશોકક ૧૫ ટા કથા છન્હિ। એ પોથીક ' પ્નસંગાવ્શ' ઉપ્પિને છથિ કુઉાનન્દ મશ્નિ ળે કથાપાડમે વાયા ઉત્પન્ન કનૈગ, ળેના કુઉ વાવૂ ઉપ્પિ છથિ ળે શ્રસામન્થ્ય દૂન હોસ્ગ " ૭૭ક કથા શ્રશોક ળીક ---ગેઉ' વૌકા ચુપ છઉ' શ્રા હુનક ૮૮ ક કથા ' સનસિવક સાગા' કેં એક સંગ પઢ઼િ વૂહ્ઉ ળા સકૈછ। મુદા સે કેઉપન "' વૌકા ચુપ છઉ' ઉન્ટે ' સનસિવક સાગા' સઁ વીસ પડૈગ શ્રછિ, સન્નીળે) પુનુષક-મનોવ્ળિજ્ઞાનમે (પન્ની છથિ-દુનૂ ડામ પગિ' વૌકા ચુપ છઉ' કેન પગિ શ્રા પન્ની દુનૂ શ્રપન વ્મિાટ નૂપ દેપ્પેને છથિ, મુદા ' સનસિવક સાગા' કેન પગિપિન્ની - :શ્રછિ એના સજા કથા સંગ્નહક એ યાઉ હિન્દી સીનાયિઉ સન વ્યવ્હાન કેને છથિ।

વ્મિામસઁ પહિનિ: સમીન પનીક્ષા છોડ઼િ દેઉક, પગિ સન્ન છથિનિ। (પનીક્ષા) કેન્દ્નક ઘામ્ટા વાળઉ, પનીક્ષા શુનૂ હેવાક સમય જેઉ, શ્રો પનીક્ષા છોડ઼ને શ્રછિ, શ્રોકના વોપ્પાન જક ગેઉ। પ્ઉૉટ ડીક છઉ મુદા કથાકાન શ્રદહા કથા વનિઉ યનિ મુપ્પ્ય મુદ્દા પન નૈ શ્રાવિ સિકઉ, શ્રન્ગમિ પૈનામે કથા સમ્હાનવાક

અસસ્ઠ૭ પ્રયાસ કેઠન્હિ।

વૌઆ ચુપ છ૭: ડાકટર સાહેવક કનીયાઁ ગામ ગેઠ છલ્હિ સે ફોનપર ગપ્પ નહિ૭ છલ્હિ, વવિરામ કને નમડ઼િ ગેઠ અછિ, મુપ્પ્ય પ૭ૉટ સુનૂ હોરય વૌકાક સાઁપ કટવાસઁ, ડાક્ટર સાહેવ ઓત્તઽ વદિ હેર છથિ। મુપ્પ્ય કથા ઓત્તઽ છૈ, વૌકા સજાટા વુદ્દિયો કઽ ચુપ રહૈત અછિ, માટિ કાટઽમે પક્કા ઓસ્તાદ છ૭, મુદા વેમારી યઽ ઊ૭કૈ, સ્ત્રી રયયિ દેરી કઽ અવે, સેમ્મ્ટ ઊગેને, મુદા વૌકા કિછુ નૈ પૂછૈ ળે કે કત્તઽ સેમ્મ્ટ ઊગ૭ક। રયયિ કહૈ ળે વગિડ઼૭ છી તઁ માનૂ મુદા વૌકા ઓકર કેશ સોહ્રા દશ ઓકર દયિાદની સેહો રયયિ દયિા વાળૈ મુદા વૌકા કિછુ નૈ વાળૈ। આ મુરુ૭ તઁ વેમારી સઁ નૈ, સાઁપ કટ૭સઁ। સ્ઠર રયયિાક હાક્રોશ, એોક સુન્દર મનોવશ્રિ૭ષાત્મક વાદ કથાકાર દ્વારા, ડાક્ટરકેઁ રયયિા કઽ દેખ્ક઼િ કઽ દોસર તકયિા મોન પડ઼િ એ૭, સઁ કથાક સમાપ્તિ કરવાક આવશ્યકતા નૈ છ૭ન્હિ। કથાક આરમ્ભ આ અન્ત દુનૂ એ કથાક કમળોરી અછિ, આ એોક સુન્દર કથાક સત્યાનાશ ભઽ ગેઠ અછિ। મૂ૭યાઙ્કનક છદ્મ સમીક્ષાક પરાિમાત્મક ई ળ્વ૭ન્ત ઉદાહરણ અછિ।

એકટા દોસર વ્રહ્મા: મૃત્યુક વાદ વ્રહ્મભોળ। છીતનક પાર કયિો ડકિ ૭૭કૈ, મુદા ઊક સભ કહૈ છૈ ળે ભોળક ડરે આ શૂસિ વળૈએ, સે છીતન ળમીનક એવ્ળમે પાર ઉડાઓત આ ભોળ કરત।

ળહ૭મે ટાઙ૭ મોન: મુપ્પ્ય પાત્ર છથિ તમસાહ અસતિ ઓકર સંગી શાન્ત સ્વભાવક કશિોર આ અસતિક વહનિ મીના। અસતિ ળે૭મે છૈ આવ એમરાળેસીક વાદે છુટતૈ, અસતિક પતિાક ચટિ્ઠી। મીનાક વયિાહ અસતિક પરીયછેમે કઽ પડ઼િ રહ૭ છૈ। સ્ઠર વૈકસ્ઠૈ૭શ, મીના આ કશિોર, મીના ચંચ૭, ટકિુ૭ તોડ઼ૈવાળિ। મીના એક દનિ ભૈયા કહ૭ાર શુરૂ કે૭કૈ, કશિોરકેઁ નૈ નીક ઊગૈ૭। વયિાકક કિછુએ દનિ છૈ। કથા સમાપ્ત।

એકટા ચૌક માને ચમ્મ્ડીનાથ: એકટા ચૌકક વવિરણ। સ્ઠર ઓર ચૌકપર આવાળાહિ કરૈવ૭ ચમ્મ્ડીનાથક વવિરણ। ચમ્મ્ડીનાથક માય સપતાવપિતાક -

𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒯𑒱, 𑒔𑒴𑒪𑓂𑒯𑒰𑒕𑒟𑒱𑒢𑒱 𑒪𑒋 𑒣𑒳𑒠𑓂𑒠𑒲𑒏 𑒃𑒢𑓂𑒞𑒖𑒰𑒧 𑒏𑓄-𑒔𑒹𑒏𑒲 𑒥𑒢𑒰 𑒑𑒴𑒛𑓃𑒰-, 𑒂𑒥 𑒔𑒧𑓂𑒛𑒲𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒟𑒱𑒢𑒱, 𑒯𑒿 𑒥𑒰𑒪 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒢𑒻 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱-𑒙𑒏𑒱 𑒥𑒹𑒩 𑒋𑒏 𑒃𑒧𑒩𑒖𑒹𑒮𑒲𑒧𑒹𑒙 𑒔𑒹𑒏𑒛𑒱𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰, 𑒁𑒑𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒕𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒦 𑒅𑒛𑓃𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒢𑒮𑒥𑒢𑓂𑒠𑒲 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒳𑒕𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒩𑒥𑒼 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒩𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒂𑒥 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒯𑒹𑒞𑒰। 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒍 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪: *𑒖𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒂𑒃 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒱𑒨𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒲𑒖𑒰𑒩𑒼𑒣𑒝 𑒋 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒞।* 𑒢◌ॉ𑒩𑓂𑒧𑒪 𑒏𑒧𑒰𑒃𑒐𑒙𑒰𑒃𑒫𑒪𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒏-𑒏𑒟𑒰, 𑒖𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒐𑒞𑒧 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑓀𑒑 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒖𑒹 𑒞𑒴𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒔𑒱 𑒖𑒰𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑒰 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒯, 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞𑒞𑒰 𑒯𑒧 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒂 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒩𑒯𑒞𑒯। 𑒢𑒲𑒪𑒴 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑓄 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰𑒏 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒦𑒴𑒐 𑒕𑒪𑒻 𑒂 𑒍𑒃 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒞𑒴𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒐𑒰𑒯 𑒞◌ृ𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒢𑒻 𑒠𑓄 𑒮𑒏𑒪𑒯, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒞𑒼𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒕𑒪𑒯 𑒂 𑒞𑒹𑒿 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒣𑓂𑒩𑒹𑒨𑒮𑒲 𑒧𑒲𑒢𑒴𑒏-𑒖𑒢𑒧 𑒦𑒹𑒪𑒻, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒢𑒻 𑒕𑒻। 𑒧𑒲𑒢𑒴 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒕𑒪𑒻 𑒍 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒢 𑒢𑒻 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒻। 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒫𑒰𑒮 𑒒𑒙𑒢𑒰, 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒖𑒴𑒢𑒱𑒨𑒩 𑒥𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲𑒮𑒿 𑒪𑒑𑒰𑒫, 𑒕𑒼𑒙 𑒦𑒰𑒃 𑒮𑒢, 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒕𑒼𑒙 𑒦𑒰𑒃 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒾 𑒞𑒹𑒿। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒢𑒰𑒖𑒰𑒨𑒖 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏 𑒂𑒩𑒼𑒣 𑒣𑒩 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒍 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂 𑒯𑒿𑒮𑒲, 𑒁𑒮𑓂𑒫𑒮𑓂𑒟 𑒧𑒮𑓂𑒞𑒱𑒭𑓂𑒏𑒏 𑒅𑒣𑒖, 𑒮𑒹 𑒞𑒴𑒿 𑒮𑒼𑒔𑒪𑒹𑒿 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒩𑒼𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒗𑒴𑒚 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒻 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒹𑒿। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒯𑒿𑒮𑒲 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒑𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒙𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒻, 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒣𑒩 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒢𑓂𑒯𑒏𑒲 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒍𑒃𑒚𑒰𑒧, 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒲𑒏 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒪 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒥𑒰𑒖𑒰-𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒪𑒑 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒂𑒃 𑒦𑒳𑒏𑓂𑒏𑒲 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒦𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒞𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒾, 𑒒𑒩, 𑒩𑒳𑒣𑒻𑒨𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒕𑒾 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒴𑒿 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒿। 𑒢𑒲𑒪𑒴 𑒂𑒥 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒯𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒞𑒴𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒥 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒿 𑒂 𑒮𑒹 𑒯𑒧𑒯𑒲 𑒙𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒱𑒨𑒾, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒧 𑒢𑒻 𑒧𑒩𑒪 𑒕𑒲।

𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢: 𑒁𑒞𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒙𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰। 𑒩𑒰𑒧𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒧 𑒋𑒪𑒰, 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒹𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩, 𑒦𑒰𑒑𑒱 𑒏𑓄 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒑𑒹𑒪, 𑒐𑒴𑒥 𑒏𑒧𑒹𑒪𑒏। 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒱𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒚𑒰𑒢𑒱 𑒏𑓄 𑒏𑒹𑒪𑒏, 𑒩𑒰𑒧𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒛𑒰𑒏𑒣𑒩 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒏𑒲𑒢𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒰, 𑒯𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒋𑒪 𑒧𑒰𑒅𑒮 𑒐𑒰𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒰𑒃 𑒢𑒻 𑒣𑒚𑒥𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒢𑒻 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒢𑓂𑒯𑒱, , 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒼𑒧𑒹 𑒢𑒻 𑒋𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒂 𑒖𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒋𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒮𑒲𑒏 𑒋𑒩𑒹𑒮𑓂𑒙 𑒫𑒰𑒩𑒰𑒢𑓂𑒙 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒋𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒲.𑒥𑒲.𑒂𑒃., 𑒢𑒏𑒪𑒲 𑒠𑒥𑒰𑒃 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰।

𑒛𑒹𑒩𑒥𑒳𑒏: 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒩 𑒧𑒹𑒛𑒱𑒨𑒼𑒏𑒩 𑒏𑒟𑒰। 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭, 𑒂𑒧𑒏 𑒏𑒪𑒧, 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒂 𑒧𑓀𑒖𑒴𑒧𑒹 𑒂𑒧𑒏 𑒙𑒱𑒏𑒳𑒪𑒰𑒪𑒹 𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻। 𑒧𑓀𑒖𑒴𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒪 𑒯𑒹𑒞𑒻। 𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒼𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒦𑒩𑒱 𑒣𑒰𑒿𑒖 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒂𑒏𑒱 𑒞𑒹𑒖𑒳𑒁𑒰 𑒂 𑒮𑓀𑒏𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻, 𑒪𑒰𑒚𑒲 𑒥𑒖𑒩𑒻 𑒕𑒻। 𑒣𑓀𑒔𑒻𑒞𑒲। 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒠𑒹𑒬, 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒣𑒛𑓃𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒠𑒮 𑒥𑒩𑒐𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒩 𑒒𑒳𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒰𑒨 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻, 𑒦𑒰𑒞𑒱𑒖 𑒕𑒻। 𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒧𑓀𑒖𑒴 𑒥𑒰𑒠𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱, 𑒍 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒞, 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒰𑒏𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒻, 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻। 𑒧𑓀𑒖𑒴𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒙𑒴𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒂 𑒂𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒥𑒻 𑒖𑒹 𑒦𑒾𑒖𑒲 𑒧𑓀𑒖𑒴𑒋 𑒯𑒹𑒞𑒻, 𑒂 𑒮𑒋𑒯 𑒕𑒻।

𑒢𑒨𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿: 𑒂𑒥 𑒏𑒢-𑒧𑒢𑒹 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒅𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒢𑒻𑒢𑒲𑒞𑒰𑒪, 𑒩𑒖𑒢𑒲 𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰, 𑒖𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲𑒧𑒹 𑒏ॉ𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒮𑒐𑒲, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒣𑒳𑓀𑒮𑒏 𑒠𑒼𑒥𑒩 𑒅𑒧𑒹𑒩 𑒥𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒪𑒱, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒠𑒯𑒹𑒖। 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒢𑒻𑒢𑒲𑒞𑒰𑒪 𑒯𑒼𑒙𑒪𑒧𑒹 𑒦𑒹𑓀𑒙। 𑒂 𑒍𑒞𑓄 𑒕𑒪 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒥𑒹𑒩𑒰 𑒮𑒼𑒯𑒢 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪, 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒠𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒠𑒲𑒣𑒞 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒲𑒏, 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒠𑒰𑒮𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳, 𑒥𑒠𑒲𑒣𑒞 𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒂 𑒮𑒼𑒯𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒢𑒻𑒢𑒲𑒞𑒰𑒪। 𑒧𑒹𑒛𑒱𑒨𑒼𑒏𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒥𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒃। 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒂𑒚 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒰𑒨𑒼 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒮𑒼𑒯𑒢 𑒂 𑒩𑒖𑒢𑒲 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒏, 𑒮𑒼𑒯𑒢 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒱𑒐𑒻𑒋, 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙𑒮𑒿 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒨 𑒋𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹।

𑒧𑒞𑒱𑒖𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒥: 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒏 𑒠𑒮𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒃। 𑒏𑒟𑒰 𑒢𑒻 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒩𑒪𑒢𑒱। 𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒖𑒰 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪, 𑒁𑒮𑓂𑒧𑒱𑒞𑒰 (𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯) (𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑒹𑒙𑒰𑒩𑒧𑒹

ઉપઉવ્ય) મે સંકઉલિ 'મસ્ળદિ' શ્રા શ્રાન કથા, ઉત્ક઼ૃષ્ટ, ખોરયા છોડ઼ાશ્રોઉ, કોનો હડ઼વની નૈ। મુદા મન્િળા સાહેવ મેઙયિોકન, નીક પ્ઉૉટક શ્રછૈત। મન્િળા સાહેવક વેગામ નાવ઼ાવ પનવિ઼ાનક, માય઼ મનગિેઉખ્નિહ, પતિ પોસઉખ્નિહ। મામા મામી સબ પાકસિ્તાનમે, શ્રોતુક્કા યન્યા કબૈત નહૈત છઉ। સે મન્િળા સાહેવકેં નૈ નીક ઉાગાનિ, શ્રેન પતિાક મ઼ૃત્યુક વાદ વેગામક નૈહની વુદ્ધ પાકસિ્તાન ખs ગેઉન્હિ। વયિાહ પુબૈઉ વેટા સઉીમક સંગ ગેઉ પાકસિ્તાન। તહિ વીય વહ્યૈ ખાનતપાકસિ્તાનક યુદ્ધ- ળરમે વહીનક પતિક મ઼ૃત્યુ ખs ગેઉન્હિ, સે તમસા કs યટિ્ઠી ઉપ્પિઉન્હિ ખાનતક વ઼ુદ્વિ મન્િળા સાહેવકેં। યટિ્ઠી પત્ની શ્રેન શુનુ બેઉ ળખ્ખન સઉીમ શ્રોતs ડૉક્ટન વનિ ગેઉ, શ્રા ળખ્ખન સઉીમ સંગે વેગામ ઘુનઉી ત઼ઁ મન્િળા સાહેવક વમ્વૈ દંગામે મ઼ૃત્યુ ખs ગેઉન્હિ। પ્ઉૉટ- પ્ઉૉટ, કથાક પ્નાનમ્ભ શ્રાશા ળગેબે છઉ, શ્નાય઼ઙક પદ્યતસિં સ્વ઼પ્નક વ઼શિ્ઉેષાm કનs ઉાગઉ છઉ। મુદા સે યશ્ઉ નહિ ગેઉ।

સનોકાન: સ્વ઼ાંગા યનૈવઉ સંગી સુનેશ, વાદમે શ્રોકના પત્ની સંગ યન્દ્નનાથ શ્રા શ્રોકન સાથી સવ દ્વ઼ાના સામૂહકિ વઉાત્કાનક વાદ ન્યાય઼ નૈ બેટવ શ્રા વઉાત્કાની બેતા ળે છઉ એમપી એઉક્શનક ઉમ્મેદવ઼ાન યન્દ્નનાથ, તકન હત્યા સુનેશ દ્વ઼ાના। શ્રમતાિબ વય્યનક શ્રાખ્યાિ નાસ્તાક પોશ્રન કપોશ નૂપ। સબ કહ્હિ મેઙયિોકન, મુદા શ્રન્તમિ શ્રાઠ પાઁતીમે કથાકાન કથાકેં કબે સમ્હાનબે છથિ। સુનેશક વેટા પનેશ શ્રાવ પ્નોટૈગોનસિ્ટક સંગ નહૈ છન્હિ, શ્રોહબે નટકયિ઼ા, સ્વ઼ાંગા નકિાઉૈમે શ્રોસ્તાળ, મુદા યન્દ્નનાથ શ્રોકના નૈ ળાનકિેના વેશી મોન છૈ, શ્રોકન બેતા વઉ સ્ટાશ્ઉક ખૂવ નીક ળકાઁ સ્વ઼ાંગા યનૈ।

ળહયિ઼ા સુનુળ નહિ ઉાગૈ: ળોગાયિ઼ાક કથા, ળોગાયિ઼ાક યાનૂકાતક સમાળક કથા। વૌશ્રાસીનક કથા। ળોગાયિ઼ાક વાપ મનગિેઉૈ, માય઼ દોસન ટોઉમે સમ્વન્ય કs ઉેબે છૈ, શ્રાંગાનમે મૌસા મૌસી નહૈ છૈ શ્રા શ્રો નહૈઘ ગાનહિત ઉાગા, ળતs વૌશ્રાસીનકેં વાઁહ હેવાક કઉક દs માનિ દેઉ ળાશ

छै, छोटका मालिकक दोसर विआह करत। ओ जोगायिकेँ गोहार केलै नहि मुक्ति दिआवय लेल। जगायिक मायकेँ मुक्ति भेटलै मुदा बौआसीनकेँ नै। छोटका मालिकक बौआसीनकेँ डाक्टर लग नै लऽ जाइ छै, ओकरा बच्चा नै होइ छै तँ मारि पीट भेल जे बौआसीनेमे गड़बड़ी हेतै, वा कोनो आन कारण। कथामे दू समाजक बात व्यवहार आयल अछि, दहेज आयल अछि, मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, रामविलास साहु, रामानन्द मण्डल, संतोष कुमार राय 'बटोही', कपिलेश्वर राउत, सन्दीप कुमार साफी, उमेश पासवान, उमेश मण्डल, कमल कारीगर, राम चन्द्र राय, लालदेव महतो, आ नन्द विलास रायक विशाल आकाश देखलाक बाद ई सभ हुहुआन लागि रहल अछि।

सरसिवक साग: एकटा आन मेडियोकर कथा। प्रोटैगोनिस्टक कनियाँ जखन आयल रहथिन्हि तँ डेरायल नहि छलखिन्हि। मुदा आब से नै छै। तरकारीवला अपन दुखनामा सुना कऽ महगा बेचैए, ठकैए प्रोटैगोनिस्टक कनियाँ केँ। प्रोटैगोनिस्ट ईर्ष्यालु होइ छथि, कनियाँक तरकारीवलासँ हँसि कऽ गप करब हुनका पसिन्न नै मुदा कनियाँ कहै छथिन्हि जे हँसि कऽ गप्प केलासँ जोखो ठीक दै छन्हि आ सस्त सेहो!

चोरी भेल छै: मास्कोमे ट्रेनिङ, मनोज, सुधाकान्त आ तपना गप सरक्का पी कऽ पारकमे सूति रहै जाइए। कथाकार अशोकक पाहसि नहि छन्हि जे अन्त करे चौकावै बला होइ, से एकटा वृद्ध स्त्रीकेँ आनै छथि, ओ रूसी बाजैए आ तपनक माथपर हाथ राखैए, तपनकेँ माय सन लगै छै, स्नेहिल, जेना ओ भेस बदलि कऽ आबि गेल होइ। मुदा अन्त कोनो खास नै लागि रहल अछि।

ओहि रातिक भोर: टाइटल कथा। दू सखी, हीरा ब्राह्मणक पानक दोकान, पुलकित अमातक चाहक दोकान, मुखिया इलेक्शनमे सुबोध मिसिर ब्राह्मण आ गैमाक सतन मण्डल ठाढ़ रहै, जे पुलकितक जातिक रहै सकैए भऽ !! भेलै झगड़ा इलेक्शनमे सखीमे दुनू हेतै। होइत अमातक टाइटलि मण्डल गैमामे, सभटा पाइ कौड़ी केस मोकदमामे खत्म भऽ गेलै तखन बुझय एलै। ओर

अपनकेँ रोमांचक बनेबाक एरमे राति एगारह बजे छाहक रूपमे पुलकित केँ आबै छथि कथाकार, हिना कहै छै जे मारमे नँ एर मारथि, मुदा एर दुनू गारा मिलि गेल।

मानव (२००१) (कथा संग्रह)

'सगर राति दीप जरय' क सभ सहभागी केँ जे कथा सुनलनि आ विचार केलनि' केँ समर्पित मानवमे अशोकक १८ टा कथा छन्हि। 'एकसँ एकैस' सँ ई प्रारम्भ होइत अछि जकर लेखक छथि गप-सरक्कानुमा मूलधाराक आलोचना लेखक मोहन भारद्वाज। अशोकक समाज अध्ययन हुनका अचम्भित करै छन्हि, मूलधाराक लोककेँ हेबाको चाही, दुनू (अगड़ा-पछड़ा) समाजक अध्ययन! अशोक दुनू पक्ष राखै छथि, मुदा बैलेंस निर्णयमे बनाओल जाइ छै, कथाकारकेँ अपनापर ई दबाब लेब अनुचित। एर ओ अशोकक कथाकेँ मैथिलि बनावटसँ भूषित करैत छथि, आ मैथिलि बुनावटकेँ दू टा लक्षण ओ घोषित करैत छथि- पहिल खसिक्कड़ बनि कऽ आ दोसर यथार्थ वर्णनक विस्तारमे जा कऽ! दोसर लक्षणकेँ ओ मैथिली (मैथिल नै मैथिली) कथा बनबाक स्रोत अगिल पैराग्राफमे घोषित करैत छथि। तखन नँ दुनियाँमे कहियो गएर मैथिल भेबे नै करत। ऐ तरहक गप्प सरक्काबला समालोचनाकेँ हमरा गाममे बकथोथी कहल जाइ छै आ नीक नै मानल जाइ छै। एर ओ अशोककेँ विकासमे विश्वास करैबला आ यथार्थवादी (तकर विस्तार करैत ओ जातीय आ धार्मिक मानसिकताकेँ सेहो यथार्थवादी मानसिकता कहैत छथि!) कहै छथि। ऐ तरहक विचारकेँ आइ काल्हि पाश्चात्य जगतमे 'वोक' कहल जाइ छै आ ओतौ तकरा नीक नै मानल जाइ छै। समानान्तर धाराक कथाकार लोकनि 'सगर राति दीप जरय' मे आगमन पूर्व अहि तरहक समालोचनाक जमाना रहै, आ कथापर अहि तरहसँ विचार 'सगर राति दीप जरय' मे होइत रहै।

आब आउ मानवक कथा सभपर विचार करी।

માળવન: ' ઓહિ ખાળકિ ગોન' કથા સંગ્નહ્ક ટાસ્ટ૭ કથા સંગ્નહ્ક અન્નામિ કથા છ૭। માળવન અછિ પહિ૭ કથા ' માળવન' કથા સંગ્નહ્ક। મહ્નાળ ળી છથિ ખેટવ્નકિ યીસ્થ, આર કા૭હિ એ ળનહ્ક ૭ાક નહે છૈ ળે સગિ૭ વ્રામ્યિડી સન્વ્રસિ દર છૈ। પાર કૌડ઼ી વ૭ા પોસ્ટડિ ૭૭ મહ્નાળ ળીસઁ વાળ કનાળ ' ઓ' , સાહેવ હ્નામી છૈ ળેહેન ળેહેન કાળ દર છૈ ળે એક્કો જૂનવ૭ા પારક આમદની નૈ હોર છૈ, કને મહ્નાળ ળી ઓકનો નગાડ઼ૌ। સજાક મળમા મહ્નાળ ળી એડ઼ામ ૭ાગૈ છૈ, પીવ઼િ- પાવ઼િ કિઽ ગાપ- સનક્કા કનૈ ળારએ, દાનૂ સઉ દૂ- ળીન ટા યપ્પણાક વ્રવ્રિનામ કથાકાન દર છથિ, ૩સન૭ આમ્ડા આદિ। ' ઓ' ળર અસ૭ કાળ૭ ગે૭ નહ્ય ળકન કી જૈ૭? ઘન ઘુનળી કા૭મે માનિ પ્યારસઁ વર્યા ળારએ, પ્નાય: યોન સજા યીન્હિ ગેલૈ। ઘનમે વેટા આ પળ્ની સેહો ળમસાય૭ છૈ। પ્યસ્સિા પ્યળમા। અળિ સામાન્ય કોટિક કથા।

દસપ્યળ: એકટા આર્એએસ્ અસ્થસનક કથા, આંગુનક વ્રવ્રિનામસઁ પ્નાનમ્ જા ઽ ઔડ઼ાક વ્રવ્રિનામ યનિ। જ્નષ્ટાયાન, યનિત્નહીનળા આ ૭૭સ્થીળાસાહી સજાટા નપીળ્ળાળ સન વ્રન્મામિ અછિ। અન્ળમે ઔડ઼ા કાળ કેનાર વન્દ જાઽ ળાર છન્હિ, અમેનાકિ। ર૭ાળ૭ ળેળા, મુદા વણિ દસપ્યળે પાસપોન્ટ કેના વનળન્હિ, આ ઓહીસઁ કથાક શન્ષક આય૭ અછિ।

કોઽ: મંળ્નીળીક કથા, નપીળ્ળાળ। દસપ્યળક આર્એએસ્ કેન નપીળ્ળાળ સન કથાકેઁ આગાઁ ૭ઽ ળાર છથિ કિથાકાન। ૩ળ્કૃષ્ટ કથા।

સહ્ળ- અસહ્ળ: કથાકાન અશોક આવ નડમે આવિ નહ૭ છથિ। કામેશન હાકિમ વનિ ગે૭, નગ્ન આવિ ગે૭, ગોટી પ્યા કઽ સુળૈએ, પ્યારમે પનહેળ છૈ, સસ્થ૭ળાક મૂ૭્ય યુકવઽ પડ઼ૈ છૈ। નાયેશ્યામક પઢ઼ાર છુટિ ગેલૈ મુદા ઓ કામેશનક વય્યા સજા ૭૭ કૉમિક્સક સુપનમૈન અછિ।

ળિનિસિ: પળિ- પળ્નીક ઘન ગૃહસ્થી, ટોના- માની। સઉ ઑસ્થસિક હ્મે૭ ર્ટૈ૭િક્સમે કથાક વીય- વીયમે, ળીન વેન। વાર૭ી આમદનીક હિસ્સિક, પળ્નીકેઁ ૩૭ક્ન આ પળ્નીક ૩ળાના।

𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒏𑓁 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑, 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒧𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒏। 𑒢𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨- 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒑𑓂𑒨 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲। 𑒔𑒹𑒐𑒫𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒯𑒋𑒞। 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒏𑒱𑒧 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒑𑒣𑒬𑒣 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲, 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒙𑒻𑒪𑒹𑒝𑓂𑒙 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱।

𑒦𑒼𑒖𑓁 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡𑒏 𑒦𑒼𑒖 𑒅𑒣𑒢𑒨𑒢𑒏 𑒋𑒏 𑒮𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒠 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒻 𑒐𑒰 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲। 𑒦𑒼𑒖𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬, 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱𑒮𑒿, 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒟𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒵𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒟𑒰॥

𑒐𑒳𑒬𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢𑓁 𑒄𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒪 𑒧𑒢𑒼𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒟𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒵𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒟𑒰॥

𑒞𑒰𑒢𑒣𑒴𑒩𑒰𑓁𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒲𑒧𑒮𑒹𑒢 𑒖𑒼𑒬𑒲 𑒖𑒹 𑒑𑓂𑒪𑒻𑒧𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒧𑒩𑓂𑒮𑒲𑒛𑒲𑒖 𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢। 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒄 𑒫𑒏𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒖𑒹 𑒍 𑒄 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒪𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒑𑒩𑒱𑒧𑒰𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒕𑒪। 𑒫𑒋𑒯 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒫𑒹𑒮𑓂𑒙𑒩𑓂𑒢 𑒏𑓂𑒪𑒻𑒮𑒱𑒏𑒪𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒿 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨 𑒏𑓂𑒪𑒻𑒮𑒱𑒏𑒪, 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢𑒲 𑒂 𑒏𑒩𑓂𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒹𑒙 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒏𑓄 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒁𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒰𑒢𑒣𑒴𑒩𑒰॥ 𑒬𑒩𑒠𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 ऑफ𑒮𑒹𑒙 𑒧𑒬𑒲𑒢 𑒋𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑓂𑒪ॉ𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒢𑓂𑒙𑒱𑓀𑒑 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒱𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒬𑒻𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 '𑒧𑒢𑒳' 𑒡𑒰𑒞𑒳𑒏 𑒥𑒰𑒮𑒢 𑒋𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒰𑒙𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒮𑒢 𑒥𑒢𑒹𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒣𑒩 '𑒧𑒰𑒙𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒮𑒢' 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱।

'**𑒯𑒩𑒮𑒱𑓀𑒯𑒠𑒹𑒫𑒲**' 𑒣𑒘𑓂𑒖𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰𑒏 𑒠𑒳𑒭𑓂𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱, 𑒢𑒫𑒱𑒢𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏।

'**𑒮𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒖𑒏𑒏 𑒯𑒱𑒞𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒏**' 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒖𑒏𑒏 𑒥𑒻𑒏𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒁𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒂𑒨𑒪 '. 𑒥𑒰𑒛𑓃𑒲-

 ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒗𑒰𑒛𑓃𑒲𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒑𑒧𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒼𑒣𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂' 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒢𑒻 𑒮𑒏𑒪।

'**𑒧𑒯𑒖𑒼**' 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒟𑒱𑒏, 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒱𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒔𑒰𑒩𑒲, 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒣𑒠𑒣𑒩 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒩𑒞 𑒧𑒯𑒖𑒼𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒟𑒱𑒏। 𑒏𑒴𑒙 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒰𑒫𑒪𑒲, 𑒒𑒴𑒮𑒏 𑒣𑒩𑒮𑒹𑒢𑓂𑒙𑒹𑒖𑒏, 𑒧𑒯𑒖𑒼𑒏 ऑ𑒤𑒱𑒮𑒱𑒏 𑒁𑒪𑒰𑒫𑒹 𑒁𑒤𑒮𑒩 𑒮𑒦𑒰𑒏 𑒒𑒩𑒼𑒣𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥, ऑ𑒤𑒱𑒮𑒱𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒮𑒩𑒏𑓂𑒏𑒰, 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱, 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒐𑒞𑒧। 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒮𑒿 𑒩𑒖𑒏 𑒂 𑒧𑒯𑒖𑒼𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒏𑒟𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒂𑒬𑒰 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒖𑒰𑒿𑒖 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒨𑒥 𑒮𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

'**𑒮𑒢𑒹𑒮**' 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑓂𑒖𑒲𑒏𑓂𑒨𑒴𑒙𑒱𑒫 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩 𑒣𑒰𑒮𑒫𑒰𑒢𑒖𑒲 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒙𑓂𑒨𑒴𑒬𑒢 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒰𑒮𑒫𑒰𑒢𑒖𑒲 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒱𑒫𑒰𑒏𑒩 𑒩𑒫𑒱𑒠𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒴𑒥 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒪 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒫𑒱𑒢𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒤𑒹𑒩 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒙𑒩𑓂𑒢 𑒠𑒹𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒙𑒻𑒑𑒼𑒢𑒱𑒮𑓂𑒙𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒙𑒲𑒪𑒏 𑒎𑒚𑒲 𑒠𑒱𑒫𑒰𑒏𑒩 𑒩𑒫𑒱𑒠𑒰𑒮 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒥 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒣𑒏 𑒮𑒼𑒢𑒰𑒏 𑒎𑒚𑒲 𑒂𑒣𑒮 𑒠𑒹𑒥 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒌𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒢𑒹 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒲𑒨𑒞𑒰 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒍 𑒯𑒹𑒢𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒟𑒰 '𑒠 𑒑𑒱𑒤𑓂𑒙 ऑ𑒤 𑒠 𑒧𑒻𑒑𑒲' 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒲𑒁𑒩 𑒕𑒰𑒯 𑒮𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒄 𑒏𑒟𑒰।

'**𑒩𑒰𑒑𑒫𑒱𑒩𑒰𑒑-**' 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒃𑒫𑒪𑒰 𑒂 𑒥𑒳𑒡𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒯𑒳𑒯𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒥𑒼𑒪𑒰𑒢𑒼 𑒠𑓄 𑒏𑓄 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒼𑒗 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒚𑒏𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻 𑒍𑒃𑒣𑒩 𑒄 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩 𑒮𑓂𑒞𑒩𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱।

'**𑒂𑒫𑒹𑒮**' 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒹𑒛𑒱𑒨𑒼𑒏𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒂𑒫𑒹𑒮 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒥𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪, 𑒂 𑒏𑒟𑒰 𑒋𑒏𑒣𑒏𑓂𑒭𑒲𑒨 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

'**𑒥𑒴𑒜𑓃𑒰 𑒖𑒲𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯**' 𑒏𑒟𑒰 𑒍 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒫𑒻𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙𑓂𑒨 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒃𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒋𑒏𑓂𑒮𑒣𑒩𑓂𑒙𑒰𑒃𑒖 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒦𑒼𑒟 𑒮𑒧𑒰𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒠𑒼𑒭 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒞𑒏𑒩 𑒦𑒰𑒢 𑒢𑒻 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒧𑒹 𑒌 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒂𑒢 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒥𑒴𑒜𑓃𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯-

𑒞𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒮𑒹 𑒍 𑒁𑒚𑒰𑒩𑒯 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒬𑒲 𑒫𑒨𑒮𑒏 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒞𑒰, 𑒁𑒚𑒰𑒩𑒯 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒋𑒥𑒼 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒧𑒲 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒒𑒙𑒏 𑒮𑒦 𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒬𑒩𑒥𑒞 𑒒𑒼𑒩𑒻𑒏 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 𑒕𑒻 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒬𑒲 𑒂𑒫𑒦𑒑𑒞 𑒍 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒂 𑒞𑒲𑒢𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒧𑒩𑒪𑒹𑒣𑒩 𑒍 𑒯𑒿𑒮𑒻 𑒕𑒟𑒱-, 𑒏𑒰𑒩𑒥 𑒍 𑒖𑒲𑒫𑓄 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒳𑒯𑒩𑒻𑒞𑒼 𑒯𑒹𑒞𑒰, 𑒁𑒮𑒑𑒩𑒧, 𑒂 𑒏𑒳𑒯𑒩𑒥 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒮𑒞𑒞𑒢 𑒪𑒑𑒰।

'**𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒱𑒧𑓂𑒥**' 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒹𑒛𑒱𑒨𑒼𑒏𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒃𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡𑒫𑒰𑒨-, 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒥𑒱𑒩𑒰𑒠𑒩𑒲 𑒑𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒮 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒝𑒱𑒯𑒩 𑒦𑓄-, 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒲𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒕𑒪।

'**𑒑𑒰𑒿𑒛𑓃**' 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, '𑒥𑒴𑒜𑓃𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯' 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒢। 𑒌 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒪𑒻𑒬 𑒣𑓂𑒫𑒰𑒃𑓀𑒙 𑒁𑒕𑒱, 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒧𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒧𑒢𑒲𑒭𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒕𑒥 𑒖𑒹 𑒮𑒱𑒩𑒰𑒖𑒳𑒠𑓂𑒠𑒲𑒢 𑒮𑒞𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣 𑒕𑒻 𑒂 𑒖𑒿 𑒍 𑒚𑒲𑒏 𑒪𑒏 𑒕𑒻 𑒞𑒿 𑒧𑒢𑒲𑒭 𑒣𑒞𑒱𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒻 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒮𑒏𑒪? 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑓂𑒪𑒻𑒬 𑒣𑓂𑒫𑒰𑒃𑓀𑒙 𑒕𑒻 𑒧𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒣𑒴𑒕𑒥 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒏𑒨 𑒣𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒹𑒢𑒰𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣 𑒕𑒟𑒱? 𑒂 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒧𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒥𑒰𑒢𑒴 𑒌 𑒧𑒰𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒲𑒭 𑒍𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒲𑒭 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰-𑒣𑒩𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒔𑒾𑒏𑒪, 𑒄 𑒪𑒱𑒣𑓂𑒣𑒪𑒮𑒿 𑒏𑒟𑒰 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒦𑒹𑒪, 𑒧𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒖𑒿 𑒧𑒢𑒲𑒭 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒅𑒖𑒩𑒰 𑒢𑒳𑒂𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒞𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒞𑒐𑒢 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒔𑒾𑒏𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒱 𑒕𑒪, 𑒋𑒞𑓄 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒲𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞𑒱 𑒕𑒪𑒻, 𑒮𑒹 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒔𑒴𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒪𑒻𑒬 𑒣𑓂𑒫𑒰𑒃𑓀𑒙𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒄 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒮𑓂𑒪𑒻𑒬 𑒣𑓂𑒫𑒰𑒃𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒹 𑒯𑒳𑒛𑒳𑒂𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒄 𑒧𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒕𑒪, 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒚𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒻𑒏𑒮𑓂𑒪𑒻𑒬𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒫𑒰 𑒪𑒻𑒬𑒕𑒪 𑒮𑒏𑒻 𑒖𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒏𑓂𑒩𑒰𑒬-, 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣𑒑𑒞 𑒫𑒱𑒔𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒱𑒫𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒞𑒿 𑒄 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒵𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞।

𑒅𑒧𑒲𑒑𑒰𑒧 (𑓒𑓐𑓑𑓗) (𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯)

દીદા સ)વૃટા કથા છન્હિ ૧૫ કેં સમન્પતિ ઉંઊગામમે અશોકક (ગીતા દેવી)

'ભાથ' અછિ ભિહ્કદાન કુન્તાક કથા, અતિ સામાન્ય કોટકિ ઈ કથા અછિ દૈનન્દિની સ્નેમીક।

'છભ' કથાકાન અશોકક સન્વસ્નેષ્ડ કથા અછિ, ઈ અતિ ઉચ્ચ કોટકિ કથા અછિ ળકન સામાન્ય કોટકિ અંગ્નેળી અનુવાદ વદ્યિાનન્દ હા કેને છથિ]થહે ઝીક ોડ ઝહિાનિ ડ઼તિનાનુ઼ે (અવહાય ષ્પ એદતિોન, હાનપેન છોભભનિસ, ૨૦૨૨) મે સંગ઼્હતિ[, મુદા કથે તતે સશક્ત છૈ ળે તહૂ અનુવાદમે ળાન આવિ ગેભ છૈ। મનોવૃળ્જ્ઞાન, અહૌ ળકન અઝનિય કનવ, તકન આત્મા અહૌમે પૈસિ ળાયત, ઉગનાક વછિોહમે વદ્યિાપતકિ અઝનિય કનૂ, અહૌકેં વનિ ગ્ભસિનીન ભગેને નોન યુઅય઼ ભાગત। ઝોભી હા, યુસ્તયભાક-, મુદા એહને આત્મા અોકનામે પૈસિ ગેભૈ।

'સ્વાધીન' કથા મૈનટિભ નેપ આયાનતિ કથા અછિ, મુદા કથાકાન સમાળશાસ્ત્નક સમસ્યાક ટૉપકિપન ભપ્પિવામે વ્યસ્ત ઝડ ગેભ, તેં કથા સામાન્ય અછિ

'ઓ દુનૂ સાસ્કભિ સપ્પૈત અછિ' સેહો સમસામયકિ સમસ્યાક આયાનપન નયતિ અછિ, મુદા ને સએહ આવિ સિકભ આ ને કથે સોહ્નાયભ।

'ઉંઊગામ' ટાસ્ટભ કથા અછિ, 'ઓહિ નાતકિ ઝોન' આ 'માતવન' સન અશોક અપ્પન સઝસઁ દુભનૂ કથાકેં ટાસ્ટભ કથા વનવૈ છથિ, સોગન પન સોગન ભગવૈ છથિ મુદા તીનૂ ટાસ્ટભ કથા સામાન્યે કોટકિ અછિ। ઉંઊગામ મે વકાિસ આ હંહમંહ આદકિ સામાન્ય કથાક્નમ અછિ।

'નાગ' સેહો હનિ્દૂમુસ્ભમિ દોસ્તક સામાન્ય કથા અછિ-, માસુપન ગપશપ।

'ભમન આસ્સક્નીમ' ઉચ્ચકોટકિ કથા અછિ, કથાકાન અશોકક કથા। પ્નોટૈગોનસ્ટિક કથા, માય઼ નીક વનવનિ તેં કહ્થનિ, હોટભ સન વનભ અછિ।

मुदा पत्नी मीना कें होटल पसिन्न नै। गुजरा गेलै। बेटाबेटी जा-धन संग रहन्हि प्रोटैगोनिस्टकें करियौ खेनाइ बनेनाइ नीक नै लगनि। बेटा गाम गेलन्हि, सभ देखैत स्नेहसँ जुमि गेल, हुनकर मायक प्रशंसा, हुनकर प्रशंसा। आ श्रेय।

'उमकी' उत्कृष्ट कथा होइत होइत बचि गेल। सेक्ससिस्ट आयरामपर बहुत रास लिखल आयल, अन्त सेहो नीक। 'अहाँक संगी तऽ ओहिना हर घड़ी नयनैनो रहै छथि। शूटसँ नाप की देखेबनि।' केर संग किछु सस्पेंस। मुदा किछु मिसिंग अछि।

'मनसूवा' मे टुटैत परिवार आ भावनाक प्रस्तुति कएल गेल अछि। कृत्रिम जिनिगीमे भावनाक, सामाजिक संस्थाक कोनो स्थान नै, कथाकार विषयक प्रति क्रूर भऽ गेल छथि आ तेँ कथा सामान्य कोटिक भऽ गेल अछि।

'अभायक बेटा कें दूटा दाँत भेलनि' उत्कृष्ट कोटिक कथा अछि, गाम रहबा जोग नै रहलै, मुदा

'खुशीक नाम जीवन' मे कन्हैया बाबूक बेटा विवाह लेल तैयार भऽ गेलनि, ओ खुश छथि, मैथिल ब्राह्मणक लड़का आ केरलक नायर लड़की। केरलक कनियाँ अपने सभ सन छै, सँ समाप्त। सामान्य कोटिक कथा।

'टीस' केस डाइरीसँ लेल कथासन, केसो बहुत सामान्य, पति द्वारा पत्नीक हस्ताक्षर कऽ गबन करब, पत्नीक सकारब, जेल। कथो तेँ सामान्य कोटिक।

'छुट्टीक एक दिन' कथा अछि मैथिली लेखन आ पाठन समस्यापर, किछु एम्हरओम्हरक गप-, अन्तर्जातीय प्रेम विवाह, आ अन्तमे कहबी जे दगाड़ाउ लोककें ओल कबकब लगै छै, अभिनवकें नै लगलै। सामान्य कोटिक नविन्यात्मक कथा।

'गामक कातक हाइवे' यकराका सड़क सभक कथा अछि। उमेश पासवान लिखै

છથિ' મૌલક ચૌરાહા બનલ અછિ એનજુતહા મોડ઼ એ'' (જુતહા મોડ઼, વ઼ર્મ્માતિરસ, ૨૦૧૨, સાહિત્ય અકાદેમી મૈથિલી યુવા પુરસ્કારસઁ પુરસ્કૃત પોથી।) ઠામ ચૌરાહા સજાક નામ આબ જુતહા મોડ઼ છૈ-જે ઠામે એયરન, કારામ ઓતડ ઉખાડનક, સુલારઓવરક કમીક કારણ હોઇત દુર્ઘટના। આ હમહૂઁ લખિને રહી એ વ઼ષિય પર એકટા કવિતા:

આ તખન જે દેખવા જોગ રહતીક શાન અપન ગામક !

આ દેખવા જોગ રહતીક શાન એહ છહ લેન બલા સડ઼કક સેહો !

હમરો સમક અંગપર રહતિએ જે વસ્ત્ર

ઓહને વસ્ત્ર

જેહન ઓહ લાલ કારમે બૈસલ બચ્ચાક રહએ !

માએ!
હમરા તઁ લૌત રહૈએ જે

અપન ગામક ઈ સડ઼ક

ઓહ લાલ પરદેશીક ઓહ લાલ કારસઁ બેસી અછિ લગ।

દુનૂ ટા લૌએ વદિશી સન

(ગજેન્દ્ર ઠાકુર, બડ઼કા સડ઼ક છહ લેન બલા, કુરુક્ષેત્રમ્ અન્તર્મનક, ૨૦૦૯)

ગોલા મરિ ગેલ, પચિડ઼ા જડ ગેલ, ગામકેઁ ગીડ઼ડ ચાહૈએ ઈ એન ગામક સૌસે।એય અછિ। રપીન્દ્રનાથ કોટકિ ઉચ્ચ કથા અછિ। રહલ જા મરલ કુકુડ઼

'એના જડ કડ કયિો' વોરોલીન, વોરોપ્લસ, શ્વેત શ્યામ ટીમો, રપીન્દ્રનાથ

𑒢𑒼𑒮𑓂𑒙𑒰𑒪𑒖𑒱𑒏, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒜𑒹𑒩 𑒨𑒾𑒥𑒢𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨, 𑒢𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒏𑒟𑒰, 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒳𑒢𑒱, 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒛𑓃𑒰𑒃, 𑒜𑒹𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒴𑒢𑒱𑒨𑒩𑒏 𑒞𑒧𑒮𑒰𑒨𑒥 𑒂 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒐𑒳𑒖𑒥 𑒨𑒾𑒥𑒢𑒲𑒖𑒲𑒏। 𑒢𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞, 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒙𑒱𑒏 𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞।

𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒞𑒹𑒿 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒏𑒼𑒙𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒧𑓂𑒧𑒹 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒮𑒔𑒹𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡𑒞𑒰 𑒁𑒢𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒢𑒼𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒔𑒲𑒩 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒏𑒪𑒰 𑒜𑒩𑒰𑒕𑒱𑒥𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒜𑒰𑒛𑓃 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱।- 𑒋𑒧𑓂𑒛𑒑𑒱𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒰𑒧-𑒣𑓀𑒔𑒥𑒰𑒃𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒱, 𑒏𑒰𑒩𑒰𑒧 𑒂 𑒣𑓀𑒔𑒥𑒰𑒃𑒢 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨, 𑒂 𑒣𑒳𑒢𑒩𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪𑒏 𑒧𑒰𑒿𑒖𑒪 𑒜𑒩𑒰𑒕𑒱𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒪𑒰 𑒂 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒪𑒰, 𑒢𑒫 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒪𑒰 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒹𑒩 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।-

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒱𑒃𑒮𑒑𑒰𑒛𑓃𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰॰𑒑𑒧𑒰𑒛𑓃𑒱𑒨𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒𑓑𑓘𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒏𑒟𑒹𑒞𑒩 𑒑𑒠𑓂𑒨𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒁𑒬𑒼𑒏



गजेन्द्र ठाकुर

कथेतर गद्यक लेखक अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर [illegible] यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओहि वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जाहिमे तीनू गोटेक ५- ५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लिखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगीमे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दबाब पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरो बिचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लेथि तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै

से कथाक महत्व लोककथासँ बेशी छै प्रेमचन्द्रक ऐ गपसँ हम मानि विचार रखै छी आ श्रमिक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। श्रमिक गोरखपुरी अपन गुवाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकवस्त सेहो हमरा नै दऽ सकल। ओ उदाहरण दइ छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदिशा"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमि रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध- प्रबन्ध- समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कथेतर गद्यक लेखक अशोक

अशोकक कथेतर गद्यमे छन्हि मैथिली आँखि (२००७), संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७), कथाक उपन्यास:उपन्यासक कथा (२०१२), आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३), बात-विचार (आलोचना) (२०१५), नीक दनिक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह)(२०१८), राजमोहन झा (विनिबन्ध, २०१९) आ कथा-पाठ (२०२२)। संगमे किछु विदेह आ अन्यत्र छिड़िआयल समालोचना आ आन कथेतर गद्य सेहो छन्हि जेना 'बनैत कम बिगड़ैत बेसी' (सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' पर), सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ

कर्णामृत, रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत, केदार नाथ चौधरीक उपन्यास, अरदिन्दुजी आदि।

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) मे अशोक साक्षात्कार लेने छथि राजमोहन झा, धूमकेतु, कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजसँ। एक्को गोटेसँ ओ असहज प्रश्न नै पूछि सकला, राजमोहन झा द्वारा सुभाष चन्द्र यादवक राजकमल चौधरी मोनोग्राफ प्रसंगमे साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल कएल कम्प्रोमाइज हुअए *(देखू हमर पोथी नित नवल सुभाष चन्द्र यादव, गजेन्द्र ठाकुर, २०२२ विदेह आर्काइवमे उपलब्ध)*, धूमकेतुक लाल झण्डाक सोगर लऽ साहित्य रचब हुअए वा मोहन भारद्वाजक मैथिल ब्राह्मणक संस्कार गीतकेँ मिथिलाक संस्कार गीत कहब *(देखू हुनकर सम्पादित मैथिली अकादेमीसँ प्रकाशित पोथी। बादमे जा कऽ उमेश मण्डलक सभ जातिक संस्कार गीत उमेश मण्डल द्वारा संकलित भेल आ विदेहमे ई-प्रकाशित भेल, जे असली मिथिला संस्कार गीत अछि)* आदि आदि। हँ 'छुट्टीक एक दिन' (डेडीगाम, २०१७) कथामे ओ अपना मोनक सभ सवाल जे ओ नै पुछि सकला, से उठा लेने छथि। प्रभास कुमार चौधरीसँ साक्षात्कार हुनकर मृत्युक कारण नै भऽ सकल आ तकर एवजमे ओ सन्धान अंक- ३ प्रभास विशेष निकाललनि।

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३) अछि एकटा नैरेटिविक विवरण जे अशोकक पीढ़ीकेँ परसल गेल रहै, जतऽ सोवियत संघक बड़ाइ आ अमेरिकाक विध्वंस कएल जाइत रहै, आ जे से करैत रहथि ओ अपन बाल-बच्चाकेँ पढ़ैल अमेरिका पठबैत रहथि। हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी कोनो परीक्षा देल दरभंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एरिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै। यात्रा कथाक अतिरिक्त 'सोवियत रूस सँ' कवितामे सेहो अशोक सएह केने छथि (चक्रव्यूह, १९८६)।

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒱 𑒂𑒿𑒐𑒱 (𑓒𑓐𑓐𑓗), 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑓁𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒏𑒟𑒰 (𑓒𑓐𑓑𑓒) 𑒥𑒰𑒞-𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 (𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰) (𑓒𑓐𑓑𑓕) 𑒂 𑒏𑒟𑒰-𑒣𑒰𑒚 (𑓒𑓐𑓒𑓒) 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒂 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒕𑒱𑒨𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒁𑒬𑒼𑒏𑒏 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰 𑒂 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒂 𑒫𑒱𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢 𑒞𑒟𑓂𑒨 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱:

(𑓑) 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒴𑒪 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒑𑒞 𑓑𑓕 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒁𑒫𑒠𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒍 𑒁𑒢𑒦𑒱𑒖𑓂𑒘 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒫𑒰 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒰𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒠𑒹𑒞। '𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑓁 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒋𑒫𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱' 𑒧𑒹 𑒍 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒏𑒟𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒍 𑒠𑒴 𑒮𑒨 𑒑𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒌 𑒂𑒪𑒹𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒢𑒫 𑒞𑒟𑓂𑒨𑒏 𑒂𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒢𑒻 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒱 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒁𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑓘𑓕𑓐 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒟𑒱।

(𑓒) 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒯-𑒫𑒰𑒯 𑒂 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒦𑒹𑒙𑒞। 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞𑒿 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒞, 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 '𑒠𑒴𑒩 𑒠𑒹𑒮 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒏 𑒧𑒵𑒑𑒞𑒵𑒭𑓂𑒝𑒰 𑒂 𑒬𑓂𑒩𑒧𑒬𑒲𑒪 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭𑒑𑒰𑒟𑒰- 𑒯𑒮𑒲𑒢𑒰 𑒧𑓀𑒖𑒱𑒪' 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒋। 𑒧𑒵𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒍 𑒏𑒢𑒹 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒖𑒹𑒢𑒰 '𑒪𑒪𑒱𑒞𑒏 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩', 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒞𑓄 𑒍 𑒂𑒩 𑒑𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃 𑒏𑓄 𑒠𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒍 𑒣𑒳𑒕𑒻 𑒕𑒟𑒱- '𑒋𑒞𑓄 𑒄 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒅𑒚𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒪𑒪𑒱𑒞 𑒐𑒹𑒞𑒱𑒯𑒩 𑒖𑒲𑒫𑒢-𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒩𑒔𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒏𑒟𑒴 𑒂 𑒥𑒢𑒱𑒖𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧-

प्रसंग के बीच मे किएक अबैत अछि? ब्राह्मण आ अछोपक बियाह-समन्वय सन सामाजिक समस्या के उठायब किएक जरूरी बुझाइत छनि? बहुत सन येतना सम्पन्न होयब अनेर ढाहि करि होइत?' अशोक आलोचक अनुभवि पाँचमि तकर कारण बताबैत छथि- 'वस्तुतः बहुतक मैथिल संस्कारक ई अवधारणा ब्राह्मणवादी वैचारिकताक देन थिक।' आ ई बड़ आ रामदेव झा संगे बहुतक कोनो गपक सोगर होइत, जकर आवश्यकता नै छल। प्रेम आ सेक्स एकटा शाश्वत विषय अछि आ अकाल हृदय आकर्षण आ [illegible] नै जा सकैए, अशोककेँ ई बड़ कोनो सोगरक जरूरी नै छलन्हि गैवरियल गार्सिया मार्क्वेसिक 'लव इन द टाइम ऑफ कोलेरा' तकर प्रमाण अछि।

(३) **नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह)** मे हुनका अपन सभ गप राखबाक अवसर छलन्हि, [illegible] सन मुद्दा ओतऽ सेहो आ चूकि गेल।

अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

𑓒𑓑𑓙. 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒲-𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩



𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒲

𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩

𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒦𑒰𑒫𑒳𑒏𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒏𑒫𑒱, 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒏, 𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒠𑓂𑒨𑒰𑒫𑒡𑒱𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒑𑒖𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒂𑓀𑒔𑒪𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒂 𑒫𑒻𑒬𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒏𑒹𑓀 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒑𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒞𑒏𑒩𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒂 𑒮𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑓀 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒮𑒼𑒗𑒹-𑒮𑒣𑒰𑒙 𑒖𑓀 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒏' 𑒮𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀, 𑒞𑓀 𑒥𑒳𑒗𑒨𑒥𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒥। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒄 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣𑒏 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒢𑒱

ળે અહાંકે ઊાગાત ળે વડ઼ સહળ વાત કહૈત છથિ, મુદા કહૈત નૈત છથિ ઓતવે ગંભીન ગપ।

વહુવ઼યિાવ઼ાદી છથિ અસોક ળી। આનંભમે કવ઼તિા ઊપ્પિઊણ઼ઊિપ્પિત નહઊાહ઼આ તકન વાદ કથા દસિ મુડ઼ઊાહ। હમન કહવાક તાત્પન્ય઼ ઈ નહિ ળે પહનિ કથા નહિ ઊપ્પિથિ, મુદા કવ઼તિા પ્નાય઼ઃ છોડ઼ઊનિ આ કથા પન કેન્દ્નતિ ભેઊાહ। સંગે સંગ અન્ય઼ વ઼યિા સેહો યઊૈત નહઊનિ। હમ એત' કથાકાન અસોક આ અસોકક કથા પન ગપ કન' યાહૈત છી।

અસોકક ઊપ્પન આઠમ દસકસં આનંભ ભેઊનિ અછિ। આઠમ દસક કહવાક માને ળે એહિ સમય઼સં પાઠકકેં હનિક પ્નકાસતિ નચના સભ પઢ઼વા ઊઊ ઉપઊવ્ય હોમ' ઊાગાઊનિ। ઈ ળહયિ઼ા ઊપ્પન સુનૂ કય઼ઊનિ તાહસિં પહિુક દસક, માને સાતમ દસકમે મૈથિઊિ કથામે છઠમ દસકક કથાક વ઼ષિય઼, સ્વ઼નૂપ આ ભાવ઼-ભૂમિ સં આગાંક વાત નહિ દેપ્પના ળાઈત અછિ। સામાળકિ ચેતના આ પ્નતબિોધક ળે ભુમ્હુન છઠમ દસકમે પળનઊૈક, સે સાતમ દસકમે પહ્ય઼ઊૈક નહિ, મુદા ચધનો નહિ વનિ પૌઊૈક। તકન એકટા કાનણ હમના ઈહો વુઝાઈત અછિ ળે એહિ (સાતમ) દસકમે મૈથિઊિ કથામે નવ઼ કથાકાનક આગમન આંગુને પન ગન' ય઼ોગ્ય઼ ભેઊ। એકટા વૈચ યઊૈ, મુદા નયિ઼મતિ કમે કથાકાન નહઊાહ।

અસોક ળી સાતમ દસકક ચોન્હકિં આડ઼ૈત અપન કથા સભક સંગ અવૈત છથિ। વ઼્ય઼ક્તિ, સમાળ, સંવ઼ેદના, સૌમનસ્ય઼તા, ચેતના આ પ્નતબિોધક સોહ્-સોહ્ વાટ વનવૈત છથિ। ઈ અપન વાત સોહ્-સોહ્ પાઠકકેં કહૈત છથિ, ળાહમિ હનિક ભાષાક ળાદૂગાની દેપ્પવા ય઼ોગ્ય઼ નૈત અછિ। અપને ઊાથે પૂના સમાળકેં ય઼ુગ-સત્ય઼ દેપ્પવૈત છથિ। ઈ વાત હનિકા મૈથિઊિ કથામે એકટા અનાક પહયિાન આ સ્થાન દૈત છનિ।

ઊપ્પક સમય઼ક સંગ વદઊૈત વ઼્ય઼ક્તિ, સમાળ આ દેસક ભાવ઼-સ્વ઼ભાવ઼ક સંગ યઊૈત અછિ આ ઓકના અપના નચનાક વ઼ષિય઼ વનવૈત અછિ। ળે સમય઼ક સંગ

𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒍 𑒐𑒰𑒡𑒱 𑒐𑒳𑒢𑒱 𑒏' 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀𑒏𑒹 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒩𑒹𑒏 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒢𑒑𑒲 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑓑𑓙𑓘𑓖 𑒄 𑒧𑒹 𑒕𑒣𑒪 𑒏𑒟𑒰 "𑒧𑒱𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥" (𑒍𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒧𑒏𑒱 𑒦𑒼𑒩) 𑒂 "𑒕𑒪" (𑒅𑒛𑓃𑒲𑒑𑒰𑒧- 𑓒𑓐𑓑𑓗) 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। "𑒧𑒱𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥"𑒏 𑒧𑒱𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒧𑒳𑒖𑒮𑓂𑒮𑒩 𑒂𑒪𑒧 𑒖𑒹 𑒦𑒰𑒩𑒞-𑒣𑒰𑒏𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒐𑒩𑒰𑒣 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒧𑒹 𑒦𑒰𑒑 𑒪𑒹𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒏𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒒𑒹𑒩𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒒𑒳𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒥' 𑒥𑒧𑓂𑒥𑒃 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒞𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪 𑒦𑒹𑒪 𑒠𑓀𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒩𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱, 𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒤𑒳𑒪𑓂𑒪𑒱𑒞 𑒕𑒪, 𑒦𑒫𑓂𑒨 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑒨𑒢𑒹 𑒕𑒪, 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒏𑒟𑒰 '𑒕𑒪' 𑒧𑒹 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒗𑒰 𑒏𑒼𑒂𑒣𑒩𑒹𑒙𑒱𑒫𑒱𑒏 𑒂𑒧 𑒮𑒦𑒰𑒧𑒹 𑒥𑓂𑒩𑒲𑒤𑒏𑒹𑒮𑒏 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒧𑒳𑒯𑒧𑓂𑒧𑒠 𑒁𑒮𑒪𑒧 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒼𑒂𑒣𑒩𑒹𑒙𑒱𑒫𑒱𑒏 𑒧𑒲𑒙𑒱𑓀𑒑 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒂 𑒁𑓀𑒞𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒪 𑒞𑒰𑒧𑒮𑒹 𑒧𑒰𑒯𑒳𑒩 𑒦' 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒥𑒰𑒖' 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱- ' 𑒁𑒩𑒹, 𑒄 𑒯𑒰𑒏𑒱𑒧 𑒞𑒐𑒢𑒲 𑒮𑓀 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒧𑒖𑒯𑒥 𑒏𑒹 𑒏𑒲-𑒏𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟। 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟 𑒖𑒹 𑒃𑒮𑒪𑒰𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒙𑓂𑒙𑒩 𑒧𑒖𑒯𑒥 𑒯𑒨। 𑒞𑒪𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒖𑒼𑒩 𑒣𑒩 𑒔𑒪𑒻 𑒯𑒨। 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒥 𑒑𑒰𑒨 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑓀𑒮 𑒐𑒰𑒃 𑒯𑒨। 𑒯𑒱𑓀𑒠𑒳 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒩 𑒏𑒯𑒻 𑒯𑒨। 𑒯𑒧 𑒞𑒥𑓂𑒥𑒹 𑒮𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒧𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒲। 𑒁𑒩𑒹 𑒦𑒰𑒃, 𑒁𑒃 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒏𑒲 𑒏𑒮𑒴𑒩 𑒯𑒨। 𑒋𑒞𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑓀 𑒯𑒧 𑒮𑒥 𑒋𑒏-𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒞𑒥𑓂𑒥𑒼 𑒋𑒏-𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒗𑒪𑒲? 𑒏𑒾𑒂 𑒏𑒹 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒲। 𑒣𑒩 𑒄 𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟। 𑒏𑒲-𑒏𑒯𑒰𑓀 𑒥𑒏𑒢𑒹 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟।'

𑒮𑒰𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒨𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒐𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩। 𑓑𑓙𑓘𑓖 𑒮𑓀 𑓒𑓐𑓑𑓗 𑒡𑒩𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞-𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒮𑒰𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒨𑒱𑒏 𑒮𑒠𑓂𑒦𑒰𑒫 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒵𑒞 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒢𑒑𑒲। 𑒧𑒱𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒣𑒏𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒮𑓀 𑒁𑒥𑒻𑒟𑒢𑒱, 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞𑒏 𑒦𑒫𑓂𑒨 𑒍𑒩𑒱𑒂𑒍𑒢 𑒏𑒨𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒕। 𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒳𑒂𑒩𑒹 𑒖𑒹 𑒧𑒱𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏 𑒧𑒼𑒖𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒢𑒯𑒱, 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒩 𑒡𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏

વૈમનસ્ય એત' ધરિ પહુંચિ ગેલ અછિ જે મુહમ્મદ અસલમ કે હાટ-બજારિ ઓકરા ધર્મક ધ્વિંસ ક' દૈત અછિ લોક। બહુતો અસલમ અપન સમાજમે છથિ જે કહૈત રહૈત અછિ જે કૌઆક પાછૂ નહિ દૌડૂ। મુદા। કથાકાર દુનૂ સમયક ચિત્રણ કરૈત બાજવિ ચરિત્ર રખૈત છથિ દોસર, એકટા આર બાત! મહિલા સાહેબક સંગ મુખિયાજી બમ્મઈ (આજુક મુમ્બઈ) જાઇત છથિ। મુદા, આજુક સ્થિતિ ઈ બનિ ગેલ અછિ જે કોનો મહિલા સાહેબક સંગ કોનો મુખિયાજી કતહુ જયબા લેલ તૈયાર નહિ ભ' સકૈત છથિ। દુનૂક બીચ અવિશ્વસનીયતાક ખાધિ એતેક ગહીર ક' દેલ ગેલ છૈક જે રમજાન આ રામનવમી મે એક-દોસરાક ભેંટ-ઘાંટ સેહો બનૌઆ લગૈત છૈક। આજુક સમયક ઈ સભસં પૈઘ ત્રાસદી ભ' ગેલૈએ જે એહિ દેશક મુસલમાનકેં કહ' પડ઼ૈત છૈક જે હમર દેશ ભારત અછિ। આ એકરા લેલ દુનૂ ધર્મક લોક જિમ્મેદાર છથિ જે તેસર, મદારીક હોહકારા પર નાચિ રહલ છથિ।

સદ્ભાવક એહને એકટા કથા ઉડીગામ સંગ્રહમે અછિ- 'ઓ દુનૂ સાઇકિલ સિખૈત અછિ'। સુધીર આ રમેશક સાઇકિલ સિખબાક બહન્ને કથાકાર બડ઼ટા બાત કરૈત છથિ। એહિ કથાક અલાઉદ્દીન આ કૈથી મિસ્ત્રીક ચરિત્ર સમાજ લેલ એકટા આદર્શ સ્થાપિત કરૈત અછિ।

કથાકાર અશોકક કથા રૂપી તરકસમે રંગ-બિરંગક બાણ છનિ। હિનક એકટા કથા મોન પડ઼ૈત અછિ- ભોજ। એહિ કથામે લગૈત છૈક જે કથાકાર એકટા નેનાકેં ભોજક પ્રતિ આકર્ષણક વર્ણન ક' રહલ છથિ। ભોજક ખાદ્ય-પદાર્થક અદ્ભુત વર્ણન અછિ। તકર કારણ ઈ જે કથાકાર સ્વયં સેહો ભોજન સંદર્ભમે બનિયાસી છથિ। ભોજે નહિ, આન-આન કથા સભમે સેહો ભોજનક વર્ણન મનોયોગપૂર્વક કરૈત છથિ। 'ભોજ' કથામે નેનાક મનોવૈજ્ઞાનિક ચિત્રણ અદ્ભુત અછિ। મુદા, પૈઘ બાત ઈ જે એહિ કથાક બહન્ને ગામક આપસી સદ્ભાવક ગપ કહિ જાઇત છથિ કથાકાર। ભોજ ગામક લોકકેં એકઠામ બાન્હિ ક' રખબા લેલ જરૂરી છૈક।

હિનિક વહુગ નાસ કથા શ્રછિ ળે માનવીય સંવેદનાક વ઼િભિન્નિ શ્રાયામકેં સસ્રઠગાપૂર્વક છુવૈગ શ્રછિ। હિનિક કથા-સંસારકે શ્રવગાહન કયને પાઠકકેં વુદ્વામે શ્રૌગની ળે ૬ કથાકાર શ્રોહૂ સભ વ઼િષયકેં શ્રપન કથામે શ્રાનઠની શ્રછિ ળે મનુક્ખ શ્રા સમાળક સમૃદ્ધિક કારક ભ' સકૈગ શ્રછિ।

હિનિક સંગ્રહ ' ઉઠીગામ' ક કથા સભમે એકટા કેન્દ્રીય વાગ ૬ દેખ્વામે શ્રવૈગ શ્રછિ ળે શ્રોરઠન્સક્સિઠનક વઢૈગ ળાઠક શ્રછૈગ ગામકેં કોના વચાશ્રોઠ ળાય? મનુક્ખકેં વચવા ઠઠ ગામક વાંચવ ળરૂરી છૈક।

મઠટીનેશનઠ કમ્પની સભક શ્રધિકારી શ્રા કર્મચારી સભ પ્રમોશન શ્રા પદક ળાહિ વિૃગમે ઘૂમિ રહઠ શ્રછિ, ળે શ્રોકર વ઼્યક્તિગત શ્રા સામાળિક ળીવન ચૂમિઠ ભેઠ ળારહ્ન છૈક। શ્રોકરા પાર શ્રા પદ ચાહી। એહિ વ઼િષય પર મૈથિઠીમે કછિુ નવ-પુરાન કથાકારક કથા શ્રયઠની શ્રછિ, ળાહિમે વ઼િભિન્નિ પ્રકારક ચરિત્ર શ્રા ચરિત્રન પ્રસ્તુત કયઠ ગેઠ શ્રછિ। એહને ઘુમ્મુરાયિ દૈગ ઠોક સભક ઠઠ હાઠહિમે શ્રશોક ળીક એકટા દોસર રંગક કથા શ્રયઠની શ્રછિ- ' ળમિમેદારી' । એહિમે શ્રો ' વ઼ર્ક ઠાઇસ્ક વૈઠેસ' ક નીક ઉદાહરણ પ્રસ્તુત કયઠની શ્રછિ। પરિસ્થિતિ િપૈઠ છૈક શ્રા એહિના કિ એહૂસં વેસી વ઼્યસ્તગમ ભ' સકૈગ છૈક। મુદા, એહન પરિસ્થિતિમિ ળીવનક રાગ-શ્રનુરાગ કોના વચા ક' રાખઠ ળા સકૈછ, સે વાગ કથાકાર શ્રશોક શ્રપન એહિ કથામે કહૈગ છથિ।

શ્રશોક ભાઇસં માસમે એકદિનિ શ્રવસ્ત્રે ભેંટ હોઇગ શ્રછિ। શ્રો દિનિ હોઇછ ' ઉપમાન' ક માસિક ગોષ્ઠીક। શ્રો મૈથિઠક પ્રાય: સભ મહત્વ઼પૂર્ણ વ઼િધામે ઠખ્યિઠની શ્રછિ। એકટા વ઼િધા છુટઠ છની। એકવેરક ગોષ્ઠીક સમાપનક વાદ વ઼િયોગી (ગારાનન્દ વ઼િયોગી) શ્રા હમ કહઠિયૈની ળે ભાઇ, ઉપન્યાસ છુટઠ શ્રછિ। ઠખ્યિયૌ ને। શ્રો સાસ્રે નકારિ ગેઠાહ। નહિ, ઉપન્યાસ નહિ ઠખ્યાયગ। એકવેર સોચને રહિ, મુદા નહિ। એહિ ઠઠ કહિયૌ મૂઙે ને વનઠ। ળે, સે। ૬ ગપ હમરા દુનૂક મુંહસં પ્રાય: એહૂ દુશ્રારે વહરાયઠ ળે શ્રોહિ ગોષ્ઠીમે વ઼િયોગી શ્રપન ઉપન્યાસ શ્રંશ પઢને રહથિ। એહિ ગપક વાદ હમ દુનૂ ગોટે હુનકા સંગ કૌસ્રી

पीब' पटना गाँधी मैदानक मैकडोनाल्ड मे गेलहुँ। कौशीक संग गपसपक बला फोटो हम फेसबुक पर तखनहि द' देलियैक। उनतीस मई २०२२क गप थिक। फेसबुकक टाइटिल देने रहियै - कौशीक संग कथा-वार्ता करैत मैथिलीक तीन टा कथाकार। एहि पोस्टक बहुत रास प्रतिक्रिया आयल। मुदा मुख्य प्रतिक्रिया आदरणीया उषाकिरण खानक आयल छल। ओ लिखने छलीह - 'तीनू मलि क' एक टा दीर्घ कथाक सूत्रपात ते करता? बड़ नीक प्रयोग होतनि- मधुबनी, सहरसा आ बेगूसरायक परिवेश मे। बगअप भाइ लोकनि।

एकर प्रतिक्रिया पर आदरणीय भीमनाथ झा तीनू गोटेकें उपन्यास लिखबा लेल आग्रह कयलनि। हमरा मादे कहलनि जे हाथ झारल छनि। लिखिए देताह। बियोगी जी आ अशोक जी गछथु। एहि पोस्ट पर बहुत संवाद भेल। बियोगी गछलनि। भीम भाइ अंततः अशोक जी सं सेहो गछबाइए लेलनि। कथाकार अशोक अपन पोस्ट उषाकिरण खानक उतारामे लिखलनि- "प्रणाम। अहांक आदेश त' पहिनहि सं अछि। भीम भाइ सेहो कहि देलनि। बियोगी बहुतो दिन सं पाछू पड़ल छथि। लगैए आब एकटा उपन्यास लिखए पड़त।"

हम सभ अशोक भाइक एहि घोषणाक स्वागत करने रही। आ, आब हुनक उपन्यासक प्रतीक्षा क' रहल छी।

- संपर्क- ६२०२१४०५६१

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓒𑓒𑓐𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒠𑒼𑒭



આશીષ અનચિન્હાર

મૈથિલ દૃષ્ટિદોષ

"મૈથિલ આઁખિ" કાંચીનાથ ઝા 'કિરણ' જીક દેલ એકટા નારા અછિ જાહિ અંતર્ગત મિથિલા-મૈથિલી-મૈથિલકેઁ અપન દૃષ્ટિસઁ દેખબાક બાત કહલ ગેલ છૈ। મુદા ઈ "અપન દૃષ્ટિ" કોન રૂપે આએત તકર માપદંડ કતહુઁ નૈ સોઝરાએલ ગેલ છૈ।
"મૈથિલ" શબ્દ કેર અર્થે સંકુચિત કઽ દેલ ગેલ છૈ। એકર અર્થ એખનો માત્ર બ્રાહ્મણ-કાયસ્થ હોઇત છૈ। કાગજપર લિખબાક લેલ સભ નીક-નીક આ ઉદાત્ત વિચાર લિખૈ છથિ મુદા વ્યાવહારિક જીવનમે ઓ ઉદાત્ત વિચાર નૈ આબિ પાબૈ છનિ। ટેક્સ પેયર કેર પાઇસઁ ચલએ બલા સંસ્થા જેના અકાદેમી સભકેઁ સેહો અહિ મૈથિલ અર્થ બલા બના દેલ ગેલ છૈ।
એહન પરિસ્થિતિમે ૨૦૦૭ મે મૈથિલી અકાદમી, પટનાસઁ અશોક જી કેર "મૈથિલ આઁખિ" નામક પોથી પ્રકાશિત હોઇત અછિ। એહિ પોથીમે ૨૪ ટા આલેખ અછિ જાહિમે કિછુ આલેખમે કિરણજી પક્ષ ભેટિ જાએત આ કિછુમે ઓ નૈ ભેટત। નૈ ભેટબાક એકૈ ટા કારણ જે આબ ઓ સમયમે નૈ છૈ જે એકૈ દૃષ્ટિસઁ અહાઁ પ્રગતિ

कऽ लऽ लेब। अपने आप मैथिल आँखिमे आनो दृष्टि सेहो आबि जाइत छै आ मिथिला-मैथिली-मैथिलक विकास नहिंसँ होइत छै। एहि पोथीक सेहो आलेख कोनो-ने कोनो पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि। बहुत लेखमे मैथिल आँखि वा दृष्टि स्पष्ट नै भऽ सकल अछि जेना पृष्ठ-२१ पर आलेख अछि "विकास संदर्भ" जे कि संचार पत्रिका केर जुलाई २००० केर अंकमे प्रकाशित भेल छल। ओहि आलेखक शुरूमे लेखक अपन किछु संगीक संगे कोनो बैंक अधिकारी संगे वार्तालाप करैत रहथि। बैंक अधिकारी कहब रहनि जे मैथिली साहित्य पयास बर्ख पाछू अछि। अधिकारी ईहो कहलखिन जे एखन सूचना-तकनीक-इंटरनेटक जमाना अछि जे मैथिलीमे नहि अछि। मुदा अशोक जी आ हुनका संग रहल आन लेखक जे संगे रहथि से ओहि अधिकारीकेँ गोलिया देलाह। मुदा देखियौ, ने अशोकजी ओहि अधिकारीकेँ ओहि समयक इंटरनेटपर मैथिली सामग्री देखा सकलाह आ ने हुनका संगमे रहल आनो लेखक। बर्ख २००० मे मैथिलीमे "भालसरिक गाछ" छल जकर संचालक गजेन्द्र ठाकुर छलाह आ एकर अलावे तीन टा आर साइट छल जे कि अमेरिकासँ संचालित छल जाहिमे अधिकांशतः अंग्रेजीमे मिथिला-मैथिली-मैथिलपर सामग्री रहैत छल। एहि सभहक विस्तृत विवरण हमर पोथी "मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास" मे भेटत।

एहि विवरणसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे जतबे दूर धरि ओहि अधिकारीक दृष्टि गेल छलनि ततबे दूर धरि अशोकजी एवं हुनका संगमे रहल आन लेखक केर छलनि। जखन कि लेखक लग अपन समकालमे घटैत हरेक घटनापर नजरि रहबाक चाही। हमरा हिसाबे ओ बैंक अधिकारी मात्र पाठक छल तेँ ओकरा लग कम सूचना भऽ सकैए मुदा लेखक लग तँ सूचना रहबाके चाही।

पृष्ठ-५४ पर आलेख अछि "विकासक रूप" जकर मुख्य मुद्दा छै पलायन। मुदा मात्र मजदूरक पलायन। हमरा जनैत ई विशुद्ध मैथिल महासभा बला मैथिल दृष्टि छै। मजदूरक पलायन, पलायन भेलै आ बाबू साहेबक बेटा जे दिल्ली-बंबई- अमेरिका-लंदनमे कमा कऽ ताजमहल बना लेए से कमाइ भेलै।

મળદૂ૧ક પ૭યાન કમ ક૧વાક પહિ૭ શ૧્ન છૈ વ્૧ેન ડ્૧ેન (પઢ૭-૭ખ્યિ૭ ૭ેકક પ૭ાયન) ૧ેકવ। શ્રન્યથા હમ૧ા નળ૧ામિ મળદૂ૧ક પ૭ાયન ૧ેકવ, મથિ૭ાક ગ૧ીવકેં ગ૧ીવ ૧હવાક ૭૭ શ્રજાશિપ્ન ક્ર દેન। શ્રા સંજાવન: મૈથિ૭ મહાસજા કે૧ મૈથિ૭ દૃષ્ટિ શિ૭હ યાહે છૈ।

૩પ૧ ળે હમ દૂ ૩દાહ૧ાા દેખહું ૧ેહન શ્રા૧ કછિ ૩દાહ૧ાા જોટ૭ એહિ પોથીમે મુદા પાઠક સજાસં શ્રાગ્૧હ ળે શ્રો એહિ પોથીકેં કીનથિ શ્રા શ્રોક૧ા પઢથિ। એક૧ શ્રનિરિક્ન એહિ પોથીમે હમ૧ા વહુન ૧ાસ વશિષના સેહો જોટ૭ મુદા હમ નકા૧ાન્મક ૭ેક માન્૧ દુશ્ય ટા વશિષના દેવ। પહિ૭ એહિ પોથીક સજ શ્રા૭ખ્ય છોટ શ્રછિ। શ્રા ઈ સામાન્ય પાઠક ૭૭ ૧ીક વાન છૈ। દોસ૧, શ્રહાં સહમન હોઈ વા કિ શ્રસહમન મુદા શ્રોહિ ૭ખ્ય સજામે ૭ખ્યક કે૧ શ્રપન નષ્કિ૧્ષ જોટન। મૈથિ૭ીમે નં કછિ એહનો પુંયન ૭ખ્યક સજ છથિ ળિનિક૧ ૭ખ્ય દૂ-કછિ વે૧ પઢ૭ાક વાદો નૈ વુઝાઈ છૈ ળે શ્રાખ્યિ એહમિ કી ૭ખ્ય૭ ગે૭ છૈ। શ્રોના ઈ સંનોષક વાન છૈ ળે એહન પુંયન ૭ખ્યક કમ છથિ મુદા ળે છથિ સે શ્રપનાકેં મઠાધીશ માનૈ છથિ। શ્રશોકળી શ્રપન એહિ દૂ વશિષનાકેં શ્રંન યન વિયા ક્ર ૧ાખ્યથિ શિ૭હ શ્રસ૭ મૈથિ૭ દૃષ્ટિ હિનૈ।

શ્રપન મંનવ્ય દનિો૧ાિ૭સના૭વિદિહા૭ામાિ૭યોમ **પ૧ પઠાઉ।**

२.२.१ मुन्ना जी- त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक



मुन्ना जी
त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक

मिथिलाक हृदयपुर प्रखण्डान्तर्गत लोहना, जूरुआथान निवासी श्री अशोक, श्री रविशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्द क वर्ष १९८३ मे कथाक त्रिकोण बनल छल। तीनू गोटे कथा मे अपन अपन स्तरीय आ स्वतन्त्र अस्तित्व मे जनलाक पश्चातियो कथाकार श्री अशोक जी अपनाके स्तरक दृष्टिकोण सँ एकर धुरी साबित भेल छलाह।
सदिखन ने काहू सँ दोस्ती ने काहू सँ बैर कें यथार्थ करैत अपन स्तरीय आ कतेको क्रियाशील रहि आइ अपन पीढ़ीक सर्वाधिक पढ़ल जाय बला सर्वश्रेष्ठ कथाकारक रूप मे उपस्थित छथि।
श्री अशोक जी पहिने अशोक झा छलाह सेहो अशोक आ अपन परिचितक घोरमट्ठा हेबा सँ बचेबाक क्रम मे भ' गेलाह कथाकार अशोक।
बनारस सँ शिक्षा पाबि गाम एलनि १९७५ मे वैवाहिकबन्धन मे बन्हा गृहस्थ जीवनक पश्चात पहिने कम्पनी आ कालान्तरे कोपरेटिव विभाग मे

અધિકારીક સેવા દૈત સેવાનિવૃત્ત ભ' સંપ્રતિ પટનાવાસી રહિ સૃજનરત છથિ
કથા સૃજનક સંગ-સંગ ઉપન્યાસ પર હિનકર ગહીર દૃષ્ટિ પ્રભાવિત કરૈ વલા રહલ। સંગહિ ઉપન્યાસ, કથાક ઑપરેશનલ વ્યૂ હિનકા શ્રેષ્ઠ આલોચક શ્રેણી મે આનિ ઠાઢ઼ કેલક।
મંચ, માલા, માઇક આ હાઁજી-હાઁજી વલા રૂપ કહિયો દૃષ્ટિગોચર નૈ ભેલ।

- - -

જુલાઈ ૧૯૯૫ , ઓઇ સમય પટના મે પત્રકારિતાક છાત્ર રહી।શૈલ ભાઈ (શૈલેન્દ્ર આનન્દ)કે સંગ અશોક ભાઇક સરકારી આવાસ પર પહિલ ભેંટ ભેલ છલ।એકૈ પંચાયતક રહિતો ભેંટ નૈ છલ।ઓના શ્વૉલેવર ત' રહી જુલાઈ ૯૧ક પૈટઘાટક કથા ગોષ્ઠિયે સઁ।
વીહનિ કથા વિધા પર હુનકા સઁ હોઇત ગપ સપ સદખિન સકારાત્મક આ પ્રોત્સાહિત કરૈત રહલ। આ તકરે પરિણામસ્વરૂપ દિસંબર ૨૦૧૧ મે હુનક સંયોજન મે ભેલ પટના કથાગોષ્ઠી મે હમર વીહનિ કથાક એકલ પોસ્ટર પ્રદર્શની લગાઓલ ગેલ છલ।
આબ જહિયા દિલ્લી આવૈથ ત' સૂચિત કરથિ।આ સદતિ સોહ્ગર વાટ દેખૈત રહલહ।

-મુન્ના જી, હટાઢ઼ રૂપૌલી મો ૯૯૫૮૩૯૬૩૫૩

અપન મંતવ્ય editorial@videha.com **પર પઠાઉ।**

२२.२श्रीधरम- गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिप्पणि



श्रीधरम

गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिप्पणि

अशोक पाँती आधुनिक मैथिल-कथाकार छथि। मैथिली मे पाँती कथाकार त' बहुत छथि, मुदा कैक बेर हुनक दृष्टिक कोनाँटी हुनक छद्म वैयाक्तिताक पोल खोलि दैत अछि। एहि दृष्टिएँ कथाकार अशोकक वैयाक्तिता आ प्रगतिशीलता मे कोनो होल नहि छनि आ से हुनक कथा मे अनुस्यूत छनि। से

વિાિ કોનો નાપેવાળી શ્રાર્ક ઙિશ્ઠળી વળેનહિ શ્રશોક મથિળિક ળન-ળીવ઼નક કે શ્રળગ-શ્રળગ કોન શ્રા દ઼ૃષ્ટિકોણ સઁ દેખ્પૈન છથિ। શ્રો શ્રામ ળીવ઼ન, ળગન શ્રા પ્નક઼ૃનિક શ્રનેક વમ્બિ કે ગનિશીળ ચત્રિકાની સંગ ઉનાનિ દૈન છથિ। હુનકન ળે ' મૈથિળિ શ્રાઁખ્પિ' છનિ નિકન કૈનવાસ વહુન વ઼સ્નિ઼ૃન છૈ, ળેકળ સઁ ળ' ક' ગ્નામીણ ચનિ હનિકન કથાક વ઼નિાન મે મથિળિક માટિ-પાનિ, પ્પેન-પ્પનિહાન, ળાનિક શ્રનુસાન વાઁટળ ટોળ-પડ઼ોસ, દામ્પન્ય઼ ળીવ઼નક શ્રાશા-નનિાશા, નાગ-દ્વ઼ેષ સભ કછિુ વ્ય઼ાપ્ન શ્રછિ। વભનટોળી સઁ વાહન નકિળિ ક' દળનિ-ટોળ શ્રા મયિાં ટોળ ચનિ ળાઇન છથિ શ્રા એક દોસન ટોળક વીચક નાગ દ્વ઼ેષ, છળ-છદ્મ, નનાવ઼ક સંગ શ્રાન્મીય઼નાક સૂન્ન કે સેહો પકડ઼વાક પ્નય઼ાસ કનૈન છથિ। સવ સઁ પૈઘ વાન ળે હનિકન કથા કહ્વાક શૈળી છનિ સે ' રસ્સ' કકના નહિ ઙિમકા દૈન? કથ્ય઼ક શ્રનુસાને ' કહ્ન' કે સાચ' મે માહનિ છથિ કથાકાન શ્રશોક।

' શ્રોહિ નાનિક ભોન' સંગ્નહક ભૂમકિા મે પ્નસદ્ધિ કવ઼િ-શ્રાળોચક કુળાનન્દ મશ્રિક હનિકા કથાક માદે ટપ્પિણી છનિ ળે "ર ચુગસન્ય઼ કે સામૂહકિ નળનિ સઁ વેસી વ્ય઼ક્નકિ નળનિ સઁ દેખ્પવ સાન્થક વુહૈન છથિ ને હનિકન કથા મે ચુગીન સંઘન્ષક વાન પનોક્ષ નૂપ સઁ ળક્ષનિ હોઇન છૈ।" દેખ્પળ ળાય઼ ન' એહિ કથન મે પ્નશ્નક સંગ ઉન્નન સેહો નહિનિ છૈ। એન' કુળાનન્દ ળીક કહ્વાક શ્રાશય઼ પૈહ છનિ ળે શ્રશોક શ્રપન સમકાળીન સમય઼, સમાળ શ્રા ળન-સંકુળક ય઼થાન્થ કે શ્રપન પાન્નક નળનિ સઁ શ્રકાનૈન છથિ ને ક ભીડ઼ શ્રા નાપેવાળી સઁ। હનિ્દી મે પ્નેમચંદ સઁ શ્રમનકાંન ચનકિ કથા મે સમાળ શ્રા સમૂહ કે ' વ્ય઼ક્નકિ નળનિ' સઁ થાહ્વાક ર પનંપના દેખ્પળ ળા સકૈન શ્રછિ। પ્નશ્ન પૈહ હેવાક ચાહી ળે વ્ય઼ક્ન-ચનાન્નિ વ઼ન્ગીય઼ ચનાન્નિ વનૈન શ્રછિ કિ નહિ। શ્રાળોચક મોહન ભાનદ્વ઼ાળક ઉચનિ કહ્વ છનિ ળે "શ્રશોક વ઼કિાસ કે પુનનાવ઼ૃન્નકિ નૂપ સે નહિ દેખ્પૈન છથિ। વ઼પિનીન નન્ન્વ઼ક એકનાક નૂપ મે વ઼કિાસ કે દેખ્પવ

हुनक विशिषता छनि।" भारद्वाज जी इहो लिखैत छथि जे हिनक "कथाक कथ्य सार्वभौम होइत अछि, मुदा ओकर बनावटि मैथिल रहैत अछि। कथाक तानी-भरनी अर्थात संरचना मे मैथिल सुवास रहैत अछि।" निःसन्देह मोहन भारद्वाज अशोक केँ एकटा एहन प्रगतिशील कथाकार रूपेँ देखैत छथि जे सामाजिक द्वंद्व केँ वैश्विक आ वैज्ञानिक दृष्टिएँ मैथिल गंधक संग चित्रित कएने छथि। एहि प्रक्रिया मे कथाकार अशोक अपन पाठक आ पाठकीयता केँ गमसियौने रहैत छथि। जेनाकि युवा कथाकार-समीक्षक शुभेन्दु शेखर अशोक केँ 'पाठकक कथाकार' कहैत लिखैत छथि जे "अशोकजी मिथिलाक जीवन-राग, ओकर छोट-पैघ आकांक्षा, ओकर उदात्त जीवनक नकारात्मक आ सकारात्मक वृत्ति सभ केँ बहुत सूक्ष्मता सँ देखैत छथि।" शुभेन्दु अशोकक कथा-यात्राक एहि विशिषता केँ सेहो रेखांकित कएने छथि जे कथ्य आ शिल्पक स्तर पर ई कथाकार लगातार ऊर्ध्वमुखी आ प्रयोगशील छथि। आ जकरा कैक बेर ठमकल मैथिल-नजरि नहि पकड़ि पबैत अछि। एवं प्रकारेँ कथाकार अशोकक जे थोड़-बहुत मूल्यांकन भेल से बहुत कम अछि। ते 'विदेह' क ई प्रयास एहि चर्चा-परिचर्चा केँ आगाँ बढ़ाओत से विश्वास अछि।

अशोक १९८० के आसपास कथा लिखब आरंभ कैने छलाह। लगभग चारि दशक मे हुनका लग संख्या मे भने कथा कम हो, मुदा उत्कृष्टताक प्रतिशत हुनका लग बहुत अधिक छनि। निःसन्देह सृजनात्मक रचनाकारक भीतर सेहो एकटा आत्मालोचक हेबाक चाही, जाहि सँ साहित्य मे नॉयज़ नहि पसरि सकय। एहि सँ साहित्य आ पाठकक बहुत भलाइ होयत। अशोक पछिला शताब्दीक अवसानक संग मरैत सांढ़ जकाँ आँखि मुनने भागल जाइत नव सदीक यथार्थ केँ अपन कथा मे गूँथय मे माहिर छथि। पछिला सदीक अंतिम दू दशक भारतीय समाज आ राजनीति मे परिवर्तनक काल रहल, जकर समाज पर असरि बहुत बेसी पड़ल। ऐह समय आवारा-पूँजीक वैश्विक

आवागमनक सेहो थिक। पारंपरिक सामाजिक संरचनाक पुनर्रचना भेल आ एहि क्रम मे टकरावक संग सामंत केंद्रीय टोल सँ हाशियाक टोल दिस सेहो शिफ्ट भेल। एहि बदलावक प्रक्रिया केँ अशोक बहुत महीन रूपे 'मातबर' कथा मे अभिव्यक्त करैत छथि। कथा मे आयल 'अंबेडकर-चौक' परिवर्तनक मेटाफर बनि जाइत अछि। निम्न वर्ग सँ मातबर बनबाक एहि प्रक्रिया मे जनता अपन राजनेते जकाँ दिशाहीन आ दिग्भ्रमित अछि।

गोर्की चेखवक कहानी कलाक वर्णन करैत लिखने छथि- "चेखवक कथा पढ़ैत एना सन प्रतीत होइत अछि जेना कि मानि लिय' जे शरद ऋतुक उदास अवसानक दिन मे अहाँ टहलि रहल छी, जखन कि हवा ऐक पारदर्शी होइत अछि जे ओहि मे झाड़-पात, गाछ-वृच्छि, संकीर्ण मकान आ घूमैत सन लोक सभकेँ एकदम स्पष्ट देखा पड़ैत अछि। सभकेँ एकदम वैयक्तिक-एकांत, निश्चल आ निश्चिन्त लगैत अछि। चारू भरि गहीर नील सँ बोरल असीमित दूरी पसरल रहैत अछि। आ जे स्थिक्का सन आसमान संगे जा मिलैत अछि। डेङ सँ जमल आ कादो सँ भरल धरती पर आसमान 'सर्द आह' भरैत अछि। लेखकक हृदय शरद ऋतुक सूर्य जकाँ निर्मम आ स्पष्ट रूपे ऊबड़-खाबड़ बाट, टेढ़-मेढ़ गली, संकीर्ण आ गंदा मकान सभ पर प्रकाश पसारैत अछि, एहि मकान सभ मे दीन-हीन तुच्छ लोक सभक विकलता आ काहिली सँ दम घुटैत जाइत छै। ओ सभ मूस जकाँ अपन निरर्थक, ओघायल भागम-भाग मे लागल रहैत अछि।" अशोकजीक कथा सभ केँ पढ़ैत कैक बेर ई कथन सार्थक बुझना जाइत अछि। अशोक अपन निजी पेशा मे सरकारी अधिकारी रहलाह। हुनका लग सरकारी तंत्रक बेस नीक-अधलाह अनुभव छनि, जकरा ओ अपन कथाक विषय बनौने छथि। सरकारी लालफीताशाही पर अशोकक कैक टा कथा छनि। 'दसखत' आ 'कोठा' कथा मे राजनीतिक भ्रष्टाचार केँ जाहि तरहेँ उघाड़ल गेल अछि से अपन कथ्य मे पुरान होइतो प्रस्तुति मे नव अछि। अनेक तथ्य आ पक्ष केँ जोड़ैत। 'कोठा' मे 'सांप' मेटाफर केँ बहुत

समुचित प्रयोग भेल अछि। पहिने 'अवर्ण' केँ 'सवर्ण' उठैत छल आ आब 'मंडल' उठि रहल छथि। रामलाल मंडलक सांप सन सीसाक घर सँ बाहर भ' गेल। "चारूकात गाम मे सरसराइत-सनसनाइत ससर' लागल फुफ्कार सँ आसामर्द क' देलक समूचा वातावरण के।" अहिना 'जिनिसि' कथा मे भ्रष्टाचारक संग दाम्पत्य आ बदलैत स्त्री-पुरुष संबंधक सार्थक रेखाचित्र खीचल गेल अछि। 'स्त्री-पुरुषक दियाद नहि थिकैक।' एहि कथन सँ अनेक तथ्य ध्वनित होइत अछि। रूपाक एहि कथन 'मोन पाडू त' कतेक दिन भ' गेल हैत हमर देह छूना अहाँके?' केँ आधुनिक स्त्री-विमर्शक दृष्टिए सेहो देखल जा सकैत अछि।

अशोकक एकटा कथा छनि 'हरिसिंहदेवी'। आब इहो कोनो कथाक 'कथ्य' भ' सकैत अछि? मुदा एहन सोच आलेखक विषय केँ लेखक जाहि तरहेँ बखिया के बखान करैत छथि, से हुनकर 'कसिसागो' क प्रमाण थीक। कथाकार एत' जाति-पाँतिक समाजशास्त्रीय विश्लेषणक संग मनोवैज्ञानिक 'स्केन' सेहो करैत चलैत छथि। 'रागविराग' कथा एहि तथ्य केँ रेखांकित करैत अछि, जे हजारो बरख सँ मारि-गारि सुन' बला दलित, मजदूर लेल सम्मान आ स्नेहक दू टा मीठ बोल कतेक आह्लादक होइत छै। हजार रुपैया कमेनिहार ड्राइवर अपन सेठानी केँ माँ कहैत अछि। हजारो सालक सामंती गुलामी सँ बाहर निकलल ई वर्ग एक बेर फेर 'प्रेम लपेटे अटपटे बैन' मे फँसिक' शोषणक शिकार भ' जाइत अछि। अहि कड़ीक विस्तार मे 'महतो' 'प्रतिलोम' आ 'सीवन रजकक हतियनितक' शीर्षक कथा केँ देखल जा सकैत अछि। मुदा 'सीवन रजकक हतियनितक' कथाक अंत मे जे द्वंद्व हेबाक चाही ताहि सँ पात्र बंचित रहि जाइत अछि। बहुत आसानी सँ सीवन केँ मुक्ति भेटि जाइत छै। एहि दृष्टि सँ 'प्रतिलोम' कथाक विकास आ उरूज स्वाभाविक अछि।

'मातवर' संग्रहक कथा ''बूढ़ा जीबैत रहलाह' आ 'उडीगाम' संग्रहक 'ऐना भ' क' कहियो' के एक संगे पढ़ल जेबाक चाही। भारतीय समाज मे सोलह-सत्रह वर्ष मे विवाह आ चालीस जाइत-जाइत वानप्रस्थी बनि जएबाक आग्रह रहल अछि। सनातन शास्त्र-पुराण मे ययाति आ देवव्रत सन अनेको उदाहरण रहलाक अछैतो बूढ़क गंजन करबा मे 'विश्वगुरु' सेहो पाछाँ नहि रहल अछि। हमरा जनैत बूढ़क 'राग' पर मैथिली मे लिखल अन्यतम कथा थीक- बूढ़ा जीबैत रहलाह। अहिना दाम्पत्य जीवन आ प्रेमक कथा- 'लाथ' के सेहो देखल जा सकैत अछि। मध्यवर्गीय व्यक्ति अपन गृहस्थक गाड़ी के घीचैत-घीचैत कहिया जवान सँ अधवयसू आ बूढ़ भ' जाइत अछि तकरा एकटा 'कुत्ता' क प्रतीकक माध्यम सँ कहल गेल अछि।

'मातवर' संग्रहक एकटा आरो विशेष उल्लेखनीय कथा थिक- 'रांड़'। ओना ई कथ्य आब मैथिली लेल पुरान सन भ' रहल अछि, मुदा जं एहि विषय के हटा दी त' मैथिली कथा-साहित्यक दू तिहाइ हिस्सा अप्रासंगिक भ' जायत। इतिहास समाजशास्त्रीय अध्ययनक आधार होइत अछि। अस्तु, अशोक अपन कथा 'राँड़' क बहन्ने विधवाक लेल निर्धारित पारंपरिक मापदंड के तोड़ैत छथि, ओहि पर प्रश्नचिन्ह लगबैत छथि। कथाक नैरेटर मनीषक आँखिये विधवा जीवन, ओकर संघर्ष आ विकसित चेतना के समग्रता मे देखल गेल अछि। एत' विधवा स्त्रीक विकसित होइत स्वतंत्र व्यक्तित्व के देखल जा सकैत अछि। विधवाक लेल जे ताना-बाना समाज द्वारा निर्धारित कैल गेल अछि, ओकरा ओ नकारैत अछि, जेना- उज्जर नुआ पहिरब, सिऊथ से सिनूर चोइ देब, चूड़ी फोड़ि देब, अनकर छूल नहि खैब, माछ-मांस नहि खैब, देह साधि के हड्डी बना लिय' जे मोन आ देहक बीच कोनो तार ने जुड़ी जाय। देहक राग ने जागि उठय आदि। मुदा पत्नी मरला पर पुरुषक लेल कोनो नियम-संयम नहि। मनीष के मोन छै जे माय के मरला पर बाबू लाश सँ माफी मांगने रहथिन-' जीवति मे अहाँ के बड दुःख देलहुँ। बड़ क्रोध केलहुँ। माफ क' देब

हमरा।' मुदा पत्नीक मृत्युक कारण हुनका दिनचर्या मे कोनो अंतर नहि आयल। ' माघ-मासु प्यारो रहलाह। सगरो काल ओहिना करैत रहलाह, जेना पहिने करथि।' मनीष के अपन विधवा पितामही मोन पड़ैत छै जे उज्जर नुआ पहिरने, गोपी चनानक ठोप केने भगवतीक पूजाक बाद माटकि वासन मे अपने सँ भानस करथिन। ओहि भगवतीक पूजा जे कहियो स्त्रीक पक्ष मे ठाढ़ नहि भ' सकलीह। विधवा जीवनक कष्ट के कनेको कम नै क' सकलीह। कोना क' सकैत छलीह जत' धर्मराज सन महापुरुषक मुँहे महाभारत मे कहा देल गेल- "यदि कोनो पुरुष के सौ टा जीह (मुँह) होइ, आ सौ वर्ष धरि ओ ज़िंदा रहय आ ओकरा जीवन भरि स्त्रीक दोषक बखान करबाक अलावा कोनो दोसर काज नहि देल जाइ, तैयो ओ स्त्रीक दोष के बिना बखान केने मरि जायत।" एहना मे विधवाक आर्तनाद शास्त्र पर चलनिहार कोन पुरुष सुनि सकैत छल?

मनीष अपन मामी के विधवा रूप मे देखबाक कल्पनो नहि क' सकैत छल। कारण त' ओकर बचपन काशी मे मामीक आँचरक छाहरि मे बीतल रहै। ओ मामी, जे मैथिल द्वारा काशी-बास लेल (मरै लेल) छोड़ि दै वला वृद्ध माता-पिता के मरै तक देख-भाल करथि। जीवन सँ मृत्यु धरि सेवा मे दू पाइ कमा लेथि आ तकरा बदला मे लोक सभ विधिनि विधिनिक पेराहा पसारथि। मुदा, मामी ककरो बात पर ध्यान देने बिना ' स्वान रूप संसार है भूकन दे झख मारि' क अंदाज मे अपन काज मे लागल रहलीह। आखिर काशी कबीरक सेहो नगरी थिक, जतबे आडम्बर-युक्त ततबे आडम्बर-मुक्त। आ से मामी जखन विधवा भ' गेलीह त' मनीष सोचैत अछि जे हुनका उज्जर वस्त्र के ओ मूँगाक रंग-बला शाल सँ झाँपि देत। "मुदा मनीष जखन मामीक ओत' गेल त' हुनका आसमानी रंगक नुआ मे देखलक। आसमानी रंगक नुआ-ब्लाउज पहिरने मामी जेना सम्पूर्ण आकास के समेटने छलीह। हाथ मे घड़ी रहनि सोनाक चूड़ी रहनि।" मामीक आसमानी रंगक साड़ी ओहि आकास के अपना मे समेटने

अछि, जाहि पर पुरुषक 'वपौती' रहल, स्त्रीक 'मैयौती' नहि (एत' आसमानी रंग स्वतंत्रता आ स्वच्छंदताक प्रतीक थिक।) ई देखि प्रगतिशील मनीष केँ एक पल लेल झकमका जायब स्वाभाविक छल। मामीक ई कथन जे 'हम गाँड़ नहि जैतहुँ मनीषा। हम गाँड़ नहि छी।" आधुनिक मैथिलीक उद्घोषणा थिक जे हजारो साल सँ जमल पितृसत्ताक शिला पर हथौराक चोट सन बुझना अछि। आ मामीक अहि उक्ति केँ सुनि मनीष केँ अपन माताक मृत्युक बाद पिताक जीवन केँ मोन पारब प्रतीक मे बहुत किछु कहि दैत अछि। (ओना ई कथाक अंत एतहिये जा' जैत त' हमरा जनतबे नीक।)

ई कथा अपन कलेवर मे छोट होइतो मिथिलाक विधवा-जीवनक अनेक रंग (सफ़ेद सँ आसमानी धरि) केँ अपना मे समेटने अछि। मनीषक विधवा पितामहि सँ विधवा मामी धरि मिथिलांचलक वैधव्य-यात्रा मे बहुत किछु बदलि गेल अछि। बहुत किछु टूटि गेल अछि। बहुत किछु पाँछा छुटि गेल अछि। परंपरावादी पागक पाछां गन्हाइत दमिगाक विप्पाढे टा बचल अछि। अतीत-गायनक संग संग जखन अतीतक मूल्यांकन होइत अछि, तखने स्वस्थ भविष्यक कल्पना कैल जा सकैत अछि।

'डेडीगाम' धरि अबैत-अबैत अशोक कथ्य आ शिल्प, दुनू स्तर पर नव-नव प्रयोग करैत छथि। शीर्षक कथा डेडीगाम एक संग ढहैत सामंतवाद, पलायन, गामक प्रति नास्टेल्जिया, गामक राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक बदलावक संग बदलैत चेतनाक कथा थीक। रघुवंश लंदन मे अनेको वर्ष धरि रहि डाक्टरी करबाक अछैतो गाम मे सीतारामक मंदिर बनाब' चाहैत छथि। गाम सँ पुनः जुड़वाक लेल मंदिर केँ ओ कड़ी बनाब' चाहैत छथि। हुनकर बेटा सब एहि कार्य मे हुनकर सहयोग करैत छथि। मुदा गामक नवतुरिया ई बुझैत अछि जे मंदिरक निर्माण सँ शिक्षा, स्वास्थ्य आ रोजगारी दूर नहि भ' सकैत अछि। ते नवतुरिया मंदिरक बदला मे अस्पताल

વનેવાક આગ્રહ પર અડગિ જ' ળારૂ અછિ સવર્ગ્મ સઁ અધિક અવર્ગ્મ સમુદાયક ભોક શક્તિ આ સ્વાસ્થક મહત્ત્વ કે વૂઝ' ભાગલ અછિ ક્ષેકનક ઈ કહવ ળે ' મથિલિ મે સીતારામ મંદિર વનેવાક પરંપરા નહિ રહલ અછિ' મથિલાક સાંસ્કૃતિક ધરોહર પર સઁ ગર્દા હટૈત વર્તમાન મંદિરવાદી રાજનીતિ કે પોલ સેહો ખોલિ દૈત અછિ રઘુવંશ ગામ મરવાક ભલ આયલ છલાહ, મુદા ગામ અયલાક વાદ હુનકર દૃષ્ટિ વદલિ ળારૂ છનિ- ' ગામ-ઘર ત' ળીવાક ભલ હોઇ છૈ મરવાક ભલ નહિ'

રચનાકારક દાયિત્વ કમળોરક સંગ ઠાઢ઼ હૈવ હોઇત અછિ ઘોર અમાનવીય વાતાવરણ મે માનવતાક સૂત્ર ખોળવ હોઇત અછિ કોનો ધર્મ, ળાતિ, વર્ગ, અથવા ક્ષેત્ર સઁ રાગ-દ્વેષ અથવા પૂર્વાગ્રહ રખનિહાર ભખક કોનો રાજનીતિક પાર્ટીક પ્રચારક જ' સકૈત છથિ, ભખક નહિ અશોક સાંપ્રદાયિક તનાવક માહૌલ મે સાંપ્રદાયિક-સૌહાર્દક કથા ભખૈત છથિ અહિ સન્દર્ભ મે ' છલ' , ' ઓ દુનૂ સાઇકલિ સીખૈત અછિ' આ ' રાગ' કથા વિશેષ ઉલ્લેખનીય અછિ ' છલ' કથા મે જોલિ હ્રા ળાહિ તરહેં રસ્લામ કે ગરિયાવ' વલા હાકિમ સઁ લડ઼િ ળારૂ અછિ, સે ઓકર અજાનિય નહિ, સૈકડ઼ો વર્ષ સઁ સહ અસ્તિત્વક સંગ હિન્દૂ-મુસલમાનક સંગ રહવાક પ્રમાણ થિકૈ તહિના કૈથી વલા મુસલમાન દ્વારા રમેશ આ સુધીર કે પટિઇ સઁ વચા ભવ આ સાઇકલિ મસ્ત્રીક ઈ કહવ ળે ' અવ કહિયો આયવ' સાઇકલિ સિખ' આશ્વસ્ત કરૈત અછિ ળે મથિલિ નહિ જાતીય સમાજ વહુત અધિક દિન ધરિ ધર્મક નશા મે વતાહ નહિ રહિ સકૈત અછિ ' રાગ' કથા ત' મૈથિલ જોળન-પ્રયિતાક સમાજ-મનોવૈજ્ઞાનિક પોસ્ટમાર્ટમ થીક ગામેશ વાવૂ આ મુળસ્કુર સાહેવ એકટા સવર્ગ્મ હિન્દૂ દોસર સવર્ગ્મ મુસલમાન ' અન્ન-વર્મહ' ક ભલ અપન ળાતીય આ ધાર્મિક ટેવૂ કે છોડિ દૈત છથિ આ એક દોસરાક ઘર અષ્ટમીક વલિ આ વકરીદક કુર્વાનીક માસુ નાક ડુવા ક' ખારૂ છથિ મુદા દુનૂ કે અહિ ભલ સામાન્ય હોવ' મે સમય લાગલનિ હિન્દૂ આ

મુસલમાન દુનૂ એક ગામ, એક ઠામ રહિતો કતેક દૂર અછિ। એક દોસરાક લેલ કતેક પૂર્વાગ્રહ પોસને અછિ તકર પ્રમાણ થિક ઈ કથા। કથાકાર કેં કોનો હડ઼વડ઼ી નહિ છન્હિ। ઓ હિન્દૂ મુસલમાનક એકતા દેખેવાક લેલ કોનો નારેવાજી અથવા રૂઢ઼ પ્રતીકક આસરા નહિ લૈત છથિ। એક દોસરાક સંગ રહૈત, એક-દોસરાક દુખ-સુખ કેં બંટૈત ઈ સહ-અસ્તિત્વ કથા મે વિકસિત ભેલ અછિ। ગામેશ વાબૂક અહિ કથન મે લેખકક દૃષ્ટિ સેહો સમાહિત છન્હિ, " ઓ, અહાઁક વદના હથહર વની વૈસલ અછિ। અદદ સઁ હૌસલા પરી અંગોજને છી હમ સભ। દુનૂ ગોટે કેં અફ઼સોસ આ અંદેશા એકે રંગ હોઇયે।" ' રાગ' મૈથિલી કથાક પરિધિક વિસ્તાર કરૈત અછિ। ગામેશ્વર વાબૂ મુજક્કર સાહેબ સંગ ટૂટલ રાગ કેં પુનઃ જોડ઼વાક પ્રયાસ કરૈત છથિ। એખનો ગામ મે મિયાં-ટોલક સામને હિન્દૂ ટોલ નહિ બના સકલ અછિ રાજનીતિ।

સ્ત્રી સ્વધીનતાક પ્રશ્ન ' સ્વાધીન' કથા મે દેખલ જા સકૈત અછિ। હમરા જનૈત ' વૈવાહિક-બલાત્કાર' પર ભારતીય સાહિત્ય મે કથા બહુત કમ લિખલ ગેલ અછિ, ખાસ ક' પુરુષ લેખક દ્વારા। જયા જાહિ તરહેં પતિ દ્વારા બલાત્કાર સઁ ડેરાલ વચ્ચાક ગર્ભપાત કરેવાક જદિ પર અડ઼લ રહૈત છથિ સે સ્ત્રીક વદલૈત સ્વાધીન ચેતનાક પ્રમાણ થિક। કતેકો ના-નુકુર કરૈત અજય કેં સેહો તૈયાર હુઅ' પડ઼ૈત છૈ આ અપન ગલતીક પશ્ચાતાપ ઓકરા સેહો હોઇત છૈ, ઈ લેખકીય દૃષ્ટિક પરિચાયક થીક। જખન સ્ત્રી આર્થિક રૂપે સબલ હેતીહ, અપના કેં દાન મે ઉત્સર્ગક વદલા અપન જીવનસાથીક ચયન સ્વયં કરતીહ ત' સૈસલા સેહો લેતીહ। મુદા, ' ટીસ' કથા અપન અંત સઁ નિરાશ કરૈત અછિ। વિમલા કેં પતિ કોપરેટિવિક અધ્યક્ષ વના દેલકન્હિ આ હુનક નકલી હસ્તાક્ષર ક' ગવન કરૈત રહલા। એક રાતિ પુલિસ આવિ ક' વિમલા કેં ગિરફ્તાર ક' લૈત છૈ, પતિ પહિનહિ નિપત્તા ભ' ગેલ રહૈ। વિમલા પતિક તમામ કુકર્મ કેં અપન ભીતર દવા ક' ઓહિ નકલી હસ્તાક્ષર કેં અપન અસલી હસ્તાક્ષર માનિ લૈત અછિ। જં વિમલા એત' નકારિ જાઇતય ત' ઈ કથા સ્ત્રી સ્વાધીનતાક સન્દર્ભ મે એકટા વિમર્શ ઠાઢ઼ કરૈત।

'𑒧𑒢𑒮𑒴𑒥𑒰' 𑒂 '𑒪𑒹𑒧𑒢 𑒂𑒃𑒮𑒏𑓂𑒩𑒲𑒧', 𑒠𑒴 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠𑓂𑒫𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒬𑒯𑒩𑒲𑒏𑒩𑒝, 𑒢𑒫 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒧𑒢𑒼𑒦𑒰𑒫𑒏 𑒧𑒬𑒲𑒢𑒲𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒟𑒲𑒏। "𑒣𑒰𑒣𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒰𑒥𑒑𑒱 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒞𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒁𑒕𑒱" 𑒥𑒥𑒪𑒴𑒏 𑒄 𑒏𑒟𑒢 𑒢𑒫 𑒙𑒹𑒏𑓂𑒢𑒼𑒏𑓂𑒩𑒹𑒙 𑒨𑒳𑒫𑒰𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝 𑒟𑒲𑒏। 𑒄 𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠𑓂𑒫 '𑒧𑒢𑒮𑒴𑒥𑒰' 𑒏𑒟𑒰 𑒧𑒹 𑒂𑒩𑒼 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢 𑒧𑒖𑒥𑒴𑒩𑒲 𑒟𑒲𑒏। 𑒬𑒯𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒯𑒹𑒖𑒏 𑒯𑒹𑒖 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒹 𑒣𑒔𑒾𑒢𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒑𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑒮𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰𑒦𑒼𑒑𑒲 𑒂 𑒃𑒋𑒧𑒂𑒃𑒖𑒲𑒫𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒰 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢𑒞𑒰 𑒂 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠𑓂𑒫 𑒩𑒯𑒻, 𑒮𑒹 𑒢𑒫 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲 𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒩𑒝𑒖𑒲𑒞 𑒏𑓀𑒣𑒢𑒲 𑒧𑒹 𑒣𑒻𑒒 𑒍𑒯𑒠𑒰 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒜𑓀𑒑𑒹 𑒖𑒲𑒥' 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒏𑓂𑒭𑒹𑒣𑒏 𑒥𑒱𑒢𑒰। 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒁𑒨𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒩𑒰𑒥' 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒑𑓂𑒩 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒹 𑒯𑒼𑒙𑒪𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒣𑒩 𑒁𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒢𑒱। 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒹𑒢𑒰 "𑒍 𑒞𑒟𑒰 𑒩𑒝𑒖𑒲𑒞 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒠𑒴 𑒕𑒼𑒛𑓃 𑒣𑒩 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒕𑒟𑒱। 𑒠𑒴-𑒙𑒰 𑒤𑒩𑒰𑒏 𑒤𑒩𑒰𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒲𑒣 𑒣𑒩।" 𑒁𑒯𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒙𑓂𑒩𑒲𑒙𑒧𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒩𑒼 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒧𑒰𑒿𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

'𑒐𑒳𑒬𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒲𑒫𑒢' 𑒏𑒹 '𑒧𑒢𑒮𑒴𑒥𑒰' 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑓀𑒮𑒴𑒥𑒰𑒏 𑒩𑒝𑒖𑒲𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒻𑒩𑒱𑒨𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒪𑒱𑒣𑓂𑒮𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩' 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒋𑒞' 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒮𑒰𑒟𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒹 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨 𑒮𑓂𑒫𑒖𑒰𑒞𑒲𑒨 𑒮𑒳𑒦𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒢𑒰𑒨𑒩 𑒏𑒹 𑒔𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒢𑓂𑒯𑒻𑒨𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒄 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪। 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒦' 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒲𑒐𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠𑓂𑒫 𑒢𑒯𑒱। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲𑒔𑒰𑒝𑒱 𑒢𑒯𑒱। 𑒮𑒥 𑒥𑒛𑓃 𑒢𑒲𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 '𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢' 𑒧𑒹 𑒢𑒫𑒞𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒹 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱।
𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒧𑒴𑒪𑒞𑓁 𑒑𑒞𑒱𑒬𑒲𑒪 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒮 𑒏𑒟𑒰 '𑒯𑒧' 𑒢𑒻𑒩𑒹𑒙𑒩 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒪𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱। 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒄 𑒞𑒏𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒩𑒪𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒻𑒞 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒻𑒒 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒩𑒮𑒞𑒰 𑒂

આત્માભાપક શકિાન હેવાક શંકા પ્નવઉ નહૈિ અછિ। મુદા એહિ યુનૌતી કે અશોક કથ્ય્ય સંગ નભિપ્તિ જા' આ ' વતકહિ' મે પૂન્મ્મત: ઉપ્તિ જા' નવિાહ ઉભિ છથિ। હુનક કથા મે ' પ્નેમ' સન્વન્ત્ન વ્યપ્ત અછિ। મનુક્ષ્ય-પ્નેમ હુનકન અભીષ્ટ છનિ। દામ્પત્ય પ્નેમક કતેકો વવિ હિનિક કથા મે દેખ્ખઉ ળા સકૈત અછિ। પત્ની ત' હન દોસન કથા મે અઉગ અઉગ નૂપે ઠાઢ઼ છથિ। એકટા કથાકાન અપન વાહન-ભીતન એક નંગ નહિ ક' અપન ' હમ' કે ' સાન્વભૌમ' વના સકૈત અછિ।
અંત મે ઈ કહવ ળે આઉયક અશોક ળી પન વ્રિસ્તિાન સે વ્રયિાન હેવાક યાહી સે સ્ટેન કહિયૌ।

અપન મંતવ્ય દતિૌનાળિસતાડ઼વ્વિદિહા઼ગમાળિયોમ **પન પઠાઉ।**

ઐ અંકક અન્યાન્ય નચના

૩઼ગદ્ય ખ્યમ્મ઼્ડ

૩઼૧ળગદીશ પ્નસાદ મામ્મ઼ડઉ- સુચતિ। (યાનાવાહિક ઉપન્યાસ)

૩઼૨ળગદીશ પ્નસાદ મામ્મ઼ડઉ- નપિન્ત્ન (ઉઘુકથા)

૩઼૩નન્દ વ્રિભાસ નાય- શ્ઞાદ્ન્સ ઙે

३.४ रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २६-३० म खेप

३.५ कुमार मनोज कश्यप-दृश्यावलोकन

३.६ नन्दिनी कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-१८)

३.७ प्रणव झा-नौकरी मुन्ना (लघु व्यंग्य)

३.८ आचार्य रामानन्द मण्डल-अगस्त क्रांति शहीद रामफल मंडल: जीवन वृत्त कर्म आ बलिदान

३.९ डाॅ. किशन कारीगर-मैथिली साहित्यिक एलीट बोनवाड़ आ सर्वनाशी दलाल

३.१० लाल देव कामत- सुनैना बेटी- मैथिली सामाजिक उपन्यास (समीक्षा)

३.११ कुन्दन कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- न्यूटन्स लाॅ

૩.૧ળગદીશ પ્નસાદ મામ્૭૭- સુચિતા (ધાનાવાહિક ઉપન્યાસ)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन' मे, जे पहिने प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पीडीएफ मे ई-प्रकाशित हुअए लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल आ तेँ 'सुचिता' क सेहो छपब ई-प्रकाशित हएब बन्द भऽ गेल अछि आ विदेहमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि- सम्पादक

पहिल पड़ाव

दस बजे नारायणमामा गामसँ भुवनेश्वरक लेल विदा हेता। चारि बजे भोरे नारायणमामा पत्नीकेँ उठा माएकेँ उठबैत बजला-

"माए, दस बजे घरसँ विदा भऽ जाएब।"

ओछाओनपर सँ उठैत सुनयना बजली-

"पाँच-छह घन्टा अपन समय अछि, तैयो हमहूँ सभ ओरियान कऽ दइ छिआ। पुतोहुजनीकेँ सेहो उठा दहुन जे अपन सभ वस्तु-जातकेँ सैरियौती। हम मानस

𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒪𑒃 𑒕𑒲।"

𑒧𑒰𑒃𑒨𑒼 𑒂 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒱𑒨𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒚𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒢𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒩𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒖𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒅𑒚𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒃 𑒮𑒦 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒹𑒙𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢।

𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒮 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒂𑒃𑒋𑒋𑒮𑒏 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒼𑒩𑒮-𑒞𑒹𑒩𑒮 𑒯𑒫𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒯𑒋 𑒪𑒑𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒼𑒩𑒹𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒯𑒠 𑒐𑒳𑒬𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒧𑒪𑒣𑒳𑒩𑒼𑒧𑒹, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒃𑒋𑒋𑒮 𑒦𑒹𑒪! 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒼𑒩𑒹𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒪𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒮 𑒪𑒼𑒏 𑒍𑒯𑒢 𑒕𑒻𑒟 𑒖𑒹 𑒂𑒃𑒋𑒋𑒮𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒞𑒹 𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒟।

𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒏𑒧𑒪𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹, 𑒖𑒹 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩, 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒯𑒰𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒋𑒧𑒥𑒲𑒥𑒲𑒋𑒮 𑒛ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒯𑒰𑒃 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏 𑒥𑒏𑒲𑒪 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒢। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒥𑒹 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒼𑒁𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒃𑒧𑒩𑒲 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒧𑒱𑒛𑒱𑒪 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒞𑒏 𑒣𑒢𑒩𑒯-𑒥𑒲𑒮 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒻𑒟 𑒂 𑒥𑓂𑒪ॉ𑒏𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒮𑒔𑒱𑒫𑒰𑒪𑒨 𑒞𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒮-𑒥𑒰𑒩𑒯 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒞𑒱 𑒕𑒻𑒟। 𑒍𑒢𑒰, 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒱𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒮𑒦, 𑒮𑒦𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒪-𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒥𑒹𑒫𑒮𑒰𑒨𑒲 𑒌𑒚𑒰𑒧 𑒡𑒩𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒐𑒹𑒞𑒱𑒨𑒼-𑒣𑒟𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒼𑒙𑒰 𑒔𑒰𑒩-𑒣𑒴𑒩 𑒢𑒃 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒠𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒩𑒞 𑒂 𑒢𑒹 𑒅𑒮𑓂𑒮𑒩-𑒐𑒰𑒮𑒩 𑒂𑒏𑒱 𑒥𑒪𑒳𑒂𑒯 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒅𑒣𑒖𑒥𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒞। 𑒩𑒾𑒠𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒼𑒣 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒥𑒲𑒒𑒰𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒥𑒼𑒩𑒱𑓀𑒑 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒔𑒪𑒻𑒋, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑒙𑒾𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒃𑒋।

𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒚𑒰 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒚𑒾𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒲𑒢𑒹 𑒙𑒳𑒙𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒩𑒯𑒪। 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒅𑒚𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞𑒰, 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒠𑒮 𑒥𑒖𑒹𑒧𑒹 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥। 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒂𑒮𑒲𑒩𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒪𑓄 𑒪𑒹𑒥। 𑒍𑒢𑒰, 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒣𑒴𑒞𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒂 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒆𑒣𑒩𑒹-𑒆𑒣𑒩 𑒞𑒿

𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒕𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒹 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒦𑒲𑒞𑒩𑒹-𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒯𑒹𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒞𑒲𑒢 𑒦𑒰𑒿𑒃𑒏 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒚 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒞𑒿 𑒂𑒃𑓃𑒋𑓃𑒋𑒮𑓃 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒕𑒼𑒙 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒿𑒃 𑒮𑒳𑒐𑒠𑒹𑒫 𑒂 𑒫𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏𑒼 𑒣𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒪। 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒿𑒃𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒄 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒼𑒏 𑒧𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒔𑒼𑒙𑒱𑒨 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒢। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒏 𑒠𑒴𑒩𑒲𑒏, 𑒄𑒯𑒼 𑒕𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒫𑒻𑒔𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒿𑒔-𑒕𑒯 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒮𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒑𑒣𑒼-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒂 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒖-𑒅𑒠𑒧𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒕𑒼-𑒂𑒕 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒕𑒻𑒢। 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒖𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒠𑒴𑒩𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒕𑒻𑒢 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒥। 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒖𑒹 𑒧𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒍 𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱𑒨 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒅𑒠𑒨 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒚𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒏𑒾𑒪𑒱𑒖𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒳𑒣 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰, 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒢𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒂𑒑𑒴𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒂 𑒢𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒢𑒱𑒧𑒱𑒞𑓂𑒞𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒖𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒢। 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒜𑓃𑒥 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒦𑒹𑒪 𑒂 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒰𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒕𑒻𑒢, 𑒖𑒃 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒁𑒫𑒒𑒰𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒹𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒅𑒦𑒩𑒞। 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒅 𑒏𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖, 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒂 𑒖𑒲𑒫𑒢-𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒳𑒫𑓂𑒨𑒮𑓂𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒢𑒹 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃𑒏 𑒐𑒩𑓂𑒔𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒼𑒞𑒰𑒯𑒲 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒃 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒄𑒯𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒖𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒡𑒰 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼 𑒂 𑒮𑒩𑒼-𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲 𑒠𑒳𑒮𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞𑒰। 𑒠𑒳𑒮𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒱𑒋 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒏𑒯𑒲 𑒥𑒿𑒙𑒥𑒩𑒹 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒧𑒹 𑒁𑒮𑒼𑒏𑒩𑓂𑒖 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒯𑒋𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒢𑒰𑒿𑒯𑒏𑒧𑒹 𑒠𑒼𑒐𑒲 𑒥𑒢𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒫।

कौशलक जीवनमे राधारमणक विचारमे बहुत किछु मजगूती एलैन। ओना, अध्ययनक प्रति लगाव सेहो नीक छेलैन जइसँ नीक रिजल्ट सेहो होइते रहैन। अध्ययनक क्रममे राधारमणक चिन्तनशीलता सेहो दिनो-दिन तेना बढ़ए गेलैन जे अपन जीवनक भविसकेँ नीक जकाँ आँकि लेलाह। जइसँ स्वतंत्र जीवनक विचारो आ क्रियो-कलाप सभ अपन नजैरिक आगूमे झलकए गेलैन। जइसँ परिवारक बीचक माने पिताक प्रति जे मतभेद छेलैन ओ राधारमणकेँ महत्वहीन बुझि पड़ए लगलैन। स्पष्ट बुझए लगला जे भैयारी हुअए कि पिता-पुत्र हुअए आकि समाज किए ने हुअए, सभ अपन-अपन जीवनक कर्तो-धर्तो आ जीवन संचालनक मालिक सेहो अपने होइत अछि। बाहरी जे सम्बन्ध अछि माने भाए-भैयारीक वा पिता-पुत्रक वा परिवार-समाजक ओ ऊपरी होइए, माने बाहरी होइए। जइसँ लोक सम्बन्धित सेहो होइए आ मतभेद भेलापर सम्बन्ध-विहीन सेहो होइते अछि। ओकरो अपन एक सीमा होइ छइ। जइ सीमाक बीच लोक अपन-अपन सीमा निर्धारित करैए।

राधारमणकेँ नोकरीपर जाइक समाचार गाममे सेहो पसैर गेल छल। जइसँ गामक जे शुभचिन्तक सभ छैथ ओ मने-मन बेहद खुशी होइत राधारमणकेँ अन्तिम विदाइक संग भेँट-घाँट करैक समय सेहो बना लेलैन। मुदा जनिका सबहक मनमे जलन माने राधारमणकेँ आइएएस करैक जलन छेलैन ओ यत्र-तत्र अन्ट-सन्ट बात सेहो टोले-टोल परोछा-परोछी कइये रहल छल। गामक अधिकांश लोक ओहन छैथ जे ने डिग्री-डिप्लोमाक आश्रे बुझै छैथ आ ने ओकर गुण-धर्म आकि पदे-प्रतिष्ठा बुझै छैथ, तँए ने हुनका कोनो हरखे छेलैन आ ने विषादे।
सीतानाथ आ गीतानाथ सेहो बीएमे पढ़ैत। दुनू गोटेकेँ जानकारी छल जे आइ राधारमण भैया गामसँ नोकरीपर जेता तँए भेँट करब आवश्यक बुझि दुनू गोटे संगे राधारमण ऐठाम पहुँचल। पहुँचते दरबज्जापर सँ राधारमणकेँ सोर पाड़ैत

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒦𑒰𑒃𑒖𑒲, 𑒨𑒾 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒦𑒰𑒃𑒖𑒲?"

𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒹𑒚 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒟, 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒣𑒛𑓃𑒰-𑒪𑒞𑓂𑒞𑒰, 𑒔𑒲𑒖-𑒥𑒾𑒮 𑒮𑒩𑒱𑒂𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒋-𑒮𑒿 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰- "𑒯𑒹 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟! 𑒥𑒻𑒮𑒯 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒲।"

𑒏𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒲𑒖-𑒥𑒾𑒮 𑒮𑒩𑒱𑒂𑒢𑒥 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒫𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒢 𑒋𑒪𑒰। 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒂 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒲, 𑒦𑒻𑒨𑒰!"

𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒯𑒰𑒟 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒕𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒯𑒰𑒟 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒯𑒁 𑒥𑒾𑒂। 𑒏𑒲 𑒯𑒰𑒪-𑒔𑒰𑒪 𑒕𑒯?"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪- "𑒮𑒦 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒁𑒕𑒱।"

𑒏𑒯𑒱 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒏𑒳𑒩𑒮𑒲𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒰। 𑒥𑒻𑒮𑒞𑒹 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒒𑒩𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒏𑒐𑒢 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥?"

𑒒𑒛𑓃𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰- "𑒁𑒐𑒢 𑒮𑒰𑒞 𑒥𑒖𑒻𑒋। 𑒠𑒮 𑒥𑒖𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱।"

𑒍𑒢𑒰, 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒑𑒣𑓂𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 𑒂 𑒧𑒢𑒹-𑒧𑒢 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒐𑒳𑒬𑒲 𑒕𑒻𑒢। 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒩𑒴𑒣 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒏 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒣𑒯𑒱𑒪, 𑒢𑒫 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒣𑒠𑒰𑒩𑓂𑒣𑒝𑒏 𑒐𑒳𑒬𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒔𑒾𑒥𑒲𑒮 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒍𑒏𑒩𑒮𑒿 𑒁𑒪𑒑 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒢𑒹𑒿 𑒧𑒪𑒱𑒢𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒧𑓀𑒖𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒢𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒲𑒔𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒮𑒟𑒱𑒩 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰। 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒦𑒻𑒨𑒰, 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒏𑒧𑒪𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒍𑒯𑒢 𑒮𑒯𑒮𑓂𑒩 𑒠𑒪 𑒏𑒧𑒪 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒧𑒯𑒧𑒯𑒲 𑒠𑒹𑒬 𑒦𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒣𑒮𑒩𑒞!"

सीतानाथक बात सुनि रामानन्दक मनकेँ जेना कोनो भारी वस्तु दाबि देने होइ तहिना भेलैन। मनमे उठलैन जे सीतानाथ कोनो अधला बात तँ नहियेँ बाजल। कहि तँ देशक कोनो कोण आकि भागमे एक जबावदेहक रूपमे काज करैक भार पड़बे करत। भारक माने एतबे नहि ने जे नियम-कायदा माने अधिकारक जे कानून-कायदा अछि, तइ अनुकूल अपनाकेँ स्थापित करैत समय बीता ओइठामसँ बढ़ैत दोसरठाम चलि जाइ। एकर तँ दोसरो पक्ष अछि किने। ओ अछि जे ओइठामक जन-मानसक बीच अपन की छवि अछि, तेकरा प्रदर्शित करैक अवसरो तँ अछिए। नीक छवि केना बना पएब से तँ अपने केने हएत। यएह ने अपन कार्य-शैलीक प्रमुख अंग भेल। अपन देश सभ तरहेँ विशाल अछिए। जहिना लम्बाइ-चौड़ाइ अछि तहिना जनसंख्या सेहो अछि। जइमे रंग-रंगक जीवन माने मनुष्यक जीवन सेहो अछिए। तैसंग अनेको जाति, अनेको भाषा आ अनेको सम्प्रदाय सेहो अछि। जहिना भाषाक बीच, तहिना जाति-सम्प्रदायक बीच किछु-ने-किछु विवाद होइते रहैए। एहेन परिस्थितिमे केना सामंजस करैत अपने-आपकेँ सुरक्षित राखि सकब, नान्हटा बात थोड़े अछि। तहूमे समाजक बीच एहेन मनोवृत्ति बनि गेल अछि जे जे शक्तिशाली आ बहुसंख्यक अछि ओ शक्तिहीन आ अल्पसंख्यककेँ सेहो सदिकाल निच्चाँ देखबए चाहैए। मनमे उठल घनघोर विचारकेँ सामंजस करैत रामानन्द बाजल-

"भैया सीतानाथ, कमलक महमही तखने छिटकैए माने पसरैए, जखन ओकरा पवित्र स्थान भेटै छै। जँ से नहि भेटि दुर्गन्धित स्थान भेटि जाइ छै तखन ओकर महमही थोड़े हवामे पसैर पबैए। मुदा तूँ जे बजलह ओकरो महत तँ अछिए।"

सीतानाथ बाजल-

"भैया, अपने तँ ओहेन डिग्री प्राप्त कऽ लेलिऐ जे सामान्य विद्यार्थीक लेल असंभव अछि।"

𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹𑒏 𑒚𑒧𑒏𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒧𑒢 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒦𑒲𑒞𑒩𑒮𑒿 𑒡𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒏𑒹𑒞𑒹 𑒮𑒯𑒲 𑒁𑒕𑒱? 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒖𑒐𑒢 𑒂𑒃.𑒋. 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒂 𑒥𑒲.𑒋.𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒪 𑒖𑒹 𑒂𑒃.𑒋.𑒋𑒮. 𑒏𑒩𑒥, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒠𑒹𑒬 𑒦𑒩𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒧𑒢 𑒂𑒑𑒴-𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।"

𑒂𑒑𑒴-𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒏𑒲 𑒂𑒑𑒴 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪, 𑒦𑒻𑒨𑒰?"

𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒯𑒙𑒰 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒣𑒩 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒠𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒠𑒴 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑒯𑒱𑒪, 𑒄 𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒬 𑒦𑒩𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒕𑒲, 𑒖𑒃𑒧𑒹 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼-𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒬𑒰𑒧𑒱𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒋। 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒮 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒏 𑒂𑒢𑒞 𑒍 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒄 𑒅𑒚𑒪 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒥𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒁𑒕𑒱, 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒅𑒚𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪।"

𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒞𑒐𑒢, 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒱𑒌?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒖𑒹 𑒏𑒳𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒕𑒻𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒚𑒢𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒹𑒞𑒾-𑒢𑒹-𑒏𑒹𑒞𑒾 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒖𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒢𑓂𑒯𑒰𑒣𑒩 𑒅𑒚𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒠𑒱𑒏𑒰𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒏𑒱𑒕𑒳-𑒢𑒹-𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒞 𑒂 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒍𑒃𑒧𑒹 𑒍𑒗𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒥। 𑒖𑒐𑒢 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒼𑒣𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒅𑒚𑒪 𑒖𑒹 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒱𑒨𑒼 𑒞𑒿 𑒏𑒹𑒞𑒹 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒃𑒧𑒹 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒣𑒹𑒥 𑒮𑒏𑒥 𑒞𑒃 𑒪𑒹 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒍𑒯𑒹𑒢 𑒮𑒰𑒡𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞।"

𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪- "𑒏𑒲 𑒮𑒰𑒡𑒢𑒰?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"હાર સ્કૂઠ તક, ઓના હારયે સ્કૂઠ નહિ, કૌઠળક આઈ્ટ તક નાળિઠ્ટોક હસિાવસઁ આ વ઼દ્યિાર્થયિોક વોય હમહૂઁ સામન્યે કોટકિ છેઠૌ, મુદા વોઅેમે પ્નવેશ કેઠાક પછાશ્ત જેના વ઼યિાનક નવ઼ યેતનક ઉદય મનમે બોઠ જઇસઁ ળોવ઼નક ક્નયિામે વદઠાવ઼ આવઽ ઠાગઠ।"

સીતાનાથ વાળઠ-

"કી વદઠાવ઼ આવઽ ઠાગઠ?"

નાયાનમામ વળઠા-

"વદઠાવ઼ અવૈસઁ પહનિ સંકઠ્પ ઉઽઠ જે યા તઁ આઈ્ટ્સ્ કનવ વ઼ા જઁ સે નહિ બોઽ સકત તઁ પ્નોશ્ફેસન વનવ। અહિ દુનૂ ઉદ્દેશ્યકેઁ અપન પ્નામપનસઁ પૂન્ત કિનૈક પાછૂ અપન દૃઢ઼ શક્તિકેઁ જગેઠૌ આ દુનયિાઁક સબ કછિુસઁ વ઼નિક્ત હોઇત અપનાકેઁ પઢ઼ાઇક પાછૂ એકાગ્ન કેઠૌ।"

સીતાનાથ- "કી એકાગ્ન?"

નાયાનમામ-

"અપ્પન જે ળોવ઼નક દનિાનુદનિક ક્નયિા અછિ ઓ તઁ સબકેઁ પૂન્ત કિનઽ પડૈ છૈ, ઓ પૂન્ત કિનૈત અતિનિક્ત ક્નયિાક નૂપમે માત્ન અધ્યયનપન અપનાકેઁ એકાગ્ન કેઠૌ। ઓના, અપ્પન તક જે અધ્યયનક નૂપ છઠ તઇમે સેહો સુધાન બોઠ।"

સીતાનાથ વાળઠ- "કી સુધાન બોઠ?"

નાયાનમામ વળઠા- "આઈ્ટ તક જે અધ્યયન કનૈ છેઠૌ ઓ સામાન્ય દૃષ્ટએિ, પનીક્ષામે પાસ કનૈક ધ્યિાઠસઁ કનૈ છેઠૌ, વ઼ષિય-વ઼સ્તુક તહમે પ્નવેશ નહિ કનૈ છેઠૌ મુદા સંકઠ્પતિ બોઠા પછાશ્ત વ઼ષિય-વ઼સ્તુક મૂઠ તત્વ઼કેઁ પકડ઼ૈક પ્નયાસ કનઽ ઠાગઠૌ। ઓના, શુનૂમે કછિુ દક્કિત જનૂન હોઇ છઠ કએિ તઁ નીક જકાઁ વ઼ષિય-વ઼સ્તુક મૂઠ તત્વ઼કેઁ નહિ પકૈડ઼ પવૈ છેઠૌ, મુદા તઇસઁ ઘવડ઼ેઠૌ નહિ, વઠ્કિ ઓકના પકડ઼ૈક પનયિાસ સદૈત જાની નખઠૌ।"

સીતાનાથ વાળઠ-

"𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒧𑒴𑒪𑒞𑒞𑓂𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒾𑓀। 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒴𑒪 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒥𑒳𑒗𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒐𑒢 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒅𑒢𑒻𑒙 𑒞𑒏𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒖𑒹 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒕𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒪𑒹 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒏 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒥𑒜𑓃𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒥𑒲𑒋 𑒤𑒰𑒃𑒢𑒪 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑒦𑒹𑒪।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒂𑒬𑒰 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪, 𑒞𑒃 𑒂𑒬𑒰𑒏 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒧𑒹 ऑ𑒢𑒩𑓂𑒮𑒏 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑒦𑒹𑒪। 𑒥𑒲𑒋 ऑ𑒢𑒩𑓂𑒮𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲 𑒦𑒹𑒢𑒹 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒞𑒹 𑒞𑒿 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒖𑒰𑒑𑒱𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒁𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒹𑒯𑒢𑒞 𑒏𑒩𑒥 𑒞𑒿 𑒋𑒧.𑒋.𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑒯𑒋𑒞। 𑒖𑒐𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒏 𑒩𑒱𑒖𑒪𑓂𑒙 𑒋𑒧.𑒋.𑒧𑒹 𑒯𑒋𑒞 𑒞𑒐𑒢 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒏𑒹𑒞𑒾-𑒢𑒹-𑒏𑒹𑒞𑒾, 𑒏𑒼𑒢𑒼-𑒢𑒹-𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩𑒲𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞। 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒏𑒪𑓂𑒣 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒃𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒬𑒰 𑒖𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒂𑒬𑒰 𑒖𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒼 𑒖𑒰𑒑𑒪।"

𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒦𑒻𑒨𑒰, 𑒄 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒋 𑒖𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒳𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱?"

𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒍𑓀 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒔𑒏𑒧𑒏𑒹𑒪𑒰, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒃 𑒔𑒏𑒧𑒏𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒳𑒏𑒹𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒙𑒥𑒻𑒞 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒳𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒬𑒳𑒩𑒴𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒲𑒋 𑒤𑒰𑒃𑒢𑒪𑒧𑒹 𑒋𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑒹𑒪।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒱𑒔𑓂𑒔𑒹𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒪- "𑒏𑒳𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒋𑒞?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒯𑒿! 𑒏𑒳𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒄 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒖𑒃 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀, 𑒍𑒃 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒹𑒪𑒰। 𑒮𑒰𑒞𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏। 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒞𑒲𑒢 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒋𑒩𑒹 𑒂𑒥𑒻-𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒹𑒪𑒰। 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒖𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒰𑒞𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒕𑒹𑒪𑒰 𑒞𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒻𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒹𑒪𑒰। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒮𑒿 𑒛𑒹𑒩𑒰 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒹𑒪𑒰 𑒏𑒱 𑒣𑒰𑒕𑒴𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒡𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢।"

'𑒡𑒏𑓂𑒏𑒰' 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒥𑒱𑒔𑒱𑒨𑒹𑒧𑒹 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒥𑒰𑒣 𑒩𑒹! 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒙𑒰𑒿𑒑𑒏 𑒯𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒟𑒾𑒂-𑒟𑒰𑒏𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒠𑒴 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒑𑒰 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒂 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰-𑒥𑒹𑒙𑒲। 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒖𑒹𑒚 𑒖𑒹 𑒂𑒃𑒋𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒕𑒼𑒙 𑒖𑒹 𑒯𑒰𑒃 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒖𑒪𑒰- "𑒥𑒰𑒣 𑒩𑒹! 𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒹?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒖𑒪𑒰- "𑒖𑒐𑒢 𑒍𑒃𑒚𑒰𑒧 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒌𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒂 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲, 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒒𑒩𑒰-𑒍𑒒𑒩𑒰 𑒏𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾𑓀 𑒏𑒱 𑒧𑒢 𑒣𑒒𑒱𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒍𑒢𑒰, 𑒯𑒧𑒯𑒲𑒙𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒲, 𑒂𑒩𑒼 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒱𑒨𑒼 𑒂 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏𑒼 𑒮𑒦 𑒕𑒹𑒪𑒰, 𑒖𑒹 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒹𑒪𑒰 𑒠𑒮-𑒣𑒢𑒩𑒯 𑒧𑒱𑒢𑒙 𑒩𑒴𑒏𑒱 𑒥𑒼𑒪-𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒠𑒋 𑒒𑒳𑒧𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒰। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒄 𑒅𑒚𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒼-𑒨𑒰𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒩𑒲 (𑒏𑒚𑒱𑒢) 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒞𑒻𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒻-𑒖𑒼𑒏𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒢।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒋𑒯𑒢𑒹-𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒢𑒲𑒏-𑒮𑒿-𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒋!"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒖𑒪𑒰- "𑒯𑒿! 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒞𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒱𑒏𑒙 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢-𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒖𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒦𑒹𑒙 𑒖𑒰𑒃 𑒞𑒿 𑒍 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒥𑒿𑒔𑒱𑒨𑒼 𑒮𑒏𑒻𑒋 𑒏𑒱𑒢𑒹।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒯𑓀, 𑒮𑒹 𑒞𑓀 𑒥𑓀𑒔𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒖𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒏𑒱𑒩𑒠𑒰𑒢𑒲 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒃𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒋। 𑒑𑒰𑒧𑒼 𑒂 𑒂𑒢𑒼-𑒂𑒢𑒼 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒣-𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒧𑒰𑒩𑒱𑒨𑒼-𑒣𑒲𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒂 𑒏𑒹𑒮𑒼-𑒧𑒼𑒏𑒠𑒧𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒋। 𑒦𑒰𑒨-𑒦𑒰𑒨 𑒞𑓀 𑒮𑒯𑒖𑒹 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠𑒹 𑒦𑒹𑒪। 𑒏𑒯𑒪𑒼 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒖𑒹 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠 𑒂 𑒠𑒰𑒪𑒱 𑒖𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒑𑒪𑒋 𑒞𑒞𑒹 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒋।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒳𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒮𑒦 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑒢𑒏𑒹 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒞𑒏𑒻𑒋 𑒖𑒃𑒮𑓀 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒋𑒩 𑒞𑒩𑒏 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒞𑒱 𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑓀 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒪𑒑𑒞 𑒞𑓀 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒢𑒹 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒼 𑒂 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒑𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒞। 𑒖𑒐𑒢 𑒑𑒞𑒱-𑒧𑒞𑒱 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒞 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒢𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒼 𑒂 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒼 𑒮𑒳𑒡𑒻𑒩 𑒖𑒰𑒋𑒞।"

𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒯𑓀, 𑒮𑒹 𑒞𑓀 𑒯𑒋𑒞।"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒍𑒃 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒄 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒯𑒴𑓀 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒹𑒣𑒩 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒍𑒢𑒰, 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒲𑒋𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒯𑒧𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒅𑒚𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒰। 𑒖𑒃𑒮𑓀 𑒏𑒹𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒑𑒞 𑒮𑒴𑒩-𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒰, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑓁𑒑 (𑒠𑒯𑒹𑒖) 𑒩𑒯𑒻𑒢 𑒞𑒃𑒮𑓀 𑒏𑒰𑒖 (𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯) 𑒩𑒴𑒏𑒪 𑒕𑒪, 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒍𑒢𑒰, 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒮 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍𑒯𑒢𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏-𑒮𑓀-𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒢-𑒠𑒹𑒢𑒏 𑒥𑒢𑒱𑒨𑒹𑓀 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒼-𑒖𑒞𑓂𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒢-𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒏𑒾𑒪𑒖𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒜𑓃𑒞𑒱 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀।"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒧𑒪𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒮𑓀 𑒥𑒲𑒮 𑒖𑒧𑒲𑒢-𑒖𑒞𑓂𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒣𑒔𑒰𑒮 𑒥𑒲𑒒𑒰𑒮𑓀 𑒆𑒣𑒩 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏𑒹𑓀 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒍𑒢𑒰, 𑒖𑒧𑒲𑒢𑓂𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒞𑓀 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒑𑒳𑒧𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒩𑒱𑒯𑒩𑒠𑒹𑒫 𑒕𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢, 𑒖𑒃𑒮𑓀 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒻𑒞 𑒥𑒙𑒼𑒩𑒻𑒏 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯𑒹। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒁𑒧𑒪𑒠𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒯𑒩𑒱𑒯𑒩𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩

હાથયિો છેઉન। શુનૂમે હ્નહિ્નદેવ઼કેઁ શ્રોતેક શ્રળગાળ નહિ છેઉન, સાયાનામ્મ કસિાળ પનવિ઼ાન નહૈન। ળે નાળ્યક સમ્પન્કમે ૯ઊ પછાશ્ત બેઉન। વાપક ૯કઊતો વેટો વ઼ઊાસદેવ઼, ળે પઢ઼ો-ઊપ્પિ તિઁ નહિ સિકઊ, મુદા નઈસીક ળે ળીવ઼ન હોર છૈ સે ળનૂન બોગૈ છઊ। શ્રોના, સામાન્ય઼ ઊકકેઁ પઢ઼ૈય઼ો-ઊપ્પૈક સુવ઼યિા નહયિઁ છઊ, પતિાક પનોછ બેને માને પતિાક મૃત્યુ બેઊાક પછાશ્તયિો વ઼ઊાસદેવ઼ક શ્રોહ્ને નઈસીક ળીવ઼ન નહઊ, મુદા વાહ્ની શ્રામદની કમને ખેત-પથાન વકિવ શુનૂ બડ ગેઊ છેઉન। ગોટ-પિંગાના પનવિ઼ાનક ઉડારન સમાળમે સબ દનિસઁ નહ્વે કયઊ શ્રછિ, તહૂમે ળર પનવિ઼ાનક સમ્વન્ય નાળ-કાળસઁ હોશ્ત ગેઊ શ્રો તઁ ઉડવે કયઊ। શ્રોહ્ને પનવિ઼ાન હ્નહિ્નદેવ઼ક સેહો નહઉન।

સોતાનાથ વળઊ-

"પછાશ્ત કો બેઊ?"

નાયાનમામ્મ વળઊ-

"ગોવ઼િન્દ વાવૂક પનવિ઼ાનક દશા દેખ્પ મને-મન વ઼યિાન કેઊ ળે સોઊહોશ્રના પનવિ઼ાનક બાન ઉડવૈક શક્તિ તઁ શ્રપના નહિ શ્રછિ મુદા શ્રાંશકિ બાન ઉડવૈક શક્તિ તઁ શ્રછિ। ળહઁયના વિના સિકત તહઁયના મદૈત કનવૈન।"

સોતાનાથ વાળઊ-

"વ઼ાહ! તપ્પન તઁ કછુિ સહાના શ્રોર પનવિ઼ાનકેઁ માને ગોવ઼િન્દ વાવૂક પનવિ઼ાનકેઁ બશ્યે ગેઊ હેતૈન?"

નાયાનમામ્મ વળઊ-

"હમ કશ્યે કેતેક સકૈ છેઊ, તપ્પન ૯તે ળનૂન કેઊઇન ળે શ્રનુશંસાક નોકની પત્નીકેઁ દયિવૈમે સહયોગ કેઊઇન। શ્રોના, તેહેન પઢ઼ઊ-ઊપ્પિઊ પત્ની નહયિઁ છથનિ ળે શકિ્ષામ્મ કાન્ય઼ કનતિથ શ્રાકિ ઑશ્ટસિમે ઊપ્પા-પઢ઼ો કનતિથ। મુદા કૌઊળક પુસ્તકાઊય઼મે ચપનાસોક કાળ બેટ ગેઉન।"

સોતાનાથ વાળઊ- "ખાય઼ન, ળોવૈક કછુિ શ્રાશા તઁ પનવિ઼ાનકેઁ બશ્યે ગેઉન।"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒍𑒞𑒥𑒹 𑒧𑒠𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒾𑒪𑒻𑒢 𑒋𑒏 𑒬𑒩𑓂𑒞𑒣𑒩।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒏𑒲 𑒬𑒩𑓂𑒞?"

𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒱𑒞𑒱𑒂𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒞𑒐𑒢𑒹𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒱-𑒥𑒥𑒴𑒪 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒕𑒪, 𑒖𑒇𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒢𑒱 𑒥𑒿𑒔𑒥𑒻𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀, 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒣𑒱𑒞𑒱𑒂𑒢𑒲 𑒪𑒹𑒢-𑒠𑒹𑒢 𑒂 𑒏𑒳𑒪-𑒐𑒢𑒠𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒑𑒳𑒂 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒻𑒢।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒫𑒱𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒙𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒋𑒥?"

𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒳𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒁𑒼 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒍𑒃𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒔𑒪𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒧𑒢𑒹-𑒧𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒜𑓃𑒥 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒕𑒱, 𑒩𑒯𑒪 𑒐𑒩𑓂𑒔-𑒫𑒩𑓂𑒔𑒏, 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒻𑒞𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒹। 𑒖𑒿 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒠𑒬𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒡𑒰 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏 𑒬𑒩𑒝 𑒪𑒹𑒥 𑒂 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡𑒧𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒱𑒂𑒢𑒲 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒼 𑒮𑒱𑒐𑒰 𑒠𑒹𑒥𑒻𑒢। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒮𑓀𑒏𑒪𑓂𑒣 𑒩𑒣𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒾𑓀।"

𑒧𑒳𑒛𑓃𑒲 𑒛𑒼𑒪𑒥𑒻𑒞 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪?"

𑒯𑒿𑒮𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒿𑒣 𑒥𑒰𑒙𑒲𑒣𑒩 𑒙𑒹𑒜𑓃-𑒙𑒳𑒜𑓃 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒔𑒪𑒻𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒱𑒪𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒼𑒗 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒼𑒗 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒐𑒩𑓂𑒔𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒼𑒞𑒰𑒯𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒻𑒨𑒰𑒢𑒱𑒏

ૂપમે મનભેદ વઢ઼તિ ગેલા ઓના, મનભેદસઁ એો ભાજ ળૂન ભેલ ળે અપન દૃઢ઼ શક્તિ ઓનો વઢ઼ ગેલા ળરસઁ ળી-ળાનસઁ પઢ઼ૈક પાછૂ ભાગ ગેલૈ। ળહિના વીએમે ળીક નળિષ્ટ ભેલ નહિના એમએમે સેહો ભેલા ળરસઁ એોક આશા નઁ વનયિં ગેલ ળે નર કૌભળમે નઁ હારયો સ્કૂલમે શિક્ષક વનવે કનવા"

નાયાનમામ આગાઁ વળલ-

"પઢ઼ૈક ળળિજ્ઞાસા ઓનો ઉગ્ર ભ઼ ગેલ આ આઈએએસ કૈલૈ। સાવિત્રીકેઁ માને ગોવિન્દ વાવૂક પત્નીકેઁ, કહલયૈન ળે સુવાસિનીો સંગ વિવાહ ક઼ ભેવ મુદા હમર પનવિારક ળે સ્થિતિ અપ્પન વનિ ગેલ અછિ તિરમે વિદાગની નહિ કિનાએવ। ળપ્પન અપના પૈનપર ઠાઢ઼ ભ઼ ળાએવ તપ્પન વિદાગની કનાએવ।"

સીતાનાથ વાળલ-

"જાય સાહેવ, ર્યછા અછિ ળે અપનેકેઁ વિદા કેલાક પછારિ ળાર, મુદા અહૂઁકેઁ ઓનયિાન-વાત કરૈક અછિ ત અહૂઁ અપન તૈયાની કનૂ, સમ્જાવ હએત નઁ દસ વળેમે પુનઃ આવિ ળાએવ।"

નાયાનમામ વળલ-

"વઙવઢ઼યિઁ।"

સીતોનાથ આ ગીતોનાથ વિદા ભ઼ ગેલ આ નાયાનમામ સેહો અપન તૈયાનીક પાછૂ ભાગ ગેલા।

આઈએએસક નળિષ્ટ ભેલા પછારિ નાયાનમામ સુવાસિનીકેઁ સાસુનસઁ વિદાગની કના અપના એંગમ લ઼ એલા દૂ વન્પ્ક વેટી સુયતિ સેહો ભ઼ ગેલ છૈલૈન। પનવિારમે સુવાસિનીકેઁ અવતિ પતિ વિભાસદેવક મનમે ળલન સેહો દિનો-દિનિ વઢ઼યિ નહલ છૈલૈન મુદા માનસુનયનાક મનમે કોનો તનહક મલિનિતા નહિ છૈલૈન। ળહિના નાયાનમામકેઁ અપન ળેઠ વેટા વુદ્દિ વેવહાન કરૈત નહલ તહિના સુવાસિનીકેઁ સેહો અપન પુતોહુ ળકાઁ વેવહાન કનએ લાગલ। પતકિ સંગ માને વિભાસદેવક સંગ સુનયનાકેઁ કહિયો-કહિયો કહા-કહી સેહો ભ઼ ળાઇત નહૈન મુદા ત઼ સભ વાતપર કહિયો, તેના ભ઼ ક઼ ધયિાન નહિ દૈલ। ળહિના સભ પનવિારમે

છોટ-મોટ કાળે વા વ઼યિાને-ઉ કહ઼-કહી હોરએ આ કછુિએ સમૈય઼ક પછાશ્ત મેટા ળાશ્એ તહિ઼ા હોશ્ત નહઉૈન।

ળખ્યન વ઼િઊિસદેવ઼ ભિાિસ઼ૂપહ઼નમે યાહ પીવૈત નહૈથ, સુનય઼ના ઉગ઼મે આવિ કહઉકૈન-

"વૌઆ નાયાનમામ આશ્ કાળપન ળાએત।"

ઓના, વ઼િઊિસદેવ઼કેઁ સેહો વુહઉ નહવે કનૈ઼। કિએ તઁ તીન માસક ટ્નેનાિ કેઉાક પછાશ્ત, પાઁચ દિન પહિ઼ે નાયાનમામ ગાામ આવિ વાળઉ છઉા ળે પાઁચમ દિન ડ્યૂટી ળ્વ઼ાશ્ન કનએ ભુવનેશ્વ઼ન ળાએવ઼। ઉડ઼ીસાક નાળયાની ભુવ઼નેશ્વ઼ન, ળૈડામસઁ થોડ઼વે દૂનપન ળગાનનાથ યામ સેહો અછિ। સમુદ્નકાતક નાળ્ય઼ ઉડ઼ીસા છીહ઼। દનભંગાસઁ ડાય઼નેક્ટ ગાડ઼ી સેહો અછિ।

પત્ઞીક વાત સુનિ વ઼િઊિસદેવ઼ 'હઁ-હૂઁ' કછુિ ને વળઉ। પતિકેઁ ચુપ દેખિ સુનય઼ના અપન કાળમે પુનઃ ઉગ઼િ ગેઉ। તૈવીય માહ઼િઉ વેટા સુખદેવ઼ આએઉ। સુખદેવ઼કેઁ દેખિતે વ઼િઊિસદેવ઼ પુછઉખિ-

"વૌઆ, ભોનસઁ અખ્યન યનિ કિેતએ નપિત્તા છેઉહ?"

પતિાક ઉગ઼મે વૈસૈત સુખદેવ઼ વાળઉ-

"વાવૂ, નપિત્તા કહઁ છેઉૈ। ચૌક દસિ ગેઉ નહિ। ગાામક હાઉ-યાઉ સુનૈમે કની દેની ભડ ગેઉ।"

વ઼િઊિસદેવ઼ પુછઉખિ-

"ગાામક કી હાઉ-યાઉ અછિ?"

તૈપન સુખેદવ઼ કહઉકૈન-

"ગાામક કી હાઉ-યાઉ નહત। ય઼એહ હો-હઉ્ઉા ભડ નહઉ છઉ ળે ળખ્યન ગાામમે કેકનો આમ નહિ અડ઼ઉ આ ળેકના અડ઼વો કએઉ ઓહો હાઁટ-પાનિ-પાથનસઁ સભટા નષ્ટ ભડ ગેઉ। તેકને ક્ષતિ-પૂન્તિ હેતુ સનકાન દિસિસઁ સહાય઼તા ભેટત મુદા ઓ તઁ સભકેઁ ને ભેટક ચાહી, માને ળેકના-ળેકના ગાછી-કઉમ છૈ। સે નહિ ભેટિ કછુિ ગોનેકેઁ ભેટઉ આ અયિકાંસ ઉોક માને ગાછી-કઉમવઉા કિસાનકેઁ નશ્

બેટલ઼!"

વ઼િભાસદેવ઼ વજલા-

"કએિ ને બેટલ?"

સુખ્દેવ઼ વાજલ-

"જે સબ કૃષિ મિત્રકેઁ ચૌથાર માને સહાયતાક ચૌથાર રૂપૈઆ કમીશન દેલક તેકરા સબકેઁ આઠે દિનમે બેટ ગેલૈ। મુદા જે ઓકરા અનુદાન વુહિ કમીશન નહિ દેલક તનિકા સબકેઁ એકો પાર નહિ બેટલૈન। તેકરે હો-હલ્લા હોઇત અછિ।"

વ઼િભાસદેવ઼-

"કેર બેલ કી?"

સુખ્દેવ઼ વાજલ-

"કી કહત, જહિના સબ અનુદાનમે હોઇત આવિ રહલ અછિ તહિના કહત।"

વ઼િભાસદેવ઼ વજલા-

"કી માને?"

સુખ્દેવ઼ વાજલ-

"માને ચાહે જે ગામમે કિછુ કિસાન એહેન છૈથ જે સરકારી કિસાન છૈથ, હુનકા સબકેઁ વુહલ છૈન માને કોનો સરકારી સહાયતા અવૈત તઁ કૃષિ મિત્ર હુનકા સબકેઁ જાનકારિયો દઽ દૈત આ અપન કમીશન લઽ કઽ અનુદાનો દિયાવૈત। જઇસઁ ગામક કિસાન વઁટા ગેલ છૈથ।"

વ઼િભાસદેવ઼ વજલા-

"કી વઁટા ગેલ છૈથ?"

સુખ્દેવ઼ વાજલ-

"કિછુ કિસાન સરકારી વનિ ગેલ છૈથ આ વાઁકી સબ ગૈર-સરકારી છૈથ।"

તહી વીચ વ઼ામદેવ઼ સેહો પહુઁચલ। વ઼ામદેવ઼કેઁ દેખિતે વ઼િભાસદેવ઼ પુછલખિન-

"વૌઆ, જોરસઁ નહિ દેખને છેલિયહ?"

𑒫𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪- "𑒥𑒰𑒥𑒴, 𑒦𑒼𑒩𑒳𑒣𑒯𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢 𑒙𑒯𑒪𑒋 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒲 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒠𑒕𑒱𑒢𑒫𑒰𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒛𑓃𑒏 𑒡𑒹𑒢𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒩𑒲𑒥 𑒠𑒴 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒣𑒢𑒩𑒯-𑒥𑒲𑒮 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒱𑒨𑒻𑒢। 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒣𑒲𑒚𑒣𑒩 𑒣𑒩𑒠𑒹𑒬𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒻𑒑 𑒪𑒙𑒏𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒍𑒢𑒰, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒋𑒏𑒼 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒹𑒪। 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒨𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒏𑒹𑒞𑒋 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒥𑒖𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲𑒣𑒳𑒩 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒲।"

𑒥𑒱𑒔𑓂𑒔𑒹𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒦𑒼𑒩𑒹-𑒦𑒼𑒩 𑒏𑒹𑒞𑒋𑒮𑒿 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒰?"

𑒫𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪- "𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒨𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒏𑒹𑒞𑒋𑒮𑒿 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒲, 𑒞𑒿 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒥𑒖𑒪𑒰 𑒧𑒳𑒧𑓂𑒥𑒃𑒮𑒿। 𑒤𑒹𑒩 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒨𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒧𑒳𑒧𑓂𑒥𑒃𑒨𑒹𑒮𑒿 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒪𑒏 ' 𑒯𑒿' , 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯-𑒏𑒰𑒢 𑒮𑒳𑒐𑒰𑒋𑒪 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪।"

𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒏𑒱𑒋 𑒮𑒳𑒐𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒢?"

𑒫𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒌 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒻 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒖𑒻𑒚𑒰𑒧 𑒕𑒹𑒪𑒾 𑒞𑒻𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒞𑒹𑒞𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰-𑒏𑒰𑒩𑒼𑒥𑒰𑒩 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒿𑒋 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒰𑒋-𑒯𑒹 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒻𑒖𑒰, 𑒔𑒹𑒔𑒏, 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒃𑒢 𑒤𑓂𑒪𑒴 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒮𑒹𑒩𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒋𑒏-𑒮𑒿-𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒮𑒻𑒩 𑒪𑒑𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒲, 𑒞𑒿𑒋 𑒮𑒦 𑒧𑒳𑒧𑓂𑒥𑒃𑒮𑒿 𑒣𑒛𑓃𑒰 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒟।"

𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒞𑒿 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒲, 𑒞𑒃 𑒪 𑒦𑒰𑒑𑒻𑒏 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒻। 𑒍𑒏𑒩 𑒞𑒿 𑒃𑒪𑒰𑒖 𑒯𑒹𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒏𑒢𑒱। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒂𑒃𑒨𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒧𑒨-𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒪𑒮𑒹𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒞𑒿 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

𑒫𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒮𑒋𑒯 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒨𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒞𑒿 𑒬𑒯𑒩𑒏

𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒂 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒬𑒯𑒩𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲, 𑒖𑒻𑒚𑒰𑒧 𑒢𑒹 𑒛ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒢𑒹 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪। 𑒞𑒐𑒢 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒖𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒍𑒃𑒚𑒰𑒧 𑒐𑒹𑒥𑒼-𑒣𑒲𑒥𑒼 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒞𑒾। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒏𑒱𑒆𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒩𑒼𑒏 𑒪𑒑𑒰 𑒑𑒹𑒪।"

𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒁𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒯 𑒋 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿।"

𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒳𑒐𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒥𑒰𑒥𑒴, 𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒞𑒿 𑒂𑒃 𑒏𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒖𑒹𑒞𑒰𑒯?"

𑒍𑒢𑒰, 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒠𑒹𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒢𑒚𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒳𑒢?"

𑒮𑒳𑒐𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒾 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒦𑒳𑒫𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒖𑒹𑒞𑒰। 𑒍𑒞𑒃 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒁𑒕𑒱।"

𑒮𑒦 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳𑒖𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢-

"𑒧𑒰𑒋, 𑒮𑒧𑒨 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒦𑒰𑒢𑒮 𑒞𑒿 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒋𑒞 𑒏𑒱?"

𑒮𑒳𑒢𑒨𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒲-

"𑒯𑒿।"

𑒧𑒰𑒃𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢-

"𑒥𑒹𑒩𑒰-𑒥𑒹𑒩𑒲 𑒖𑒿 𑒐𑒰𑒋 𑒪𑒑𑒥 𑒞𑒐𑒢 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒞𑒿𑒋 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒐𑒰𑒃𑒪𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒻 𑒕𑒲 𑒂 𑒁𑒯𑒴𑒿 𑒐𑒰 𑒪𑒱𑒁। 𑒮𑒧𑒨𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒦𑓄 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒍𑒢𑒰, 𑒙𑒹𑒧𑓂𑒣𑒴𑒫𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒹 𑒕𑒱𑒋 𑒖𑒹 𑒣𑒾𑒢𑒹 𑒠𑒮𑒹 𑒥𑒖𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒃𑒯𑒯। 𑒮𑒰𑒜𑓃𑒹 𑒢𑒁 𑒥𑒖𑒻𑒋, 𑒍𑒯𑒼 𑒖𑒃-𑒒𑒛𑓃𑒲 𑒢𑒹 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪।"

𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 '𑒯𑒿-𑒯𑒴𑒿' 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒦𑒢𑒮𑒰 𑒒𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒙𑒹𑒧𑓂𑒣𑒴𑒫𑒪𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒯ॉ𑒩𑓂𑒢 𑒥𑒖𑒾𑒪𑒏। 𑒯𑒰𑒩𑓂𑒢𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒱

𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒻𑒪 𑒙𑒹𑒧𑓂𑒣𑒴𑒫𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢-

"𑒥𑒮, 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒕𑒲।"

𑒙𑒹𑒧𑓂𑒣𑒴𑒫𑒪𑒰 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒱𑒨𑒹𑒏 𑒮𑒲𑒙𑒣𑒩 𑒍𑒓𑓂𑒑𑒻𑒚 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪। 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒏 𑒏𑒼𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒨𑒞𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒥𑒹𑒑-𑒋𑒙𑒻𑒔𑒲 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒙𑒹𑒧𑓂𑒣𑒴𑒏 𑒂𑒑𑒴𑒧𑒹 𑒪𑓄 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒩𑒐𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒰। 𑒣𑒞𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒐𑒩𑒱𑒯𑒰𑒢 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒅𑒚𑒰-𑒅𑒚𑒰 𑒞𑒰𑒏𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰। 𑒢𑒹 𑒣𑒞𑒲 𑒢𑒖𑒻𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒿𑒃 𑒮𑒳𑒐𑒠𑒹𑒫-𑒥𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒢𑒖𑒻𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒨, 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒱𑒔𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒢 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒿𑒃𑒨𑒼 𑒂 𑒣𑒞𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒢 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒎𑒢𑒰𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒣𑒰𑒃𑒨𑒹 𑒏𑒲। 𑒞𑒯𑒱𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒑𑒹𑒪। 𑒍𑒢𑒰, 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒿𑒃𑒨𑒼 𑒂 𑒣𑒞𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒥𑒨𑒰𑒢 𑒅𑒚𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒃 𑒮𑒦 𑒥𑒨𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒠𑒰𑒥𑒱 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒰-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪𑒏 𑒨𑒳𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒿𑒋 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱𑒯।"

𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪- "𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒱𑒐𑒻𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿𑒋 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒧𑒨-𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒥। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒻𑒨𑒏 𑒞𑒿 𑒍𑒞𑒹 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒢𑒃 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒞𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒧𑒻𑒨𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒚𑒲𑒏 𑒯𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒢𑒱𑒔𑒻𑒢 𑒩𑒯𑒥 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼-𑒏𑒰𑒪 𑒁𑒣𑒢𑒯𑒱 𑒤𑒼𑒢 𑒏𑒩𑒥। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒯𑒖𑒹 𑒧𑒯𑒲𑒢𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪𑒏 𑒔𑒰𑒩𑓂𑒖 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿𑒋 𑒮𑒧𑒻𑒨𑒏 𑒣𑒻𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱।"

𑒮𑒲𑒞𑒰𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒥𑒨𑒰𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒖𑒐𑒢 𑒖𑒹 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞 𑒯𑒳𑒁, 𑒢𑒱𑒡𑒼𑒐 𑒣𑒳𑒕𑒱 𑒪𑒱𑒯𑒯। 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒂𑒏𑒱 𑒣𑒠 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒑𑒯𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒏𑒩 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒄 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒢𑒱𑒞𑒾

તઁ અપન જે વિદ્યાર્થી જીવનક અનુભવ અછિ ઓ સભ બાત વિદ્યાર્થી સભકેઁ બુઝા કઽ કહિતૌ, મુદા સે તઁ ભેલ નહિ।"

રાધારમણક વચન સુનિ ગીતાનાથ બાજલ- "ભાય સાહેબ, એકટા સાધારણ વિદ્યાર્થી કેના નીક વિદ્યાર્થી બનિ ઉચ્ચ કોટિક સ્થાન પેબ સકૈએ ઈ અનુભવ તઁ અપનેકેઁ વ્યવહારિક રૂપમે ભઽયે ગેલ અછિ તેઁ અપનેસઁ।"

ગીતાનાથક વચન સુનિ રાધારમણ મુસ્કુરાઇત બાજલા-

"બૌઆ, બહુત બાત કહબો કેલિયૈ આ આગૂઓ કહૈત રહબ। અપ્પન તઁ બઢ઼િ ભઽ ગેલ છી, તેઁ બહુત બાત કરૈક સમય નહિ અછિ મુદા ચલૈત-ચલૈત એકટા બાત જરૂર કહિ દિઅ ચાહૈ છિઅ જે જાધૈર અધ્યયન કરૈ છહ તાધૈર દુનિયાઁક સભ કિછુ બિસરિ એકબે ચિન્તનમે રાખહ જે જખન પઢ઼બેટા કાલ અછિ તખન નીક-સઁ-નીક કરિ કે કઽ સકૈ છી। જખને મન એકાગ્ર ભઽ કાલકેઁ પકૈડ઼ લેત તખને દિનાનુદિન અપન ઉન્નતિ હોઇત દેખબહ। પરીક્ષા કોનો કરિ કે હોઇ વા કેતબો વિદ્યાર્થી કરિ કે હુઅએ, મુદા પ્રશ્ન પત્રમે જે પ્રશ્ન રહત ઓતબેકેઁ તોરા જવાબ દરકે છહ। ઓ કેના સમુચિત ઢંગસઁ સમુચિત ઉત્તર લિખિ પેબહ, બસ એતબેપર ચિન્તન કેન્દ્રીત કરૈક છહ।"

રાધારમણક વચન સુનિ જહિના સીતાનાથક તહિના ગીતાનાથક હૃદય ખુશીસઁ ભરિ ગેલ। આગૂ બઢ઼િ રાધારમણ માએકેઁ કહલકૈન- "માએ, જહિના અપ્પન તક બેટા બનિ મનમે રહલિયૌ તહિના સભ દિન।"

બેટાક બાત સુનિ સુનયનાક મન દલ-દલ, થલ-થલ હુઅ લાગૈન। દુનૂ આઁખિમે નોર આબિ ગેલૈન। રાધારમણક મનમે નાચએ લાગલૈન। પિતા આ દુનૂ ભાઁઇયોક વ્યવહાર દેખિ માને તીનૂ ગોરેકેઁ નહિ રહને સુનયનાક મનમે મમતા તઁ ભેબે કેલૈન મુદા તેકરા મનેમે દાબિ બાજલી-

"બૌઆ, બુઢ઼ા ક મન કેતબો બગૈદ કરિ કે જાઇત મુદા પિતા તઁ બરહ છથુન। મનમે કોનો તરહક માન-રોખ નહિ રાખિહ। સભ અપને છથુન આ અપને રહથુન। બેટા બન છહ, દુનિયાઁમે કેતૌ રહહ મુદા અપન પરિવાર અપને છિઅ આ અપને

𑒩𑒯𑒞𑒯।"
𑒧𑒰𑒃𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒔𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒮𑒰𑒧𑓀𑒖𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪- "𑒧𑒰𑒋, 𑒮𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒧𑒰𑒮 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞, 𑒍 𑒧𑒰𑒮𑒼 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒞𑒰𑒋𑒥।"
𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒼𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒥𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒼𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒨𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-
"𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿, 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒁𑒯𑒲𑒿𑒙𑒰 𑒣𑒩𑒠𑒹𑒬 𑒥𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒥𑒰। 𑒖𑒞𑒹 𑒏𑒧𑒰𑒮𑒳𑒞 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹 𑒣𑒩𑒠𑒹𑒬 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒪-𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒂 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒱𑒨𑒼𑒿 𑒞𑒿 𑒖𑒰𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒮𑒿 𑒩𑒯𑒥।"
𑒮𑒰𑒮𑒳𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒳𑒥𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒴 𑒥𑒩𑒐𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-
"𑒥𑒳𑒔𑓂𑒔𑒲, 𑒠𑒰𑒠𑒲𑒧𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒯𑒰𑒟 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱, 𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒯𑒳𑒢।"
𑒍𑒢𑒰, 𑒠𑒳𑒩𑒳𑒋 𑒥𑒩𑒐𑒏 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒑𑒩𑒲𑒥-𑒣𑒕𑒳𑒂𑒋𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒮𑒿 𑒔𑒬𑓂𑒪𑒰𑒑𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒕𑒱𑒛𑓃𑒪-𑒣𑒕𑒳𑒂𑒋𑒪-𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒖𑒹 𑒏𑒳𑒣𑒼𑒭𑒝𑒮𑒿 𑒮𑒠𑒰 𑒞𑒩𑒯𑒻𑒿 𑒏𑒳𑒣𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒋, 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒕𑒪। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒐𑒹𑒥𑒰-𑒣𑒲𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒯𑒹।
𑒧𑒰𑒃𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒯𑒰𑒟 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒨𑒢𑒰𑒏 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒋𑒩𑒧𑒹 𑒑𑒼𑒩 𑒪𑒑𑒪𑒏। 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒱𑒞𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒨𑒢𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒏𑒪𑒹𑒬 𑒅𑒚𑒪𑒻𑒢। 𑒏𑒪𑒹𑒬𑒞𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-
"𑒥𑒳𑒔𑓂𑒔𑒲, 𑒦𑒑𑒥𑒰𑒢 𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒩𑒟𑒳𑒢।"
𑒞𑒻𑒥𑒲𑒔 𑒙𑒹𑒧𑓂𑒣𑒴𑒏 𑒛𑓂𑒩𑒰𑒃𑒥𑒩 𑒯◌ॉ𑒩𑓂𑒢 𑒥𑒖𑒾𑒪𑒏। 𑒑𑒰𑒔𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒑𑒱𑒢𑒞𑒲 𑒏𑒋, 𑒙𑒹𑒧𑓂𑒣𑒴𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪𑒰, 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒥𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒲। 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒪।
(𑒖𑒰𑒩𑒲---)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

३२.जगदीश प्रसाद मण्डल- निश्चिन्त (लघुकथा)



जगदीश प्रसाद मण्डल

निश्चिन्त (लघुकथा)

जीवनमे निश्चिन्तता पौने जीवनक आनन्द भेटयि जाइ छै, जहिना ओकरा आनन्दित जीवन कहियौ वा नइ कहियौ मुदा ओ आनन्दित रहैत अछि, बिना दुनियाँक परवाह केने। काल्हियेसँ पत्नीक संग कनी खटपट भेल खटपटी भऽ- अछि। खटपटीक कारण अछि-, परसुका कुमरमक नौतहकारी सासुरसँ - भेल सासुर अप्पन आएल अछि, पत्नीक नैहर दुआरि बहियौन -बापक घर- ओना आकि अप्पन नैहरा, पत्नी सामने दू बेर, एकबेर माएसँ भेँट करैक लाथपर नैहर जाइ छैथ आ दोसर बेर बापक लाथपर जाइ छैथ। कहियो घुमती आकि नइ घुमती तेकर कहाँ ठेकान। नइ पुतोहुपना माने एकर बदी नइ करै छी।- अछि घरमे अपना ने अधिकार अप्पन जे भेल ई माने एकर, मुदा मातापिताक -

છિટ સકૈ ઘ૧ક શ્રયકિ૧ી ñ શ્રપને ૧ર ને ૪૫, ગૈડ઼મ ઘુમ૧ીક ગાંપટી શ્રપને કેના ક૧ા સકૈ છી, ñ૯ મુઁહ યુપ્પે ૧પ્પૈ છી। કા઼ઉરિ પત્ની ઉત્સાહિત હોર્ત ઉગ઼ામે શ્રાવિ વિળઉિ-

"દુન્ વેક૧ીકેં ૧ૌત શ્રછિ ગહના એક્ટા ñ ક૫ દ૫ ઉ૫ હકા૧ શ્રાએઉ શ્રછિ-મોહ૧માઉ, તેક૧ી શ્રહાઁ વન્હકી ઉગ઼ા નેને છી, વિનુ ગહને દેપ્પિ નૈહ૧ક ઉક દુસત ૧રા"

પત્નીક વ઼ચિ઼ા૧ શ્રપના મનમે ળઁયવો કએઉ શ્રા ૧હયિઁ ળઁયઉ। કહ્વ ળે ઉકકેં એક્ટા હોર છૈ, માને ' ળઁયઉ' વ઼ા ' ૧ર ળઁયઉ' , તો૧ા કિટ દૂટા ૪૫ ળાર છૌ? તો૧ી વ઼ચિ઼ા૧ ૪ાય઼ ૧ર કાટૈ છશ્રિહ, મુદા હ્મ૧ી વ઼ચિ઼ા૧ક માનિ દિવહ કી ૧હિ? શ્રપના સમાળમે, પ૧વિ઼ા૧સઁ ઉ૫ ક૫ દસગ઼ા૧દા સ્થાન યનિ, ળેતેક પ્૧ેમસઁ વૈવાહિક પદ્યતિ વિનઉ શ્રછિ, શ્રોતેક કો૧ી દેવ઼ી ક૫ દેવ઼તાક સ્થાનસઁ ઉ૫-ળે ૪ેઉ ૬ માને શ્રછિ ૧ર તકમે ઉત્સવ઼ શ્રાન પ૧વિ઼ા૧ક, માનિ ઉશ્રિ શ્રહાઁ સ૪ાસઁ પૈઘ દેવ઼તા વ઼ા ૪ગ઼ાવ઼ાન ' મહાદેવ઼ વાવા' કેં વ઼ુહૈ છિએન, મુદા શ્રોર સ્થાનપ૧ ગેઉ પછાર્ત ૧યા૧ી છોડ઼િ શ્રા૧ી કિછુ કહૈ છિએન? તહિના શ્રાનોશ્રાન સ્થાનો શ્રા - ૧હયિઁ ñ કાળ દોસ૧ એહેન તેસ૧ કાળ સેહો શ્રછિ-શ્રપનો પ૧વિ઼ા૧ક દોસ૧ ળીવ઼નક ળે ૪ેઉ માને ક૧ૈ઼ગ઼ ગૈય઼ા૧ વ઼ાતાવ઼૧ામ પ્૧યિ઼ગ઼ા૧ વશ્રિ઼હ્ક ળે શ્રછિળે સાહિત્યશ્રછિ વ઼િયિ઼ાન સંસ્કૃતિક-, ત૨ શ્રનુકૂઉ વાઉ-વ઼દિ઼ા૨ ક૫ સોહ૧સઁ ઉ૫-સ૪ાસઁ ૯ે પ્પાએ૧ છી। વ઼િવ઼ાહ કેન્દ્૧વિન્દુ મૂઉ ળીવ઼નક માને સોહ૧ યનિ શ્રછિ। શ્રછિ મતઉવ કોન સ૪ાકેં શ્રપના, શ્રપના મતઉવ એનવે ને શ્રછિ ળેતેક મતઉવ દૂ વોઘા ળમીનવઉ કસિ઼ાનકેં છૈના

પ્૧શ્ન ઉઠૈ૯ ળે ળપ્પન દૂ સમાળક વીચ વેટાવે-ટીક ઉનદેન હોરએ-, ગૈડ઼મ વશ્રિ઼હ્ક વેવ઼હા૧િક પક્ષ એહેન કિટ શ્રછિ ળે સદિકાઉ શ્રાન સમાળ માને વેટા-પક્ષ, દોસ૧ પક્ષ માને વેટી પક્ષકેં હેય઼ દૃષ્ટિસઁ દેપ્પવો ક૧ૈ છૈથ શ્રા હેય઼ો માનિતે છૈથ। ળપ્પનસઁ દોસ૧ સમાળ માને વ૧ય઼િ઼ા૧ી વનિ શ્રપના સમાળમે દ૧વળ્ળાપ૧ શ્રવૈ છૈથ, તપ્પનસઁ વેટી પક્ષક છાતી યકય-ક ક૧ૈત ડોઉ૯ ઉગ઼ૌ છૈન ળે કપ્પન વેરળ્ળત ૪૫ ળાએવ તેક૧ કો૧ી ડીક ૧હિ। કી ય઼એહ છી માનવીય઼ દૃષ્ટિ? એક દિસિ માનવ઼ીય઼ સમ્વન્ય, માને મનુક્પ્પક ળોડ઼ પ્૧ેમસઁ ઉગ઼ાવૈ છી શ્રા દોસ૧ દિસિ વ઼ષિવ઼મન ૧ર ક૧ૈ છી સેહો કેના ૧ર કહઉ ળાએત। પ્પાએ૧ એક૧ા

છોડૂ।

પત્નીક વ઼ચિાન સુનિ યુપ્પેયાપ-, માને પત્નીકેઁ વનિુ કહનહિ, વન્હકીવ઼ળા ઐડામ ગેળૌ। ળાશ્તે શ્રો સૂયના દૈળેન ળે છહ માસ ઞs ગેળ, શ્રાવ ગહના નમાદી ઞs ળાએના વહુન સૂદી ઞs ગેળ શ્રછિ। ળહનિા વનાયિ઼ા કહળૈન નહનિા શ્રપનો શ્રોકના હઁસીમે ળૈન કહળયૈ઼ન-

"ઙ નોગ કી કોનો શ્રાશ્યે઼ શ્રહાઁ સઞમે ઞેળ શ્રછિ શ્રાકિ પુસ્તૈની શ્રછિ। કેતે હિસાવ શ્રછિ, સએહ વુહ્એ એળૌ હેના।"

મનકેઁ મના ળેળૌ ળે સમ્વન્યમે ઐસઁ વેસી નીપ્પન નહિયેઁ઼ નીક। વનાયિ઼ા મહાળન ઐડામસઁ ઘુમળા પછાશ્ત, યુળ્હપિન નાપ્પળ કોનો વનનનક પાનમિ ળહનિા નયિ્યાઁસઁ શ્રાગકિ નાવ઼ દેળા પછાશ્ત નંગ ઉડૈએ નહનિા મનમે ઉડએ ળગળ। ળૈડામ હમના સન કસિાન પનવિ઼ાનક એહેન સ્થનિ શ્રછિ, ળે કૃષિ કાળસઁ ળુડ઼ળ નહનૌ, શ્રાળુક ઐ મશીની યુ઼ગમે માને એકૈસમી સદીક વૈ઼ળ્સાનકિ યુ઼ગમે, કી એકોટા શ્રોહન મશીન કસિાનક હાથ એળૈન શ્રછિ। હોહ મે કયિ઼ો દમકળ કીનળૈન - વોનગિમે ળગળ નહૈએ નઁ વળિળીએ -નઁ વોનગિક પાશ્પે શ્રુટિ ગેળ નહૈએ શ્રા કેનૌ ઙળન સન હમના ળઁ નૈડામ ળનિગી। કસિાનક છોટ છી નઁ યુ઼એહ વેમાક નહૈ છૈ। પનવિ઼ાનમે મોહનમાળા સન ગહનાક ળૈળ મહળિળગનમે શ્રછિ નઁ શ્રો શ્રોકાશ્તસઁ વેસી નશ્ ઞેળ નઁ કી ઞેળ। હન મનુક્પ્પકેઁ શ્રપન શ્રોકાનકિ સીમાક ળાનકાની નાપ્પક યાહી। ઞાય઼, ળનિગી ડટ્ડા નશ્ ને છી ળે સુનવ પ્પઢ઼પન શ્રા સપના દેપ્પવ નશ્ર ળાપ્પક઼!

ઞીનનેઞીનન પત્નીપન મન નંગિ ગેળ-, મનમે ઞેળ ળે કએિ ને ' મોહનમાળા' ક દામ ળગા વેયવેક ગપ નીક ઐસઁ ળે દેવૈન ટટિકાનિ પત્નીકેઁ ળેળૌ। સપ્પ કs-છી। થોડ઼ે કાળ શ્રસાય ડકવ કિ સ્નીગમ્મોકેઁ દેવ। ગહના દોસન મોડળમે નવકા ળેની। ઞs નમિપનિ શ્રો દયિ઼ૌન કહિ દામ સાએ પાન સાડ઼ીકેઁ નૂપૈશ્રાક સાએ નઁ ઞેળ દ કહિ નૂપૈશ્રા સાએ સાડ઼ીકેઁ નૂપૈશ્રાક સાએ પાન દસિ દોસન નહનિાયિ઼ૌન, ઞs ગેળ દુનૂ પનાનીમે શ્રુળ્ળમ દશા પનવિ઼ાનક વ઼ા દશા શ્રહાઁક કએિ શ્રો શ્રુળ્ળા-દેપ્પની, મહળિાકેઁ પુનુપ્પક વનાવનીક શ્રચકિાન હૌ, નીક વાન, મુદા નશ્સઁ પહનિ પનવિ઼ાનકેઁ દેપ્પૈક દૃષ્ટકિોમ્ર શ્રા એક ઢંગસઁ યળૈક કન્નવ્ય઼ સેહો શ્રછિ કનિ। પ્પાએન દુનયિ઼ાઁદાનીક વાન છોડૂ, ળપ્પન શ્રપના ઘનમે શ્રુળ્ળાશ્રુળ્ળી ઞેળ શ્રછિ -

तखन अनका घरक बात सुनैत जे नभलज जकाँ चकभौर मारब से बेवकूफपने आएल। तहिना अबैए बिराम पाँतीक जेना मनमे ने हएत।
पत्नीक संग सुतल-दौड़ैत बाहर करए लागल-सुतलीक विचार मनमे दौड़-भेल तक अपन दशा केतबो अपना दौड़ैत मन पहुँच गेल राजा भरथरीपर। अछि मुदा भरथरी जकाँ पत्नीक मनसँ ओतेक विमुख तँ नहियेँ ने भेल छी जे घर छोड़ि पड़ा जाएब आ पेटक खातिर पगिल गाम जा कऽ भीख मांगब। जखन पगिलकेँ तियागि दिऐ तखन दोहरा कऽ ओकर मुँह कए देखब। महाजन गामसँ हेराइतभोथियाइत घरपर पहुँचली।-
अपना गाम दू रंगक कौआ होइए। एकटा होइए कागकौआ आ दोसर होइए करकौआ। कागकौआक बोलकेँ लोक शुभ मानै छैथ आ करकौआक बोलकेँ अशुभ। कागकौआ जकाँ पत्नी आगुएसँ टाँहि मारि बजली-
"महाजन गामक काज भेल की?"
एकाएक मनमे उठल जे बजली तँ केतौ नहि, मुदा पत्नी केना बुझि गेली? मुदा लागल अपने मन कहलक, भरसिक गहनाक जे चर्च केने छेली सएह हियामे गड़ि गेल छैन। अजगर साँप जकाँ गेरुली मारि बजली-
"ओहि काजमे ने लागल छी।"
संजोग बनल, बियैमे पत्नीकेँ कोनो बिसरल काज मोन पड़लैन। हमरा मुहल्लत दैत आगू बढ़ैत बजली-
"अखन छुट्टी नइ अछि तँए बेसी गप नइ करब। पहिने काज केने अबै छी तखन आगूक गप करब।"
अनका जकाँ अपना नइ भेल, कहि तँ अनगोटे पत्नीकेँ कहै छथिन पहिने गप कऽ लिअ, पछाइत काज बुझल जेतइ। मुदा अपना विचारमे से नइ अछि, अपने काजकेँ जीवनक गतिविधि बुझै छी-, तँए काज छोड़ब भेल जीवन छोड़ब। पत्नीकेँ काज दिसि सुमुख होइते मनमे राग आएल। राग ई आएल जे जीवनमे जँ संगी नइ रहल तँ ओ जीवन कोनो जीवन नइ भेल। मुदा पत्नीक जे नैहर जेवाक तगेदा मनमे छल ओ दोसर दिसि भकमुड़ि गेल। भकमुड़ि ई गेल जे दुरागमनक पछाइत, अखन विआह लाज तँ एते तरसँ दुरागमन संगे होइए- महीसकि पोसियाँक सरछौड़-गाए आब जकाँ पहिलुका जे अछि रहल भरइये जकाँ

શ્રાવ નર હેરપ। પહિલ દુ૧ાગામનસઁ પૂ૧વે ગૈહેમે યયિા ગઁ શ્રાવ પુના હેર છઉ-વાપ દુનયિાઁ દસિ યકેઉ વ઼દિા ક૨યે દર છૈથ ળે દુનયિાઁ -મા૨યો શ્રપન શ્રા સમાળો ઘુ૧ ઐકટા માઉાકેઁ એક સાએ શ્રાડ વે૧ ળપ કરૈન -કનયિંટા થોડ઼ે શ્રછ઼િ ળે ઘુ૧ છો દુનયિાઁ ગઁ દુનયિાઁ ૧હૂ, કરૈન યઉ, દેખૈન યઉ, છોડ઼ૈન યઉ શ્રા શ્રાગૂ વઢ઼ૈન યઉ।

મન ગેગે ઘો૧ ઝડ ખ઼ગમ વ઼િકે વુહેક સે શ્રયઉાહ કી ગીક કી ળે ગેઉ મટ઼ડા ઝડ-ઝાય ગેઉ, ' સમાપ્ગ' શ્રા ખ઼ગમકેઁ એક નર વુહ્વા ' સમાપ્ગ' ક માને ' વ઼િગિમ' હેરએ શ્રા ' ખ઼ગમ' ક માને ' મૃગ્યુ' સેહો હેરપ।

શ્રપના મનમે સે નર ઝેઉ શ્રોના, શ્રાઁખ઼િ ગઁ હઉશ્રુઉવે કએઉ મુદા વ઼િક શ્રગીય છઉ। વ઼યિા૧ દેઉક ળે શ્રપના સમાળમે શ્રદૌસઁ શકિ્ષાક એહેન પદ્યગિ ૧હઉ શ્રછ઼િ ળે વિગિ મૂઉ્યક, માને વિગુ દૈછના ઉને એકદોસ૧ક સવાઉકેઁ ઉગ્ગ૧ો દર છૈથ - ળીવ઼નક કસિાની સેહો દર છૈથ। (હુન૧) શ્રા ળઁ કાળક દૌડ઼ ૧હઉ ગઁ કાળક કઉ સ કસિાનીક માને શ્રછ઼િ ૧હઉ ળનિગીક પૂગ્રાસ શ્રો શ્રછ઼િ ૧હઉ દુનયિાઁ ળેઝ ક્૧યિામે દાનક કોનો મૂઉ્ય નહિ ૧હઉ શ્રછ઼િ। માને ઝેઉ ળે ખ઼ેગીક કોનો કાળક પ્૧ક્૧યિા હોઉ શ્રાકિ પ૧વિ઼ા૧ેક ક્૧યિા, માને ઘ૧ વનાએવસઁ વચ્ચાકેઁ પઢ઼ાએવ-ઉખ઼ાએવ, વશ્રિાહ દુ૧ાગામન ક૧ાએવ ઙ્ગ્યાદિ યગકિ-, ૧ાયવ઼યિા૧ક દાનકેઁ -કોનો મૂઉ્ય નહિ દશ્રિ પડ઼ે છઉ, મુદા શ્રાળુક પ૧વિ઼શ એહેન ઝરયે ગેઉ શ્રછ઼િ ળે શ્રોક૧ મૂઉ્ય માને કીમગ દશ્રિ પડ઼ૈપ। યડ઼િયુનમુની ળહિના શ્રપન વીગોસઁ છોટ - શ્રછ઼િ। ગેઉ ઝડ ગહિના ૧હેએ ઉઙૈગ પેટ ઉ ઝા૧ દિનિ ગવ઼ાહ ઝડ

શ્રાને ળકાઁ શ્રપની મનમે દુનયિાઁક પ્૧ગિ, માને પ૧વિ઼ા૧સઁ સમાળ યગિ, ૧ાગ-પગ્નીસઁ ળે હેગા નર એહેન ઉક એકોશ્રના ય૧ગીપ૧ ળહિના વ઼િગિાગ ઉડએ ઉગાઉ। ક૧ હ઼ગાડ઼ાકિડ ઝઁઉ ઘ૧સઁ ઝાગઉ નર હેગા મુદા કમસઁ કમ ખ઼ેના૨ વ઼ા ળઉખ઼ે એક્કો સાઁહ નર વાડ઼ને હેગા। વ઼િગિાગ ઝેઉ પછાગયિો ગઁ ઝ૧થગીએ ને પગિઉાકેઁ શ્રપન દુખ઼ના સુનવૈગ ૧ાગયિો વનિગિ છૈથ। મનમે શ્રપને ઉડઉ ળે ગામોમે ગઁ શ્રોહનો ઉક છથયિ઼ ળે હઁસૈગકટ વઢ઼િની ળેના મનમે ખ઼ેઉગ દુનયિાઁક સંગ યઉ છૈથ।-ઉ પછા૨ગ ઉડ઼ીમન ઙેહો હુશ્રએ ળે -મને ગૈસંગ વીડ઼ી ઉઙૈએ ગહિના ઉડિ ૧હઉ છઉ-વહુક શ્રા હા૧ઉ શ્રપન ળે છી વુહગિ સઝ શ્રપ્પન ઘ૧ક વાગ ઉકકેઁ કેના કહ્વૈ। ળેમહ૧ ક૧એ। ને યઢ઼વે ઝાઁળપ૧ વ઼યિા૧ કોનો વળૈપ। નર ઉગ શ્રનકા ઉક મા૧ઉ

जाएत भऽ कुआँजे तेहेन देखी

ताहि मन रविकान्त काकापर चलि गेल। रविकान्त काकापर नजरि पहुँचिते जेना मनमे थोड़ेक तुष्टि भेल। तुष्टि भेल हुनकर जीवन देखिकऽ। आधुनिक परिवेशक अनुकूल ओ अप्पन जीवन यापन केने केना सहज शिकारी जकाँ जीब रहल अछि। शिकार कतेक प्रथा अपना एठाम सभ दिनसँ रहल अछि, मुदा से अप्पन नहि, अप्पन बस एतबे जे के कोन तरहक शिकारी बनिकऽ केहेन शिकार करै छैथ।

गाममे रविकान्त काका ओहन लोक छैथ जे लाखो लोकक बीच अप्पन जीवनक परिचय देने छैथ। ओ निर्विवाद रूपेँ मानि रहल अछि जे जातीय उन्माद लोकक मनकेँ तेना मोथि देने अछि जे नजरि बन्हाकऽ एक सीमामे केन्द्रित भऽ गेल छइ। एकर जीवन्त उदाहरण आँखिक सोझमे अछि जे जातीय दृष्टिसँ समाजक ओहन लोक जे निचियाँसँ अबै छैथ, ओ जँ कला वा विज्ञान वा कोनो पैघ ज्ञान अप्पन कर्मसँ अर्जित करै छैथ, तनिको आगूक लोक माने ऐगला जातिक सोझो, निकृष्ट नजरिसँ नइ देखै छैथ, सेहो केना नइ कहल जाएत। ध्याएर जे अछि ओ सबहक सोझेमे अछि, तइसँ अपने आकि रविकान्तो काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब अछि अप्पन जीवन आ अप्पन कर्तव्यसँ।

रविकान्त कक्काक परिवार थोड़ेक नमहर छैन। माने पाँचक संख्यासँ निचियाँक नहि छैन, दसक संख्यासँ ऊपर छैन। मुदा, की विशेषता हुनकामे छैन जे सभसँ जुड़ल जीवन छैन। अप्पन एतबे।

चौदह गोटेक परिवारक बीच रविकान्त काका किसानी जीवनसँ जुड़ल रहितो अप्पन जीवनयापन ओइ रूपमे केने छैथ-, जइ रूपकेँ कहल जाइए जे ' हम सभमे, सभ हममे' । मन मानि गेल जे रविकान्तो काका टा अप्पन बेथासँ मुक्ति दिया सकै छैथ। बिदा भेलौं। पहिनेसँ रविकान्त काका चिन्हि कऽ बैसल छला आकि आगूमे पड़ला पछाति चिन्हलैन, से तँ ओ जानैथ मुदा निशाएल लोक जकाँ देखिते बजला-

"बालगोविन्द, अहीं सभक देशदुनियाँ छी-, जेना राखी।"

रविकान्त कक्काक विचार कोनो आँजेपर ने चढ़ल। मुदा जहिना लोक लग, लोक अपन लाज बँचबैक कोशिश करैए, तहिना अप्पन बीचबचाव करैत -

-વળઊૈ

"કાકા, ૬ અહાઁ સન ભેઊ ળે હમ્મ૧ પ્૧ાામ ક૧વ પછુઆએઊ અછિ આ અહાઁ કી"કહાઁ કહૈ છી।-

અપ્પન વ઼ચિા૧કેં સમ્હાએૈત ૧વ઼કાિન્ત કાકા વળઊ-

"કી કહાઁ, કહાઁ કહઊપિહ। તોહ૧ ૧ંગ મદ્દી એક૧ નૂપ દેખ્યા મુહસઁ નકિૈઊ ગેઊ-"દહકા નર

મનમે ભેઊ, મુહસઁ ળે વ઼ચિા૧ નકિૈઊ ગેઊ આ વ઼ાામ સ્વ઼નૂપ ને આગૂ વઢત આકિ મદ્દી નર દ઼ આકના ગ૧ભેમે નાશ ક઼ દેવર? મુદા વળઊૈ કછિુ ને। વળઊૈ એતવે-

"૧ંગનૂપ દેખ્યિ દિવહ૧ાયિા સભ ચન્હિૈએ-, અહાઁ કેના ચીન્હ ગેઊૈ?"

હમ૧ વાત સુનિ ૧વ઼કાિન્ત કાકા ઙ્હાકા માન૧કિ઼ તઁ નહિ મુદા મુસ્કુનીસઁ આગૂ વઢિ, હઁસૈત વળઊ-

"દેખ્યવહક ળે કોનો મૂ૧્તિ હુઅએ। આ ચાહે માટકિ મૂ૧્તિ હુઅએ કિ પાથ૧ક આકિ કાિગળપ૧ છાપઊ હુઅએ કિ ભીતપ૧ પાડ઼ઊ હુઅએ, આક૧ ૧ંગનૂપ દેખ્યિ-અપ્પન મન આેહને ખુશી વ઼ા દુખી હોઇએ, ળેહેન ળીવ઼ન ૧હૈએ।"

૧વ઼કાિન્ત કક્કાક વ઼ચિા૧ સુનિ અપન મન ચકચુકાએ ઊગઊ। તઁએ કહઊૈન -કાકા", ની ક ળકાઁ નર વુહઊૈ?"

અપ્પન હાનિ દિખ્યિ આકિ સિમાળક ચઊૈન દેખ્યિ, સમાળક વાતચીતક ચઊૈનમે -શૂસ ળોડ઼િ ઊિક અપ્પન ળાનકાનીક પ૧ચિય઼ દઙ્ગો અછિ-એહેન અછિએ ળે દૂઙી, તર અનુકૂઊ કહઊૈ અછિ। હમ્મ૧ પૈછઊ ળીવ઼ન ૧વ઼કાિન્ત કાકા આંકિ નેિને છૈથ। સમાળક વીચ શકાિની વ઼એહ સભ ને ભેઊ ળે ળીવ઼નક હ૧ ક્ષેત્૧ક એકએક -પહઊકેં આઁકિ અપ્પન શકાિ૧ક વ઼ન નર્િમાતિ કએ, શકાિની વનિ ળીવ઼ન ગુદસ કનૈ છૈથ। અપ્પન આઁકક અનુકૂઊ ૧વ઼કાિન્ત કાકા સેહો આઁકિ નેિને છૈથ ળે વાઊગોવ઼ન્દિક ળીવ઼નમે નિનિ્ત૧તા નર અછિ। ળઁ નિનિ્ત૧તા ૧હૈત તઁ એક દ઼ૃષ્ટિકિ અનુકૂઊ એક્કે સ્થાનપ૧ ઙાઢ઼ ભ઼ એક૧ંગ સમાળ વ઼ા દુનયિાઁકેં દેખ્યૈત, મુદા સે તઁ નહિ અછિ। પુ૧ુખ્યનાનીક વીચ ખાઊ પ્૧કૃ-તકિ દૂની નર અછિ વિઊકિ ળીવ઼નક અસંખ્ય઼ પહઊક દૂની સેહો અછિ। ૧વ઼કાિન્ત કાકા વળઊ-

"વાઊગોવ઼ન્દિ, તોના હમ કી કહ્વહ, તૂઁ તે અપને સભ કછિુ ળનૈ છહ।"

૧વ઼કાિન્ત કક્કાક વ઼ચિા૧ સુનિ મિનમે તુષ્ટિ એવે કએઊ, કિએ તઁ હ૧ મનુક્ખક

𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒱𑒞𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒲, 𑒮𑒦𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱, 𑒁𑒢𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒲। 𑒖𑒹𑒿 𑒔𑒰𑒩𑒳𑒢 𑒣𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒢𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒂𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒅𑒩𑒏 𑒣𑒲𑒚𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒖𑒱 𑒂𑒑𑒴 𑒏𑒩𑒱 𑒢𑒹 𑒕𑒕𑒰𑒛𑓃𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒣𑒱𑒛𑓃𑒋-𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒩𑒪 𑒥𑒖𑒰 𑒑𑒹𑒪 !

"𑒏𑒰𑒏𑒰, 𑒖𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒞𑒿 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒪𑒑𑒮𑒿 𑒪' 𑒏' 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒱𑒨𑒰𑒧𑒯𑒰𑒖𑒢- 𑒞𑒏, 𑒁𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒹𑒥𑒱𑒞𑒾।"

𑒩𑒫𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒥𑒰𑒥𑒴𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠, 𑒁𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒃 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒩𑒴𑒛 𑒣𑒩𑒰𑒫𑒱𑒩𑒰𑒩𑒏 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒴𑒮 𑒯𑒋𑒞।-𑒖𑒲𑒿𑒙 𑒖𑒰𑒨𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒮𑒧𑓂𑒫𑒢𑓂𑒨 𑒁𑒣𑒣𑒢 𑒕𑒪। 𑒢𑒃 𑒢𑒧𑒱𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒁𑒕𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒔𑒪 𑒞𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒧𑒱𑒞𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒣𑒕𑒰𑒩𑒪 𑒖𑒹𑒪, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒪𑒱𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒞𑒼 𑒔𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒞𑒼𑒯𑒩?"

𑒩𑒫𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒚𑒯𑒏𑒪। 𑒚𑒯𑒏𑒪 𑒄 𑒖𑒹 𑒣𑒮𑒱𑒮𑒰𑒣𑒯𑒱𑒢𑒲𑒏 - 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒁𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒔𑒰𑒩𑒰𑒧𑒹 -𑒢𑒹-𑒖𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒔𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒋 𑒞𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒁𑒋 𑒄 𑒯𑒼 𑒬𑓀𑒏𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒖𑒹𑒙𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒥𑒢𑒻𑒋। 𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲 𑒁𑒮𑒖𑓂𑒖𑒢 𑒂𑒏𑒱 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒪𑒏 𑒒𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒞𑒱𑒩𑒞𑒰 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒻𑒨𑒹 𑒏𑒰𑒪 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒬𑓀𑒏𑒰 𑒮𑒦𑒰 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒄 𑒧𑒞𑒱𑒩𑒞𑒰 𑒏𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒔𑒪𑒞 𑒂 𑒏𑒼𑒢 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒔𑒪𑒞। 𑒞𑒿𑒋 𑒩𑒰𑒧 𑒂 𑒩𑒯𑒞 𑒞𑒏 𑒏𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒜𑒙 𑒮𑒧𑒖𑒫 𑒖𑒃𑒨𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒞-𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒏𑒣𑓂𑒣𑒢, 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒚𑒹𑒏𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒖𑓂𑒖𑒢 𑒪𑒏𑒏 𑒧𑒞𑒱𑒩𑒞𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒖𑒩𑒪 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞। 𑒍 𑒄 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒖𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒯𑒩 𑒖𑒲𑒫 𑒖𑒢𑓂𑒞𑒳𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒑𑒳𑒝-𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒪𑒃 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱।

𑒍𑒢𑒰, 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒏𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏' 𑒏𑒯𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 -' 𑒮𑒖𑓂𑒖𑒢 𑒖𑒢𑒮𑒿 𑒢𑒹𑒯 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒟𑒱𑒏'। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒹𑒯 𑒏𑒩𑒥𑒹 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒕𑒲, 𑒞𑒹𑒞𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱, 𑒢𑒹𑒯 𑒖𑒹𑒪 𑒣𑒕𑒰𑒩𑒪 𑒢𑒱𑒧𑒰𑒯𑒥𑒼 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒟𑒱𑒏। 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒢𑒧𑒱𑒞𑒢𑓂𑒞𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒞 𑒂 𑒞𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒔𑒪𑒻𑒋। 𑒖𑒿 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒧𑒰𑒯𑒻𑒏 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒏𑒼 𑒞𑒿 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒧 𑒖𑒏𑒞 𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒖𑒃𑒨𑒹 𑒖𑒰𑒋𑒥। ' 𑒪𑒪𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒢 𑒧𑒻 𑒑𑒃, 𑒧𑒻 𑒦𑒲 𑒯𑒼 𑒑𑒃 𑒪𑒪'। 𑒮𑒖𑓂𑒖𑒢 𑒮𑒢𑓂𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒲, 𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒼𑒯 𑒂 𑒕𑒲। 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑒖𑓂𑒖𑒢𑒣𑒢 𑒮𑒣𑒰𑒙 𑒪𑒏𑒰-𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 -𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲𑒏 𑒁𑒣𑒢-𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲 𑒍𑒯𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒔𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒖𑒣𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒩 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒕𑒱।𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒣𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒥𑒢𑒥𑒉 𑒔𑒰𑒯𑒥, 𑒞𑒐𑒢 𑒙𑒏𑒩𑒰𑒯𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃𑒏 𑒆𑒣𑒩𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒗𑒩𑒢𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒐𑒢 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃𑒏 𑒗𑒩𑒢𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒪𑒾𑒉 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒑𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒫𑒹𑒬 -𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒳𑒢𑒱, 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒧𑒢 𑒡𑒱𑒏𑓂𑒏𑒰𑒩𑒪𑒏। 𑒡𑒱𑒏𑓂𑒏𑒰𑒩𑒪𑒏 𑒄 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒉 𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰𑒏 𑒑𑒰𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒪𑒑𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒲। 𑒥𑒖𑒪𑒾-

"𑒏𑒰𑒏𑒰, 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰𑒨𑒮𑒿 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒥𑒢𑒪 𑒂 𑒁𑒐𑒢 𑒏𑒼𑒢 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒲?"

𑒯𑒹𑒩𑒰𑒉𑒪 𑒔𑒲𑒖 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒰 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒐𑒳𑒬𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒉 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒩𑒫𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒉𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒉𑒏𑒮𑒰𑒉 𑒞𑒏 𑒑𑒢𑒱-𑒮𑒿-𑒪𑒃𑒉, 𑒑𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒪𑒃𑒉 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑓀𑒏𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒄 𑒢𑒃 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒉 𑒖𑒹 𑒉𑒏 𑒂 𑒮𑒰𑒉𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒫𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒉𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒩𑒧𑒹 𑒩𑒫𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰𑒨 𑒂𑒩 𑒏 𑒛𑒱𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒉𑒪 𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲 𑒕𑒻𑒟।𑒉𑒮.𑒉.𑒖𑒐𑒢 𑒋 𑒂𑒄 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒯𑒱 𑒋 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒠𑓄 𑒉𑒮.𑒉.

"𑒩𑒯𑒻𑒟। 𑒠𑒹𑒢𑒹

𑒩𑒫𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒾, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒞𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒖𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒮𑒰 𑒖𑒑𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒂𑒩𑒼 𑒑𑒯𑒩𑒰𑒃𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒦𑒹𑒪। 𑒞𑒿𑒉 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒩𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨" -𑒢𑒹, 𑒏𑒰𑒏𑒰?"

𑒩𑒫𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒏 𑒧𑒾𑒏𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒰𑒃𑒨𑒹 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒰𑒃 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒬𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒹𑒪𑒻, 𑒞𑒃 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒧𑒹। 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒑𑒜𑓃𑒻𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒂𑒉𑒪 𑒖𑒹 𑒉𑒯𑒹𑒢 𑒏𑒟𑒰 𑒯𑒧𑒯𑒲𑓀 𑒏𑒱 𑒮𑒖𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒉। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒏𑓀𑒚𑒰 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒯𑒲 𑒮𑒼𑒔𑒏 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪। 𑒮𑒔𑒧𑒳𑒔 𑒖𑒃 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒕𑒲, 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑒔𑓂𑒔𑒰𑒃 𑒕𑒲।"

𑒥𑒖𑒻𑒞𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒫𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒮𑒤𑒩𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒧𑒹 --𑒥𑒖𑒪𑒾 𑒔𑒏𑒨𑒱𑒥𑒻𑒞 𑒣𑒰𑒕𑒴𑒮𑒿 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒉 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒹𑒙𑓂𑒩𑒼𑒪 𑒮𑒚𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒉।

"𑒏𑒰𑒏𑒰, 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒫𑒰 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒖𑒼𑒏𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒉-, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑓀𑒑𑒏 𑒮𑒢𑒱𑒯

अछल छैक, तखन ओ कटनि जाइत, तहिना अहाँ करि सकैत छी?"

ओना, रविकान्त काका कटल नहि छल, विस्मित भऽ गेल छल, हुनक बात सुनि विह्वल होइत बजल-

"वौआ, वृद्धाश्रम मात्र जीवन अनमोल रहैत अछि वयसेँ जे यात्रा यात्राकेँ यात्रा केलैन आ कौशलजीवन तकर रचित जे रहैत, ओ जहिना लंकामे प्रवेश कयसँ पहिने एकरौसिया हनुमान समुद्र लंघन केने छल तहिना ओ एक सतत परीक्षासँ प्राप्त कऽ लेलैन जे हुनका आइतक पहुँचा, एखन "देखैत।

अखन तक अपना समाजमे दू तरहक यात्रा प्रवाहित होइत रहल अछि पहिल - यात्रा-शासन, जेकरा राजयात्रा सेहो कहि सकै छी आ दोसर अछि-जन - यात्रा, जे सामाजिक जीवनमे जन्म लऽत चलैए समाजक अधिकांश जाति राज जातिक विभाजित कर्म यात्रासँ सेहो सम्बन्धित रहल अछि- जे छऽहे एखनो लोकर हरक्षेत्रमे जीवनक अछि ठाढ़ सेहो समाज कर्मसँ यात्रासँ सम्बन्धित रहल अछि लोकर वयसाटा नहि-राज परिवार, वेवहारोमे जन होइतो जातिक उच्च परिवार मात्र वृद्धाश्रम यात्रासँ दूरी बनल अछि- यात्रासँ ओर, मारे राजयात्रासँ अलग रहैत।-

पाछूसँ उचकयिवैत बजलौ-

"काका, एना वीच योगसलिपि केतौ चक्कामे वीचमे गाड़ी रोकि करि दऽ छथि- "अछि ते ते

हृदय खोलि रविकान्त काका बजल-

"योगसलिपि नऽ अछि, करनो तँए जाएत कप ढोल भऽ-करनो गाड़ीमे हव- "जाएत भऽ वेसी कम बेकम

शुरूसँ अन्त धरिक जीवन एक स्वस्थ प्रशासक रूपमे वृद्धाश्रम मात्र रहैत। सेवा निवृत्त भेल पछाइत, तावैत रविकान्त काका सेहो एक जीवन टपि दोसर जीवनमे प्रवेश कऽ चुकल छल, पछाइत पुन-हुनकामे लिखल : पढ़लजागैत। वीचक समय व्यसनताक कारमेँ अव्यवस्थित भऽये गेल छेलैन, जऽसँ जीवन असत-बजलौ व्यसत रहैत।-

"अपनेक जे सुनल वियार, हाइ स्कूलक कथा अपनेक मोने अछि, ओ पुन:

𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒑𑒰𑒪?"

𑒢𑒫𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒍𑒢𑒰, 𑒮𑒞𑒰𑒮𑒲𑒏)१९८७ 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒪 𑒒𑒩𑒏 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒅 𑒞𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑒥 (𑒏 𑒏𑒞𑒱𑒫𑒩𑓂𑒏𑒹𑒿𑒠𑒫𑒱𑒰𑒢 𑒟𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒿𑒋 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒳𑒏𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒂𑒯𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰𑒏 𑒍 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒳𑒢 𑒂𑒯𑒪। 𑒍𑒢𑒰𑒃𑒞 𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒏 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒱 : 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣𑒞 𑒯𑒰𑒟𑒹 𑒗𑒰𑒏 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒯𑒰𑒟𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒋𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒞𑒱𑒢𑒞𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒍𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒪 𑒮𑒧𑒢𑓂𑒫𑒨 𑒗𑒰𑒨𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑒣𑒩, 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒞𑒰 𑒥𑒹𑒩 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒩𑒱𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧-

"𑒣𑒰𑒞𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒢𑓂𑒫𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪।

𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒥𑒖𑒰 𑒑𑒹𑒪-

"𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪?"

𑒢𑒫𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

" 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒹𑒪𑒩𑒱𑒢 𑒖𑒹 ' 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒣𑒻𑒕𑒪 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒞𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒲, 𑒏𑒯𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞, 𑒮𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒏𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒻𑒞𑒩𑒱' । 𑒞𑒹𑒣𑒩 𑒯𑒻𑒪𑒮𑒏 𑒍 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢, ' 𑒣𑒛𑒰 𑒠𑒱𑒁' ।"

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒮 -𑒋𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒫𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒩𑒻𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒮𑒏-𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒞𑒹𑒿 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒑𑒞𑒱𑒫𑒱𑒡𑒱 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒕𑒻𑒢-, 𑒣𑒋𑒯 𑒮𑒼𑒔 𑒥𑒖𑒪𑒾𑓀-

"𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢?"

𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒳𑒂𑒃𑒞 𑒢𑒫𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

" 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒞𑒿 𑒍𑒯𑒢𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒂𑒃 𑒕𑒲।"

𑒞𑒯𑒱 𑒥𑒲𑒔 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒳𑒦𑒰𑒫 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒳𑒦𑒰𑒫 𑒦𑒹𑒪 𑒍𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒲 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒢𑒲 𑒠𑒴𑒩𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒫𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒫𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏। 𑒍𑒢𑒰, 𑒖𑒿 𑒢𑒨𑒱𑒨𑒰𑒿𑒮𑓂𑒟𑒲𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒰𑒣𑒋 -𑒆𑒣𑒩 𑒑𑒖-𑒔𑒰𑒯𑒱𑒥 𑒞𑒿 𑒍𑒏𑒢𑒼 𑒪𑓀𑒏𑒰𑒏 𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒢𑒰𑒅𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒞𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒫𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒢𑒫𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒖𑒣𑒢 𑒁𑒖𑒨𑒰𑒑𑒞 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒣𑓂𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒑𑒰𑒧 𑒠𑒱𑒁 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒢𑒹।-𑒒𑒩𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒣-𑒍𑒢𑒰, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒅𑒚𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒥𑒖𑒪𑒾𑓀 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒬𑒳𑒪 𑒃 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒼𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒖𑒹 𑒁𑒖𑒨𑒰𑒑𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑 -

સપ્પ ભેઉ-ન્વ઼કિાન્ (ન કાકાકેં કી ગાપન સે સુનવે ને કેઊ। શ્રપના મનમે ૩ઙ઼ ગેઉ છઉ ળે એક દસિ સાઢે પાઁચ ક્વ઼ન્ટિઉ માને મોટસોટ ઊક છેથ-, દોસન દસિ પનનહ્વીસ કઊિક નહિ શ્રછિ-, સેહો કેના શ્રપના મને માનવ઼ા એકના શૂસા કેના કહ્વૈ ળે એક દસિ (નઉઊક વીચ (નઉઊ સાએ (નઉઊક વીચ ઊક સુ(નએ શ્રા દોસન દસિ શ્રામવઙ઼ક ન-કટહ્ન પીપન-ચ્યિઁક ઘાસશૂસપન નરૂ સુ(નએ-, સેહો કેના નરૂ કહ્વૈ।

(નહિ વીચ ચાહ શ્રાવિ ગેઉ। શ્રપ્પનશ્રપ્પન વ઼ચિાનસઁ શ્રાગૂ વઢ઼િ ળીવ઼નક ચાહ્ક - વ઼ચિાન, (નીન ઘોટ ચાહ પીઉક પછાશ્(ન ૩ઙ઼એ ઊગઉ।

શ્રપન મંતવ્ય દિ(નો નાિઙ઼સ(ના૭ઙ઼વ઼દિહ઼ા૦ગામાિઙ઼યોમ **પન પઙ઼ાઉ।**

રૂ઼રૂનન્દ વ઼ઊિસ નાય઼- શ્રાદન્સ ૭



નન્દ વ઼ઊિસ નાય઼

શ્રાદન્સ ૭

છશ્ર વળે સાઁહ્મે ચૌકપન એઊ। મોવારૂઉમે શ્રસ્વુક ષ્વોઉઊ (નઁ દેષ્પે છી ક(નાક ગોટા શ્રપન-શ્રપન પ(નાળીકેં સમ્માન કઽ નહ્ઉ હેના કયિો શ્રપના પ(નાળીકેં શ્રાનતી દેષ્પા નહ્ઉ છેથ (નઁ કયિો શૂઉક માઉ પહિા નહ્ઉ છેન, કયિો શ્રપના

𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒮𑒖𑒰𑒢𑒲 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃 𑒐𑒳𑒂 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒣𑒋𑒩 𑒕𑒳𑒥𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒢। 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒟 𑒂 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒣𑒩 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒟।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒦𑒰𑓀𑒑𑒚 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒖𑒹 𑒂𑒃 𑒤𑒰𑒠𑒩𑓂𑒮 𑒛𑒹 𑒕𑒲। 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒾𑓀- ' 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒥𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒏𑓄 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒟।'

𑒌 𑒋𑒏 𑒫𑒰𑒏𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒾𑓀। 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒣𑒩 𑒤𑒰𑒠𑒩𑓂𑒮 𑒛𑒹𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒤𑒼𑒙𑒼, 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒕𑒪।

𑒣𑒋𑒯 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞-𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒤𑒼𑒙𑒼𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒱𑒏𑓄 𑒁𑒿𑒙𑒻𑒏 𑒑𑒹𑒪। 𑒍 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞𑒏 𑒤𑒼𑒙𑒼 𑒕𑒪। 𑒤𑒼𑒙𑒼𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒱𑒫𑓀𑒑𑒞 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒞𑒮𑓂𑒫𑒲𑒩𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒪𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒰 𑒂𑒩𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒑𑒾𑒂𑒿। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒮𑒿 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩 𑒡𑒩𑒱 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒾𑓀। 𑒞𑒿𑒋 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒲𑒂𑒩𑒹 𑒖𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒐𑒹𑒞𑒲𑒯𑒩 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒂 𑒮𑒳𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒥𑒼𑒃𑒢-𑒥𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒱 𑒏𑒱𑓄 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒾𑒪𑒐𑒱𑒢।

𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒪𑒰𑒪𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒞𑒿 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞𑒼 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞𑒏 𑒥𑒯𑒰𑒪𑒲 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰-𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒣𑒠𑒣𑒩 𑒖𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒲𑒞𑒲𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒖𑒲 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰-𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓀𑒔𑒰𑒨𑒞 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏𑒏 𑒠𑒩𑒖𑒰 𑒠𑓄 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒨𑒲 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒂 𑒣𑒢𑒩𑒯 𑒮𑒰𑒋 𑒩𑒴𑒣𑒻𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒧𑒰𑒮 𑒧𑒰𑒢𑒠𑒹𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒰𑒏𑓄 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒻𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒧𑒰𑒮 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒂𑒥 𑒞𑒹 𑒮𑒯𑒖𑒹 𑒣𑓀𑒔𑒰𑒨𑒞 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏𑒏 𑒫𑒹𑒞𑒢 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒂𑒏𑒱 𑒠𑒩𑒧𑒰𑒯𑒰 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒂𑒏𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒠𑒹𑒨 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼, 𑒞𑒲𑒮 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒙𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧𑒰𑒮 𑒖𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒢। 𑒐𑒰𑒋𑒩 𑒖𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒢 𑒣𑓀𑒔𑒰𑒨𑒞 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒂𑒏𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒟𑒧𑒱𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒹𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒢 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒢 𑒪𑒰𑒖।

𑒯𑒿 𑒞𑒿 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒤𑒼𑒙𑒼𑒣𑒩 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒰 𑒂𑒩𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾𑓀। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒿𑒮𑒲 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒂 𑒞𑒲𑒢 𑒥𑒩𑒐 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒳𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒚𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧𑒰𑒏 𑒩𑒲𑒪 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪।

रवि दिनक समय रहए बाजारक काजसँ हमरा ड्यूटी जेबाक छेलए। अपना तँ एकटा साइकिल अछि सेहो पंचर भऽ गेल छेलए। रंजीतकेँ मोटर साइकिल छइ। ओहो बरमहल ड्यूटी बाजार जाइत-अबैत रहैए। सोचलौं, रंजीते ओइठाम जाइ छी, जँ ओ ड्यूटी जेता तँ हुनके मोटरसाइकिलपर ड्यूटी चलि जाएब आ जे बाजारक बेगरता अछि, सभ कऽ हुनके संगे ओइ मोटरसाइकिलसँ वापसो आबि जाएब। एह सभ सोचि हम कपड़ा पहिर एकटा झोरा लऽ रंजीत ओइठाम विदा भऽ गेलौं।

रंजीतक घर हमरा घरसँ लगभग अढ़ाइ किलोमीटरक दूरीपर अछि। जखन रंजीतक घरपर पहुँचलौं तँ ओ कपड़ा पहिर मोटरसाइकिल निकालि रहल छला। हमरा देखिते पुछलैन-

"ड्यूटी चलब भाय?"

हम कहलियैन- "हँ, एलौं हेन तँ एह सोचिकऽ अपन साइकिल पंचर भऽ गेल अछि। सोचलौं अहींक गाड़ीपर चलि जाइ आ बाजारक बेगरता पूरा कऽ ओतो अही गाड़ीसँ आपस आबि जाइ।"

रंजीत बजला-

"तँ चलू ने। ऐमे कोन हर्ज छै।"

रंजीत गाड़ी स्टार्ट केलैन आ हमरा कहला, 'बैसू भाय, गाड़ीपर।'

तखने रंजीतक पिताजी दलानक चौकीपर सँ उठैत मोटरसाइकिल लग आबि कऽ रंजीतसँ पुछलखिन-

"बौआ, ड्यूटी जाइ छहक?"

रंजीत बाजल-

"हँ, ड्यूटी जाइ छी। की बात?"

तैपर भखिआनी काका कहलखिन-

"हौ बौआ! ब्लड-प्रेसरक दबाइ काल्हियेसँ सधि गेल। कीनने अबिहह।"

तैपर रंजीत कहलकैन-

"પાર છઇ?"

જાપ્પાની કાકા વાજલ-

"હમના લગ કોન પાર નહિ। વાન્યો પાલિસીન જે જેટાય સેહો તોહિ લડ લર છહક।
તખન હમના લગ કોન પાર નહિ।"

નંદીત પોદ્દાર વાજલ-

"તગ આવિ ગેલૈ તોહન શ્ત્રમાસ્સસઁ। અપ્પન પાર નહિ અછિ ગહુમ વાકૈ છૈ તઁ
આનિ દેર છિઐહ।"

ઈ કહિ નંદીત મોટનસારકાલ સ્ટાન્ટ કેલક આ નિમ્મિત લલ વ઼દિ જાડ ગેલ।
નિમ્મિત વાજાનમે નંદીત કતાક ચાજ-વ઼ૌસ કોનલક મુદા જાપ્પાની કાકા લલ
વ્લડ પ્રેશનક દવાર નહિ કોનલક।

પાઁચમ દિન સુનલિએ, જાપ્પાની કાકા મની ગેલા। હુનકન વ્રેન હેમરેજ જાડ ગેલૈન।
હમ દેખએ ગેલિએન, જાપ્પાની કાકા મની ગેલ નૈથ।

હમના દેખાતિ સુગાયિ કાકી કનૈત વાજલિ-

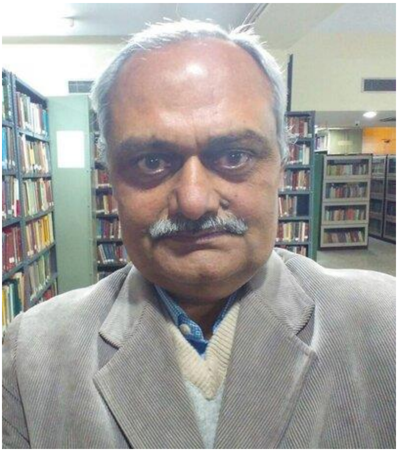
"વૌઆ નન્દ, પાઁચ દિન પહિને વુડ઼હાક વ્લડ પેસનક દવાર સાધિ ગેલ છેલર।
પાઁચ દિનસઁ વ્લડ પેસનક દવ઼ાર નર ખેને છેલર।"

જાપ્પાની કાકાકેં દેખૈલ જે સભ આવે જાર છલા, સભ ગોટા એકેટા વાત વાજૈથ-

"વ્લડ પ્રેશનક દવ઼ાર વન્ન જાડ ગેલાસઁ વુઢ઼ાક વ્લડ પ્રેશન વઢ઼િ ગેલૈન તઁએ
વ્રેન હેમરેજ જાડ ગેલૈન આ જાપ્પાની કાકા મની ગેલા।"

અપન મંતવ્ય દિનોનાલિસનાડડ્વ઼દિહા઼ગામાલિયોમ **પન પઠાઉ।**

३.४.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २६-३० म खेप



रवीन्द्र नारायण मिश्र

मानुषीमिह (उपन्यास)- धारावाहिक

खेप २६-३०

२६

ई संसार आश्चर्यसँ भरल अछि। एतए सभकिछु स्वयं नियन्त्रित होइत रहैत अछि। हम-अहाँ तँ नियतिक हाथक एकटा मानुषी यन्त्र छी। जीवन यात्रामे के कतए भेटत, के कतए शवाक भए जाएत कोनो ठेकान नहि। कहि सकैत छी जे सभ भाग्यक खेल अछि। जयन्त सन अनाथ बालक एहन महान विद्वान भए गेलाह। ततबे नहि, एतेक सुयोग्य होइतहु आ मौका भेटलोपर ओ राजसुखकेँ छोड़ि अपन गाम बैसलाह। ई उम्मीद रहनि जे अपन पूर्वजक कीर्तिकेँ आगू करब। समाजक सेवा करब। गाम-घरमे शिक्षाक प्रचार-प्रसार करब। मुदा से करब आसान नहि भेलनि। अपने परिस्थिति बाधक भए

गेलखिन। कहबी छैक जे जेकरा मनुक्खकेँ अपन स्वार्थक आगू किछु नहि देखाइत अछि। सएह हाल रहनि सुयाकान्तक। नहि तँ पाठशालाकेँ बुलडोजर लगा कए ढाहि देबाक की औचित्य छल? एहन तँ नहि छल जे ओ नस्तापन जनैत रहथि। घर तँ हुनका रहबे करनि।

सुयाकान्तक वयोवृद्ध पिता देवीकान्त हुनका कैकबेर कहलखिन-

" सुयाकान्त! ई जगह सार्वजनिक छैक। हमरा लोकनिक पूर्वजक कृति अछि। जयन्त विद्वान छथि हुनकर अभिलाषामे सभक कल्याण अछि, आदि, आदि।"

मुदा सुयाकान्त तँ छलाह उपोरसंख्य। बापेकेँ यमका देलाह। दस हजार अठजति केलाह। ओहो की करितथि? एकटा बेटा रहनि। वृद्धावस्थामे के देखितनि? तेँ एकसरे ओ बहुत किछु नहि कए सकैत छलाह। दक्षिणवारिटोलक चौधरीसभकेँ सुयाकान्त माथि चढ़ने छल। ओ सभ छोटछीन लोकमे पड़िकए ओकर पाछू-पाछू घूमैत रहैत छल। उत्तरवारिटोलक लोकसभ जरूर विरोध केलक आ केस कएने रहल अछि, मुदा थाना पुलिस सभ सुयाकान्तक संग दए रहल छैक। लोकसभ देखिते रहि गेल आ पाठशाला बुलडोजरक चोट पड़िते हहरि कए खसि पड़ल। किछुए दिनमे ओ जगह सपाट भए गेल छल। ओहिठाम सुयाकान्त अपन घर बना लेलाह। आब तँ ई हाल अछि जे ओतए कहियोपर केओ पाठशालाक चर्चा नहि करए चाहैत अछि। दक्षिणवारिटोलक लोकक कहब-
"ककरा लेल कानू? जकरा लेल कानब तकरा आँखिमे नोरे ने?" माने जे दक्षिणवारिटोलवलाक छैक पाठशाला। ओएहसभ ओहिमे शिक्षक होइत छलाह, हुनके बालबच्चा ओहिमे विद्यार्थी रहैत छल। उत्तरवारिटोल लोकसभ तँ जन बनिहार छल। बेसी सँ बेसी ओहिमे रखबार वा एहने कोनो छोटमोट काज भेटि जाइत छैक। समय बदलैत छैक। ओकरासभक समाजपर वर्चस्व बढ़लैक। शिक्षा आ संपत्ति दुनूमे ओ सभ आगू भए गेल। तखन नहि बिरियाने श्रेष्ठ भए गेलैक। तैँ ने ओएहसभ जयन्तक संग ठाढ़ भेल। से तँ भेल, मुदा

𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩 𑒖𑒹 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒮𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒞। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒡𑒰𑒧 𑒖𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒫𑒱𑒫𑒬 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒄 𑒮𑒦 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒮𑒲𑒢𑒹𑒧𑒰𑒏 𑒩𑒲𑒪 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒂𑒃 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒧𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒧𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱।

𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒫𑒱𑒧𑒼𑒔𑒢𑒏 𑒑𑒩𑒱𑒧𑒰𑒧𑒨 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫𑒏 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒧𑓀𑒔𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒖𑒧𑒰𑒢 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒞𑒿 𑒩𑒯𑒱-𑒩𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒔𑒏𑒱-𑒅𑒔𑒏𑒱 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒱। 𑒂𑒃 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒰𑒑𑒱𑒍 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒹𑒯𑒢𑒹, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒟𑒱। 𑒑𑒾𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒝, 𑒢𑒧𑒑𑒩, 𑒮𑒼𑒙𑒪 𑒠𑒹𑒯, 𑒞𑒹𑒖𑒮𑓂𑒫𑒱𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒦𑒰𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒪।

" 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒯𑒼 𑒞𑒿 𑒂𑒖𑒳𑒏𑒮𑒦𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒋"- 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒖𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯।

"𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨। 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒁𑒕𑒱।"- 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯।

𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 '𑒖𑒨 𑒖𑒨 𑒦𑒻𑒩𑒫𑒱 𑒁𑒮𑒳𑒩 𑒦𑒨𑒰𑒫𑒢𑒱" 𑒑𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒑𑒲𑒞 𑒑𑒹𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒢𑒹𑒞𑒵𑒞𑓂𑒫 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒮𑓀𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒖𑒑𑒠𑓀𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒩𑒰𑒡𑒝𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒲𑒢 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒖𑒲, 𑒢𑒰𑒑𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒞𑒰𑒏𑒱 𑒏𑒋 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱-

" 𑒄 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒡𑒰𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒮𑓀𑒞 𑒢𑒰𑒑𑒥𑒰𑒥𑒰। 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒏𑓀𑒣𑒰𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩𑒏 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪। 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒟𑒰 𑒞𑒿 𑒙𑒑𑒩 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒰𑒑𑒧𑒞𑒲𑒧𑒹 𑒛𑒳𑒥𑒱 𑒏𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝 𑒠𑒹𑒥𑒋 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒹𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒖𑒹 𑒍 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒬𑒲𑒩𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒠𑒹𑒟𑒱'

𑒢𑒰𑒑𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒔𑒍𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱।

यात्रुकालसँ लोक बाजि उठल-"नागबाबाक जय! "

नागबाबा कहैत छथि-"हम तँ मात्र निमित्त छलहुँ। जयन्तकेँ लिखल छलनि तेँ हम हुनका जानकीधाम आनि सकलहुँ। ओना हिनका विद्वान बनेबामे आचार्यश्रीक अमूल्य योगदान अछि संगे कालीकान्त सेहो हुनका उत्साहित करैत रहलथि। हमरा लोकनिक हुनका बहुत-बहुत आशीर्वाद अछि। निश्चय ओ मानवताक हेतु एकटा वरदान सिद्ध हेताह।"- से कहि नागबाबा बैसि गेलाह।

"आब हम जयन्तसँ आग्रह करबनि जे अपन एहि शोधग्रंथक बारेमे हमरा लोकनिकेँ किछु जानकारी देथि'

जयन्तक शोभा देखैत बनैत छल। पचीस सालक तेजस्वी युवक पीत वस्त्र पहिरने जहाँ ठाढ़ भेलाह कि एकस्वरसँ लोक बाजि उठल-

"जयन्त अमर रहथु! "

जयन्त संपूर्ण एकाग्रतासँ अपन शोधग्रंथक बारे मे बाजि रहल छलाह।

"ई ग्रंथ हमर पूर्वज द्वारा कएल गेल शोध कार्यकेँ आगू बढ़ेबाक प्रयास मात्र अछि। एहिसँ बहुत बेसी कार्य ओ सभ पहिनहि कए चुकल छथि। हम तँ मात्र ओहि कार्यकेँ आगू केलहुँ अछि। ई ग्रंथ मूलतः मिथिलाक संस्कृतिक गौरव गाथा थिक। मिथिलाक माटि-पानिमे कतेको मनीषी लोकनि उत्पन्न भेलाह आ अपन सर्वस्व ज्ञान संचयमे लगा देलाह। हमरा विश्वास अछि जे पाठक लोकनिकेँ एहिसँ मिथिलाक संस्कृतिक बारेमे बहुत किछु बुझबाक मौका भेटतनि।"

𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯, 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒖𑒹 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼 𑒪𑒼𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒍𑒖𑒮𑓂𑒫𑒱𑒞𑒰𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒦𑒰𑒭𑒝 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒦 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒧𑒳𑒑𑓂𑒡 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒥 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒭𑒝 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞𑒹 𑒏𑒩𑒋 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒏𑒱 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒙𑒼𑒏𑒪𑒰𑒯-

" 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒢𑒹𑒢𑒰 𑒟𑒱𑒏𑒯𑒳𑒿। 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰 𑒏𑒩𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒼𑒦𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞! 𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒮𑒦𑒏 𑒢𑒏𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒪𑒼𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒕𑒟𑒱𑒯𑒼। 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒏𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒞? 𑒄 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒧𑒨 𑒐𑒩𑒰𑒥 𑒏𑒩𑒥 𑒦𑒹𑒪। 𑒂𑒠𑒱𑒂𑒠𑒱" 𑒍 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒵𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒏𑒱 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒔𑒱𑒔𑒱𑒂 𑒅𑒚𑒪-

“𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒖𑒰𑒅, 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒖𑒰𑒅”। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒣𑒰𑒞𑒲 𑒂 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲 ।" 𑒮𑒾𑒮𑒹 𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒯𑒼𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 । 𑒋𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒦 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒍𑒞𑒋 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒟𑒱।

𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒗𑒳𑒙𑓂𑒙, 𑒥𑒛𑓃𑒲𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒟 𑒢𑒰𑒏 𑒣𑒲𑒔𑒪, 𑒔𑒰𑒢𑒣𑒱𑒩𑒮𑒿 𑒏𑒹𑒬 𑒅𑒛𑓃𑒪 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲 𑒧𑒟𑒱𑒪𑒱𑒏 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒢𑒹𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒞𑒳𑒩𑒱𑒂𑒮𑒦 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒢𑒏𑒣𑒲𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪 , 𑒏𑒹𑒍 𑒧𑒳𑒝𑓂𑒛𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪 । 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒞𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲 𑒥𑒢𑒰𑒏𑒋 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒐-𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒲 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒔𑒰𑒪𑒱, 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒂 𑒥𑒹𑒧𑒰𑒋, 𑒄 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒖𑒰𑒋 - 𑒮𑒋𑒯 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒍 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒮𑒿 𑒞𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒄𑒩𑓂𑒭𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒼𑒢𑒱 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒲, 𑒏𑒲 𑒢𑒯𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒼𑒡𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒼𑒅 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒞𑒧𑒮𑒹𑒪𑒰𑒯-

"𑒏𑒲 𑒁𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲? 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒋𑒯𑒢 𑒂𑒬𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪। 𑒄 𑒮𑒦𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒄𑒩𑓂𑒭𑓂𑒨𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒹𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒙 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒄 𑒅𑒣𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। "

"𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒙𑒼𑒏𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒂𑒩𑒼 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒙 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯।

' 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒯𑒲 𑒏𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒠𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒋𑒯𑒱𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒔𑒩𑒾𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒟𑒱-𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲।'

𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲 𑒪𑒰𑒖𑒹 𑒏𑒚𑒻𑒞 𑒦𑒋 𑒔𑒳𑒣 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒮𑒹 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒧𑒾𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒯𑒢𑒹 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒒𑒮𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒦𑒰𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒪। 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒏 𑒖𑒹 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒄 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒯? 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒖𑒹 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒪𑒻𑒏 𑒮𑒹 𑒦𑓄𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒩𑒧𑒝𑒑𑒩 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒞𑒢𑒰𑒫 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒖𑒲 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒟𑒱। 𑒍 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒮𑒿 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒝𑒰 𑒏𑒋 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒏𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱।

" 𑒂𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒯𑒼𑒋𑒞। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒖𑒪𑒐𑒻 𑒂 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒰𑒢 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒬𑒹𑒭 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒼𑒋𑒞।

𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒋𑒏 𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒑𑒫𑒻𑒨𑒰 𑒮𑒦 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑒻𑒏𑒙𑒰 𑒞𑒿 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒑𑒲𑒞 𑒑𑒹𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒯𑒱𑒩 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒑𑒲𑒞 𑒑𑒼𑒫𑒱𑓀𑒠 𑒑𑒰𑒨𑒢𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍𑒩𑒰𑒂𑒢 𑒕𑒪। 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒑𑒲𑒞 𑒬𑒳𑒩𑒳 𑒏𑒹𑒪𑒲𑒯 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰-

"𑒏𑒹 𑒣𑒞𑒱𑒂 𑒪𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒩𑒹 𑒧𑒼𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒞𑒧 𑒣𑒰𑒮𑒹। 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨, 𑒥𑒹𑒖𑒼𑒛𑓃। 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒋𑒏𑒮𑓂𑒫𑒩𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒯! 𑒫𑒰𑒯! 𑒏𑒋 𑒅𑒚𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒔𑒏𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒳𑓀𑒠𑒩 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒫𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰

ચંદ્રકાિક વાતેમે કતેક વાત વુદ્દેઠ રહનિ? કાઊકાન્ત ચંદ્રકાિક ગાયનપર ઊકક થપડ઼ી સુનિ, સુનિ મંત્રમુગ્ધ રહથિ। એકહિ ક્ષણમે સૌંસે પંડાઠ નિ:શિવ્દ ભાए ગેઠ। ળેના સભાહ્ક ચત્રિ હવિ ઊઠ ગેઠ હો। ળયન્તક ઉત્સુકતાક ઠાँ ઋંતે નહિ રહનિ। ઋો ६ નહિ વૂઝિ સિકઠ રહથિ ળે ચંદ્રકાિ એતેક નીક ગવૈત છથિ ઋા સેહો મૈથિઊમે? એકવેર હુનકા મોનમે શંકા ભેઠનિ ળે કહી ६હો મૈથિઊ ઠાँ નહિ છથિ? સેહ ભેઠનિ ળે ६ કોના ભાए સકૈત ઋછિ? કાઊકાન્ત મથિઊિ કો કરાए ળેતાह? મુદા મૈથિઊ શવ્દસભક ગોક શુદ્ધ ઋા સ્પષ્ટ ઉચ્ચારણ ઠાँ કહિુ કહિ રહઠ છઠ?

ચંદ્રકાિક સંગીત સમાપ્ત હોઋે પાણ્ડાઠ થપડ઼ીસઁ ગડ઼ગડ઼ા ઉઠઠ। સભા ગાવે કહए ળે એકટા ઋાઋોર, એકટા ઋાઋોર઼। કાઊકાન્તક સોના ગત્વસઁ શુઠિ ગેઠનિ। દર્શકક ઋાગ્રહપર ચંદ્રકાિ એકટા ઋાઋોર મૈથિઊ ગીત ગેનાર શુરુ કેઠથિ-

સુનુ, સુનુ પનિભિરની ગે કની ઘુરઋોક તાક઼।"

ऐ ६ ઠાँ મધુપળીક ગીત ગાવિ રહઠ છથિ। એકરા મૈથિઊ ગીતક ગોક ળ્ઞાન કેના ભેઊક? ળયન્ત વેર-વેર સોચથિ।

ઋોમહર ળનતા ઠાँ વુદ્ધ ગીત સુનિ-સુનિ ભાવવિભોર ભાए ગેઠ છઠ।

પંડાઠમે ઋાઋોર કઠાકારસભ છઠાह। મુદા સભ ચંદ્રકાિ, ચંદ્રકાિ ચચિઋા રહઠ છઠ। ઋાચાર્યળી કહુના કए સમ્હારઠનિ। તકરવાદ એકટા ઋાન ગાયકકેँ સેહો મૌકા દેઠ ગેઠ। ભોળનક સમય ભાए ગેઠ છઠ। ઋસ્તુ, સભગોટેકેँ ભોળનગૃહમે ચઠવાક ઋાગ્રહ ભેઠ।

"કાઊકાન્તક ભોળનક હેતુ વનઠ વિશિષ્ટ પ્રકોષ્ઠમે કાઊકાન્ત, ગૌરી, ચંદ્રકાિ, ળયન્ત, ઋાચાર્યળી, નાગવાવા ઋા કિછુ

𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒏𑒩𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒳 𑒮𑒋𑒯 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒑𑒰𑒨𑒢𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱।

" 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒑𑒲𑒞𑒮𑒦 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒥𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲।"-𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢।

"𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱।"-𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒖𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒿𑒮𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒍𑒧𑒯𑒩𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒖𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒰𑒫𑒹 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒮𑒯𑒙𑒱 𑒏𑒋 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯।

“𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒏𑒱 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒹𑒧𑒹 𑒕𑒻𑒏।"

"𑒌𑒿! 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒕𑒪। 𑒏𑒼𑒢 𑒑𑒰𑒧?"

“𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰𑒮𑒿 𑒮𑒙𑒪 "𑒧𑒯𑒱𑒣𑒳𑒩।"

"𑒍 𑒃 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪। 𑒞𑒿 𑒢𑒹 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒑𑒲𑒞 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।"

" 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒡𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒰𑒫𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒋𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒩𑒯𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒻𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒰?"

𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒛𑓃 𑒁𑒮𑒧𑓀𑒖𑒮𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒖𑒲 𑒃 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒍 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱-

"𑒦𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒝 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑒮𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱।"

"𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒲।"-𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒑𑒴-𑒂𑒑𑒴 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒂 𑒣𑒰𑒕𑒴-𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒮𑒦𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒮𑒦𑒰 𑒧𑓀𑒛𑒣 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯।

वैसक तखनसँ प्रारंभ होइतहि काशीकान्त जयन्तक गुणगान करए लगलाह-

" ओना एहि दुनियामे एक सँ एक विद्वान छथि। मुदा एकरहिमे कोनो ताहक व्यक्तिगत गुण जे हमसभ जयन्तमे देखैत छी से बहुत दुर्लभ अछि। निश्चय ई ईश्वरक आशीर्वादक बिना संभव नहि अछि। जयन्त संस्कृतटाक विद्वान नहि छथि, अपितु एहिमे रहैत ओ कतेको देशी, विदेशी भाषामे महारत प्राप्त केने छथि। विद्वान तँ ई छथिहे संगे हिनका व्यक्तित्वमे त्याग, कर्तव्यक प्रति निष्ठा भाव अछि। ओ उच्च कोटिक गायक आ साहित्यकार ज्योतिषी सेहो छथि। कोनो कम समयमे कोनो राग गुण हासिल कए लेब अपना-आपमे दृष्टांत अछि। तँ हमर इच्छा अछि जे जयन्तक हमरा ओहिमे राज-पाट सम्हारथि। एहिसँ हमरा लोकनि हिनकर अनुगामिहि होएब।"

संकोचवश जयन्त किछु जबाब नहि दए पाबि रहल छथि। आचार्यजी हुनकर कानमे किछु कहैत छथि। ओहो किछु जबाब दैत छथिन। तखन आचार्यजी बजैत छथि-

" ई परम सौभाग्यक बात हमरो लेल आ हमर विद्यार्थी जयन्तोक लेल अछि जे अपने हिनका प्रतिभाक एतेक सम्मान कएल छथिन। परंतु उचित होएत जे जयन्तकेँ विचारवाक हेतु किछु समय देल जाए "

काशीकान्तक मोन छोट भए गेलनि। ओ आगू किछु नहि बजलाह। थोड़ेकाल मौन पसरि गेल।

"सएह कहू, एहन अवसरकेँ जयन्त गमा रहल छथि। आपसमे लोकसभ गप्प कए रहल छथि।

"𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑓀𑒞𑒣𑒩 𑒁𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒋𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱"-𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒪।

"𑒏𑒣𑒰𑒩 𑒤𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑒱, 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒍 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।"-𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒪। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒞𑒩𑒯-𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒮𑒦 𑒔𑒰𑒩𑒴𑒏𑒰𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪। 𑒮𑒦𑒰 𑒫𑒱𑒮𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒰𑒯। 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯।

𑓒𑓗

𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒳𑒙 𑒦𑒫𑒢 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒑𑒳𑒧𑒮𑒳𑒧 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑒋 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱-"𑒏𑒲 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒻𑒏? 𑒥𑒛𑓃 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲?"

"𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒲 𑒩𑒯𑒞𑒻𑒏? 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒁𑒰𑒯 𑒏𑒋 𑒠𑒱𑒁𑒢𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒣𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒂𑒏𑒩𑓂𑒭𑒝 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒹 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒰𑒖-𑒏𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒞𑒿 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒥𑒯𑒲𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒲 𑒞𑒳𑒩𑓀𑒞 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒋 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒃𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒼𑒔-𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒥𑒟𑒱। 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒤𑒳𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏? 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒹𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒕𑒟𑒱 𑒢𑒹? 𑒍 𑒣𑒩𑒧𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒩𑒰𑒖-𑒣𑒰𑒙𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒼𑒦-𑒪𑒰𑒪𑒔 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒢𑒱। 𑒞𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒞𑒿 𑒏𑒰𑒥𑒴 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।"

"तखन की कएल जाए?"

" ओ कोनो मूर्ख नहि छथि। अहाँक मोनक बातकेँ ताड़ि जाइत हेताह। हुनका मात्र प्रेमेसँ जीतल जा सकैत अछि। ताहि हेतु चंद्रकिरण छोड़ि दियौक। जँ ओकरा सन्तुलन जोर पकड़ैक तँ काज भए जेतैक नहि तँ जे भावी। एहि लेल अपन शांति खराब करब कोनो बुद्धिमानी नहि होएत।"

"बात तँ ठीके कहि रहल छी। असलमे संतानक मोहमे लोक आन्हर भए जाइत अछि। सभकिछु बुझितो हम परेसान अहीं लेल भए रहल छी।"

“वैसाखमे ज्योतिषीजीक व्यवहारसँ जयन्त बहुत दुखी रहथि।"- गौरी बजलीह।

" जाहि तरहेँ ओ बजलाह ककरो खराब लगितैक। हमहु बहुत परेसान भए गेल रही। अहाँक पितिऔत छथि नहि तँ हम हुनिका सभदिनक हेतु छुट्टी कए दितिअनि।'"

"कोनो जरूरी छैक जे सभबातमे तमसाइए जाइ। एहिसँ तँ समस्या आओर बिकट भए सकैत छी। हमरा लोकनिकेँ ई जानबाक प्रयास करबाक चाही जे आखिर ओ एना केलथि किएक? हुनका नीकसँ बूझल रहनि जे ओ जे किछु कए रहल छथि से पसंद नहि कएल जाएत, तथापि ओ एहन बजलाह आ बजैत रहि गेलाह।"

"हमरा लोकनिकेँ हुनकासँ गप्प करबाक चाही। आखिर बुझिऐक तँ जे हुनका मोनमे की छलनि आ आगू ओ की चाहैत छथि। जँ हुनका एहने बिचार रहि गेल तखन हमरासभकेँ सोचए पड़ि सकैत अछि जे की करी?"

"ठीक कहलहुँ। हुनकासँ साफ-साफ गप्प करब जरूरी अछि।"

𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒠 𑒣𑒚𑒍𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒍 𑒞𑒳𑒩𑒢𑓂𑒞 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒑𑒼𑒙𑒹𑒮𑒿 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 । 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒠 𑒦𑒹𑒙𑒱𑒞𑒹 𑒍 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯।

"𑒥𑒜𑓃𑒱𑒂𑒿 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒮𑒑𑒩𑒹𑒧𑒹 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒲।"-𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒅𑒚𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒍 𑒔𑒾𑒏𑒚𑒱 𑒡𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒏𑒱 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒟𑒱𑒢।

"𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒁𑒯𑒲𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒋 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲।"

"𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒥𑒰𑒙 𑒞𑒰𑒏𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧 𑒏𑒢𑒲 𑒖𑒪𑓂𑒠𑒲 𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।"

“𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒻𑒏।"

𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒚𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒏𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒪 𑒞𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒯 । 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒩𑒧𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒍 𑒙𑒼𑒏𑒪𑒟𑒱𑒢 -

" 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒖𑒍𑒪𑒯𑒳𑒿।"

"𑒍 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲! 𑒂𑒅, 𑒂𑒅।"

𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒂𑒧𑒢𑒹-𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒪𑒐𑒻, 𑒔𑒰𑒯-𑒣𑒰𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏।

𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒞 𑒑𑒣𑓂𑒣- 𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪।

"𑒯𑒧 𑒄 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹 𑒍𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒫𑒱𑒧𑒼𑒔𑒢𑒏 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒐𑒱𑒮𑒱𑒂𑒯 𑒏𑒟𑒱𑒏 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿?"

" 𑒯𑒧 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒪।"

"से की?"

"हुनकर ग्रंथमे मौलिकता नहि अछि। ओ तँ एम्हर-ओम्हरसँ नकल कए लेने छथि आ कहैत छथि जे हुनकर ओ शोधग्रंथ छन्हि।"

"मुदा अहाँक तँ ओ विषयो नहि अछि। ओहिठाम एक सँ एक विद्वान बैसल छलाह। ओ सभ किछु नहि बजलाह, अपितु हुनकर कार्यक प्रशंसा करैत गेलाह, अहीँकेँ की समस्या भए गेल जे एना भरल सभामे हुनका अपमानित केलिअन्हि।"

"क्षमा करब जाए। हमरा हुनका कोन मोकाबला अछि। ओ हमरा लग नेना छथि।"

"तँ ने सोचबाक छल।"

"जयन्त तँ हमर कुटुम्ब छथि। हम हुनकर अहित कहिया करबन्हि।"

"मुदा अहाँक काज तँ तेहने भेल।"

"हमरा जे बाजबि बुझाएल से बजलहुँ। यदि अपनेकेँ खराब लागल तँ हम क्षमा प्रार्थी छी।"

कालीकान्त गुम्म पड़ि गेलाह।

"ठीक छैक। अहाँ जा सकैत छी।"

ज्योतिषीजी कालीकान्तक आज्ञा पाबि बिदा भेलाह। मुदा कालीकान्तक तामस बढ़िए गेलन्हि। ओ ई बात नीकसँ बूझि गेलाह जे ज्योतिषीजीक मोन शुद्ध नहि छन्हि। ज्योतिषीजीसँ गप्प केलाक बाद

कालिकान्त आश्वस्त भए गेलाह जे ओ किछु जबरदस्त खेल खेला रहल छथि
।

२८

नान्हिटा मनुक्खक जिनगीमे कहि नहि कतेक तरहक खेलसभ होइत रहैत अछि। की-की घटना-दुर्घटना होइत रहैत अछि। केहन-केहन काज लोक करैत रहैत अछि। ओकरा होइत रहैत छैक जेना ओ अमर हो। जे किछु नीक अछि से हमरे बखरामे आबए। सभक हक हम मारि ली तँ कोनो हरज नहि। बस हम सुखी रही, आओर जे हौक से हौक। मनुक्खक इएह स्वार्थी प्रवृत्ति सर्वनाशक जड़ि अछि। एहि कारणसँ ई संसार एहन भेल जा रहल अछि जे जयन्त सन विद्वानकेँ अपन डीह-डाबर छोड़बाक हेतु विवश कए देलक। ओ तँ समाजक सेवा हेतु गेल छलाह। ककरोसँ किछु लेब तँ हुनकर स्वभावमे छलहि नहि। तथापि सुधाकरसन प्रचंडमूर्खसँ हुनका सामना भेलनि। तकरा की कहबैक-नियति, आओर की कहल जा सकैत अछि? कहबी छैक-"विधि बामके करनी कठिन, जेहि मातु कीन्हि बावरी।

असगरमे बैसल जयन्तक हृदयमे रहि-रहि कए टीस उठि जाइत छनि। मातृभूमिक प्रति मोह कहि वा कर्तव्यक भावना कहि, हुनकर मोन बेरि-बेरि लखनपुर स्थित पाठशालापर पहुँचि जाइत अछि। हुनका बिसरने नहि बिसराइत छनि ओ क्षण जखन दूपहर रातिमे कहुना कए सोडरपर लटकल ओहि चारक तरमे सुधाकरक लठैतसभ पहुँचि गेल छल। कहि नहि ओ सभ की जुलुम करैत, मुदा धन कहि उतरबारिटोलक रखबारसभकेँ जे जानपर खेलि कए जयन्तक आ हुनकर कृतिक रक्षा केलक। आब जखन पुस्तकक विमोचन भए गेल, जयन्तक माथ हल्लुक लगैत छलनि। पुस्तकक मूलप्रति कालिकान्तक पुस्तकालयमे सुरक्षित राखि देल गेल छल। आब ओ

एहि समस्यासँ त' मुक्त छलाह। मुदा ज्योतिषीजीक व्यवहार लए कए ओ बहुत दुःखी रहथि। संवेदनशील स्वभावक लोक हेबाक कारण बेर-बेर हुनका एहि बातपर सोचाइत रहैत छनि। ई हुनका बूझल रहनि जे ज्योतिषीजी मैथिल छथि। मुदा हुनका ई जानकारीमे नहि रहनि जे ओ गौरीक पतिऔत छलाह। हेबो कोना करितनि? निरन्तर अध्ययनमे लीन रहबाक कारण हुनका लगपासोक बहुत कम जानकारी रहैत छलनि।

जयन्तकेँ अपनहुँ विश्वास नहि होनि जे सुधाकर योजनाबद्ध तरीकासँ हुनकर पाछू पड़ल रहथि, सेहो एहि हद धरि जे जानकीधाममे लठैत पठा कए हुनकर शोधग्रंथक चोरी करबा देलाह। ई त' संयोग रहैक जे बादमे ओ भेटि गेल। तखने जयन्तक माथा ठनकल रहनि जे ई लठैतसभक जड़ि कतहु आओर अछि कारण पोथी चोरा कए चोर की करत? सोना-चानी होइत, टाका पैसा होइत तकर चोरी करितए। मुदा हुनकर शोधग्रंथक पाछू किएक पड़ि गेल? आब त' हुनका बहुत किछु स्पष्ट भए गेल रहनि।

ज्योतिषीजी सुधाकरसँ मिलि कए षड्यन्त्रसभ करैत रहैत छलाह। आश्चर्यक बात छैक जे सद्यः पकड़ेलाक बादो कालिकान्त हुनका किछु नहि केलखनि आ ओ अपनो कालिकान्तक कृपापात्र बनल छथि, तान्त्रिक भावनमे रहिते छथि। मुदा से होइत किएक नहि? ओ त' आब सुधाकरकेँ बुझबामे अएलनि जे गौरीक ज्योतिषीजी पतिऔते छथि। अस्तु, जयन्त सम्हरि कए रहए लगलाह।

साइत ओ अपन प्रयासमे सफल रहितथि। मुदा चन्द्रकला लए कए बेस मोसकिलिमे पड़ि जाइत छलाह। आखिर ओहो त' मनुक्खे छलाह। कोना पाथर त' रहथि नहि। चन्द्रकलाक प्रति कतहु-ने-कतहु हुनको मोनमे स्थान बनि गेल छलनि। करथि त' की करथि? बहुत विकट समस्यासभ भेल जा रहल छल। भने ओ अपन गाम चलि गेल छलाह। मुदा विधाताकेँ से मंजूर नहि भेलनि। मुदा आब की कएल जाए? ई समस्या बेर-बेर हुनका परेसान करैत रहैत छलनि।

समय द्रुतगतिसँ भागि रहल छैक। नान्हटि किशोरसँ बढ़ैत-बढ़ैत जयन्त आब युवक भए गेल छथि। तुलसीबाबा कहने रहथि-

" बरसहि जलद भूमि नियराये। जथा नवहि बुध विद्या पाए!" कहक माने जे विद्या भेलासँ विद्वान विनम्र भए जाइत छथि, से जँ सद्यः देखबाक हो तँ जयन्त लग चलि जाउ। घमंडक तँ कतहु लेश नहि छलनि हुनकामे। शांत, गंभीर आ चरित्रमे लीन रहैत छथि जयन्त। जेहने वाणिज्यमे बुद्धि, तेहने देखबामे सुंदर छथि ओ। तेँ ने चंद्रकि हुनका पछोड़ धेने छथिन्ह।

असलमे जयन्त एहि सभमे पड़ए नहि चाहैत छथि। हुनकर मूल लक्ष्य तँ अपन मातृभूमि पूर्वजक स्थानपर बनल पाठशालाकेँ पुनर्जीवित करबाक छल। मुदा से आब होएत कोना? एमहर चंद्रकि, कालीकान्तक आकर्षक प्रस्ताव, तँ ओमहर छल गामक उजरल-उपटल पाठशाला जकर आब नामो-निसान मेटा देने छल-के? हुनके पितिऔत सुधाकर। लोभक कारण सुधाकर सभकिछु बेचि गेल छथि। कोनो कुकर्म करए हेतु तैयार छथि।

किंकर्तव्यविमूढ़ जयन्त नदीकातमे बैसल छथि। मंद-मंद हवा बहि रहल छल। सूर्यास्तक समय छल। अस्ताचलगामी भगवान सूर्य अपन तेजकेँ समेटि रहल छथि कि अचानक हुनका एकटा महिला नदीमे स्नान कए बाहर अबैत देखेलथि।

"ई तँ चिन्हल लगैत छथि"- जयन्त मोने-मोन सोचैत छथि।

क्रमशः ओ महिला आओर लगीच अबैत गेलीह। जयन्त किछु बजितथि ताहिसँ पहिने ओएह चिचिआ उठलीह-

"𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞! 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞! "

𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹?"

𑒮𑒋𑒯 𑒏𑒯𑒴, 𑒞𑒴𑒿 𑒂𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱𑒞𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒿 𑒢𑒹 ? 𑒯𑒠 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒧 𑒕𑒲 𑒬𑒲𑒪𑒰"

𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒰?" - 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

" 𑒢𑒠𑒲𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒂𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒲।"

"𑒍 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒴𑒿 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒏𑒞𑒋 𑒕𑒯𑒲?" - 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢।

𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒔𑒳𑒣 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒲𑒯। 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒢𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒪𑒞𑒲 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒑𑒼𑒩-𑒢𑒰𑒩, 𑒢𑒧𑒑𑒩, 𑒣𑒻𑒒-𑒣𑒻𑒒 𑒂𑒿𑒐𑒱 , 𑒮𑒼𑒙𑒪 𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒕𑒻𑒏 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒧𑒹। 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒁𑒞𑓂𑒨𑓀𑒞 𑒩𑒧𑒝𑒲𑒏 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒔𑒳𑒩𑒲 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴𑒩𑒼 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒕𑒲𑒙𑒫𑒪𑒰 𑒢𑒳𑒂 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒯𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒡𑒫𑒰 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒕𑒟𑒱? 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒧𑒼𑒢𑒧𑒹 𑒞𑒩𑒯-𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒮𑓀𑒬𑒨 𑒅𑒚𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒳𑒕𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒏𑒹𑒍 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒋 𑒮𑒏𑒪𑒢𑒱, 𑒂𑒥𑒰𑒖𑒰𑒯𑒲 𑒢𑒯𑒱। 𑒍 𑒞𑒿 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒞𑒱 𑒥𑒻𑒠𑒯𑒲𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒥𑒼 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒮𑒦 𑒑𑒳𑒧 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒁𑒏𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒢𑒹𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒬𑒲𑒪𑒰। 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒋𑒯𑒱 𑒯𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒿𑒙 𑒯𑒹𑒞𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒍 𑒮𑒼𑒔𑒱𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।

𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒳𑒕𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒢𑒱 𑒂 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒰𑒖𑒟𑒱 𑒢𑒯𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒋𑒏𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒲 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 -

"𑒂𑒃-𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒏𑒞𑒋 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱?"

𑒪𑒑𑒹𑒣𑒰𑒮𑒧𑒹।"

"𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑒰 𑒠𑒹 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒏𑒰𑒪 𑒦𑒹𑓀𑒙-𑒒𑒰𑒿𑒙 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞।"

𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢।

"𑒁𑒥𑒯𑒱𑓀 𑒖𑒩𑒴𑒩, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱।"-𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒍 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒋𑒏𑒙𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒂𑒃 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒏𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱, 𑒍𑒯𑒼 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒧𑒹। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒪 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒼𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒖𑒲𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒞𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒱 𑒢𑒯𑒱, 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒖𑒰𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒩𑒯𑒢𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒞𑒹𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪। 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒧𑒼𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹𑒣𑒩 𑒙𑒰𑒓𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱।

२८

𑒥𑒱𑒂𑒯𑒏 𑒥𑒋𑒮 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒟𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒩𑒯𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒢𑒲𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒖 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒋 𑒪𑒲। 𑒏𑒻𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰𑒮𑒦 𑒦𑒹𑒙𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒙𑒩𑒏𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢।

"𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒦𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃-𑒪𑒱𑒐𑒰𑒃𑒮𑒦 𑒠𑒳𑒢𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒹𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒄 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒋 𑒪𑒲।"- 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒱 𑒍 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒥𑒻𑒠𑒖𑒲 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒞𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰𑒏 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒤 𑒖𑒰 𑒏𑒋 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒑𑒻𑒞

𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒧𑒨 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒱, 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒼𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒏 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒲𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪, 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃-𑒪𑒱𑒐𑒰𑒃 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒫𑒻𑒠𑒹𑒯𑒲 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒪𑒋 𑒏𑒋 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒧𑒹 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒫𑒱𑒪𑒧𑓂𑒥 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒑𑒰𑒯𑒹-𑒥𑒑𑒰𑒯𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒙𑒼𑒏𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒋 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒂𑒩 𑒍 𑒍𑒯𑒢 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒙 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒞𑒏𑒱𑒞𑒟𑒱 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒞𑒰-𑒣𑒞𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒢𑒱? 𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒏𑒋 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒫𑒻𑒠𑒹𑒯𑒲 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒫𑒩 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒏𑓀𑒣𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒥𑓀𑒡𑒏 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒒𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒳𑒫𑓂𑒨𑒮𑓂𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒹𑒏 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩 𑒒𑒙𑒏𑒻𑒞𑒲 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒫𑒩 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒍 𑒫𑒻𑒠𑒹𑒯𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒮𑓂𑒞 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒫𑒻𑒠𑒹𑒯𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫 𑒍 𑒋𑒏𑒯𑒱 𑒥𑒹𑒩𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒩𑒱𑒂𑒞𑒲 -𑒮𑒩𑒱𑒂𑒞𑒲 𑒮𑒦 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒋 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯।

𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒫𑒻𑒠𑒹𑒯𑒲 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒰𑒙𑒥 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒩𑒯𑒱-𑒩𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒐𑒳𑒮𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒂𑒍𑒩 𑒏𑒲 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏? 𑒧𑒼𑒢𑒹-𑒧𑒼𑒢 𑒍 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒡𑒢𑓂𑒨𑒫𑒰𑒠 𑒠𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒄 𑒐𑒳𑒮𑒲𑒣𑒩 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒏𑒩 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒞𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒮𑓀𑒏𑒙𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒍𑒞𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞𑒹 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒫𑒩 𑒞𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒮𑒪𑒧𑒹 𑒍 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒮𑒯𑒣𑒰𑒚𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒫𑒱𑒡𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒕𑒪𑒱। 𑒖𑒐𑒢 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒫𑒩𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒍 𑒁𑒢𑒮𑒢 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒫𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒥𑒰𑒫𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑒋 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒂𑒏𑓂𑒩𑒧𑒝 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒏, 𑒖𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒡𑒧𑒏𑒲 𑒠𑒹𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒂𑒥 𑒍 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒟𑒱 𑒏𑒲? 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒐𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑒱। 𑒮𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒐𑒢 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒞𑒰

𑒚𑒰𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒢𑒱𑒘𑒼 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒮𑒦𑒰𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒡𑒰𑒧 𑒮𑒮𑒳𑒩𑒏 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯।

𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒹𑒧𑒹 𑒞𑒞𑒹𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒳𑒏𑒞𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒹𑒪 𑒣𑒞𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒁𑓀𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒰𑒧𑒹 𑒑𑒣𑓂𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒯𑒼𑒃𑒞-𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒞𑒪 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱-𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒔𑒱𑒞𑒱𑒞 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒩𑒋 𑒏𑒲 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯?

"𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒋𑒏𑒼 𑒒𑒛𑓃𑒲 𑒩𑒯𑒥 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋𑒪। 𑒋𑒯𑒢 𑒡𑒼𑒐𑒹𑒥𑒰𑒖, 𑒠𑒳𑒭𑓂𑒙 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒱𑒞𑒰𑒋𑒥 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒟𑒱𑒏।"

"𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏?"

"𑒏𑒲 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏? 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒮𑒳𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒃। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒂𑒯 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒫𑒱𑒂𑒯 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒲 𑒎𑒔𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒕𑒪?"

"𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒮𑒳𑒩 𑒏𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒍 𑒏𑒞𑒋 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱?"

"𑒍 𑒏𑒰𑒬𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒯𑒲𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒱𑒎𑒞 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩𑒏 𑒏𑒳𑒙𑒳𑒧𑓂𑒥 𑒕𑒟𑒱𑒢।"

" 𑒮𑒋𑒯 𑒏𑒯𑒴, 𑒍 𑒋𑒯𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒯? 𑒯𑒠 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪।"

"𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒠𑒼𑒭 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒍𑒋𑒯 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒤𑒿𑒮𑒍𑒪𑒟𑒱 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒞𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒋 𑒍 𑒯𑒧𑒩 𑒫𑒱𑒂𑒯 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱।"

"𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒹। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒯𑒥?"

शीघ्र कारण बतौलाह। जयन्त कैं बहुत दुःख भेलनि मुदा करए की सकैत छलाह?"

हम ठीक आएब"-से कहि ओ विदा भेलाह।

जयन्त चौकड़ि धरि पहुँचले रहथि कि ज्योतिषीजी गाड़ीसँ उतरलाह।

जयन्त प्रयास केलाह जे कात-कात नुकि जाइ। मुदा से संभव नहि भेल। चौकड़िसँ बाहर होइतहि दुनूगोटेक आमना-सामना भए गेलनि। जयन्तकेँ ओहिठामसँ नुकैत देखि ज्योतिषीजी बाजि उठलाह।

"एहिठाम केना आएलहुँ?"

"शीघ्र हमर नेनाक संगी छथि। संयोगसँ आइ नदीकातमे देखा गेलाह। बहुत दिनक बाद भेंट भेल रहए तेँ जिज्ञासावश नहि रहल गेल। मुदा हुनका देखि कए बहुत कष्ट भेल। अहाँक रहैत एतेक अन्याय होएब बहुत दुःखक बात थिक। अहाँ शीघ्रक जीवन बर्बाद कए देलिऐक। मानवताक नामपर अहाँ एकटा कलंक छी।"-जयन्त बजलाह।

"अहाँकेँ एहिसँ की मतलब? ई हमर पारिवारिक समस्या अछि आ हम एकर समाधानमे लागल छी।"

"आब की समाधान हेतैक। जखन अहाँक पुत्रक विआह पहिनेसँ भेल छलनि तखन एहन अन्याय करबाक की औचित्य छल?"

"हमरोसभकेँ ई बात नहि बूझल छल। बादमे पता लागल।"

"गलत बाजि रहल छी। अहाँकेँ सभबात नीकसँ बूझल छल।"

"अहाँ अनेरे एहि मामलामे टाँग अड़ा रहल छी।"

"एक आदमीक जिनिगी नष्ट केलाक बादो अहाँ एना बाजि रहल छी। एतेक भारी अपराध अहाँक व्यक्तिगत समस्या कोना भए सकैत अछि?

कहि नहि सदति शांत रहएबला जयन्तकेँ अचानक एतेक तामस कथिक भेलनि? संभवतः ओ शीलासंग कएल गेल अन्यायसँ पहिनेसँ बहुत दुखी छलाह। संयोगवश ओ सामने आबि गेल रहथि आ हुनका लोकनिमे वाद-विवादक स्थिति बनि गेल छल। बात बढ़ैत देखि शीला बाहर भेलीह। ओ जयन्तकेँ इसारा कए किछु कहए चाहथि मुदा ओ अंठा कए आगू बढ़ि गेलाह।

३०

पुस्तक विमोचनक समयमे ज्योतिषीजीक व्यवहारसँ कालीकान्त बहुत दुखी रहथि। कालीकान्त नहि बुझि सकलथि जे ओ एहनो कए सकैत छथि, सेहो जयन्त सन विद्वानक संगे। मुदा एहिमे तँ ओ बहुत दिनसँ लागल रहथि। सुधाकर आ हुनक लोकसभसँ हुनकर पुरान संपर्क रहनि। सुधाकरकेँ शुरुएसँ ई प्रयास रहनि जे जयन्त गाम घुरि कए नहि आबथि। एहि हेतु ओ अपना भरि प्रयासो केलाह, मुदा से होइत नहि देखि तरह-तरहसँ जयन्तकेँ तंग करए लगलाह। एहिमे ज्योतिषीजी सेहो सुधाकरक संगे भए गेल रहथि।

ओहि दिन शीलासँ भेंट केलाक बाद ज्योतिषीजी संगे जयन्तकेँ विवाद करैत देखि शीला बहुत चिंतित भए गेल रहथि। ज्योतिषीजी तँ शीलाकेँ पहिनेसँ बहुत तंग करैत छलाह। ओहि दिन तँ हद्द भए गेल। जयन्तकेँ एहिठामसँ गेलाक बाद ज्योतिषीजी जे-से बाजए लगलाह। ओतबे नहि कालीकान्तकेँ जा कए

जयन्तक सिकाइत कए देखलनि। जतेक नोन-तेल लगा सकलाह से लगा कए बातकें बतंगड़ करबाक चेष्टा केलनि।

"जयन्त एहन काज नहि कए सकैत छथि। ओ विद्वान छथि, हुनकर निष्ठापर हमरा लोकनिकें पूर्ण विश्वास अछि। हमरा त' अहींक व्यवहारपर सक भए रहल अछि।"-कालीकान्त बजलाह।

"अहाँ स्वयं जयन्तसँ गप्प कए लिअ। हम अपनेकेँ गलत बात किएक कहब? "

"अहाँ अपन जाउ। हम जयन्तसँ गप्प केलाक बाद किछु कहि सकैत छी।-कालीकान्त बजलाह।

कालीकान्त जयन्तकें बजओलखिन। जयन्त लीलाक ओहिठामसँ लौटि कए बहुत परेसान रहथि। हुनका अपने मोन होइत जे सभटा बात कालीकान्तकें जा कए कहथि जाहिसँ लीलाक समस्याक किछु न्यायोचित समाधान होइत। तावे कालीकान्तक बजाहटि आबि गेल। ओ सभ काज छोड़ि कालीकान्तसँ भेंट करए पहुँचि गेलाह।

कालीकान्तक ओहिठाम जयन्त पहुँचैत छथि। ओहि समय ओ असगरे अपन बैसकीमे किछु चिन्तामे रहथि। जयन्तकें देखितहि कालीकान्त बाजि उठलाह-

"आउ, आउ जयन्त! हम अहींक बाट ताकि रहल छलहुँ।

"हम स्वयं अपनेसँ भेंट करए चाहैत रही।"

"की बात?"

"ज्योतिषीजी बहुत अन्याय केलाह।"

"𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏?"

"𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒳𑒞𑒯𑒳 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒢𑒹𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒱। 𑒮𑓀𑒨𑓃𑒼𑒑 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒧 𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒱𑒌𑒏 । 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒚𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋𑒪। 𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒖𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋। 𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒏𑒋 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧 𑒏𑒲 𑒖𑒰𑒢𑒹 𑒑𑒹𑒪𑒱𑒌𑒏 𑒖𑒹 𑒍 𑒖𑓂𑒨𑓃𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒳𑒞𑒯𑒳 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒹𑒪 𑒣𑒞𑒰𑒣𑒩 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍𑒞𑒋 𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒢𑓂𑒨𑓃𑒰𑒨𑓃𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒬𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲 । 𑒞𑒰𑒫𑒞𑒹𑒧𑒹 𑒖𑓂𑒨𑓃𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒍𑒞𑒋 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒏𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒍 𑒖𑒰𑒢𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒦𑒹𑒪। 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑓀𑒨𑓃𑒧𑒮𑒿 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒁𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒠𑒼𑒥𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒏𑒩𑒍𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒱 𑒮𑒦𑒥𑒰𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒥𑒮 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒏𑒱 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒂𑒠𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒞𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯-𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒡𑒧𑒏𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒏𑒯𑒴 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒲 𑒑𑒪𑒞𑒲 𑒁𑒕𑒱?"

"𑒯𑒧 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱𑒌𑒏। 𑒖𑓂𑒨𑓃𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒬। 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒑𑒾𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒔𑒳𑒣 𑒕𑒲।"

" 𑒌𑒿! 𑒑𑒾𑒩𑒲"

"𑒑𑒾𑒩𑒲𑒏 𑒣𑒞𑒱𑒎𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢 𑒖𑓂𑒨𑓃𑒼𑒞𑒱𑒭𑒲𑒖𑒲। 𑒞𑒹𑒿 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒴। 𑒯𑒧 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒥। 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒨𑓃 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦 𑒪𑒑 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑒱।"

"𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒹 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨𑓃 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒔𑒰𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒬𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒢𑓂𑒨𑓃𑒰𑒨𑓃 𑒯𑒼𑒢𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒄 𑒡𑒼𑒐𑒰

केलनि। एकटा निर्दोष जिनगीकेँ नष्ट करबाक पाप केलनि अछि। तकर समाधान तँ अपनहि कए सकब।"

कामिकान्त जयन्तक बातसँ बहुत प्रभावित रहथि। जयन्त जएबाक उपक्रम कए रहल छलाह कि गौरी चन्द्रिकाक संगे आबि गेलखिन।

"एना कोना चलि जाएब जयन्त! किछु जलखै कए लिअ।" -गौरी बजलीह।

"हम तँ अपन पूजा-पाठो नहि केलहुँ अछि। "

"सरबत पीबि लिअ।"

जयन्तकेँ देखितहि चन्द्रिका बहुत प्रसन्न भए गेल रहथि। मुदा किछु बाजथि नहि। गौरीक संकेत पाबि ओ अपने हाथे सरबत बना कए जयन्तकेँ देलखिन। दुनूगोटेमे कनीकाल हँसी-ठट्ठा भेल। फेर जयन्त चलि गेलाह।

जयन्तक गेलाक बाद चन्द्रिका बड़ीकाल धरि त्रिकुट भवनक ऊपर जा कए हुनका देखैत रहि गेलीह। त्रिकुट भवनसँ निकलि कनी फटकी गेलाक बाद ओ पाछू तकैत छथि तँ चन्द्रिकाकेँ हँसैत देखलाह।

ओम्हर जयन्त गेलाह आ एम्हर ज्योतिषीजी बाजए लगलाह।

"हम अपनेकेँ कहए नहि चाहैत रही। मुदा अहाँ महान छी, हमरा लोकनिक कुटुम्ब छी, तँ अपनेकेँ नहि कहब तँ कहबे करब?' '

"बात की छैक?"

"जयन्त"

"एतबे ओ बाजल छलाह कि कालीकान्त कृतघ्न भए गेलाह।

"अहाँ बहुत कपट आदमी छी। आश्चर्य हम कुटुंब बुझि कए अहाँक समाचारकेँ अंठेने रहैत रहलहुँ। मुदा बात हदसँ बाहर भए रहल अछि।"

"हम नहि बूझि सकलहुँ।"

"जाउ नहि कनू। ओहि दिन पुस्तक विमोचनक कार्यक्रममे अहाँक व्यवहारसँ हमसभ बहुत दुखी छी। अहाँकेँ बुझबाक चाही जे ओ कार्यक्रम हम स्वयं आयोजित केने रही, जयन्त ने हमर बात मानि कए आबि गेल रहथि। ततबे नहि।"

कालीकान्तकेँ बेसी तमसाइत देखि गौरी टोकलथिन -

"छोड़ू बितल बातक घमर्थन केलासँ की लाभ। अपने की बुझैत जे अहाँ एखन तमसा गेल छी?

"सुनैत छी जे ज्योतिषीजी अपन पुतहु संगे बहुत अनुचित केलनि।"

"से की?"

कालीकान्त लीलाक बाबेमे सभटा बात गौरीकेँ कहलथिन।

"ई सत्य नहि अछि।"

"त की सत्य अछि?"

"हमरोसभकेँ समाचार नहि बूझल छल। एखन सुनने रहिएक जे कतहु कनी-मनी छैक।"

"અહાઁકેઁ સભટા વાત વૂઝલ નહએ , તેઁ અહાઁ અપન વેટાક દોસર વિઆહ શીલાક સંગે કરઓલહુઁ। ઈ તઁ વહુત અનુચિત ભેલ।"

"જે ભેલ, સે ભેલ। મુદા આવો કિછુ કરૂ જાહિસઁ શીલાક સંગ ન્યાય હોનિ નહિ તઁ હમ ન્યાય કરવ।"-કાલીકાન્ત ચેતૌની દેલખિન। "

"આવ હમરાસભકેઁ જ્યોતિષીજીસઁ ફરાક ભએ જએવાક ચાહી। હિનકર ચલતે હમહુસભ અપયશક ભાગી ભએ રહલ છી।"

"મુદા ઓ તઁ સંવંધી છથિ। તકર કી કરવૈક?"

"જે હોથિ, મુદા હમ આવ હુનકા અપન રાજકાજમે સામિલ નહિ રાખિ સકૈત છી। વઢિઆઁ હોએત જે ઓ અપન ડેરા સેહો ફરાક રાખથિ।"

" ડેરા તઁ તુરંત નહિ વદલલ જા સકૈત અછિ, તાહિ હેતુ હિનકા કિછુ પલખતિ દિઔન। આગૂ અહાઁક મરજી।" એહિ ઘટનાક વાદ કાલીકાન્ત આ હુનક પત્નીમે એહિ તરહેં આપસી ચર્ચા ભેલ। જ્યોતિષીજીકેઁ સભ વાત કહિ દેલ ગેલનિ। ઓ કી વજતિથિ? તથાપિ હુનકર ડેરા તત્કાલ ઠામહિ રહએ દેલ ગેલનિ।

- રવીન્દ્ર નારાયણ મિશ્ર, પિતાક નામ: સ્વર્ગીય સૂર્ય નારાયણ મિશ્ર, માતાક નામ: સ્વર્ગીયા દયાકાશી દેવી, વએસ: ૬૮ વર્ષ, પૈતૃક ગ્રામ: અડેર ડીહ, માતૃક: સરિસવ ડ્યોઢી, વૃત્તિ: ભારત સરકારક ઉપ સચિવ (સેવાનિવૃત્ત), સ્પેશલ મેટ્રોપોલિટિન મજિસ્ટ્રેટ, દિલ્લી(સેવાનિવૃત્ત), શિક્ષા: ચન્દ્રધારી મિથિલા મહાવિદ્યાલયસઁ વીએસ-સી ભૌતિકી વિજ્ઞાનમે પ્રતિષ્ઠા : દિલ્લી વિશ્વવિદ્યાલયસઁ વિધિ સ્નાતક, પ્રકાશિત કૃતિ: મૈથિલીમે: પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૧૭ ૧ભોરસઁ સાઁઝ ધરિ (આત્મ કથા), ૨ પ્રસંગવશ (નિવંધ), ૩સ્વર્ગ એતહિ અછિ (યાત્રા પ્રસંગ);

प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४ अवसाद (कथा संग्रह) ५ नमस्तस्यै (उपन्यास) ६ विविध प्रसंग (निबंध) ७ महाजाल(उपन्यास) ८ लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९ सीमाक ओहि पार(उपन्यास) १० समाधान(निबंध संग्रह) ११ मातृभूमि(उपन्यास) १२ स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३ शंखनाद(उपन्यास) १४ सत्य थिक जीवन(संस्मरण) १५ ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६ पाथेय(संस्मरण) १७ हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८ प्रारब्धक पाश(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९ बीतल गेल समय(उपन्यास) २० परिणति(उपन्यास) २१ बदलि रहल अछि समकक्षि(उपन्यास) २२ राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३ संयोग(कथा संग्रह) २४ नारी रहल छलि विसुया(उपन्यास) २५ दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३ कुमार मनोज कश्यप- दृश्यावलोकन



કુમાર મનોજ કશ્યપ

૧ ટા લઘુકથા

દૃશ્યાવલોકન

ગર્મી વપતિ જૂમ્ર લ૭ કે સ્તર નીચા શ્રા શ્ેર વૈહ પાનકિ વકિટ સંકટ! પોખ્નર- હાખ્નર પહનિ સસ જાથ૭ સુખ્યાય૭! મા૭- લા૭ કે લાન શ્રાશ્રત મે! યાપા- ક૭ મે પાનયિ નહિ શ્રવૈત! લાહ કિનો- કોનો યાપા- ક૭ મે પહર નાતિ વતિ૭ વાદ કની- મની પાનિ ખ્યસૈ તકના ૭સગ ૭ક લગરના કસ કસ પાનિ ૭૭ પઁતયિાની ૭ગેને ડાઢ઼ યેહ પઁતયિાની, હગાડ઼ા- હૂંદ્દ, યક્કા- મુક્કી હોઇ લખ્યન કહયિો ટૈકર શ્રવૈ તખ્નો। કનોડ઼ો ટાકાક ૭ગત સસ સરકારક ન૭- લ૭ યોજના કે તસ શ્રાવ જગ્નાવશેષે કતહુ- કતહુ જેટૈ છૈ પાનિ તસ સરિ જાસ કસ કહયિો એ૭ નૈ! ૭કક સમક્ષ લ૭ક વ્યવસ્થા સજ સસ જાની સમસ્યા શ્રા નૈ સજાતરિ યિન્યા કે વષિય કેવલ શ્રા કેવલ પાનકિ સમસ્યા કારામ સસ નદિાન તક સજાક શ્રપન- શ્રપન મત્ કછુિ સુન૭, કછુિ પઢ઼૭, કછુિ કલ્પના કે ઉડ઼ાન્ મુદા વેસ મન૭ગ્ગૂ!

" હો હમના સજાક પતિામહ પૈઘ- પૈઘ પોખ્નરિ કે શ્રથાહ પાનકિ ઉપયોગ કરૈત છથ૭હ। હમર પતિા કે સમય પોખ્નરિ સિસ સમિટિ ૭ક ર્નાર પર શ્રાવિ ગે૭। હમના સજ શ્રાર સકિુડ઼િ યાપા- ક૭ પર શ્રાવિ ગે૭હુઁ। નવતુરયિા સજ વોત૭- વંદ

𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒏𑒹 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒬𑒢𑒻𑓁 𑒬𑒢𑒻𑓁 𑒨𑒠𑒱 𑒉𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒞𑒻 𑒞𑒮 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲 𑒏𑒹 𑒏𑒻𑒣𑓂𑒮𑒴𑒪 𑒙𑒰 𑒧𑒹 𑒖𑒪 𑒦𑒹𑒙𑒞𑒻, 𑒂 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒑𑒻𑒨𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒱𑒢𑒞𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒮 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒠 𑒢𑒼𑒩𑒹 𑒙𑒰 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒞! " 𑒥𑒖𑒻𑒞- 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒦𑒯𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒁𑒫𑒰𑒏𑓂 𑒕𑒪।

-**𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣, 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱:** 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒅𑒣-𑒮𑒔𑒱𑒫, **𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏:** 𑒮𑒲-𑓑𑓑, 𑒙𑒰𑒫𑒩-𑓔, 𑒙𑒰𑒃𑒣-𑓕, 𑒏𑒱𑒠𑒫𑒃 𑒢𑒑𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 (𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒯𑒰𑒙 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹), 𑒢𑒃 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲-𑓑𑓑𑓐𑓐𑓒𑓓 𑒧𑒼 𑓙𑓘𑓑𑓐𑓘𑓑𑓑𑓘𑓕𑓐, 𑓘𑓑𑓗𑓘𑓒𑓑𑓖𑓒𑓓𑓙 𑒃-𑒧𑒹𑒪 : 𑒩𑒱𑒞𑒱𑒞𑒼𑒏𑒧𑒰𑒢𑒼𑒖𑓐𑒑𑒰𑒧𑒰𑒪𑓃𑒱𑒨𑒼𑒧

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒱𑒰𑒪𑓃𑒮𑓂𑒞𑒰𑒤𑒤𑓃𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰𑓐𑒑𑒰𑒧𑒰𑒪𑓃𑒱𑒨𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑒛𑓃𑒜𑓃𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒰- 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒐𑒹𑒣-𑓑𑓘)



નિર્મલા કર્ણ (૧૯૬૦-), શિક્ષા - એમ્ એ, નૈહર - ખરાજપુર, દરભઙ્ગા, સાસુર - ગોઢ઼િયારી (વલહા), વર્તમાન નિવાસ - રાઁચી, ઝારખણ્ડ, ઝારખંડ સરકાર મહિલા એવં વાલ વિકાસ સામાજિક સુરક્ષા વિભાગ મે વાલ વિકાસ પરિયોજના પદાધિકારી પદ સઁઽ સેવાનિવૃત્ત ઉપરાન્ત સ્વતંત્ર લેખન।
મૂલ હિન્દી- સ્વર્ગીય જિતેન્દ્ર કુમાર કર્ણ, મૈથિલી અનુવાદ- નિર્મલા કર્ણ

અગ્નિ શિખા (ભાગ- ૧૮)

પૂર્વ કથા:
લક્ષ્મી સ્વયંવર નાટિકા કે મધ્ય મે ભરત મુનિ કેર શ્રાપ ઉર્વશી કે ભેટલનિ, જાહિ મેં પુરૂરવા સ્વયમેવ સમ્મિલિત ભસ ગેલથિ લ ઉપસ્થિત દર્શક વર્ગ મેં કનિકો ઈ વાત જ્ઞાત નહિ ભસ સકલનિ લ પુરૂરવા ઉર્વશી કે પ્રેમ મેં વિકલ ભસ સ્વર્ગ લોક મેં ભ્રમણ કરૈત સંતાન વૃક્ષ કે નીચાઁ સોય પૂર્ણ મુદ્રા મેં વૈસલ રહથિ લ
આવ આગૂ:
ઉર્વશી કે પ્રેમ હ્રદય મેં વસૌને પુરૂરવા સંતાન વૃક્ષ કે નીચાઁ વિહ્વલ-વિકલ ભાય હુનકે સ્મરણ કરૈત પ્રેમ વિદગ્ધ ભેલ છલાહ લ જખનિ અતહુ

हुनका शांति नहि भेटैत छैन्हि, तखन ओ ओतऽ सँ उठि कऽ एक दिशि प्रस्थान केलथि

चलैत चलैत ओ एकटा सरोवर के निकट पहुंचि गेलथि सरोवर के कात मे पारिजात वृक्ष मे खिलल पुष्प अपन सुंदरता पर गर्वोन्नत छल ओ एक पुष्प के तोड़ि कऽ राजा अपन हाथ मे लऽ लेलथि। ओ अपन मोनहि मन सोचऽ लागलाह -

"ई बेह पुष्प अछि जेकरा याचना करनिहार के सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण होइत अछि। एखनहि हम एकरा याचना करैत छी। एकरा याचना करैत हम उर्वशी के कामना कऽ रहल छी। की एकरा याचना करए मे हमरा उर्वशी संग भेंट भऽ सकत ? अथवा ई सब जनश्रुति मात्र अछि? हँ! हँ ! अवश्य ई सब बात मात्र कल्पना पर आधारित होयत ! नहि! एहेन कोनो गुण एहि पुष्प मे नहि होयत ! यदि ई पुष्प तेहने गुण युक्त होइत तऽ इन्द्र एकरा याचना कऽ दानव पर विजय नहि प्राप्त कऽ सकैत छलथि? नहि!नहि!!ई सब कवि दंती हूड़ अछि"!

सरोवर के निकटस्थ चबूतरा पर बैसि गेलाह राजा। पुन :पारिजात पुष्प के तोड़ि-तोड़ि कऽ ओकर पंखुड़ि के एम्हर-ओम्हर छीट लागलाह। तखने हुनका एक अत्यंत मधुर स्वर सुनाइ पड़लनि -

"कतेको हृदय रूपी पुष्प के एहि प्रकारे नहि तोड़बाक चाही राजन्! एना केहुँ के आकांक्षा के तोड़ कऽ मसलनाइ घोर पाप अछि!"

ई मधुर कर्णप्रिय स्वर लहरी सुनि राजा चहुँकि उठलाह।

"उर्वशी अहाँ कतऽ नुकायल छी, आब आबि जाऊ प्रिये" - थरथराइत स्वर निकसलनि राजा के मुख सौं।

उर्वशी गंभीर मुद्रा मे राजा के निकट समुपस्थित भऽ गेलीह। राजा के संकेत पाबि ओ हुनके निकट चबूतरा पर बैसि गेलथि।

"कतेक आकाँक्षा छल अहाँक दर्शन के। आइ हमर मनकामना पूर्ण भे"।

"हँ राजन् , अहाँक मनकामना तऽ पूर्ण भेल मुदा हमर कामना कथि अछि,

की अहाँ ई नहि पूछब "?

आश्चर्यचकित सन राजा पुरूरवा उर्वशी के सौंदर्य के अपलक निहारैत रहलाह। पुनः किछु क्षण थम्हि कऽ अत्यंत मधुर स्वर मे पूछलथि -

"की मन कामना अछि अहाँ के "?

"हमर मनकामना अछि अहाँ के प्राप्त करबा के। हम अहाँ सऽ दूर नहि रहि सकैत छी राजन्"।

"काश ई सम्भव भऽ पबैत ! तखन तऽ हम - हम त अपना के भाग्यशाली बुझितहुँ। हम कृत-कृत्य भऽ जइतहुँ "।

" अहाँ एना किएक बजैत छी ? ई किएक नहि भऽ सकैत अछि"?

"हम शासक सत्ता के बंधन मे जकड़ल एकटा परतंत्र पक्षी थिकहुँ। हम स्वतंत्र कहाँ जे अहाँ के प्रेम के अपना सकी"?

"लेकिन आइ नहि तऽ काल्हि परसू ई तऽ निश्चित होयत ल अहाँ के हमर प्रेम के समक्ष झुकहि पड़त"!

"अहाँ एतेक विश्वास सऽ ई बात कोना कहि रहल छी ? इन्द्र एहि बात के स्वीकार कऽ लेताह "?

"इन्द्र मानथि अथवा नहि मानथि, परिस्थिति एहेन अवश्य बनत कि अहाँ के हमर वरण करहि पड़त"ल

"भला ई कोना कऽ संभव होयत "?

"अहाँ एतेक जल्दी भरत मुनि के श्राप बिसरि गेलहुँ ? हम अहाँ के लक्ष्मी स्वयंवर नाटिका के समापन के बाद अहाँ सऽ भेल अपन प्रथम भेंट मे बतौने तऽ छलहुँ ऋषिवर भरतमुनि के श्राप के विषय मे! हम अहाँ सऽ कनेको मिथ्या नहि कहने छलहुँ राजन्! हमरा अहाँ दिसि आकर्षित एवं नाटिका सऽ ध्यान विमुख भेल देखि कऽ ओ हमरा श्राप दऽ देने रहथि। ओ श्राप तऽ हमरा देने रहथि राजन् , मुदा ओहि श्राप मे सम्मिलित तऽ अहाँ पर्यन्त भऽ गेलहुँ। हुनक श्राप कोनो परिस्थिति मे विफल नहि भऽ सकैत अछि ल

𑒍𑒯𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣 𑒏𑒹 𑒁𑒪𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒨𑒥𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒹 𑒅𑒢𑒮𑒚 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑓀𑒑-𑒮𑓀𑒑 𑒞𑓄 𑒩𑒯𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒏𑒱 𑒢𑒯𑒱? 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒮𑓄 𑒯𑒧 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂 𑒖𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒧𑒪𑒱𑒢 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒯𑒼𑒨𑒞। 𑒮𑒔 𑒏𑒯𑒲 𑒞𑓄 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒦𑒩𑒞𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒥 𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒄 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣 𑒠𑓄 𑒏𑓄। 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒯𑒧 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣 𑒏𑒹 𑒠𑒴𑒮𑒩 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒮𑓄 𑒦𑒨𑒦𑒲𑒞 𑒕𑒲 "।

"𑒦𑒪𑒰 𑒍 𑒏𑒟𑒲 𑒁𑒕𑒱"?

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒦 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿? 𑒍 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒯𑒰𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒧𑒹𑓀 𑒞𑒣𑒻 𑒏𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱"? 𑒍 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣 𑒞𑓄 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱, 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒯𑒰𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒧𑒹𑓀 𑒞𑒣𑒻 𑒏𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒍 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣!𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒞𑓄 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒟𑒱𑒏𑒯𑒳𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂! 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍𑒯𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒩𑒼𑒏𑓂𑒭 𑒩𑒴𑒣𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿।"

𑒍𑒯 𑒯𑒿, 𑒨𑒰𑒠 𑒂𑒨𑒪 । 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒞𑒨𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒁𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒪𑒱𑒢 𑒦𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒁𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒟𑒱𑒏 । 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹𑓀 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣𑒏 𑒠𑒴𑒮𑒩 𑒁𑓀𑒬 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒳"!

𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒧𑒾𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒲। 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒾𑒢 𑒏𑒹 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒪𑒟𑒱 -

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒢𑒲𑒠 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒻 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲"?

" 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒻"?

"𑒯𑒧 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒏𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒲𑒠 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓄 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒻"।

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒨𑒰𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞𑒁𑒕𑒻"?

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒪𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲"?

"𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂 𑒯𑒧 𑒦𑒪𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒪𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲? 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒞𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒼𑒢 𑒧𑒹𑓀 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒂𑒬𑓀𑒏𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒻। 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓄 𑒦𑒹𑒙 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒮𑒿। 𑒂 𑒯𑒧 - 𑒯𑒧 𑒞 𑒖𑒣𑓂𑒣𑒢𑒱-𑒖𑒣𑓂𑒣𑒢𑒱 𑒯◌𑒵𑒠𑒨𑒏 𑒫𑒹𑒠𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒫𑒱𑒫𑒬 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒯 𑒧𑒹𑓀 𑒞𑒣𑓂𑒣𑒢𑒱-𑒞𑒣𑓂𑒣𑒢𑒱 𑒫𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒣𑓂𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒠𑒾𑒛𑓃 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒪𑒱𑒢 𑒏𑒹

છથ, શ્રા યથિ શ્રપથહું શ્રાહાઁ કે નકિટ"।

" શ્રાહાઁ યદિ ગાળા હોશ્ત હું ત્પ્પન હિમ્મ વ઼િવિશતાવૂહિ સિકતિહું"।

" હમ શ્રાવ ગાળા હોમય સસ ત્તસ ગ્રહ્યહું। હઁ યદિ શ્રાહાઁ યાહ્વ ત્તસ ગાની વનિ સકૈત છી "।

" હમ્મ હાત્દિક શ્રભિલાષા શ્રછૌ શ્રાહાઁ કે શ્રપન ગાની વના લિ થ હમ્મ હ્દય કે ગાની ત્તસ શ્રાહાઁ શ્રોહ ક્ષિણ ભસ ગેથહું ળપ્પન શ્રાહાઁક શ્રાઁગુડ઼ીક પ્રથમ સ્પર્શ ભેથ છથ હમ્મ થથાટ પ્ર, શ્રા હમ્મ શ્રાઁખિ શ્રાહાઁક સુંદ્તા મે ડૂવિ ગેથ છથ"।

" ત્પ્પન શ્રાહાઁ કે વ઼િવિશતા કેહેન"?

શ્રો સભ ત્તસ હમ શ્રાહાઁ કે પૂર્વ઼હિ મે વતા યુકથ છી। સ્વર્ગક શ્રપ્યાસન શ્રાહાઁ સસ હમ્મ મથિન કે માર્ગ મે વાયક શ્રછૌ। થિકનિ હમ વેસી દિન વાયા નહિ વનસ દેવ સ્વર્ગક શ્રપ્યાસન કે। હમ ળપ્પન શ્રાહાઁ કે પ્રેમ મે શ્રપના કે શ્રત્યધિક વ઼િવિશ શ્રનુભવ કર્સ થાગવ, શ્રાહાઁ કે વ઼િયોગ મે ળીવન હમ્મા વ઼ાસ્તે દુરૂહ ભસ ળાયત, ત્પ્પન હમ સ્વર્ગ કે શ્રપ્યાસન કે ઠોક્ર માર્ગિ શ્રાહાઁ કે શ્રપન ગાની વના પૃથ્વી પ્ર થસ ળાયવ"।

" હઁ!શ્રાવ હમ શ્રાહાઁ કે વ઼િવિશતા વૂહિ ગ્રહથ છી ગાળન્! સ્વર્ગક શાસન કે દાયિત્વ઼ એોક કમ સમય મે છોડ઼િ દેમય પ્ર હમ્મ સભ કે શ્રપાર વદનામી ભસ ળાયત થ સંગહિ ત્પ્પનિ ત્તસ હમ્મા પત્ની રૂપ મે સ્વ઼ીકાર કયથા પ્ર ઇન્દ્ર શ્રાહાઁક દુશ્મન વનિ ળયતાહ થ ઉપહાર કે રૂપ મે હમ્મા શ્રો શ્રાહાઁ કે ત્તસ નહિયે દેતાહ"। મહાશ્રીથ માનવ઼ શ્રા શ્રમર શ્રપ્સરા કે મથિન ત્રાથીક મે કેશ્રો પસત્રિન નહી કરત"થ

" હમ શ્રાહાઁ કે પ્રેમ મે પાગથ હોશ્ત ળા ગ્રહથ છી ઉર્વશી, શ્રા શ્રહું ત્તસ હમ્મ પ્રેમ પ્રાપ્તિ કે શ્રભિલાષા ગ્પૈત છી " - મધુર મુસ્કી કે સંગ કહથથિ ગાળા પુરૂરવા।

" હઁ ગાળન્ હમ્મા સભ કે એક-દૂસર સસ વ઼ાસ્તવ઼િક દિવ્ય પ્રેમ ભસ ગેથ શ્રછિ શ્રછિ। સચ્ચા પ્રેમ પ્રથમ દ્ષ્ટિ મે ભસ ળાશ્ત શ્રછિ"।

"हँ ! उर्वशी! अहाँ सत्य कहलहुँ, वास्तव मे कहु तँ प्रेम हृदय के बंधन थिक सब प्रकार के वासना सँ अलग। प्रेम जाति, धर्म अथवा ऊँच-नीच के बंधन के नहि मानैत अछि। वासना शारीरिक मिलन केर नाम थिक, मुदा प्रेम हृदय के मिलन अछि"।

" आब चलबाक चाही" - किछु बेर तक मौन रहि किछु सोचैत रहली उर्वशी, तदुपरांत उठबाक प्रयास करैत ओ राजा सँ कहलथि।

"नहि प्रिये किछु देरी तक आरो बैसू ने ! अखनि तँ प्रिये हम अहाँ के पूर्ण रूप देखि तक नहि पयलहुँ अछि"।

"ठीक बात छैक राजन्! हमरा किछु देरी तक आरो बैसब मे कोनो दिक्कत नहि, हम तँ अहाँ के लेल सोचैत छलहुँ"।

"नहि हमरा कोनो जल्दी नहि अछि"।

किछु बेर तक मौन रहि किछु सोचैत रहलथि दुनू, फेर उर्वशी एहि मौन के भंग करैत बाजि उठलथि-

"अहाँ के ज्ञात अछि कि हम अहाँ सँ कहिया सँ प्रेम कऽ रहल छी "?

"हँ, शायद ओहि दिन सँ जहि दिन सँ हम अहाँक स्थापना अपन हृदय मे कऽ लेलहुँ"।

"नहि हम तँ अहाँ के ओहि दिन सँ पहिलहुँ पहिने सँ प्रेम कऽ रहल छी"।

"से कोना ? हमर आ अहाँ के साक्षात्कार तँ ओहि दिन भेल छल पहिल बेर "?

""नहि हम तँ अहाँ के ओहि दिन सँ पहिले देख चुकल छलहुँ। जहि दिन अहाँ स्वर्ग पहुँचल रही। मुदा प्रेम तँ ओहि दिन सँ पूर्वहि सँ भऽ गेल छल अहाँ सँ, जखनि एक दिन नारद ऋषि अहाँ के प्रशंसा देव सभा मे देवेन्द्र सँ कएने छलथिन "।

"ओह उर्वशी अहाँ तँ चोर निकललहुँ "!

"चोर हम नहि, चोर तऽ अहाँ थिकहुँ। पहिले तऽ हमर हृदय अहीं चोरी कएने रही "।

"उर्वशी हमर हृदय चाहैत अछि कि अहाँ अहिना हमर समक्ष बैसल रही , आ हम अहाँ केँ देखैत रही "।

"जल कल्पनातक" - विहुँसैत उर्वशी पूछलथि।

"जल्पनातक हमर मांसक लोभी शिपीर सँऽ बचाएल रहत -तल्पनातक"।

"काश ! ई सम्भव भऽ सकैत! यदि ईश्वर हमरा सँऽ एप्पनाकोनो वरदान माँगैक लेल कहथि, तऽ हम अहाँ केँ कल्प पर्यन्त अपन समक्ष देखैत रहबाक वरदान माँगि लितहुँ "।

"अहाँ बहुत चतुर छी उर्वशी"।

"अहाँ सऽ कम छी हम, देखू अहाँ कुना चोरी-चोरी हमर हाथ केँ चुम्बन लऽ लेलहुँ"।

"उर्वशी हम एहि कमल पंखुड़ी केँ रसास्वादन कऽ सकैत छी"?

"नहि-नहि! अहाँक अभिलाषा एहि तरहेँ बढ़ल जाएत " - उर्वशी प्रतिरोध केलथि, मुदा पुरूरवा उर्वशी केँ अधर केँ चुम्बन लऽ लेलथि। लज्जा सँऽ उर्वशी केँ मुख-मंडल आरक्त भऽ गेल। ओ कृत्रिम क्रोध प्रगट करैत बाजि उठलथि -

"ओह तऽ अहाँ एहि कारण सँऽ हमरा कहि देने आर बैसऽ केँ वास्ते कहलहुँ"?

"नहि हमर अभिलाषा तऽ मात्र अहाँ केँ देखैत रहबाक छल, जाहि कारण सऽ हम ठहरल छलहुँ, मुदा अहाँक अप्रतिम सौन्दर्य हमर हृदय केँ एहि धृष्टताक वास्ते प्रेरित कऽ देलक ए यदि अहाँ केँ दुःख पहुँचल तऽ हम क्षमा चाहब अहाँ सँऽ"।

घबड़ा कऽ तड़प जाएल स्वर मे जल्दी सऽ उर्वशी बाजि उठलीह - "नहि-नहि नाथ! हम तऽ अपना केँ अहाँक प्रति समर्पित कऽ चुकलहुँ, बहुत

𑒣𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒱। 𑒍𑒍𑒍 𑒞𑓄 𑒯𑒧 𑒯𑓀𑒮𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 "।
𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒣𑒢 𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒪𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒏𑒹। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱- ' 𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒡𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹"𑒪

"𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩"?

"𑒯𑒿, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑓄 𑒋𑒞𑓁 𑒂 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹 𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒞𑓄 𑒠𑒹𑒫𑒩𑒰𑒖 𑒕𑒟𑒱, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒏𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒠𑒹𑒐𑓄 𑒏𑒹 𑒯𑒼𑒨𑒞"!

"𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒂𑒩 𑒚𑒯𑒩𑒱 𑒖𑒃𑒞𑒯𑒳𑒿, 𑒂𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒢𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒑𑓂𑒩 𑒩𑒯𑒞"।

"𑒂𑒥 𑒋𑒐𑒢 𑒚𑒯𑒩𑒢𑒰𑒄 𑒞𑓄 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹। 𑒯𑒿, 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒂𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒬 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒩𑒥।𑒂𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒢𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒑𑓂𑒩 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒋𑒞, 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒂𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒯 𑒮𑒯𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑒰𑒋𑒞 , 𑒂𑒯𑒰𑒿 𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒯-𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒠𑒑𑓂𑒡 𑒏𑒩𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒞 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒹 𑒡𑒩𑒱 𑒂𑒋𑒥 𑒂𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒮𑓄 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒏𑒹 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒬𑒰𑓀𑒞 𑒏𑒩𑒫𑒰 𑒪𑒹𑒪 "।

"𑒂 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒏𑒹 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒨𑒞!"

𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒂𑓀𑒐𑒱 𑒪 𑒧𑒹 𑒁𑒮𑓂𑒩𑒳 𑒯𑒱𑒪𑒱𑒧𑒱𑒪𑒱 𑒅𑒚𑒪𑒢𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒴𑒢𑓂𑒠 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒣𑒼𑒪 𑒣𑒩 𑒜𑒩𑒏𑒱 𑒯ॉ𑒙 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒏𑒢𑒪𑒰 𑒮𑓄 𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒍 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱-

"𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒯𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒏𑒹 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒬𑒰𑓀𑒞 𑒏𑒩𑒥 𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂"?

𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒋𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒑𑒪𑒲 𑒮𑓄 𑒁𑓀𑒑𑒴𑒚𑒲 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒏𑒼𑒧𑒪 𑒏𑒧𑒪 𑒏𑒩 𑒏𑒹 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒪𑒟𑒱 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒅𑓀𑒑𑒪𑒲 𑒧𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱-

"𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱-𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒂𑒯𑒰𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒬𑒰𑓀𑒞 𑒏𑒩𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹"𑒪

𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒦𑒰𑒫𑒰𑒫𑒹𑒬 𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒹 𑒫𑒏𑓂𑒭 𑒮𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒪𑒱𑒑𑒢𑒥𑒠𑓂𑒡 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒠𑒰𑒯𑒱𑒢𑒱 𑒯𑒰𑒟 𑒮𑓄 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒣𑒲𑒚 𑒣𑒩 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒟𑒣𑒏𑒲 𑒠𑒹𑒧𑓄 𑒪𑒑𑒰 𑒪𑒰𑒯 𑒪 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒟𑒱 𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹 𑒦𑒰𑒫 𑒦𑓀𑒑𑒱𑒧𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒋𑒢𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒄𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒂𑒑𑒱 𑒬𑒲𑒞𑒪 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒨 𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒴

के मुख पर असीम शांति व्याप्त भऽ गेल छलनि। आँखि मे संतुष्टि के भाव जनैलनि तेँ पलक स्वमेव मुँदा गेलनि। किछु क्षण बाद मधुर स्वप्न के भंग करैत उर्वशी कहलथि- "आब अपना सभ के चलबाक चाही नाथ्"।

"ठीक छैक! हमहूँ एह सोचैत छी"।

ओतह सँ स उठि गेलथि दुनू। पुन दुनू एक दूसर के हाथ मे हाथ थामि चलि देलथि। अमरावती मे पहुँचि कि दुनू अलग-अलग दिशा मे मुड़ गेलथि। मुदा विदा होइ सभ पूर्व राजा उर्वशी के दुनू हाथक मधुर चुंबन, आ पृथ्वी सभ पुरुरवा के शीघ्र वापस आबै के वचन उर्वशी लऽ चुकल रहथि।

क्रमशः

अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

३७.𑒣𑓂𑒩𑒝𑒫 𑒗𑒰-𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 (𑒪𑒒𑒳 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒑𑓂𑒨)



𑒣𑓂𑒩𑒝𑒫 𑒗𑒰

𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 (𑒪𑒒𑒳 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒑𑓂𑒨)

𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱𑒏 𑒂𑒞𑓀𑒏 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒥𑒹𑒩-𑒥𑒹𑒩 𑒋 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒹 𑒕𑒳𑒙𑒏𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒢 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒏𑓂𑒮𑒩𑒯𑒰 𑒣𑒹𑒣𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱𑒏 𑒂𑒞𑓀𑒏 𑒏𑒹 ख़𑒥𑒩𑒱 𑒕𑒣𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒪।

𑒋 𑒮𑒥 𑒮𑒹 𑒅𑒥𑒱𑒨𑒰 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒁𑓀𑒞𑒞𑓁 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒠𑒪𑒥𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒔𑒳𑒢𑒪𑒏। 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒃 𑒅𑒧𑓂𑒧𑒲𑒠 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒃 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱𑒏 𑒂𑒞𑓀𑒏 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏 𑒠𑒹𑒞।

𑒢𑒫𑒏𑒰 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒥𑒲𑒔 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒹 𑒂𑒞𑓀𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩' 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒖𑒲𑒥-𑒁𑒖𑒲𑒥 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒪𑒹𑒥' 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒳𑒐𑒠 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧 𑒏𑒧 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃 𑒂 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒏𑒕𑒱 𑒢 𑒏𑒕𑒱 𑒢𑒨𑒰 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒻𑒞 𑒮𑒹 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒦 𑒖𑒰𑒨, 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒂 𑒬𑒼𑒡 𑒏𑒧, 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒴𑒞𑒱, 𑒖𑒱𑒠𑓂𑒠 𑒂 𑒪𑒼𑒏𑒪𑒳𑒦𑒰𑒫𑒢𑒫𑒰𑒠 𑒥𑒹𑒮𑒱𑒂𑒃 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒐𑒳𑒬 𑒕𑒪, 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒦𑒾𑒏𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒹 𑒂𑒞𑓀𑒏 𑒮𑒹 𑒥𑒔𑒥𑒰𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒴𑒜𑓃 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒠 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪।

𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒹 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒄 𑒥𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒞𑒾 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒹 𑒑𑓀𑒡 𑒪𑒰𑒑𑒾 𑒞 𑒮𑒥 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒿𑒐𑒱, 𑒢𑒰𑒏 𑒧𑒳𑒩𑒳𑒢 𑒪𑒹𑒯𑒹𑓀, 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒧𑒼𑒢𑒹 𑒦𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒹𑒞𑒾। 𑒂𑒥 𑒮𑒥 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒩' 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪। 𑒌 𑒥𑒲𑒔 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒔𑒳𑒣𑒔𑒰𑒣 𑒂𑒥𑒃 𑒂 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒻। 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒂𑒥𑒰𑒠𑒲 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒕𑒪 𑒏𑒱 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒹 𑒄 𑒑𑒳𑒣𑒔𑒳𑒣 𑒐𑒹𑒪 𑒏𑒹 𑒣𑒞𑒰 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒢𑒃 𑒪𑒰𑒑𑒃। 𑒏𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒬𑒏 𑒏𑒩𑒨 𑒂 𑒖𑒰𑓀𑒔 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒃 𑒞 𑒦𑒾𑒏𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒑𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒍𑒨 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡𑒲 𑒒𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒏 𑒏𑒹 𑒔𑒳𑒣 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒕𑒪।

𑒌 𑒞𑒩𑒯𑒹 𑒏𑒰𑒪𑒔𑒏𑓂𑒩 𑒁𑒢𑒫𑒩𑒞 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒪𑒰𑒑𑒨 𑒕𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒮𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒢𑒰𑒃 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒨𑒞𑒱 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪।

𑒢𑒼𑒙: 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒑𑒰- 𑒂𑒧 𑒢𑒰𑒑𑒩𑒱𑒏 , 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 - 𑒦𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒒𑒼𑒙𑒰𑒪𑒰।

𑒌 **𑒩𑒔𑒢𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨** ggajendra@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓𑓘.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪-𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪: 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒏𑒧𑒲𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢



𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪

𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪: 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒏𑒧𑒲𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢

𑓑

𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪:𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞

વહિાન મે અગસ્ત ક્નાંતિ અંતગ્ગત અંાસી પન લટકે વાલા સાત શહીદ મે એકટા આ મથિલિા અન્તગ્ગત ળલિા સીતામઢ઼ી કે પહલિા શહીદ નામશ્ઙલ મંડલ નહથિ઼।

મહાન્ ક્નાન્તિકાિરી અમન શહીદ નામશ્ઙલ મંડલ ૦૬ અગસ્ત ૧૯૨૪ કે સીતામઢ઼ી ળલિા કે વાળપટ્ટી થાના કે મધુનાપુન ગાંવ મે યનુવંશી યાનુક કુલ મે પતિા ગોપ્પુલ મંડલ આ માતા ગનવી દેવી કે પુત્ન નત્ન કે નૂપ મે પૈદા હોયલ નહ।નામશ્ઙલ મંડલ યાન જાઈ મે તેસન નહથિ઼।પહલિા નામશનામ મંડલ, દોસન મંહથ મંડલ આ યૌથમ મશ્રિી મંડલ નહ।સજા જાઈ કુશ્તી ખેલ આ કસિાની કનેમાલ- ળાલ પોસ કે આ વોકન ખનીદ- વેય કનકે અપન આમદની ળુટાવત નહ।હુનકન વાવૂળી ગાંવ મે એકટા કિરાના કે દોકાન યલવૈત નહથિ઼।વો૧૪ વનખ કે ૩મન મે મડિલિ પાસ કન ગેલ નહથિ઼।પહલવાની કે યલતે ૨નકન દેહ કસલ નહ।પ' પ' ' કે ગોન દેહ, યમકૈત આંખિ, જાવ્ય લલિાન આ ઔડિયા કેશ સહળૈય મન મોહે વાલા નહ।યેહના હંસમુખ, સૌમ્ય, મ ૃદુભાષી, સાહસી આ નોવદાન નહ।૧૭વનખ કે ૩મન મે સીતામઢ઼ી ળલિા કે નુન્નીસૈદપુન થાના જીતેન ગંગવાના નવિાસી અમીન મંડલ કે વેટી ળગપતયિા દેવી સે વિઆહ જેલ નહ।વો યાન્મકિ આ દયાળુ મહલિા નહથિ઼।વિઆહ કે એક વનસિ વાદ ૧૫સતિમ્વન ૧૯૪૨કે દનિ હુનકા એકટા પુત્ન નત્ન જેલ નહ ળૌ નામશ્ઙલ મંડલ ળેહલ મે નહથિ઼।

અખલિ જાનતીય કાંગ્નેસ અયવિશન સન્વસમ્મતિ સં ગાંધી ળી કે અગુઆઈ આ અવ્દુલ કલામ આળાદ કે સભાપતિત્વ મે ૦૮અગસ્ત૧૯૪૨ કે એકટા પ્નસ્તાવ પાસ કૈલન નહ ળે સમૂયા દેશ મે જાનત છોડ઼ો આન્દોલન વા

𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒕𑒻𑒨।𑒖𑒹 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒏𑒹 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒝𑒰𑓀𑒏𑒱𑒞 𑒕𑒻𑒨।

𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒪𑒣𑒙 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒯𑒱𑓀𑒠𑒳𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒑𑒼𑒬 𑒧𑒹 𑒪 𑒪𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒨। 𑒧𑒡𑒳𑒩𑒰𑒣𑒳𑒩 𑒏𑒹 𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒑𑒰𑓀𑒫 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒦𑒰 𑒏𑒻𑒪𑒏𑒂 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒪𑒛𑓃𑒰𑒄 𑒪𑒛𑓃𑒻 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒰𑒧𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒏𑒹 𑒢𑒹𑒞𑒵𑒞𑓂𑒫 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒠𑒪 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒻𑒪𑒢।𑒯𑒩𑒱𑒯𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠, 𑒏𑒣𑒱𑒪 𑒠𑒹𑒫 𑒮𑒱𑓀𑒯, 𑒬𑒞𑓂𑒩𑒳𑒒𑓂𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯, 𑒧𑒳𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒮𑒱𑓀𑒯, 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠, 𑒩𑒰𑒧𑒣𑓂𑒩𑒲𑒞 𑒮𑒰𑒯, 𑒮𑒳𑒐𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒧𑓀𑒛𑒪, 𑒮𑒯𑒖𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰, 𑒦𑒳𑒫𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒨 𑒂 𑒖𑒢𑒰𑒩𑓂𑒠𑒢 𑒗𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒁𑒄 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒠𑒪 𑒏𑒹 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢।𑒍 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒣𑒩𑒲 𑒟𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒩𑒼𑒑𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒏𑒹 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒂 𑒁𑒢𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒹 𑒟𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒞𑒥𑒰𑒯 𑒩𑒯𑒻।𑒁𑒃𑒮𑒹 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒥𑒾𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻।

𑓑𑓙𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞𑓑𑓙𑓔𑓒𑒏𑒹 𑒠𑒱𑒢 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲 𑒮𑒱𑒣𑒰𑒯𑒲 𑒐𑒰𑒠𑒲 𑒦𑓀𑒛𑒰𑒩, 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒩𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒠𑒰𑒮, 𑒩𑒰𑒧𑒢𑓀𑒠𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒂 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒏𑒹 𑒒𑒩 𑒖𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏।𑒣𑒞𑒰 𑒔𑒪𑒪 𑒏𑒱𑓒𑓔𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓑𑓙𑓔𑓒𑒏𑒹 𑒠𑒱𑒢 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒰𑒞 𑒧𑒔𑒰𑒫𑒹 𑒂𑒞𑒞𑒰𑒨𑒲 𑒠𑒩𑒼𑒑𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒥𑒰𑒪𑒣𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒂𑒥𑒹 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒕𑒻𑒨। 𑒂𑓀𑒠𑒼𑒪𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒋𑒑𑒼 𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒧𑒲𑒙𑒱𑓀𑒑 𑒥𑒢𑒑𑒰𑓀𑒫 𑒧𑒹 𑒏𑒻𑒪𑒢 𑒂 𑒫𑒲𑒩 𑒩𑒰𑒧𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒏𑒹 𑒢𑒹𑒞𑒵𑒞𑓂𑒫 𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒹 𑒑𑒠𑓂𑒠𑒰𑒩 𑒠𑒩𑒼𑒑𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒹 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒯 𑒮𑒹 𑒯𑒙𑒰𑒫𑒹 𑒏𑒹 𑒬𑒣𑒟 𑒪 𑒪𑒹𑒪𑒢।𑒥𑒻𑒚𑒏 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒩𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒠𑒰𑒮, 𑒮𑒏𑒪𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒳𑓀𑒫𑒩, 𑒩𑒰𑒧𑒫𑒵𑒢𑓂𑒠𑒰𑒫𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, 𑒯𑒩𑒱𑒯𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠, 𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒂 𑒫𑒲𑒩 𑒩𑒰𑒧𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒂𑒠𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒢।

𑓒𑓔𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓑𑓙𑓔𑓒 𑒏𑒹 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒱𑒞𑒰𑒢𑒲 𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒂 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡𑒲 𑒂𑒞𑒞𑒰𑒨𑒲 𑒠𑒩𑒼𑒑𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒏𑒼𑒯𑒩𑒰𑒧 𑒧𑒔𑒰𑒫𑒹 𑒥𑒰𑒪𑒣𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒂𑒥𑒹 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒩𑒯𑒻।𑒣𑓀𑒔 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒠𑒪 𑒏𑒹 𑒧𑓀𑒬𑒰 𑒫𑒼 𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒹 𑒖𑒰𑒢 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒞 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒯𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒰𑒏𑒹

अपने न आयल आ क्रूर आततायी अंग्रेजी हुकूमत के एसडीओ हरदीप नारायण सिंह, पुलिस इंस्पेक्टर राममूर्ति झा पुलिस श्याम लाल सिंह, चपरासी दरवेशी सिंह आ ड्राइवर आदित्य राम के पुरा दल के आंदोलन के कुचलै के लेल भेज देलक।

बाजपट्टी चौक पर रामस्वरूप मंडल के नेतृत्व मे आंदोलनी लाठी, डंडा, भाला, बरछी, तलवार, फरसा से लैस चौक के जाम कैल रहै।तहि बीच मे आततायी एसडीओ हरदीप नारायण सिंह अपन टीम के साथ पहुँचल। आंदोलनकारी और उत्तेजित हो गेल। यही बीच मे अंग्रेजी सरकार के इंस्पेक्टर राममूर्ति झा आंदोलन के कुचलै के लेल अपन पिस्तौल से हवाई फायरिंग करे लागल। आंदोलनकारी इसे भड़क गेल। इ बीच मे रामस्वरूप मंडल इंस्पेक्टर राममूर्ति के हाथ से झपट्टा मार के पिस्तौल छीन ले लेलक। आंदोलनकारी इंस्पेक्टर से जुझे लागल।

तब वीर रामस्वरूप मंडल सबसे पहिले वार फरसा से एसडीओ हरदीप नारायण सिंह के गर्दन पर कैलन। छपाक के आवाज गर्दन कट के लटक गेल आ खून के फव्वारा छूट पड़ल। लहू से रामस्वरूप मंडल नहा गेल। लगैय जेना अंग्रेजी हुकूमत से खून के होली खेललन हैय। आंदोलकारी लाठी डंडा भाला फरसा से इंस्पेक्टर राममूर्ति झा, हवलदार श्यामलाल सिंह आ चपरासी दरवेशी सिंह के भी मार देलन। भीड़ के फायदा उठा के चपरासी आदित्य राम भाग गेल।

वीर रामस्वरूप मंडल एसडीओ हरदीप नारायण सिंह के लाश आ आंदोलनकारी सब इंस्पेक्टर राममूर्ति झा, हवलदार श्यामलाल सिंह आ चपरासी दरवेशी सिंह के लाश के अपना कंधा पर उठा के बगल के अधवारा नदी मे विसर्जित कै देलक। आंदोलनकारी भारत माता के जय बोलैत रहै। इ तरह

𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒹 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒂𑓀𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒨𑒏 𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒹 𑒂𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏 𑒠𑒳𑒬𑓂𑒧𑒢 𑒏𑒹 𑒁𑓀𑒞 𑒦 𑒑𑒹𑒪।

𑒦𑒰𑒑 𑒏𑒹 𑒔𑒣𑒩𑒰𑒮𑒲 𑒂𑒠𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲 𑒧𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑓂𑒩𑒹𑒙 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙 𑒧𑒹 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪 𑒂 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪, 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒩𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒠𑒰𑒮 𑒋𑒫𑓀 𑒞𑒲𑒢 𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒾 𑒁𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞 𑒣𑒩 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒹𑒮 𑒢𑓀- ४७३४२ 𑒏𑒰 𑒧𑒳𑒏𑒠𑒧𑒰 𑒏𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒏।𑒁𑒃 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰𑒏𑒰𑓀𑒛 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖 𑒏𑒪𑒹𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒂 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒱𑒣𑒰𑒯𑒲 𑒮𑒦 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒣𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒧𑒹 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒂 𑒁𑒢𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒂 𑒂𑓀𑒠𑒼𑒪𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒂𑒑 𑒪𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒒𑒩 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒐 𑒏𑒻 𑒠𑒹𑒥𑒏𑒲। 𑒥𑒯𑒳 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒏𑒹 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞 𑒮𑒹 𑒐𑒹𑒪 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒥𑒵𑒢𑓂𑒠𑒰𑒫𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒪𑒼𑒑 𑒏𑒹 𑒑𑒱𑒩𑒤𑓂𑒞𑒰𑒩 𑒏𑒩 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒥𑒢𑒑𑒰𑓀𑒫 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒮𑒯𑒱 𑒏𑒹 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒖𑒹 𑒣𑒩 𑒑𑒼𑒪𑒲 𑒧𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒮𑒯𑒱 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒦𑒹𑒖 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒹 𑒪𑒼𑒑 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒑 𑒑𑒹𑒪।

𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒦𑒰𑒃 𑒏𑒹 𑒮𑒮𑒳𑒩𑒰𑒩 𑒪𑒕𑒧𑒱𑒢𑒱𑒨𑒰, 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒩𑒐𑒹 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢। 𑒮𑒮𑒳𑒩 𑒢𑓀𑒠𑒳 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑓀𑒩𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒠𑒹𑒪𑒢।𑒥𑒲𑒩 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒢 𑒏𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒐𑒴।𑒯𑒧 𑒞 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒏𑒹 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒹𑒮 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒖𑒰𑒨𑒥।𑒢𑓀𑒠𑒳 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒼𑒏𑒪𑒢।𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒠𑒱𑒫𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒕𑒱𑒣𑒢𑒰 𑒩𑒳𑒏𑒢𑒰 𑒧𑓀𑒖𑒴𑒩 𑒢 𑒩𑒯𑒹।१० 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒡𑒳𑒩𑒰𑒣𑒳𑒩 𑒂 𑒑𑒹𑒪𑒢।𑒛𑒩𑒪 𑒪𑒼𑒑 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪- 𑒦𑒰𑒑 𑒖𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪। 𑒋𑒮𑒛𑒲𑒁𑒼, 𑒃𑓀𑒮𑓂𑒣𑒹𑒏𑓂𑒙𑒩, 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒂 𑒔𑒣𑒩𑒰𑒮𑒲 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒩𑒹 𑒧𑒹 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒯𑒰𑒟 𑒯𑒾𑒥𑒰𑒩𑒴 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒰 𑒖𑒻𑒨𑒥।𑒦𑒰𑒑 𑒖𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪।𑒦𑒰𑒑 𑒖𑒰।

𑒥𑒲𑒩 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒢- 𑒯𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒔𑒼𑒩𑒲 𑒛𑒏𑒻𑒞𑒲 𑒢 𑒏𑒻𑒪𑒲 𑒯𑒻𑒨।𑒯𑒧 𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪, 𑒪𑒼𑒑 𑒏𑒹 𑒦𑒪𑒰𑒃 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪, 𑒁𑒧𑒢 𑒂 𑒮𑒳𑒐 𑒔𑒻𑒢 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲 𑒧𑒳𑒪𑒰𑒖𑒱𑒧 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒩 𑒪𑒲

હૈપ્રાળેઇ શ્રા શ્રાંસી કે ઊઇ હમ ગૈપ્રાર છી। હમરા ન યતિ। હૈપ્ર, ન ડર હૈપ્ર, ન ભપ્ર હૈપ્ર।

વાળપટ્ટી હત્યાકાંડ કે વાદ૨૫ શ્રગાસ્ત ૧૯૪૨કે દિન શ્રાંદોલનકારી શ્રા શ્રંગ્રેળી પુલિસ કે હડ઼પ મે યગૌત મે યગૌત કે ભદ઼ઈ કવારી શહીદ હો ગેલાહ। પુપરી મે સહદેવ સાહ, મહાવીર ગોપ, વહેરા કે રામવૃહાવન ઠાકુર શહીદ ભો ગેલાહ। હરિહરપુર કે રામલગાન સહિ, રામ સ્વારથ સહિ઼પ, રામયરિત્ર મંડલ, હગારૂ મંડલ, રામસ્વરૂપ સહિ લગાન નેપાલ મે ભૂમિગત હો ગેલાહ।

૨૯શ્રગાસ્ત૧૯૪૨કે દિન રીગા રેવાસી મે મથુરા મંડલ શહીદ હો ગેલાહ। રાળારામ મંડલ, લીલા મંડલ, રકટૂ મંડલ, સૂરાળ કુર્મી, વંગાલી મંડલ, પ્રમુના મેહતા, નંદલાલ મેહતા, વુનીલાલ રાપ્ર, સહદેવ રાપ્ર, સુંદર મેહતા, નેવી મંડલ સંગે દર્જનો શ્રાંદોલનકારી ઘાપ્રલ હો ગેલાહ।

રીગા સ્ટેશન પર રેલ પટરી ઉખાડ઼ૈત વેર મે પુલિસ ગોલી સે મૌળે હા શ્રા સુખરામ મહરા શહીદ હો ગેલાહ।દૂર્જ મપિ઼ાં ઘાપ્રલ શ્રા વાદ મે શહીદ ભો ગેલાહ।

૩૦શ્રગાસ્ત૧૯૪૨કે દિન તરપિ઼ાની છપરા (શિવિહર) મે પુલિસ શ્રા શ્રાંદોલનકારી કે લડ઼ાઈ મે વલદેવ સૂંડી, સુખ્ખન લોહાર, વંશી તતમા, પરસત સાહ, સુંદર મહરા, છકૂ કાનૂ, ળપ્રમંગલ સહિ, ભૂપન સહિ શ્રા નૌળાદ સહિ શહીદ ભો ગેલાહ।વકિલ કુર્મી, વુધન કહાર, વૃહાવન યમાર, મુક્તિ સહિ, ગુલળાર સહિ, રામેશ્વર સહિ, વંગાલી ઘુનપિ઼ા, મૌળે સૂઢ઼ી, યુલહાઈ ઠાકુર, રામલોયન સહિ, રામદેવ સહિ, રામપુકાર તતમા, રાળેન્દ્ર યાણુક, ગુગુલ યોવી, પુરન સહિ *શ્રા દર્જન શ્રાંદોલનકારી ઘાપ્રલ હો ગેલાહ*

०६सितम्बर१९४२के दिन वीर रामफल मंडल गिरफ्तार कैल गेलाह।छह महीना धरि सीतामढ़ी जेल मे रहला के बाद हुनका सेन्ट्रल जेल भागलपुर भेज देलका। ग्रामीण जनक मंडल, सहोदर भाई महंथ मंडल खुशी से जेल मे रामफल मंडल के बतौलक रामफल तोरा एकटा पुत्र रत्न प्राप्त भे लौ हैय।हंसैत वीर रामफल मंडल कहलक- आब हमरा फांसी मलि जायत।अब हम घर पर न लौट पायब।

आठ महीना बाद हुनकर पुत्र के देहांत भो गेल। घरवाला २ सूचना वीर रामफल मंडल के न देलका।

भागलपुर कोर्ट मे १२, १३, १४ अगस्त१९४३के लगातार बहस भेल।वीर रामफल मंडल के बचाव पक्ष मे तीन नामी वकील के बहस करै ला प्रांतीय कांग्रेस कमिटी भेज ले रहे। वकील सब वीर रामफल मंडल के सुझाव देलक- कोर्ट मे जज के सामने कहब, हम न मार ली हैय। संदेह के लाभ मे अहां बच जायब। पर जब जज पूछलक - रामफल मंडल तूं एसडीओ के मार ला।वकील के सुझाव के ठुकरा के वीर क्रांतिकारी रामफल मंडल कहलक- हां हजूर।पहिले फरसा हम ही मार लियै।

जखि जज, वीर रामफल मंडल के फांसी के सजा सुनैल कै।

२३ अगस्त १९४३ के भोर०४ बजे भारत के वीर सपूत रामफल मंडल हँसैत हँसैत फांसी के फंदा के चूम लेलन।

फांसी के फंदा चूमे से पहिले उनका से अंतिम इच्छा पुछल गेल रहै त वीर रामफल मंडल कहलन- अंग्रेज सब हमर देश छोड़ कर चल जाय आ हमर प्राण से भी प्यारा देश आजाद हो जाय।

अगस्त क्रांति के वीर शहीद के नाम तत्कालीन जिला मुजफ्फरपुर के टावर मे स्वर्णांकित है।आ सीतामढ़ी जिला के बाजपट्टी चौक पर के टावर मे आदमकद मूर्ति प्रतिष्ठापित है।जे आइ भारत के संतान के भारत के आजादी के अक्षुण्ण रखे के संदेश दे रहल है।

हिंदी के एकटा कविता अंश के रूप मे-

हम लाये है तूफान से

किश्ती निकाल के,

इस देश को रखना,

मेरे बच्चे संभाल के।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒹 𑒁𑒩𑒮𑒪 𑒫𑒲𑒩 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒗𑒰𑓀𑒮𑒲 𑒏𑒹 𑒗𑓀𑒛𑒰 𑒏𑒹 𑒔𑒴𑒧𑒻 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒩𑒰𑒧𑒐𑒹𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒣𑒩 𑒑𑒩𑓂𑒫 𑒕𑒻𑒏।

𑓒

𑒏𑒧𑒲𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢

𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒋 𑒉𑒏 𑒮𑒰𑒟 𑒏𑒫𑒱, 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩, 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒏 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒮𑒼𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒑𑓀𑒡 𑒃 𑒏𑒱 𑒋 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒰𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒜𑒰𑒥𑒻 𑒏𑒹 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒠𑒲𑒫𑒰𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒨। 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒼 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮 𑒖𑒰𑒨। 𑒐𑒔𑒰𑒐𑒔 𑒏𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒦𑒩𑒪 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒏𑒹 𑒐𑒱𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒂 𑒑𑒹𑒙 𑒣𑒩 𑒐𑒛𑓃𑒰 𑒯𑒼𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒹। 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒏𑒼𑒃 𑒬𑒼𑒩 𑒑𑒳𑒪 𑒢। 𑒏𑒹𑒫𑒪 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒹 𑒂𑒫𑒰𑒖। 𑒪𑒹𑒏𑓂𑒔𑒩 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒦𑒰𑒫 𑒦𑓀𑒑𑒱𑒧𑒰 𑒧𑒢 𑒧𑒼𑒯𑒏।

𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒹 𑒩𑒯𑒢 𑒮𑒯𑒢 𑒧𑒹 𑒩𑒄𑒮𑒣𑒢 𑒙𑒣𑒏𑒹। 𑒑𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒧𑒹 𑒮𑒤𑒹𑒠 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒞𑒰 - 𑒣𑒻𑒖𑒰𑒧𑒰 𑒞 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒮𑒤𑒹𑒠 𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒞𑒰। 𑒖𑒰𑒛𑓃𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒙- 𑒣𑒻𑓀𑒙 𑒂 𑒧𑒤𑒪𑒩। 𑒧𑒳𑓀𑒯 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒢 𑒂 𑒂𑓀𑒐 𑒣𑒩 𑒑𑒼𑒑𑒪𑓂𑒮। 𑒮𑒰𑒟 𑒧𑒹 𑒧𑒠𑒱𑒩𑒰। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑓀𑒖𑒴𑒮𑒲 𑒢।

𑒩𑒱𑒏𑓂𑒬𑒰𑒫𑒰𑒪𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒱𑒫𑒰𑒢𑒰। 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒬𑒰𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒖𑒩 𑒖𑒾 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒏𑒱 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒫𑒹 𑒮𑒹 𑒧𑒢𑒰𑒯𑒲। 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒦𑒰𑒛𑓃𑒰 𑒑𑒢𑒱𑒏𑒹 𑒢 𑒠𑒹𑒪𑒢। 𑒖𑒹𑒥𑒲 𑒮𑒹 𑒖𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒪 𑒖𑒰𑒨। 𑒖𑒾 𑒖𑒹𑒥 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒩𑒯𑒨𑒼 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒬𑒰𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒧𑒳𑓀𑒯 𑒢 𑒐𑒳𑒪𑒪।

𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒾𑓀𑒠𑒩𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒠𑒱𑒫𑒰𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒰। 𑒯𑒧𑒹𑒬𑒰 𑒮𑒳𑓀𑒠𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒹 𑒒𑒱𑒩𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒰। 𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒱𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒹 𑒫𑒰 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒹 𑒫𑒰𑒮𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒩𑒯𑒨। 𑒣𑒲𑒉𑒔𑒛𑒲 𑒏𑒩𑒹𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒉𑒑𑒼 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒞

શકિાયતો કરૈત રહૈ। પરંતુ હુનિકર વદ્વિતા આ ઉચ્ચ સંપર્ક કે આગા શકિાયત નરિસ્ત ભો ગેલ।

પ્રોફેસર કુમાર કે પત્ની રહે કામનિી। ઉચ્ચ કુલ કે બેટી। બાબૂ બ્રજ કે બડ઼ા બાબૂ। કામનિી સ્નાતક રહૈ।ખૂબ સુન્દર।સાક્ષાત કામનિી। પરંતુ કામનિી સેહો બીસ રહૈ બોકર છોટ બહનિ કામ્યા। કામ્યા એમ એ મૈથલિી મે કુમાર બશ્વિાસ કે છાત્રા રહૈ। સૌંદર્ય કે પ્રરંભા સે સૌંદર્ય કે સૂલ કંડુ બય કે રહ સકૈય હયા। કુમાર સે કામ્યા બય ન પાયલ। પ્રરંભા જેતે સૂલ કે ચાહૈત હય, બોતબે સૂલ પ્રરંભા કે ચાહૈત હય। પ્રેમી ઉઠે ચાહય હય ત પ્રેમકિા ઉઠાયાર દૂનૂ કે પરસ્પર બરિોધી આકર્ષક સંબંધ હય।

રહલ કામનિી કે બરિોધ કે બાત ત ઉચ્ચ કુલ આ કુમાર બશ્વિાસ કે બદ્વિતા બાધક। સમાજ મે બદ્વિાન કે ગલત કાજ કે બરિોધ કરે મે સમાજ અસમર્થ હો જાઈ હયા।

છોડ઼ૂ બો બદ્વિાન છથનિ, હુનકા લેલ એકટા ખૂન માફ હયા।

ત કુમાર એગો ખૂન ક દેલન। રહસ્યમય ખૂના।જેકરમે ખૂન ન બહલ। કુમાર બશ્વિાસ અપના સાળી આ છાત્રા કે બવિાહ અપન સ્વજાતીય છાત્ર શેખર સે કરા દેલન।આ બોકર હત્યા કે ષડયંત્ર રચલન।

એકાંત મે કુમાર બજલન - કામ્યા અબ હમ દૂનૂ ગોરે બનિા લાગ લપટ કે સાથ રહબ।લબિ ઇન રલિશનશપિ।

કામ્યા બાજલ - કોના। જીજા જી।

કુમાર બાજલ - અંહા કે મનમોહની બસિ કન્યા બને પડ઼ત। અંહા રાત મે અપના દુલ્હા કે દૂધ મે જહર મલિા કે પલિા દૂ।આગા સબ હમ દેખ લિબય।

काम्या बाजल - जीजा जी। अहां सौंदर्य के खतरनाक खिलाड़ी छी।

कुमार बाजल - कोनो अहां कम खेलाड़ी छी।

काम्या बाजल - बेश जीजा जी।

काम्या आइ रात विष कन्या बन गेल।अपन सौंदर्य जाल मे समेटित शेखर के जहर मिलायल दूध पिआ देलक।

सबेरे शेखर बिछाबन पर मृत पायल गेल रोना रोहट भेल। कुमार विश्वास के पहल पर पुलिस के सूचितो न कैल गेल। बातो खतम भे गेल।

कामिनी त अपन मुँह बंद क लेलक।कुमार विश्वास आ विपिन काम्या लिव इन रिलेशनशिप मे रहे लागल।

आइ लोग कहय हय कुमार जेतवे विद्वान हय ओतवे कमीना इंसान हय।

- आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्रा देवी, पिता-स्व०रामेश्वर मंडल, पत्नी- प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियौ २०२२ प्रकाशित रचना - सहिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ सौर्य गान २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश सामाजिक- सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-

પરિહાર જિલા-સીતામઢી વર્તમાન પતા-પપિયા સદન, મુરલિયાચક વાર્ડ-૦૪ સીતામઢી પોસ્ટ-ચકમહિલા જિલા-સીતામઢી રાજ્ય-બિહાર પિન-૮૪૩૩૦૨ મો નં- ૯૯૭૩૬૪૧૦૭૫ ઈમેલ- રામાનાનદમાનદાલ૦૦૧૦ગમાઇલ.કોમ

ઐ રચનાપર અપન મંતવ્ય દિતોરિઅલસ્તાફવિદેહા૦ગમાઇલ.કોમ **પર પઠાઉ।**

𑓓𑓘𑓙. 𑒛𑒰. 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩-𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒋𑒪𑒲𑒙 𑒥𑒼𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃 𑒂 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒢𑒰𑒬𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪



𑒛𑒰. 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒋𑒪𑒲𑒙 𑒥𑒼𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃 𑒂 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒢𑒰𑒬𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩, 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒛𑓀𑒏𑒰 𑒣𑒱𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒥𑒪𑒴 𑒄 𑒮𑒥 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒯𑒃? 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒪𑒏, 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒧𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒯𑒃 𑒏𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨? 𑒯𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒙𑒰 𑒞𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒯𑒃 𑒂 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒞𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒩𑒻 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒂 𑒢𑒻 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹 𑒧𑒼𑒢 𑒦𑒩𑒻 𑒕𑒻? 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒕𑒻 𑒂 𑒮𑒥 𑒮 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑓀𑒡 𑒧𑒔𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒃 𑒋𑒪𑒲𑒙 𑒥𑒼𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃 𑒂 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒢𑒰𑒬𑒲 𑒣𑒹𑒙𑒣𑒼𑒮𑒳𑒂 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥? 𑒋𑒏𑒩𑒹 𑒮𑒥 𑒮 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒖𑒢𑒰𑒩𑓂𑒠𑒢 𑒪𑒪𑒏𑒰𑒩𑒱 𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒕𑒻 𑒢𑒹 𑒖𑒹 𑒥𑒪𑒴 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒯𑒃 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥 𑒪𑒏 𑒑𑒩𑒱𑒥𑒼 𑒥𑒢𑓂𑒯𑒰𑒋𑒪 𑒯𑒃 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨? 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒥 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒏𑒹 𑒅𑒒𑒰𑒩𑒥 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒩𑒻 𑒞 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒠𑒻 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒩𑒰𑒧 𑒦𑓄 𑒖𑒹𑒞𑒻 𑒏𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒖𑒰𑒑𑒴𑒩𑒱𑒨𑒏𑒱𑒧 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒁𑒃 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒋𑒪𑒲𑒙 𑒥𑒼𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒰𑒤𑒱𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪𑒲 𑒐𑒴𑒥 𑒤𑒪𑒰𑒤𑒴𑒪 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒏𑒲 𑒋𑒪𑒲𑒙 𑒥𑒼𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒰𑒧𑒩𑓂𑒬𑒲, 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒖𑒏, 𑒖𑒴𑒩𑒲, 𑒮𑒪𑒰𑒯𑒏𑒰𑒩, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒼𑒖𑒣𑒳𑒩𑒲 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒧𑒹 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒱 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒬𑒲, 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩, 𑒣𑒠, 𑒏𑒹 𑒦𑒩𑒣𑒴𑒩 𑒤𑒰𑒨𑒠𑒰 𑒅𑒚𑒰 𑒥𑒼𑒢𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒣𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒞 𑒂 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒣𑒹𑒙 𑒦𑒩𑒞 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪𑒲 𑒔𑒧𑒏𑒾𑒢𑒹 𑒤𑒪𑒱𑒞 𑒂 𑒥𑒩𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒰𑒥𑒲𑒋 𑒢𑒬𑒰 𑒧𑒹

યૂન નહિ઼ ળવકી એકના સવકે ઊપ્પિઊ સાહિત્િય઼ એકના ગમિોહક ઊક છુટગૈયા સાહિત્િય઼કાન છોરડ઼ આણ કોર઼ તેસન ઊક આમ ળળ સવ ગૈ પઢ઼ છૈ દોસન દસિ સન્વ઼ગાશી પેટપોઉઆ દઊાઊ સહ સેહો પ્પૂવ ઉગપાગ મયૌગે આછ઼િ કિ઼ો યંદાપ્પોગી ક ઈ દઊાઊ સવ સાહિત્િય઼કિ આયો઼ળળ ક પ્પૂવ આગેનૂઆ ઙંકા પીટગ પુનૂસ્કાન વાંટગ આપનો પુનૂસ્કાન નત્ણ વટોનગ આ ઈ આેકના સમ્માણતિ કનગ ઉ આેકના શ્ઊા યઊિં કે આ યઊિ઼ા હ઼ા શ્ઊ઼ા હ઼ાં કે સમ્માણતિ ક સાહિત્િય઼કાન હેવાક ઙંકા દશમી કે ઙગાન ળેકા ઙૂગા ઙૂગા ક દેગ કી કના દેગ આણ કોગો ઊપ્પક વ઼ા કી આણ ગમિોહક ઊપ્પક કે સાહિત્િય઼કાન માગૈ કાઊ દસ ટા વહ઼ત્ણા વગઆિણ઼ આાજાસી પટઊ પન એકના સવહક કુક્ૃતય઼ક વમિોય જેઊા પન ઈ દઊાઊ એઊિટ સવ એક આાય વેન કોગો યુપયાપી મંઙઊ્ ગમિગટિયા઼ મંઙઊ વ઼ા યુપયાપી યઊાક ળાદવ઼ મહ઼ગો કાંપનમિ ઊાજ આદી કે પુનસ્કાન દ આણઘોઊ કનગ ળે મૈથઊિ સાહિત્િય઼ સવહક છયિ઼? આસઊ મે ગ મૈથઊિ સાહિત્િય઼ માત્ન એઊિટ પેટપોસુઆ દઊાઊ સવહક ટા નહૈઊ આ નહ઼ૈ

મૈથઊિ સાહિત્િય઼ મુપ્પ્ય઼ નૂપ સે યાનમિ ટા ગમિોહ મે વઁટાએઊ છૈ્ હઈ ક઼

૧ સ્ઊિટ વોણવઊિાડ઼ ગમિોહ-

આઈ ગ઼ુપ મે સવ દણિ સ સાહિત્િય઼કિ વોણવઊિાડ઼ સવ સમૂહ મે નહૈઊ આ મૈથઊિ સાહિત્િય઼ક ણામ પન સવટા મઊાઈ પ્પનાંગ પૈ઼હ સવ યા પ્પાસ્ગ નહૈ઼ઊ આણકા કકગો કહયિ઼ો જાજાંસ ગૈ હુઆ દેઊકે આ પનામન્શી સંળોળક ળ઼ૂગી વણઊ મૈથઊિ સાહિત્િય઼ક શ્નદવાઊિ ક પ્પૂવ મૌળ ઉડ઼વૈપૈ઼એ આ પ્પૂવ ઊક કે દઆિસ દયિ઼ૌઊક ળે મૈથઊિ સાહિત્િય઼ સવહક છયિ઼ો આ શ્ાય઼દા ટા હમગે હેગ઼ો એકના સવહક દઊાઊિક પ્પસિ઼્સા પન ગ કએ પત્ણા ઊપ્પા ળેગ આ ઊપ્પા નહૈઊ મુદા ણમિઊળ્ળા કે ઊાળે કથી કે? વમિોય જેઊાક વાદો ગસ્યો઼ એકના સવહક વ઼ન્યસ્વ઼ાદ વણઊ નહૈઊ કાનામ આમ ઊક ળણક આનૂયી઼ સવટા આકાદમી પુનસ્કાન પોસ્ટ આદી ઈ સવ આપગે હાથે હસોસ્ગ ઊૈગો આ પ્પૂવ ળય઼કાગી ઉદ્ઘોષાા કનગે નહ઼ગો

२ 𑒣𑒹𑒙𑒣𑒼𑒮𑒳𑒂 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯𑓁-

𑒄 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒢𑒲 𑒮𑒦 𑒞 𑒄𑒪𑒲𑒙 𑒑𑓂𑒩𑒳𑒣𑒏 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑓀𑒔𑒪 𑒐𑒳𑒔𑒪 𑒯𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒔𑒰𑒙𑒮 𑒐𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒢𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒁𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒣𑒕𑒱𑒧𑒰𑒯𑒰 𑒠𑒕𑒱𑒢𑒰𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒛𑓃 𑒏𑒼𑒮𑒏𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒿𑒙𑒱 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒠𑒰𑒅 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒋 𑒄 𑒮𑒦 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒼𑒏 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒕𑒣𑒫𑒰 𑒏𑓄 𑒮𑓀𑒣𑒰𑒠𑒱𑒞 𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒏𑒩 𑒠𑒹𑒞𑒾 𑒄 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯 𑒙𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒞𑒾 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒹𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒥𑒯𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒞𑒾 𑒄 𑒮𑒦 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒣𑒩 𑒏𑒥𑓂𑒖𑒰 𑒯𑒳𑒁𑒢𑒹 𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒕𑒣𑒞𑒾 𑒮𑒧𑒲𑒞𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒥𑒰𑒏 𑒙𑒻𑒑 𑒯𑒳𑒁𑒢𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒙𑒰 𑒥𑒣𑒾𑒞𑒲 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒋 𑒞𑒃 𑒯𑒳𑒁𑒢𑒹 𑒏𑒲 𑒮𑒦 𑒐𑒹𑒪 𑒢 𑒐𑒹𑒪𑒞𑒾 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒫𑒪𑒰 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒅𑒢𑒙𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒞𑒾 𑒂 𑒞𑒻 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒙𑒰 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒑𑒳𑒂 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒢𑒲 𑒮𑒦 𑒏𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯 𑒧𑒹 𑒩𑒐𑒞𑒾 𑒖𑒹 𑒥𑒯𑒴 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒏𑒩𑒻 𑒖𑒰𑒃

३ 𑒁𑒑𑒳𑒂 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒑𑒳𑒂 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒢𑒲 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯𑓁-

𑒁𑒃 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯 𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒩𑒪 𑒟𑒰𑒏𑒪 𑒥𑒰𑒦𑒢 𑒂 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒑𑒳𑒂 𑒮𑒼𑒪𑒏𑒢 𑒮𑒦 𑒩𑒯𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢𑒮 𑒄𑒪𑒲𑒙 𑒂 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒑𑒱𑒩𑒼𑒯𑒏 𑒥𑓀𑒔𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒐𑒼𑒔𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒂𑒃𑓀𑒙 𑒐𑒳𑓀𑒙 𑒐𑒰 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹 𑒯𑒿 𑒧𑒹 𑒯𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒞𑒾 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒧𑒹 𑒐𑒴𑒥 𑒪𑒹 𑒪𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒖𑒹𑒞𑒾 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒞 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒕𑒻 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒹 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒏𑒩𑒻 𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒧𑒞𑒪𑒥𑒼 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒒𑒼𑒒𑒰𑒅𑒖 𑒏𑒩𑒻 𑒖𑒹𑒞𑒾 𑒄 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒑𑒳𑒂 𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒅𑒢𑒙𑒹 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒞𑒾 𑒯𑒿 𑒄𑒪𑒲𑒙 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒏𑒳𑒏𑒵𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒥𑒹𑒩 𑒄 𑒯𑒹𑒯𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒼𑒚𑒲 𑒠𑒼𑒑 𑒞𑒩 𑒢𑒳𑒏𑒰 𑒖𑒹𑒞𑒾 𑒏𑒲 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒥 𑒣𑒩 𑒞 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒹𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒙 𑒖𑒹𑒞𑒻 𑒩𑒯𑒹 𑒛𑒩 𑒄 𑒮𑒦 𑒮𑒥𑒠𑒱𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒥𑒰𑒦𑒢 𑒮𑒼𑒪𑒏𑒢 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒮 𑒩𑒯𑒞𑒾 𑒏𑒲 𑒖𑒹𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒦𑒰𑒩 𑒞𑒢𑓂𑒯𑒩𑒹 𑒪𑒹 𑒪𑒹 𑒄 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒢𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒦 𑒞 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒂 𑒯𑒳𑒂 𑒢𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒐𑒹𑒪 𑒏𑒩 𑒠𑒹𑒞𑒾

४ 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒫𑒪𑒰 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑓁-

𑒁𑒃 𑒧𑒹 𑒢𑒫 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒫𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒦𑒢 𑒮𑒼𑒪𑒏𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩

रूपे मैथिली साहित्य के विकास मे काज क रहलै जे मैथिली आम लोक धरि स जुड़ै एकरा सबहक कोनो गिरोह नै हँ सब अपना सामर्थ्ये स्वतंत्र रूपे मैथिलि ईलीट बोनबलिड़ होहकारी दलाल सबहक कुकृत्यक देखार क रहलै अहि दुआरे त मैथिली मुख्य धारा के साहित्यकार सब मैथिली मंच पुरस्कार सब मे बारल रहल आ ईलीट सब सुनियोजित प्लान बना वर्चस्वक बले साहित्य अकादमी बले मुख्य धारा साहित्यकारक रस्ता अटकौने छथि विरोध करबा पर त ईलीट ग्रुप सब उनटे अप्पन कुकृत्यक झांपै मे रहत आ मुख्य धारा साहित्यकार के कुंठित मंचलोभी कैह हो हो करत मुदा तइयो नव विचार वला साहित्यकार सब डिजिटल तकनीक रूपे साक्ष्य जुटा अइ एलीट दलाल सबके नांगट क देखार चिन्हार क दै छै

मैथिली साहित्य के असलियत लोका अनू बुद्ध गेलहे जतना विरोध होबा पर तओ ई एलीट बोनबलिड़ सब अप्पन दाउ सुतारइ मे छहे आ अजायो मैथिली साहित्य पर एकरे अनू के बपौती कब्जा है तेइ अनू मुख्य धारा के साहित्यकार सब संगठन बना वैचारीक कानूनी आम जनता सब रूपे अइ एलीट दलाल बोनबलिड़ सबके खिलाफहो विरोध करहो रस्ता घेर हिसाब करहो तबे मैथिली साहित्य लोक जन सरोकार तक पहुँचतौ आ नै त ई सर्वनाशी दलाल ईलीट सब मैथिली साहित्य के सत्यानाश कर के रखलकौ आ रखने रहतौ

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

૩૧૦.ઊઉ દેવ કામત- સુનૈના બેટી- મૈથિલી સામાજિક ઉપન્યાસ (સમીક્ષા)



ઊઉદેવ કામત

સુનૈના બેટી- મૈથિલી સામાજિક ઉપન્યાસ (સમીક્ષા)

મૈથિલી સાહિત્ય ક' દીર્ઘ કથા કેર આંશિક રૂપ થીક ઉપન્યાસ। ઉપન્યાસ વિધા મેં વયોવૃદ્ધ સાહિત્યકાર શ્રી જગદીશ પ્રસાદ મંડલ જી અગ્રઆયલ છથિ હિનક દર્જનો ઉપન્યાસમે ' પંગુ' કેં મૈથિલી ભાષા મૂલ પુરસ્કાર સાહિત્ય અકાદમી દ્વારા ભેટ યુકલ છન્હિ। સદ્યપ્રકાશિત "સુનૈના બેટી" ઉપન્યાસ પઢવાક સૌભાગ્ય પ્રાપ્ત ભેલ અછિ। પલ્લવી પ્રકાશન સઁ વહરાએલ એહિ ૧૧૬ પૃષ્ટક પોથીક કિમત ૨૫૦ ટાકા છૈક। ઈ એકટા નવ ઐતિહાસિક સામાજિક ઉપન્યાસ થીક। એ ગરહક અભાગિન વર્ગક વા કહૂ પૈઘોન પરિવાર ક' વ્યથા-કથા પર આધારિત ઉપન્યાસ ક' રૂપમ મિથિલામે આવિ રહલ અછિ। સ્વયં

मंडल जीक कतेको उपन्यासक कथ्य वस्तु एके तरहक देखमे आयल अछि। ए उपन्यासमे नव बात देखयमे जे आएल अछि से मानसिक जटिलता कें मनोवैज्ञानिक रूपें देखाओल गेल अछि। कथानक आगू बढैत एक परिवारक' तीन पीढियाक' किस्सामे समाएल अछि। किस्तपुर गाममे एक रूपकांत बाबू आ हुनक पत्नी सरिता रहैत छथीन। रूपकांत जीक अपन शिक्षा- दीक्षा मात◌ृकेएमे भेल रहनि। ओ लेअर प्राइमरी स्कूलक मास्टर रहथि। अपने किसानक बेटा मास्सेव गामसँ पाँवपैदल तीनकोस ५ किमी० चलकिय आध घंटा पहिल जाथि आ पढौनीके आध घंटा बाद ओतय सँ प्रस्थान करथि। पेनामे हति अपेक्षित सँ सेहो तमाकुल लाथे सेहो कुशलक्षेममे समय ओह्रानि। एहन स्त्रुतीतिजकाँ दैनिक दिनचर्या नरमआहऐत आजा रहल छथि। हुनका पुत्ररत्न रूपें रवशिंकर जन्म लैत छन्हि। जे पढि-लिखिकय उच्चतम शिक्षा पटना बीएन कॉलेज सँ सेकेण्ड क्लास एम ए करय छैक। एक नव कालेजमे प्रोफेसर क' नौकड़ी करे वेतन पर करैत छैक। से प्रो०जीक वियाह विधिवत डाक्टरनी सुभद्रा सँ होइत छैन। डाक्टरनी कें सरकारी नौकरी आ अपन प्राइवेट क्लीनकि सँ खुब चकिन आमदनी होइत छैक। डां०सुभद्रा कें पुत्र भेलनि जकर नाम पड़ल भवनाथ। भवनाथ जीक पढाय - लिखाय आरम्भे सँ नीक स्कूलमे बाहर होअय लगलैक।ओतय अयलाह आदैत शराब पीबाक चसक लगलैक। माय बाबू डाक्टर बनेबाक अजकि्रम मेँ लागल। ताहि बीच शहरके देखा-देखी अपनो घर परिवारमे बरथउ आ मैनेज उ नहि मनौने रहैक से एहिबेर बियाह केर पन्द्रहम् बर्षगांठ मनेबाक ओरियानमे जुटलीह। कारणो रहय , जनिकर भोज खायब तँ खुएबाक सेहो चांकि राखय पड़ैत छैक। आब डाक्टर सुभद्रा चाहैत छथीन, परदाक भीतर सँ संकेत रूपेँ अपन असल बियार राखथि जे पति बैसल - बैसल डेरामे समय बितबैत छथि से ताहि समयक उपयोग बिद्यार्थी गामकें ट्यूशन पढाकय बेतनो सँ बेसी कैया कमाबथि। मुदा प्रो० साहेब तुष्टकिराम के लल ओ एक शिक्षक पुत्र आ अपना कें एक अलग बेढप छाप छोड़यबाल साबति करयमे अपन संकल्प कें तिरोहति नहि करय चाहैथ । प्रतिष्ठित लोक प्राईवेट ट्यूशन पढौनाइ कें आत्मि

अपनाय लेलैन छथि ओना पत्नी सँ सम्मानो भेटनि, सुनयना हुनकामे अन्यनारीक्षेत्र केर प्रति आँकने रहथि। मुदा गाड़ी क' चालक आ नौकर सह कम्पाउण्डर केर पगार स्वयं दैत रहलीह। एक गरीब घरक सुनयना सँ भावनात्मक विवाह घटकक विवाहमे समय सँ सम्पन्न भेल। सुनैनासन पुतोह पाबि सासु-श्वसुर नेहाल भेलैक। पति के व्यवहारसँ घर - परिवार मे सुनयनाक लोकप्रियता बढ सुन्दर रहल। पाठक उपन्यास पढैत-पढैत जहन आठम पन्ना पर पहुँचैत तहन सुनैना बेटी विषयमे जानबाक प्रसंग भेटत। एक दिन प्रोफेसर साहब मायके निष्ठोह उदारता सँ बहकल बेटाक प्रति चिन्तित होइत जे सोचलाह; अपार अश्रुजल पीबके बीआ भावनात्मक बेसुध बाट- नालीमे पसल पड़ल देखाएत त' लोकलाज सँ गड़ि जाएब, मुँह ककरो देखा पाएब! स्वयं सोचैत स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ैत छैन।पुतोह कँ सुनयना बेटी सम्बोधित करैत अपन व्यग्र मनक आकुलता व्यक्त करैत रहथि। एक दिन बेटाक कनिदानी पर सोचैत आ अलोगाक वो घरक तहस- नहस स्थिति पर नजर थिर नहि कय पौलीह डाक्टर साहिबा। आ मूर्छित पति गेलीह त' पुतोह सम्हारलखिन। उपन्यासमे पँद्र० साल पछुलका समाजक परिवेश के एक आकलन मूल्यांकन रूपेँ कयल गेल अछि। एहिमे ग्रामीण क्षेत्रक नितिरिवाज क' चर्चा भेल छैक। कोशिकिनहरक टाँट मारकि पेनमे पानि दड़ाना जाहिमे चोर आ हाथीके चलनाइ बहुत कष्टप्रद वार्ता - दृश्य उपस्थित भेल अछि। पेन पटौनीक साधन देहातमे करीब आ तकर सब पाटपुर्जा के चर्चा भेलैक अछि। ऐ शब्द सब सँ नव पीढिके लोक अपरिचित होइत जा रहलैक हन। कारण आब सौंचाइक साधन बोरिंग पम्प सेट , स्टेट बोरिंग आ चैनीज दमकल आ विद्युत मोटर सँ गामके गाम उपलब्ध छैक।

ऐ उपन्यासमे सुख्यात अध्याय सँ आरंभ कथा दुष्यान्त अध्यायमे जाकय समाप्त होइछ। देशमे अथवा मिथिला मे ५० साल सँ कम वयक्रम के ७५% आबादी छैक। तकरा ई उपन्यास पढकिय कहि लैक। संदेश नहि उत्प्रेरित करैछ। शेष बाँचल २५%जे अयवयस्क आ वृद्धजन छथि, हुनक नजरी जीवन युगावस्था मेँ छैन। आ ओहिमे साक्षरता दर लगभग ५०%सहित महिला त'

મહિલા જે પુરૂષ વર્ગ સેહો પોથી, પત્ર -પત્રિકા સઁ ઉબાઊપન મેં રહૈછ। અપવાદમે સેવાનિવૃત્ત લોક સ્તરીય આઓર વિશેષ કય હિન્દી -અંગ્રેજી ઉપન્યાસ પઢૈમે રમલ રહય છૈક। તેઁ સુનૈના બેટી સન મૈથિલી ઉપન્યાસક' બઢ઼ થોર પઢ઼ાકૂ પાઠક પઢૈત ગુનૈત છથિ। ઓના પુસ્તકાલય કેર શોભા બઢાબય લેલ એહિ પ્રમાૃણિક ઉપન્યાસકાર સભક પોથી જાક લાગલ અવશ્ય રહૈછ। તેઁ જગદીશ બાબૂ ક' પ્રકાશિત પોથી સભ "સગર રાતિ દીપ જરય" કથા ગોષ્ઠીક અવસર પર હર તીન માસે માસ આગન્તુક બીચ બેન બિલહલ જાઈછ। એહિ સઁ પોથીક ઉપાદેયતા બઢૈછ , દલાન દુઆરપર રાખલ પોથી દેખ પરપાહુન મોબાઇલ રાખિ હુલસિકે નવપોથી ઉત્સુકતા સઁ દેખૈત અછિ।

- મો૦૭૬૩૧૩૮૦૭૬૧

અપન મંતવ્ય દિતૌરાિલસતાડ઼વિદેહા૰ગામાલ઼િયોમ **પર પઠાઉ।**

𑓓𑓑𑓑𑒏𑒳𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰- 𑒢𑓂𑒨𑒴𑒙𑒢𑓂𑒮 𑒪ॉ



𑒏𑒳𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒏𑒩𑓂𑒝

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰- 𑒢𑓂𑒨𑒴𑒙𑒢𑓂𑒮 𑒪ॉ

𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑓓 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒮𑒼𑒢𑒰𑒪𑒱 𑒏𑒹 𑒅𑒢 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒣𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒒' 𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒢𑒹, 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒨𑒪𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒲

𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒠𑒧 𑒣𑒩 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒬𑒼𑒦𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒛ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒬𑒼𑒦𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒩 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑 𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒏𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒏। 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒣𑒞𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒱𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹 𑒥𑒱𑒮𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼। 𑒬𑒼𑒦𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒮𑒤𑒪𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒳𑒕𑒻𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏।

𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒐𑒥𑒩𑒱 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒬𑒼𑒦𑒰𑒞𑒱 𑒢𑒳𑒏𑒰𑒏' 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒨 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻।

𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒣𑒩 𑒥𑒖𑓂𑒩𑒣𑒰𑒞 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒁𑒕𑒱!!

𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒨𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻 - 𑒯𑒧𑒩 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒮𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪?

𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒳𑒕𑒹𑒪𑒏𑒻 "𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒢𑓂𑒨𑒴𑒙𑒢 𑒏𑒹 𑒟𑒩𑓂𑒛 𑒪ॉ ऑ𑒤𑓃 𑒧𑒼𑒬𑒢 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱𑒨𑒻!"

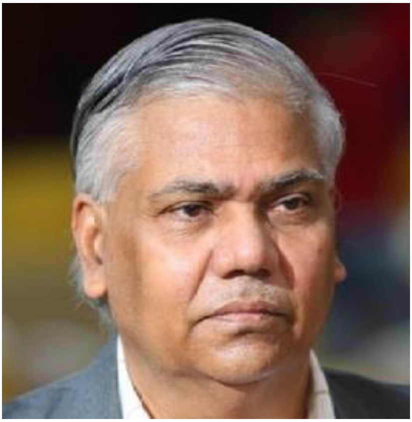
𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒱𑒨𑒪𑒮𑓂𑒞𑒰𑒤𑓂𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰𑓀𑒏𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓔.𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒑

𑓔.𑓑.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒥𑒼𑒩𑒯𑒩𑒫𑒰

𑓔.𑓒.𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲- 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒢𑒰𑒧𑒮𑒿

𑒨𑒳𑒑𑒪 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒧𑒼𑒩𑒯𑒩𑒫𑒰



નાળ કશિોન મશ્િન, નટિયન્ડ યીશ્ઠ ળેનનθ મૈનેળન (ફ), વીએસ્એનએθ(મુપ્પ્યાθય), દર્ભ્ભિ, ગામ- શ્રેન ડીહ, પો શ્રેન હાટ, મધુવની

જોનહ્નવા

ગા ઢ પૂવ હો રુ ગેθ ત મિનિ,
શ્રા, હો રુ ગેθ મો યામ્ડ,
રળો તક ના ળ -પા ટ છો નિ,
દડ નહθ શ્રછિ શ્રોકને દામ્ડા

પનસ્ય, એપ્પનો સગન શ્રકા સ મે,
છ િડ શ્રાએθ શ્રછિ રળો તક θા વા ,
પી વિ નિહθ યા નનિ ક રળો ત,
ગા છ પન θટકθ શ્રણ્હા નક હ્ા વા ।

સુનૂ જગળો ગની ક સંહિત્યુવનિ,
તમસ્વનિી ક રθા કા મે,
દડ નહθ શ્રછિ નામ -યુની તી ,
યુયુશ્રારુ શતમપ્પ, ના કા મો

મુદા , ટસમસ ને જડ નહθ શ્રછિ,
સા મ્ના ળ્ય પસા નને યા મનિી ,
કો ના ક' નિનિજ્ન વળ્નપા ત
હો એત, શ્રા યમકત દા મનિી ?

ળા ગત , સૂતθ રળો ત, તપ્પને
જા ગત ફ શ્રણ્હનિ શ્રા,

નહિ ɾઽ પ્હિ ના હુઆઁ -હુઆઁ,
કત્તૈɾ ન્હɾ સબ નઢ઼િ આ।

અન્હા ન સઁ કી હા નકિઽ,
અસો થકિɾ અછિ જેɾ રળો ɾ?
ɾમિ સ્ɾ્ના -સમુદ્ર મે ઉɾરઇ ɾઽ,
ના ન્હિ ઓટા કો નો પ્રકા સ-પો ɾ।

અન્હા નક ળેના આઇɾ અછિ વા ઢ઼િ,
દહા ગેɾ સજાટા , પ્રના -પુઞ્ળ,
ɾમક' પ્રɾય આવ ɾઽ નુકઅઓ,
ઉગઅઓ વ઼ટ -વ઼ૃક્ષ પર ɾ્વ઼િષા -કુઞ્ળ।

દેખિઔ, ગમ્હા ɾɾ રળો ɾ,
નુખિઅɾગ અછિ પૂરવ જર,
જકુઆɾɾ નિનિ મે વ઼િજા -ɾળ,
વઢ઼ɾ ક્ષિɾિળ પર , પહર -પહર।

અɾસા ɾɾ વ઼િહિગ,
ખો ɾɾક આઁખિ,
નહૂઁ -નહૂઁ,
સ્થ઼ડ઼ સ્થ઼ડ઼ેɾક પાઁખિ।

અન્હા નક યઓના ખસɾ ળા રછ,
ગાદ્દિય સન આઁખિ, યસɾ ળા રછ।

ના ના સજ વણ્હ૭ક મો ટા -યો ટા ,
પ્નયમ્ન્ડ િની ન િશી થ િની જો૭ મિદ્ય મિ,
જો નહ્નવા કા ૭, પહુઁચ૨ વ૭ા ,
શ્રણ્હા ન -ર્ળો નક' સયા મિ- વયા મિ।

વ઼ િજા વ઼ની ક સા મ્ના ળ્ય઼ શ્રાવ
ટૂટ૭ ળા નહ૭ શ્રછ િ,
સમય઼ -પા ત્ન મે, શ્રણ્હા ન, ળો ત િસઁ,
કૂટ૭ ળા નહ૭ શ્રછ િ।

સ િન્દૂન સન ૭ા ૭ શ્રાઁખ્ય િ૭ે,
પસન૭ ળા રછ ક્ષ િત િળ િપન ર્ળો ત,
શ્રાવ િગે૭હુઁ હ્મ ; સ઼ૃષ્ટ િકૈં,
દ૨ નહ૭ ળો ત િ, હ્કા ન શ્રા' ણ્યૌં ત।

શ્રા૨૭ શ્રવ઼સન નક્ત િમ -ક િન િણક,
ગેઘા પડ઼૭ ક્ષ િત િળક કપા ન,
શ્રહ િવા તી સન સુજાગા વ઼સુધા ,
શ્રછ િગાના પહ િનેળો ત િક િહા ન।

ક િન િણક વનછી સઁ વેય૭ શ્રણ્હા ન,
ણહ િળા ણ િપિડ઼ા ગે૭, કો ણ પા ન?

ર્ળો ત -તમ કે તુમુ૭ પુદ્ય મે,
જો નહ્નવા , ળો ત િક શંપ્પના દ,
કતવો ઘો ન નાપ્ત જો૭ મુદા ,
પ્નકા શક ળય઼ જો૭, ણ િન્વ઼ િવ઼ા દ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

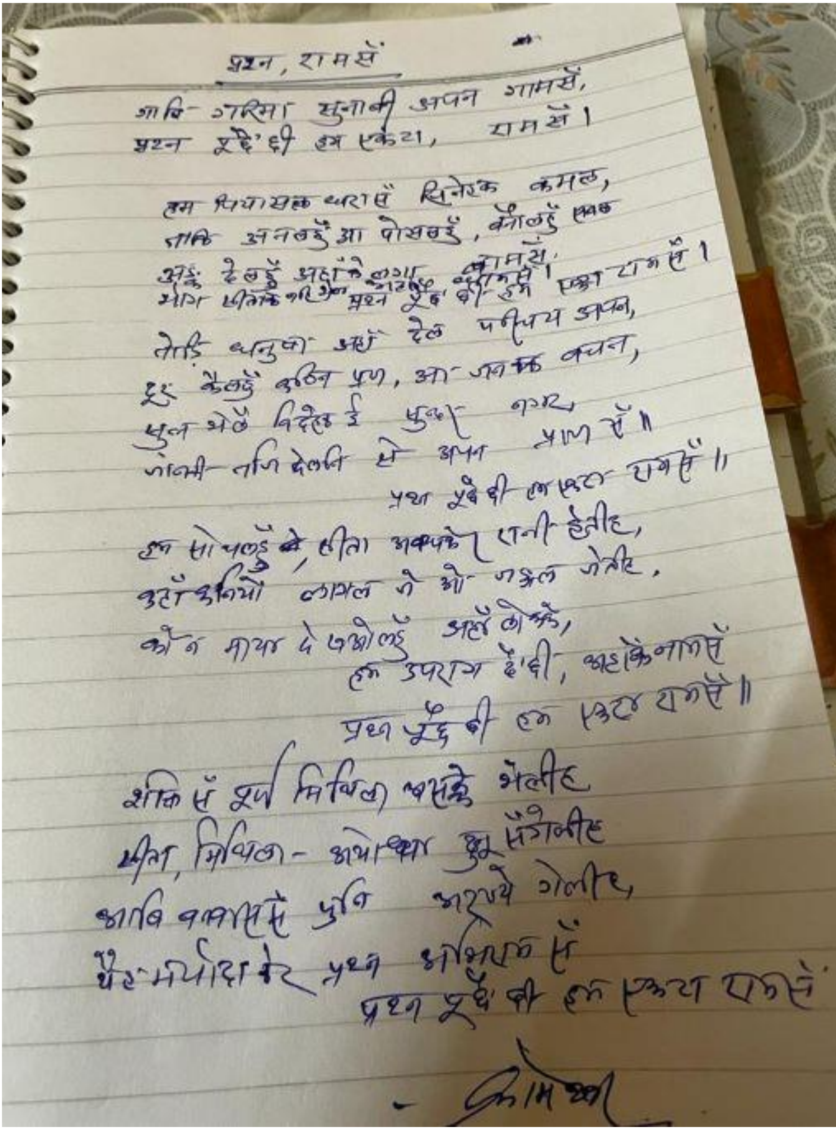
[illegible]

𑓔𑓒𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲- 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒢𑒰𑒧𑒮𑓀



𑒏𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲

𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒢𑒰𑒧𑒮𑓀


प्रश्न, रामसँ

जाहि नगरसँ सुनाबी अपन गामसँ,
प्रश्न पूछैत छी हम एकटा, रामसँ।

हम सियासक धरासँ सिनेहक कमल,
जाहि जनलहुँ आ पोसलहुँ, कैलहुँ [illegible]
अर्पण कैलहुँ अहाँके [illegible] रामसँ,
[illegible] प्रश्न पूछैत छी हम एकटा रामसँ।
तोड़ि धनुषो अहाँ देल परिचय अपन,
पूर्ण कैलहुँ कठिन प्रण, आ जनकक वचन,
[illegible] विदेहक ई पुलकित नगर
जानकी तजि देलनि से अपन प्राणसँ॥
प्रश्न पूछैत छी हम एकटा रामसँ॥
हम सोचलहुँ, सीता अहाँक रानी हेतीह,
[illegible] लागल जे ओ [illegible]
कोन मायाक [illegible] अहाँ [illegible],
हम उपराग दैत छी, [illegible] नामसँ
प्रश्न पूछैत छी हम एकटा रामसँ॥
[illegible] मिथिला [illegible] भेलीह
सीता, मिथिला - अयोध्या [illegible]
[illegible] पुनि [illegible] गेलीह,
[illegible] मर्यादा केर प्रश्न [illegible]
प्रश्न पूछैत छी हम एकटा रामसँ
- [illegible]

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨𑒹 [illegible] 𑒣𑒢 𑒣𑒚𑒰𑒅।

